सत्यमेव जयते

भारत सरकार
संस्कृति मंत्रालय

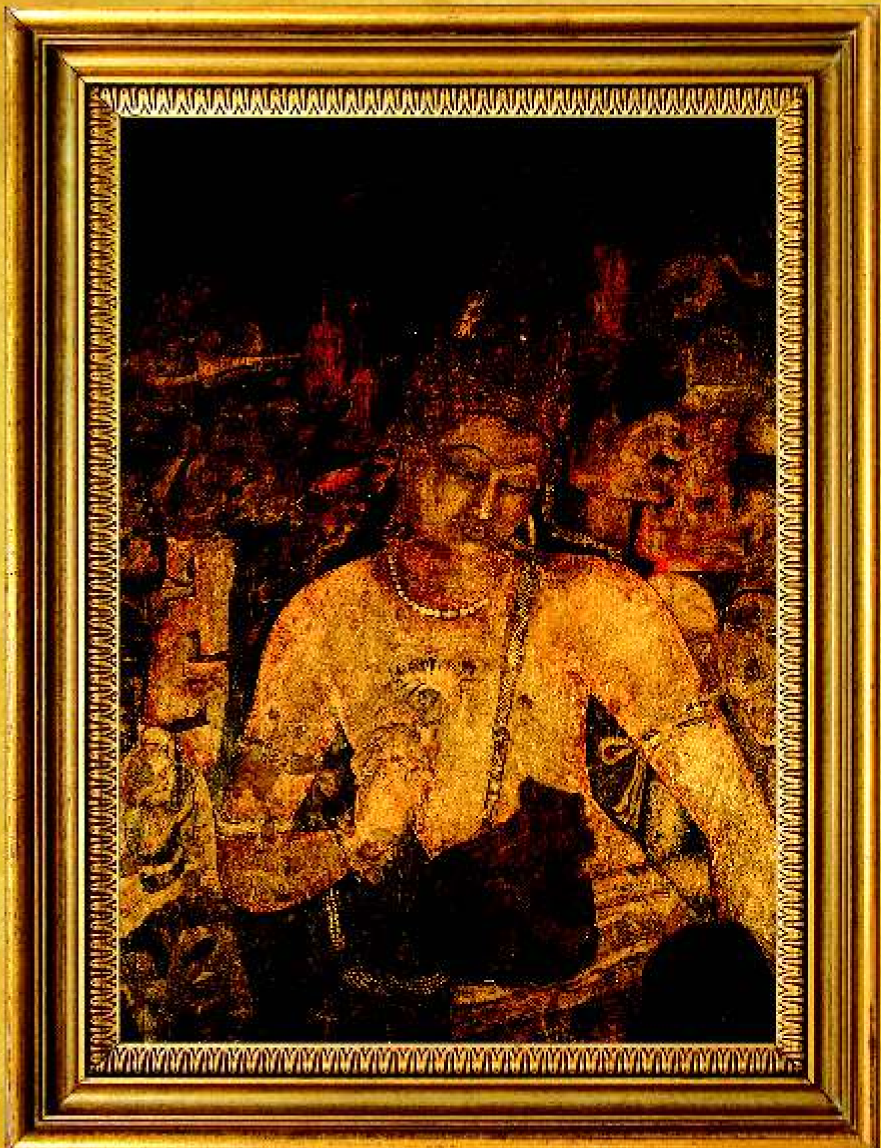

वार्षिक रिपोर्ट
2009-2010

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
संस्कृति मंत्रालय

वार्षिक रिपोर्ट
2009-2010

विषय सूची

1. संस्कृति मंत्रालय–सिंहावलोकन **1-4**

2. मूर्त सांस्कृतिक विरासत **5-6**

2.1 भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण 7-17

2.2 संग्रहालय 18-19

2.2.1 राष्ट्रीय संग्रहालय 20-21

2.2.2 राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय 22-23

2.2.3 भारतीय संग्रहालय 24-25

2.2.4 विक्टोरिया मेमोरियल हॉल 26-29

2.2.5 सालारजंग संग्रहालय 30-34

2.2.6 इलाहाबाद संग्रहालय 35-37

2.2.7 राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद, कोलकाता 38-42

2.3 संग्रहालय से संबंधित कार्यकलापों में क्षमता निर्माण 43

2.3.1 राष्ट्रीय संग्रहालय संस्थान : कला इतिहास, संरक्षण, संग्रहालय विज्ञान 44-45

2.3.2 राष्ट्रीय सांस्कृतिक सम्पदा संरक्षण अनुसंधान प्रयोगशाला 46-47

2.4 राष्ट्रीय संस्कृति निधि 48-49

2.5 अन्तर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक संबंध 50-51

2.6 यूनेस्को संबंधी मामले 52-54

2.7 राष्ट्रीय मिशन 55-56

2.7.1 राष्ट्रीय स्मारक और पुरावस्तु मिशन 57-58

2.7.2 राष्ट्रीय पांडुलिपि मिशन 59-60

3. अमूर्त सांस्कृतिक विरासत **61-62**

3.1 राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय 63-64

3.2 इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली 65-71

3.3 अकादमियॉ : 72-73

3.3.1 साहित्य अकादेमी 74-78

3.3.2 ललित कला अकादेमी 79-83

3.3.3 संगीत नाटक अकादेमी 84-89

3.4 सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र 90-94

3.5 कलाक्षेत्र प्रतिष्ठान 95-97

3.6 क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र 98-100

3.6.1 पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द 101-105

3.6.2 उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द 106-110

3.6.3 दक्षिण क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द 111-113

3.6.4 पूर्व क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द 114-117

3.6.5 उत्तर पूर्व क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द 118-121

3.6.6 दक्षिण मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द 122-124
3.6.7 उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द 125-132

4. ज्ञान स्रोत विरासत 133-134

4.1 संस्थाएं 135
4.1.1 भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार 136-140
4.1.2 भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण 141-143
4.1.3 गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति 144-152
4.1.4 नेहरू स्मारक संग्रहालय एवं पुस्तकालय 153-160
4.1.5 इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय 161-169
4.1.6 एशियाटिक सोसायटी 170-171
4.1.7 मौलाना अबुल कलाम आजाद एशियाई अध्ययन संस्थान 172-175
4.1.8 केन्द्रीय बौद्ध अध्ययन संस्थान, लेह 176-178
4.1.9 केन्द्रीय उच्च तिब्बती अध्ययन संस्थान, सारनाथ, वाराणसी 179-181
4.1.10 नव नालंदा महाविहार, नालंदा, बिहार 182-183

4.2 पुस्तकालय 184-185
4.2.1 राष्ट्रीय पुस्तकालय 186-188
4.2.2 राजा राममोहन राय पुस्तकालय प्रतिष्ठान 189-191
4.2.3 दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी 192-193
4.2.4 रामपुर रजा पुस्तकालय 194-199
4.2.5 केन्द्रीय सन्दर्भ पुस्तकालय 200-201
4.2.6 खुदाबक्श ओरिएण्टल पब्लिक लाइब्रेरी 202-203
4.2.7 केन्द्रीय सचिवालय ग्रन्थागार 204-206

5. अन्यः 207-208

5.1 शताब्दियॉ एवं वर्षगांठ 209

5.2 मंत्रालय से अनुदान 210-219
5.2.1 मंच कला 220-221
5.2.2 छात्रवृत्ति एवं अध्येतावृत्ति 222-225
5.3 विविध 226-227
5.3.1 पूर्वोत्तर क्षेत्रों में पहल 228-229
5.3.2 सूचना का अधिकार अधिनियम 230
5.3.3 सतर्कता 231
5.3.4 हिन्दी का प्रगामी प्रयोग 232-233
5.3.5 कर्मचारी कल्याण 234
5.3.6 शारीरिक रूप से अक्षम व्यक्ति 235
5.3.7 नागरिक चार्टर 236-241
5.3.8 अधिकारियों की सूची (संस्कृति मंत्रालय) 242-243

अनुबंध 244-245

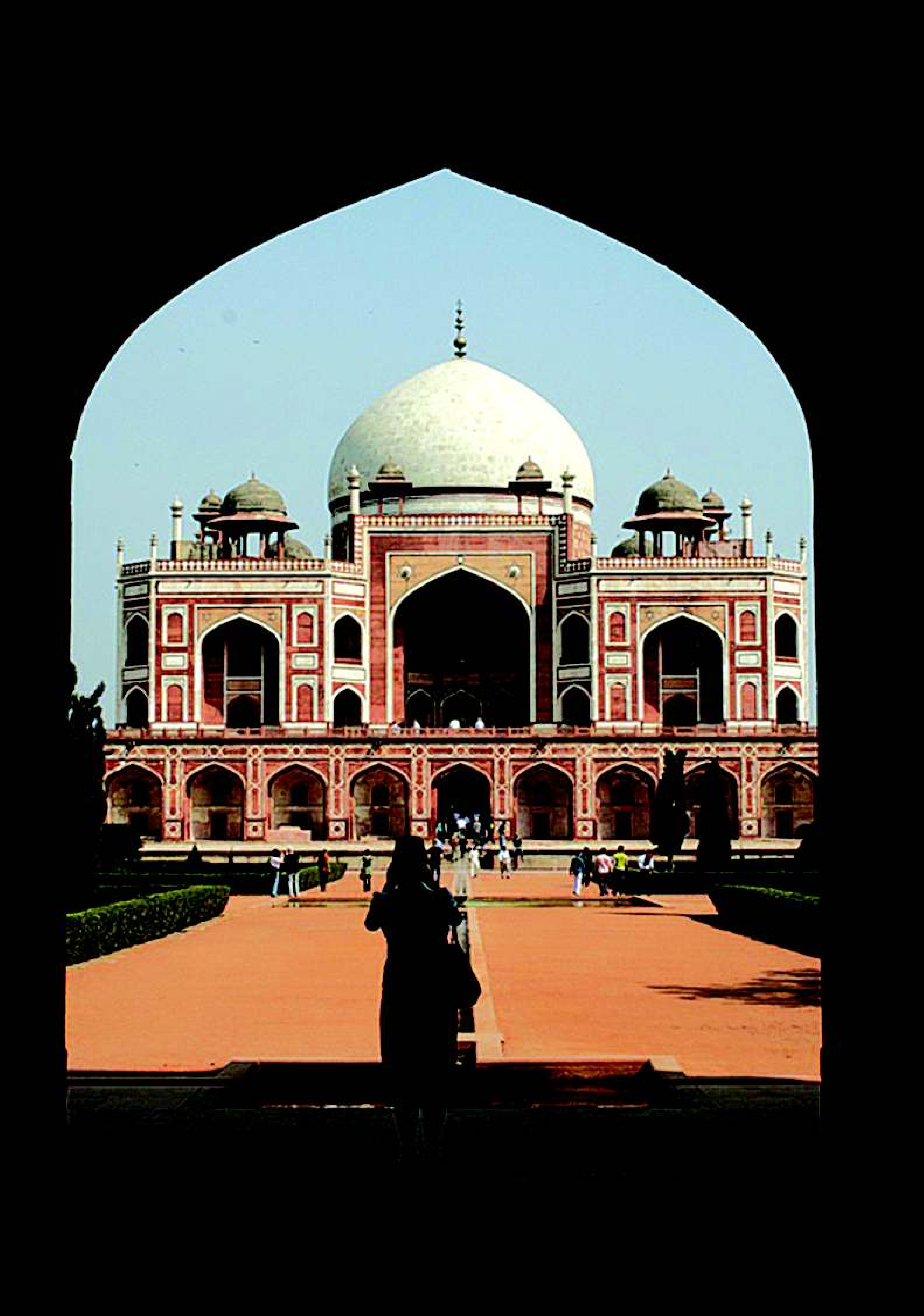

1
संस्कृति मंत्रालय - सिंहावलोकन

संस्कृति मंत्रालय
सिंहावलोकन

किसी भी राष्ट्र की विकास संबंधी कार्यसूची में संस्कृति समान रूप से एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। संस्कृति मंत्रालय का अधिदेश प्राचीन सांस्कृतिक धरोहर का परिरक्षण एवं संरक्षण करने और देश में मूर्त एवं अमूर्त, दोनों प्रकार की कला एवं संस्कृति को बढ़ावा देने जैसे कार्यों से जुड़ा है।

इस मंत्रालय का कार्यात्मक परिदृश्य काफी व्यापक है, जिसमें निचले स्तर पर सांस्कृतिक प्रयासों को प्रोत्साहित करने से लेकर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सांस्कृतिक आदान–प्रदान को बढ़ावा देना शामिल है। मंत्रालय की प्रशासनिक संरचना में विभिन्न ब्यूरो तथा प्रभाग शामिल हैं जिनके अध्यक्ष सचिव हैं, साथ ही इसके तहत दो सम्बद्ध कार्यालय, छः अधीनस्थ कार्यालय तथा तैंतीस स्वायत्त संगठन शामिल हैं, जो सरकार द्वारा पूर्णतः वित्तपोषित हैं। इन ख्यातिप्राप्त राष्ट्रीय संस्थाओं के अलावा, इस मंत्रालय के तहत सात क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र भी हैं जो मुख्यतः विभिन्न क्षेत्रों की लोक कला एवं पारम्परिक कलाओं पर कार्य कर रहे हैं। इसके साथ ही दो मिशन भी हैं अर्थात्– राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन (वर्ष 2003 में प्रारंभ–आईजीएनसीए की नोडल एजेंसी) और राष्ट्रीय प्राचीन स्मारक एवं पुरावशेष मिशन (वर्ष 2007 में प्रारंभ–भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की नोडल एजेंसी)।

व्यापक तौर पर यह मंत्रालय अनेक प्रकार की विरासत और संस्कृति नामतः मूर्त विरासत, अमूर्त विरासत और ज्ञान विरासत की सुरक्षा, विकास और संवर्द्धन का कार्य कर रहा है। इसके अलावा, मंत्रालय गांधीवादी विरासत और महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाओं और महान व्यक्तियों की शताब्दियॉ मनाने के लिए भी उत्तरदायी है।

मूर्त विरासत में मंत्रालय राष्ट्रीय महत्व के सभी केन्द्रों द्वारा संरक्षित स्मारकों की सुरक्षा करता है जिसे भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के जरिए कराया जाता है। इसी प्रकार, मंत्रालय देश में संग्रहालय आंदोलन को बढ़ावा दे रहा है और अधिकांश उत्कृष्ट संग्रहालय इस मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रणाधीन हैं। इसके अतिरिक्त, मंत्रालय इन संग्रहालयों को सहायता–अनुदान देकर विभिन्न क्षेत्रीय संग्रहालयों को बढ़ावा दे रहा है।

अमूर्त विरासत में मंत्रालय व्यक्तियों, व्यक्तियों के समूह और ललित कला, दृश्य कला और साहित्य कला में संलग्न सांस्कृतिक संगठनों को वित्तीय सहायता दे रहा है। इसी प्रकार, मंत्रालय अपने संगठनों के माध्यम से साहित्य अकादेमी और संगीत नाटक अकादेमी जैसी अपनी संस्थाओं द्वारा विभिन्न पुरस्कार प्रदान कर कला और संस्कृति के क्षेत्र में उत्कृष्टता को पहचान दिला रहा है। राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, जो इस मंत्रालय के अधीन एक संगठन है, हमारी परम्पराओं और सांस्कृतिक विविधता के संदर्भ में देश में समकालीन प्रासंगिता के सक्रिय रंगमच अभियान को बढ़ावा देने में शामिल है।

ज्ञान विरासत के क्षेत्र में यह मंत्रालय देश के सभी पुस्तकालयों का अभिरक्षक है। यह पुस्तकालय विकास के लिए सहायता अनुदान भी प्रदान कर रहा है तथा पुस्तकालय विकास से संबंधित सभी नीतिगत मामलों के लिए भी जिम्मेदार है। राष्ट्रीय अभिलेखागार के जरिए मंत्रालय देश के सभी अभिलेखीय रिकार्ड़ों का रख–रखाव करने के लिए भी जिम्मेदार है। मंत्रालय बौद्ध और तिब्बती संस्कृति का संरक्षण और संवर्द्धन भी कर रहा है और यह सारनाथ, वाराणसी और लेह में स्थित विभिन्न संस्थाओं के जरिए किया जा रहा है।

मंत्रालय ने उन लोगों के लिए सुनियोजित क्षमता निर्माण कार्यक्रम तैयार किया है जो भारतीय और एशियाई कला एवं संस्कृति, पुरातत्व विद्यालय, अभिलेखागार विद्यालय, राष्ट्रीय इतिहास और कला संस्थान, मौलाना अबुल कलाम आजाद एशियाई अध्ययन संस्थान के क्षेत्र में शिखर तक पहुंचना चाहते हैं। एनएसडी और कला क्षेत्र फाउंडेशन द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न पाठ्यक्रम मंत्रालय के क्षमता निर्माण कार्यक्रम के कुछ उदाहरणों में से एक है।

मंत्रालय विदेशों में भारत उत्सव का आयोजन करके अपनी अंतर्राष्ट्रीय पहचान बना रहा है। संस्कृति मंत्रालय संस्कृति के क्षेत्र में विभिन्न यूनेस्को सम्मेलनों के कार्यान्वयन के लिए भी जिम्मेदार है और इसने 118 देशों के साथ द्विपक्षीय सांस्कृतिक समझौते तथा 89 देशों के साथ सांस्कृतिक आदान–प्रदान कार्यक्रम पर हस्ताक्षर किए हैं। यह वार्षिक रिपोर्ट इस मंत्रालय के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए कार्यकलापों और उपलब्धियों का विस्तारपूर्वक उल्लेख करने का प्रयास मात्र है।

2

मूर्त सांस्कृतिक विरासत

2.1

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण

प्रस्तावना

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) की स्थापना 1861 में हुई थी। यह संस्कृति विभाग के संबद्ध कार्यालय के रूप में कार्य करता है। इस संगठन के प्रमुख महानिदेशक हैं।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के प्रमुख कार्यकलाप निम्नलिखित हैं:

(i) पुरातात्विक अवशेषों और उत्खननों का सर्वेक्षण;

(ii) केन्द्रीय रूप से संरक्षित स्मारकों, स्थलों और अवशेषों का रखरखाव तथा संरक्षण;

(iii) स्मारकों और पुरातात्विक अवशेषों का रासायनिक परिरक्षण;

(iv) स्मारकों का वास्तुशिल्पीय सर्वेक्षण;

(v) पुरालेखीय अनुसंधान का विकास और मुद्राशास्त्र अध्ययन;

(vi) स्थल संग्रहालयों की स्थापना और उनका पुनर्गठन;

(vii) विदेशों में खोज अभियान;

(viii) पुरातत्व विज्ञान में प्रशिक्षण;

(ix) तकनीकी रिपोर्टों तथा अनुसंधान कार्यों का प्रकाशन।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण अपने 24 मंडलों और 5 क्षेत्रीय निदेशालयों के माध्यम से अपने संरक्षणाधीन स्मारकों के संरक्षण और परिरक्षण का कार्य करता है। इसके अलावा एएसआई में 6 उत्खनन शाखाएं, 2 मंदिर सर्वेक्षण परियोजनाएं, 1 भवन सर्वेक्षण परियोजना, 1 प्रागैतिहासिक शाखा, 1 विज्ञान शाखा, 2 पुरालेख शाखाएं (एक अरबी और फारसी के लिए तथा अन्य संस्कृत और द्रविण भाषाओं के लिए) तथा 1 बागवानी शाखा है जिनके माध्यम से अलग–अलग क्षेत्रों में विभिन्न अनुसंधान तथा अन्य कार्य किए जाते हैं।

प्राचीन संस्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल और अवशेष अधिनियम, 1958 के तहत ए.एस.आई. ने देश ने 3675 स्मारकों/स्थलों को राष्ट्रीय महत्व का स्मारक/स्थल घोषित किया है जिनमें इक्कीस (21) स्थल ऐसे हैं जो यूनेस्को की विश्व विरासत सूची में अंकित हैं।

स्मारकों का संरक्षण और परिरक्षण

एएसआई का मुख्य कार्य केन्द्रीय रूप से संरक्षित स्मारकों और स्थलों के आसपास के परिवेश का संरक्षण, परिरक्षण और रखरखाव करना है। एएसआई ने संरचनात्मक संरक्षण, रासायनिक संरक्षण और बागवानी

प्रचालनों के लिए प्राथमिकताओं, वचनबद्धताओं और वित्तीय संसाधनों के आधार पर लगभग 1600 योजनाओं (निर्माण) पर कार्य किया है।

किसी विशेष प्रकृति की ढांचागत मरम्मत और दैनिक रखरखाव देश के विभिन्न भागों में स्थित 24 मण्डल कार्यालयों द्वारा किया जाता है।

स्मारकों में पर्यटकों की संख्या में वृद्धि करने के लिए भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, संस्कृति मंत्रालय और राज्यों के संस्कृति एवं पर्यटन विभागों के बीच एक स्वस्थ समन्वय प्रक्रिया विकसित की गई है। पर्यटन मंत्रालय ने भी बिहार, उड़ीसा, महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश राज्यों में केन्द्रीय रूप से संरक्षित स्मारकों के कतिपय विकास कार्यों के लिए धनराशि उपलब्ध कराई है।

स्मारकों के साथ जुड़े सांस्कृतिक पर्यटन के विकास पर विशेष ध्यान दिया जाता है। इस प्रयोजन के लिए विश्व विरासत सूची में शामिल स्मारकों और अन्य महत्वपूर्ण तथा अधिक प्रचलित स्मारकों में पर्यटकों के लिए सूचना केन्द्र, जन सुविधाएं, आधुनिक टिकट काउंटर, बेहतर सूचना–पट्ट और पेयजल आदि जैसी सुविधाएं सृजित की गई हैं।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा केंद्रीय रूप से संरक्षित स्मारकों के अलावा प्राचीन संरचनाओं/ऐतिहासिक इमारतों के सिविल कार्यों के लिए विभिन्न राज्य सरकारों और अन्य एजेंसियों को सेवाएं और विशेषज्ञता प्रदान की जाती हैं।

सार्वजनिक निजी भागीदारी को प्रोत्साहन दिया जाता है और कुछ कॉर्पोरेट ने केन्द्रीय रूप से संरक्षित स्मारकों की विकासात्मक गतिविधियों के लिए राष्ट्रीय संस्कृति निधि (एनसीएफ) में अंशदान किया है।

राष्ट्रमंडल खेल–2010 दिल्ली में आयोजित किए जा रहे हैं। इस अवधि के दौरान काफी संख्या में स्वदेशी और विदेशी आगन्तुकों के दिल्ली आने की संभावना है। राष्ट्रमंडल सचिवालय ने एक नारा **''ऐतिहासिक शहर दिल्ली में आपका स्वागत है''** अपनाया है। दिल्ली की ऐतिहासिकता का दिए गए महत्व को देखते हुए यह अनिवार्य हो जाता है कि दिल्ली के सभी प्रमुख स्मारकों को पर्यटन की दृष्टि से आकर्षक बनाने के लिए विशेष रूप से इस अवसर पर साफ सुथरा रखा जाए।

तदनुसार 46 स्मारकों की पहचान की गई है जो या तो पर्यटन की दृष्टि से लोकप्रिय हैं या राष्ट्रमंडल खेलों से सम्बद्ध मुख्य मार्गों पर स्थित हैं।

राष्ट्रमंडल खेलों के लिए पहचान किए गए इन 46 स्मारकों के संरचनात्मक संरक्षण, पर्यावरणिक सुधार और वैज्ञानिक संरक्षण से संबंधित कार्य तेजी से किए जा रहे हैं। राष्ट्रमंडल खेलों से संबंधित कार्य करने के लिए वर्तमान वित्तीय वर्ष में 17.00 करोड़ रुपए का आबंटन किया गया है जिसमें से 31.12.2009 तक 4.18 करोड़ रुपए का व्यय किया जा चुका है।

जापान बैंक ऑफ इंटरनेशनल कोऑपरेशन (जेबीआईसी) से प्राप्त ऋण सहायता से अजंता–एलोरा संरक्षण और पर्यटन विकास परियोजना के चरण–I के सफलतापूर्वक पूरा होने के बाद चरण–II का कार्य शुरू किया गया है। परियोजना के दूसरे चरण में 20.30 करोड़ रुपए के परिव्यय से अजंता, एलोरा, पीतलखोरा एवं औरंगाबाद गुफाओं, दौलताबाद किला, बीबी–का–मकबरा, पटनादेवी मंदिर और लोनर समूह के मंदिरों के व्यापक सर्वेक्षण का एकीकृत कार्यक्रम, रासायनिक परिरक्षण और समग्र पर्यावरण विकास प्रारंभ किया गया है और इस परियोजना के लिए वर्ष 2009–2010 के दौरान मार्च, 2009 तक 8 करोड़ रुपए का प्रावधान किया गया है।

इसके अलावा, एएसआई ने विदेश मंत्रालय के आईटीईसी कार्यक्रम के अंतर्गत कंबोडिया में ता–प्रोहम मंदिर के संरक्षण और पुनरुद्धार के लिए भी योगदान दिया है। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ने इस मंदिर की अवसंरचना, भू–तकनीक, पानी जमा होने और वृक्षारोपण जैसे पहलुओं से संबंधित वैज्ञानिक अध्ययन और जांच कराई है। अंतरराष्ट्रीय समन्वय समिति और अंगकोर संरक्षण प्राधिकरण तथा सायम रीप (अप्सरा) राष्ट्रीय प्राधिकरण द्वारा अनुमोदित परियोजना कार्यान्वयन कार्यक्रम के अनुसार तीन स्थलों पर संरक्षण कार्य चल रहा है।

इसके अतिरिक्त एएसआई ने लाओ पीडीआर में वाट फोउ मंदिर परिसर की संरक्षण और पुनरुद्धार परियोजना भी प्रारम्भ की है। समुचित अध्ययन, पुरातात्विक अन्वेषण, प्रलेखन आदि के पश्चात वाट फोउ मंदिर परिसर के उत्तरी अहाते का संरक्षण कार्य प्रारम्भ किया गया है और यह कार्य चल रहा है।

पुरातात्विक उत्खनन

एएसआई ने क्षेत्र सत्र 2008–09 के दौरान मंडल और उत्खनन शाखाओं के माध्यम से उत्खनन कार्य किए। उत्खनन के विशिष्ट परिणाम नीचे दिए गए हैं:

1. घोराकटोरा, जिला नालन्दा, बिहार में उत्खननः

पुरातात्विक सम्भावना का स्थान नामतः घोराकटोरा, नालन्दा जिले में गिरियक के निकट राष्ट्रीय राजमार्ग सं. 31 पर बिहार शरीफ और नवादा के बीच पश्चिम में गिरियक पुलिस थाने से 300 मीटर की दूरी पर स्थित है। पंचाना नदी इस स्थान के पश्चिम में बहती है और तपोवन, जेठियान तथा राजगृह को जाने वाली सड़क के निकट है। यह एक विशाल स्तूप है जिसका आकार लगभग 900 मीटर (उत्तर–दक्षिण) x 500 मीटर (पूर्व–पश्चिम) x 40 से 50 फुट ऊँचाई है इसे सबसे पहले बुचानन द्वारा देखा गया था। स्थानीय ग्रामवासियों के अनुसार इस स्तूप के उत्तरी हिस्से में हुसैन–हुसैन का मकबरा है। स्तूप के मध्य में चार बुर्जियों वाला चौकोर छोटा किला था। यहाँ चीनी मिट्टी के लाल, काले चिकने बर्तन, एनबीपी और काले तथा लाल बर्तनों के टुकड़े पाए गए हैं। यहाँ से मिट्टी के मनके, खिलौने और शुंग पट्टिका के कुछ अंशों जैसी कुछ पुरावस्तुएं भी एकत्र की गई हैं। इससे पता चलता है कि इस स्थल का काल चाल्कोलिथिक संस्कृति से प्रारम्भ होकर उत्तरी काले पॉलिश किए गए बर्तनों की संस्कृति तक का रहा होगा जो शुंग–कुषाण काल तक के मध्य तक रही।

2. सेंट अगस्टिन परिसर, गोवा में उत्खननः

इस स्थल की खुदाई में नाली, चारदिवारी, जार, कुएं, प्लेटफार्म, बर्तन आदि मिले हैं। नीले और सफेद रंग के बर्तनों के टुकड़े भी काफी मात्रा में पाए गए हैं। भारी मात्रा में पाए गए बर्तनों के टुकड़ों से पता चलता है कि इस स्थान का उपयोग टूटे हुए और बेकार बर्तनों को कूड़े के ढेर में फेंकने के लिए किया जाता होगा। ऐसा माना जाता है कि इस स्थान पर ज्योर्जिया की रानी कैथरीन को दफनाया गया था।

3. बांगढ़, जिला दक्षिण दिनाजपुर, पश्चिम बंगाल में उत्खननः

यहाँ की खुदाई से मौर्य पूर्व से सल्तनत/मुगल काल तक के सांस्कृतिक क्रम का पता चला है। मौर्य पूर्व काल से संबंधित काले चिकने बर्तन, एक केल्सेडोनी मनका और नाव के आकार की मिट्टी की एक वस्तु भी मिली थी। मौर्य काल की पहचान मौर्य कालीन विशिष्ट ईंटों सहित मौर्य कालीन काले चिकने बर्तन विशिष्ट कटोरी और थाली से की जा सकती है। यहाँ पाई गई प्राचीन वस्तुओं में शामिल हैं मिट्टी के खिलौने, मिट्टी की घनाकृति, लोहे का हत्था और चिन्हित सिक्के। शुंग कुषाण काल की पहचान शुंककालीन मिट्टी की पट्टिका, चिन्हित और ढ़ले हुए तांबे के सिक्कों, मुद्रांकित डिजायन के एक पदक, चिन्हित मिट्टी के बर्तनों, लाल और सलेटी बर्तनों से होती है।

गुप्त काल की पहचान 2.07 मी. ऊँचाई x 0.60 मी. व्यास के कुएं, टूटी हुई ईंटों से बने आवासीय परिसर और मिट्टी के एक विशिष्ट हवन कुण्ड के मिलने से होती है।

गुप्त काल के पश्चात की कुछ छोटी–मोटी पुरावस्तुओं जैसे मिट्टी के खिलौने, मिट्टी के स्टॉपर और मिट्टी तथा कॉच के मनकों के अलावा कोई विशेष ढ़ांचा नहीं पाया गया है।

पाल काल की पहचान किले की दक्षिणी दीवार पर 8.10 मी. व्यास और 7.13 मी. की सुरक्षा दीवार सहित ईंटों से बने दो बुर्जों द्वारा होती है।

सल्तनत काल का बुर्ज और सुरक्षा दीवार के साथ किले की दीवार से ऊपर पुनः उपयोग की गई ईंटों के ढॉचे के अवशेषों सहित कुछ चिकने और काही बर्तनों के अलावा कोई अन्य विशेष वस्तु नहीं पाई गई है।

अंतर्जलीय पुरातत्व स्कंध

लोकतक झील, मणिपुर के आस–पास खोज

भारत में अंतर्जलीय पुरातत्व की शुरूआत से लेकर अब तक अधिकतर कार्य समुद्र और तटीय क्षेत्रों में किए जाते थे। भारत के आंतरिक जल में अंतर्जलीय पुरातत्व के लिए काफी संभावनाएं हैं। विभिन्न प्रकार के जलाशय देश में काफी संख्या में हैं। अंतर्देशीय जलाशयों की खोज करने के लिए अंतर्जलीय पुरातत्व स्कंध ने 20 मई से 31 मई, 2009 तक लोकतक झील के आसपास खोज कार्य किए। अंतर्देशीय जल में की गई यह पहली खोज है।

उप अधीक्षण पुरातत्ववेत्ता, अंतर्जलीय पुरातत्व स्कंध को यूनेस्को मुख्यालय में 01 दिसम्बर से 03 दिसम्बर, 2009 तक अंतर्जलीय सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण पर आयोजित किए गए सम्मेलन में भारत राज्य पक्षों की बैठक के दूसरे सत्र में पर्यवेक्षक के रूप में भाग लेने के लिए पेरिस भेजा गया था। भारतीय प्रतिनिधि ने पर्यवेक्षक देश के रूप में भारत का नामांकन प्रस्तुत

किया। इस बैठक का उद्देश्य अंतर्जलीय सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण (2001) पर यूनेस्को सम्मेलन का अनुसमर्थन करना था।

पुरातत्व संग्रहालय

देश के विभिन्न विरासत स्थलों में पुरातत्व संग्रहालयों की स्थापना की गई। एएसआई द्वारा 43 स्थल संग्रहालयों की स्थापना की गई है।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के अधीन स्थल संग्रहालयों का उन्नयन प्रत्येक मामले में व्यवहार्यता के अनुसार प्रक्रियाधीन है और यह सचिव (संस्कृति) द्वारा संग्रहालय सुधारों के लिए सूचीबद्ध 14 बिन्दुओं के अनुसार किया जाता है।

आगंतुकों के संग्रहालय में आने के लिए स्थल संग्रहालयों के समय में परिवर्तन करके प्रातः 10 बजे से सायं 5 बजे के स्थान पर प्रातः 8 बजे से सायं 5 बजे तक कर दिया गया है।

वर्ष 1998 में संग्रहालय शाखा का विलय मंडल कार्यालय के साथ किया गया था, जिसे पुनः प्रारम्भ किया गया है और यह 1 अप्रैल 2010 से कार्य करना आरंभ करेगा।

प्रकाशन

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के अधिकारियों, जिन्होंने पुरातत्व के किसी क्षेत्र में अन्वेषण, उत्खनन, वास्तुकला सर्वेक्षण, संरक्षण, पुरालेखशास्त्र, मुद्राशास्त्र, कला में तथा इसके कार्यकलापों के दायरे में आने वाले अनुसंधान के क्षेत्र में संबंधित पहलुओं जैसे क्षेत्रीय कार्य या अनुसंधान कार्य किए हैं, द्वारा प्राथमिक तौर पर तैयार की गई तकनीकी रिपोर्टों का प्रकाशन एएसआई द्वारा किया जा रहा है।

समीक्षाधीन अवधि के दौरान निम्नलिखित प्रकाशन निकाले गए या मुद्रण के लिए तैयार किए गए:

शैक्षिक

(i) **भारतीय पुरातत्व–एक समीक्षा** : वर्ष 2002–03 का अंक प्रकाशित हो गया है तथा वर्ष 2003–04 तथा 2004–05 के अंक प्रेस में हैं।

(ii) **संस्मरण** : इस क्रम में तरखानवाला–डेरा तथा चक–86 (2003–04) तथा बेकल किले में हुए उत्खनन कार्य का प्रकाशन किया जा चुका है तथा कालीबंगन, द हड़प्पन (1960–1961) भाग–1, उदयगिरी 2001–03 और अंटीचक के अंक प्रेस में हैं।

सूचनात्मक

(i) **विश्व विरासत श्रृंखला के अंतर्गत मार्गदर्शी पुस्तकें**: पट्टाडाकेल, आगरा किला, भीमबेटका और चंपानेर–पावागढ़ का प्रकाशन किया गया है और ताजमहल प्रेस में है।

(ii) **मार्गदर्शक पुस्तिका (डीलक्स संस्करण)** : हरियाणा के स्मारकों और स्थलों को प्रकाशित किया गया है और हिन्दी संस्करण प्रेस में है।

(iii) **विवरणिका** : भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण और राष्ट्रीय संस्कृति कोश (हिन्दी) और ता–प्रोहम (अंग्रेजी, फ्रेंच, कोरियन और जापानी) प्रकाशित किए गए हैं।

(iv) **विशेष प्रकाशन** : भारत के स्मारक (हिन्दी) प्रेस में हैं।

(v) भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ने दिल्ली के स्मारकों, तोराना, भारत के महलों, भारत के किलों और केलीग्राफी पर कॉफी टेबल के कुछ प्रकाशन लाने का प्रयास भी किया है।

(vi) एएसआई के मण्डल और शाखा कार्यालयों ने वर्तमान पुरातत्व खोजों, अन्वेषणों, उत्खननों और केन्द्रीय संरक्षित स्मारकों के संरक्षण पर **पुस्तिकाएं / फोल्डरों** का प्रकाशन मुफ्त वितरण के लिए किया है।

सांस्कृतिक जागरूकता कार्यक्रम

एएसआई देश भर में अपने विभिन्न मण्डलों और शाखाओं के जरिए विख्यात विद्वानों द्वारा स्लाइड शो / वृत्तचित्रों / व्याख्यानों सहित स्थलों में सांस्कृतिक कार्यक्रमों की व्यवस्था करने के अलावा जनता विशेषकर युवाओं में जागरुकता का प्रचार–प्रसार करने के लिए कार्यशालाओं, फोटो प्रदर्शनियों, निबंध / चित्रकला / प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताओं, स्मारकों / स्थलों के दौरों का आयोजन करके विश्व विरासत दिवस (18 अप्रैल); संग्रहालय दिवस (18 मई); स्वतंत्रता दिवस (15 अगस्त), गांधी जयंती (2 अक्तूबर) और विश्व विरासत सप्ताह (19 से 25 नवम्बर) मनाता है।

पुरावेशष

एएटी अधिनियम, 1972 की धारा 24 के तहत पूरे भारत में वर्ष 2009–2010 के दौरान 23 मामलों में पुरावेशष की जांच की गई थी।

वर्ष 2009 के दौरान विदेशों में प्रदर्शनी के लिए

8 अस्थायी निर्यात परमिट जारी किए गए थे।

एएटी अधिनियम, 1972 में संशोधन मौजूदा प्रावधानों को और अधिक कठोर बनाने के लिए समीक्षाधीन है।

सांस्कृतिक आदान–प्रदान कार्यक्रम और विदेश प्रशिक्षण

- श्री पंकज तिवारी, सहायक पुरातत्व रसायन विज्ञानी, एएसआई, विज्ञान शाखा, आगरा ने दक्षिण कोरिया में 11.5.2009 से 7.6.2009 तक 'संरक्षण विज्ञान के एशियाई सहयोग कार्यक्रम (एसीपीसीएस) 2009' नामक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में भाग लिया।

- एसएसआई में दो सदस्यों के एक प्रतिनिधि मंडल अर्थात् श्री एन.के. पाठक, उप अधीक्षण पुरातत्ववेत्ता और श्री बी.आर. मांगीराज, उप अधीक्षण पुरातत्व रसायन विज्ञानी को भारत–साइप्रस सांस्कृतिक आदान–प्रदान कार्यक्रम (2007–2010) के अंतर्गत 1.3.2010 से 7.3.2010 तक साइप्रस भेजा गया था।

विज्ञान शाखा

एएसआई की विज्ञान शाखा जिसे 1917 में प्रारम्भ किया गया था मुख्य रूप से केंद्रीय रूप से संरक्षित स्मारकों, पुरातत्व स्थलों, उत्खनित वस्तुओं और देश के संग्रहालय भंडार के वैज्ञानिक संरक्षण और उपचार के लिए उत्तरदायी है। रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान प्रयोगशालाओं और विज्ञान शाखा के क्षेत्र कार्यालयों द्वारा किए गए संरक्षण और वैज्ञानिक कार्यकलाप संक्षेप में नीचे दिए गए हैं

संरक्षण क्षेत्र कार्यकलाप

क) स्मारकों का संरक्षण उपचार (सफाई, समेकन और परिरक्षण) : वर्ष 2009–10 के दौरान (जनवरी, 2009 से दिसम्बर 2009 तक) संरक्षण उपचार किए गए एएसआई के राज्यवार संरक्षित स्मारक इस प्रकार हैं :

क्र. सं.	राज्य का नाम	स्मारकों की संख्या
1.	आंध्र प्रदेश	9
2.	असम	6
3.	बिहार	4
4.	दिल्ली	11
5.	गोवा	2
6.	गुजरात	14
7.	हिमाचल प्रदेश	5
8.	हरियाणा	2
9.	कर्नाटक	5
10.	मध्य प्रदेश	12
11.	महाराष्ट्र	8
12.	उड़ीसा	6
13.	राजस्थान	11
14.	पुदुचेरी	1
15.	पंजाब	3
16.	तमिलनाडु	12
17.	उत्तर प्रदेश	9

ख) राज्य सरकार के संरक्षणाधीन स्मारकों का संरक्षण उपचार

रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान संरक्षण उपचार किए गए विभिन्न राज्य सरकारों के संरक्षित स्मारकों के नाम नीचे दिए गए हैं :

किला मुबारक, पटियाला, पंजाब, क्वीन विक्टोरिया मेमोरियल हॉल, कोलकाता, पश्चिम बंगाल, मैक–मुरिडो भवन, अंजार, गुजरात, शांति निकेतन, पश्चिम बंगाल के भित्ति चित्र।

ग) संग्रहालय के संग्रह, उत्खनित वस्तुओं और अभिलेखीय सामग्री का संरक्षण उपचार और परिरक्षण

एस.ए, सी.ए.सी. अनुभाग, पुराना किला, नई दिल्ली से प्राप्त हुई निम्नलिखित अरबी/ फारसी की पांडुलिपियों का संरक्षण और परिरक्षण किया गया:–

(i) (एसीसी सं. 241), आकार 22.0 x 16.0 सेंमी., कुल 450 पृष्ठ।

(ii) (एसीसी सं. 281), आकार 21.6 x 16.0 सेंमी., कुल 225 पृष्ठ।

(iii) (एसीसी सं. 291), आकार 31.0 x 22.50 सेंमी, कुल 172 पृष्ठ।

(iv) (एसीसी सं. 278), आकार 27.6 x 18.2 सेंमी., कुल 430 पृष्ठ।

(v) (एसीसी सं. 287), 22.5 x 15.0 सेंमी., कुल 996 पृष्ठ।

(vi) मुगल काल के शाह आलम, मजाद–उद–दौला की सनद, आकार 37.7 x 27.6

सेंमी., (एसीसी सं. 62), हिदायतुल्ला द्वारा जारी शाहजहॉ के 27वें शासन वर्ष की सनद, आकार 39.8 x 26.5 सेंमी., (एसीसी सं. 63) और ताज संग्रहालय, ताजमहल परिसर, आगरा से प्राप्त शाहजहॉ की शाही मुहर और दिनांकित हस्ताक्षर सहित चहल मजलिस आकार 52.6 x 15.0 सेंमी. (एसीसी सं. 59सी) के पृष्ठों जैसे ऐतिहासिक दस्तावेजों का संरक्षण और परिरक्षण।

(vii) ताज संग्रहालय, ताजमहल परिसर, आगरा से प्राप्त मुमताज महल की संक्षिप्त आत्मकथा और ताजमहल के निर्माण को व्याख्यायित करने वाली पांडुलिपि सन 1878, आकार 20.4 x 15.2 सेंमी. (एसीसी सं. 60) के 92 पृष्ठों का संरक्षण और परिरक्षण।

(viii) अधीक्षण पुरातत्वविद, सीएसी अनुभाग, पुराना किला, नई दिल्ली से प्राप्त हुई 7 काष्ठ, 1 पोर्सलिन और 1 चमड़े की वस्तुओं का संरक्षण उपचार।

2. वैज्ञानिक / प्रयोगशाला कार्यकलापः

क. निदेशक (विज्ञान) देहरादून कार्यालय की प्रयोगशालाएं

1. जल विकर्षक पदार्थों के कार्य निष्पादन का मूल्यांकन करने के लिए जलांतक हेतु "जल विकर्षक उत्पादों की दक्षता का मूल्यांकन" संबंधी वैज्ञानिक अनुसंधान परियोजना के अंतर्गत विभिन्न प्रकार की सामग्रियों पर पुरातत्वीय दृष्टि से कार्य चल रहा है।
2. उत्खनन स्थलों (महा स्तूप और अवशेष), कनगनहल्ली (सानाती), चित्तपुर, जिला गुलबर्गा, कर्नाटक से लिए गए भवन सामग्री नमूनों की रासायनिक विशेषता का वैज्ञानिक अध्ययन कराया गया था।
3. सी.ए.सी. खण्ड, पुराना किला, नई दिल्ली की प्रयोगशाला में संरक्षित लकड़ी के संदूक से लिए गए धातु, रंगद्रव्य, परत के नमूनों का रासायनिक विश्लेषण किया गया था ताकि इसके निर्माण में प्रयुक्त सामग्रियों का पता लगाया जा सके।
4. जंतर–मंतर, दिल्ली के चूना पलस्तर के नमूनों का वैज्ञानिक अध्ययन कराया गया था।
5. उत्खनन शाखा पुराना किला दिल्ली से प्राप्त भारद्वाज आश्रम, इलाहाबाद से लिए गए लोहे और तांबे के नमूनों का वैज्ञानिक अध्ययन किया गया था।
6. पीतलखोरा, महाराष्ट्र और पुराना गोवा स्मारकों से लिए गए प्रस्तर नमूनों की विशेषता का पता लगाने के लिए वैज्ञानिक अध्ययन कराया गया था।
7. महाकाली मंदिर, जोगेश्वरी और कांदीवाडी गुफाओं, नाग्गुम्फा मुंबई से प्रस्तर नमूनों का वैज्ञानिक अध्ययन कराया गया था।
8. धलेवान, जिला मंसा, पंजाब से उत्खनन से प्राप्त मृदभाण्डों के नमूनों का वैज्ञानिक अध्ययन कराया गया था।
9. सूर्य मंदिर, कोणार्क और पुरी से लिए गए प्रस्तर नमूनों का रासायनिक विश्लेषण कार्य प्रारंभ किया गया था।
10. चंडीगढ़ क्षेत्र से प्राप्त 3 दक्षिणी सराय की चमकीली टाइलों के नमूनों का सूक्ष्म अध्ययन कराया गया था।

ख. वायु प्रदूषण निगरानी केन्द्र, ताजमहल, आगराः

वायु प्रदूषण निगरानी केन्द्र, ताजमहल, आगरा ने स्मारकों पर वायु प्रदूषकों के संभावित प्रभाव का अध्ययन करने के लिए ताजमहल के आसपास विद्यमान वायु प्रदूषक–तत्वों की निगरानी करना जारी रखा और तदनुसार संरक्षण उपाय किए। निम्नलिखित पैमाइश नियमित रूप से की जाती है :

(i) एसओ2 और एनओ2 संकेन्द्रण मापना

(ii) सस्पेंडेड पार्टिकुलेट मैटर मापना

(iii) धूल गिरने की दर मापना

(iv) सल्फेशन दर मापना

(v) वायु की गति और दिशा मापना

ग. प्रस्तर संरक्षण प्रयोगशाला, आगरा किला, आगरा

इसके अलावा, इस प्रयोगशाला द्वारा आगरा किले के लाल बलुआ पत्थर और नए लाल बलुआ पत्थर को लगाने से पहले और बाद में मजबूती की दृष्टि से विभिन्न प्रस्तर नमूनों का शिलालेख विश्लेषण भी प्रारंभ किया गया है।

घ. क्षेत्रीय प्रयोगशाला, अजंताः

अजंता स्थित क्षेत्रीय प्रयोगशाला द्वारा तापमान और

सापेक्ष आर्द्रता का प्रतिदिन रिकार्ड रखा जा रहा है ताकि गुफाओं की चित्रित सतहों पर उपर्युक्त मानदण्डों के प्रभाव का अध्ययन किया जा सके। इससे अंततः भित्तिचित्रों की सुरक्षा और संरक्षण के लिए आवश्यक उपाय करने की योजना बनाने में मदद मिलती है। भित्तिचित्रों के कमजोर चित्रित पलस्तर को मजबूत बनाने जैसे उपचार करने पर बल दिया जा रहा है।

ड. वायु गुणवत्ता निगरानी केन्द्र, चारमीनार, हैदराबादः

चारमीनार में और उसके आसपास क्षेत्र में वाहन प्रदूषण से वायु में मौजूद कणों की निगरानी करने और संरक्षित स्मारकों के संरक्षण और स्थिरता पर पड़ने वाले उसके प्रभाव का अध्ययन कराया जा रहा है।

3. सहयोगात्मक अध्ययनः

1. अजंता और एलोरा गुफाओं के भित्ति चित्रों का संरक्षण अध्ययन करने तथा चित्रकलाओं के निष्पादन में प्रयुक्त रंगद्रव्य/सामग्रियों तथा अजंता गुफाओं की गुफा सं0 17 में संरक्षण समस्याओं का पता लगाने का विश्लेषण करने के लिए आईसीआर इटली और एएसआई के बीच सहयोग किया गया था।
2. राष्ट्रीय सांस्कृतिक संपत्ति अनुसंधान संस्थान, टोक्यो, जापान तथा भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के बीच अजंता की उत्कृष्ट संस्कृति विरासत के संरक्षण के लिए सफल अनुसंधान कार्यकलापों का संवर्धन करने हेतु संयुक्त अध्ययन कराने और परस्पर सहयोग करने संबंधी कार्रवाई प्रारंभ की गई है।
3. निम्नलिखित क्षेत्रों में विज्ञान शाखा, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, एनआरएलसी, लखनऊ के बीच संयुक्त परियोजनाः
   - (i) विश्व विरासत स्मारकों के जैविक क्षय पर अध्ययन करना
   - (ii) परत चढ़ी सामग्रियों का अध्ययन करना
   - (iii) दरिया दौलत महल, श्रीरंगपटना और बैंगलोर पैलस, बंगलौर, कर्नाटक में चित्रकलाओं की सामग्रियों और तकनीकों की वैज्ञानिक जांच करना।

अन्य महत्वपूर्ण कार्यकलापः

1. अजंता गुफाओं, अजंता; से–कैथेड्रल चर्च, वेल्हा, गोवा; एलोरा गुफाओं, एलोरा; एलिफेंटा गुफाएं, मुंबई; फतेहपुर सीकरी, आगरा; श्री बृहदेश्वर मंदिर, तंजावुर; लाल किला, नई दिल्ली और केवड़ा मस्जिद, पावागढ़ जैसे विश्व विरासत स्थलों में इसरो बैंगलोर से प्राप्त तकनीकी सहायता सहित पर्यावरण मापदण्डों की निगरानी करने के लिए उपग्रह लिंक के साथ स्वचालित मौसम केन्द्र स्थापित किए गए हैं।
2. निदेशक (विज्ञान), एएसआई, देहरादून के कार्यालय द्वारा सागर (गैर–सरकारी संगठन) नई दिल्ली के सहयोग से ''सांस्कृतिक संपत्ति का संरक्षण – चुनौती और अनुभव'' विषय पर एक क्षेत्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया था।
3. निदेशक (विज्ञान) के कार्यालय में 15 अगस्त, 2009 को स्वतंत्रता दिवस – विरासत कार्यक्रम मनाया गया। इस अवसर पर एक फोटो–प्रदर्शनी, भारत के स्मारकों का वैज्ञानिक संरक्षण कार्य तथा स्कूली बच्चों के लिए वार्ता प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था।
4. निदेशक (विज्ञान), एएसआई, देहरादून के कार्यालय में 1–14 सितंबर, 2009 को ''राजभाषा पखवाड़ा'' का आयोजन किया गया था। इस कार्यक्रम के अंतर्गत सरकारी कामकाज में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग पर एक कार्यशाला का आयोजन भी किया गया था।
5. गांधी जयंती (2 अक्तूबर, 2009) के अवसर पर हमारी समृद्ध और विविध सांस्कृतिक विरासत के प्रति आम जनता और स्कूली बच्चों में जागरूकता पैदा करने के उद्देश्य से ''पुरातत्वीय स्मारकों का संरक्षण'' विषय पर एक फोटो–प्रदर्शनी आयोजित की गई थी।
6. निदेशक (विज्ञान), एएसआई, देहरादून के कार्यालय में अधीक्षक पुरातत्वविद्, देहरादून मण्डल, देहरादून के कार्यालय के सहयोग से 19–25 नवंबर, 2009 तक विश्व विरासत सप्ताह मनाया गया था। इस अवसर पर हमारी समृद्ध और विविध सांस्कृतिक विरासत के प्रति आम जनता और स्कूली बच्चों में जागरूकता पैदा करने के उद्देश्य से ''पुरातत्व स्मारकों का संरक्षण'' विषय पर एक फोटो–प्रदर्शनी आयोजित की गई थी। ''सांस्कृतिक विरासतः वर्तमान समय में हमारी भूमिका'' विषय पर विभिन्न ड्राइंग और भाषण प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिसमें विभिन्न स्कूलों और संस्थानों के छात्रों ने भाग लिया था। इस समारोह के दौरान एक विवरणिका और एक पुस्तिका का विमोचन भी किया गया था।

पुरालेख शाखा

पुरालेख शाखा, मैसूर ने वर्ष के दौरान व्यापक पुरालेख सर्वेक्षण करने, संस्कृत और द्रविड़ भाषाओं में प्रकाशन शिलालेखों की प्रतियां बनाने और उनके गूढ़ अर्थों का पता लगाने के कार्य को जारी रखा। पुरालेख शाखा, मैसूर के तकनीकी स्टॉफ ने आंध्र प्रदेश में गुंटूर, नेल्लोर और श्रीकाकुलम जिलों; कर्नाटक में माण्ड्या और बंगलौर जिलों; राजस्थान में टोंक जिला; तमिलनाडु में वेल्लूर, कांचीपुरम, विल्लुपुरम, वेल्लोर, नागापट्टनम, कुड्डालोर, तंजावुर, तिरुचिरापल्ली पुदुकोट्टई और तिरुवारुर जिलों का दौरा किया और 285 शिलालेखों की खोज करके उनकी प्रतियां बनाईं। इनके गूढ़ अर्थ का पता लगाया जा रहा है ताकि इन्हें वर्ष 2009–10 के लिए भारतीय पुरालेख की वार्षिक रिपोर्ट में शामिल किया जा सके। सबसे अद्वितीय खोज भाबुआ (बिहार) में सबसे छोटी अशोक शिला राजाज्ञा नं01, रतनपुरवा है।

चेन्नई क्षेत्रीय कार्यालय के तकनीकी स्टॉफ ने तमिलनाडु के विभिन्न स्थलों का दौरा किया और 156 शिलालेखों की खोज की तथा उनकी प्रतियां बनाईं। इन शिलालेखों के गूढ़ अर्थ का पता लगाया जा रहा है।

लखनऊ क्षेत्रीय कार्यालय ने मध्य प्रदेश और राजस्थान से 44 शिलालेखों की प्रतियां बनाई हैं जिनके गूढ़ अर्थ का पता लगाया जा रहा है।

पुरालेख शाखा (अरबी और फारसी शिलालेख), नागपुर ने वर्ष के दौरान अरबी और फारसी भाषाओं में अपना व्यापक सर्वेक्षण करने, प्रतिलिपि बनाने, गूढ़ अर्थ का पता लगाने और शिलालेखों का प्रकाशन करने के कार्य को जारी रखा। जनवरी 2008 से सितंबर 2008 तक की अवधि के दौरान पुरालेख शाखा, नागपुर द्वारा आंध्र प्रदेश में गुंटूर, कृष्णा और नालगोंडा; तमिलनाडु में कांचीपुरम और वेल्लोर तथा उत्तर प्रदेश में लखनऊ, जौनपुर और बाराबंकी से कुल 48 अरबी, फारसी और उर्दू शिलालेखों की प्रतिलिपियां बनाई गईं थीं।

लालकोट से 150 सिक्कों तथा सिसवानिया से 31 सिक्कों की भी जांच की गई।

प्रागैतिहासिक शाखा, नागपुर

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की प्रागैतिहासिक शाखा, नागपुर ने मिजोरम में सैरंग लुल घाटी, त्वांग नदी की सहायक नदी, जिला लुशई पहाड़ी तथा उसके आसपास के क्षेत्रों में उत्खनन कार्य कराया जहां से उन्हें नवपाषाण काल के तीन औज़ार मिले, जिनमें से दो औज़ार जीवाश्म प्रस्तर से बनी कुल्हाड़ियां हैं और तीसरा औज़ार फसल काटने वाला हैं। इसने मेहघात क्षेत्र, जिला अमरावती, महाराष्ट्र में उत्खनन कार्य भी किए हैं तथा वहां से दो निचले पैलियोलिथिक स्थल और तीन मेसोलिथिक स्थलों की खोज की है। एक दल ने टाटानगर, जिला पश्चिम सिंहभूम, झारखण्ड के निकट चटसिला में निचले पैलियोलिथिक स्थल का दौरा किया तथा स्थल से सामग्री एकत्रित की।

बागवानी शाखा

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की बागवानी शाखा केन्द्रीय संरक्षित स्मारकों में तथा उसके आसपास के भूदृश्य का विकास करने और पर्यावरण का संरक्षण करने के लिए जिम्मेदार है। यह संबंधित स्मारक की शैली, आयु और प्रकृति के अनुसार उद्यान का संरक्षण करने में प्रमुख भूमिका निभाता है तथा स्थल की मूल विशेषता को बनाए रखने के लिए समय के अनुकूल विशिष्ट फूल लगाता है। इसने सभी 28 राज्यों और 7 संघ शासित क्षेत्रों में अपने कार्यकलापों का विस्तार किया है। स्मारकों (विश्व विरासत स्मारक) के आसपास 364 उद्यान हैं जिनमें 2015 एकड़ भूमि शामिल है।

बागवानी शाखा के व्यक्तिगत प्रभागों द्वारा वर्ष 2009–10 के दौरान शुरू किए गए उद्यान/भूदृश्य कार्यों का ब्यौरा इस प्रकार हैः

उद्यान प्रभाग संख्या –I, आगरा

इसने उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, उत्तरांचल तथा महाराष्ट्र के राज्यों के केंद्रीय रूप से संरक्षित स्मारकों व स्थलों के आसपास की 552.93 एकड़ भूमि में फैले 85 उद्यानों के विकास एवं रख–रखाव का कार्य किया। उसमें आगरा के फतेहपुर सीकरी के डाक बंगले के पीछे के उद्यान व खान–ए–आलम पौधशाला; श्रावस्ती के सहेत उद्यान; मेरठ जिले की सरधना समाधि; लखनऊ रेसिडेंसी का बढ़ते कदम क्षेत्र; उत्तर प्रदेश के मथुरा के जयसिंहपुरा टीला व गोसाना टीला; कोशान महल, चंदेरी; नवीन संग्रहालय भवन क्षेत्र, चंदेरी; होशंगशाह मकबरा, रूपमती पैविलियन तथा बाज बहादुर महल, पडावली, मांडू; पडावली, जिला मोरेना; सॉची स्तूप, सॅाची, मध्य प्रदेश; उत्तराखंड स्थित हरिद्वार जिले का रूड़की का ब्रिटिश सिमेट्री; महाराष्ट्र के दौलताबाद किले का कचेरी बावली उद्यान; गुफा संख्या 16, एलोरा गुफा उद्यान, एलोरा; बीबी का मकबरा उद्यान, औरंगाबाद; तथा अजंता गुफा के उद्यान शामिल थे।

उद्यान प्रभाग संख्या II, नई दिल्ली

इसने दिल्ली, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा,

पंजाब, गुजरात, जम्मू एवं कश्मीर तथा दमन राज्यों के केंद्रीय रूप से संरक्षित स्मारकों व स्थलों के आसपास की 619 एकड़ भूमि में फैले 125 उद्यानों में विकास एवं रख–रखाव का कार्य किया। इसने एक मीनार वाली मस्जिद, पावागढ़, चंपानेर, जिला पंचमहल; सिकंदर शाह का मकबरा, हलोल, जिला पंचशील; शास्त्रलिंग तालाब, अनावदा तथा शीतला माता मंदिर, पाटन, चंपानेर, हलोल; गुजरात; शाहजहाँ की बावली, मेहम, जिला रोहतक, हरियाणा; उत्कीर्ण आलेख वाले घाट, पैवेलियन तथा तोरण, नव चौकी, राजसमंद; महल बादशाही, पुष्कर, अजमेर, राजस्थान; प्राचीन स्थल, रोपड़, जिला रूपनगर, पंजाब; मूर्तियों के साथ प्रस्तर उत्कीर्ण मंदिर मसरूर, कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश; नई दिल्ली के पंचशील पार्क में सीरी फोर्ट की दीवार वाले भाग के उद्यानों का विकास किया।

उद्यान प्रभाग संख्या III , मैसूर

इसने आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु, गोवा व केरल राज्यों के केंद्रीय रूप से संरक्षित स्मारकों व स्थलों के आसपास की 545 एकड़ भूमि में फैले 102 उद्यानों के विकास एवं रख–रखाव का कार्य किया। इसने लोअर फोर्ट, चंद्रगिरि, जिला चित्तूर; बौद्ध स्तूप तथा बौद्ध अवशेष संग्रहालय उद्यान, अमरावती तथा बौद्ध–अवशेष भट्टिप्रोलु, जिला गुंटूर; मंदिर समूह हेमावती, रामलिंगेश्वर स्वामी मंदिर, ताड़िपत्री तथा वीरभद्र स्वामी मंदिर, लेपाक्षी, जिला अनंतपुर; भीमेश्वर स्वामी मंदिर, द्रक्षराम, जिला पूर्व गोदावरी; बौद्ध अवशेष शंकरम, जिला विशाखापट्टनम; राम लिंगेश्वर स्वामी मंदिर, सतियावेल, जिला प्रकाशम; श्री रामप्पा मंदिर पालमपेट, जिला वारंगल; आंध्र प्रदेश; सी कैथेड्रल चर्च, सैंट कैथरीन, वेल्डा गोवा; सफा मस्जिद, पुंडा; गोवा; गोल गुंबद, जिला बीजापुर तथा थॉमस इन्मैन्स डंजियन, गुंबज, प्राचीन महल स्थल, नारायणस्वामी मंदिर तथा डी.डी. बाग, श्रीरंगपट्टन जिला मांड्या; बोग नंदेश्वर मंदिर, नंदी, जिला चिक्कबल्लापुर; श्री वीरनारायण स्वामी मंदिर बेलावडी जिला हासन; लक्ष्मीकांत मंदिर, मुल्लूर, जिला मैसूर; ताराबासप्पा मंदिर, ऐहोल, जिला बगलकोट; धकनी ईदगाह, जलमंदिर तथा सर्वेक्षण संख्या 10, जिला पालक्काड; चेल्लिचेरी किला, तलासेरी, जिला कन्नूर, केरल; महाबलीपुरम, जिला कांचिपुरम; मोवर कोविल, कोडुंबालुचैतिराम, जिला पुदुक्कोट्टै; वेल्लोर किला, जिला वेल्लोर; वेंकटराम स्वामी मंदिर, गिंजी किला, गिंजी, जिला विल्लुपुरम, तमिलनाडु के उद्यानों के विकास का कार्य सम्पन्न किया।

उद्यान प्रभाग संख्या IV, भुवनेश्वर

इसने ओडिशा, पश्चिम बंगाल, बिहार, झारखंड, छत्तीसगढ, असम तथा सिक्किम सहित उत्तर–पूर्व के राज्यों के केंद्रीय रूप से संरक्षित स्मारकों व स्थलों के आसपास की 345 एकड़ भूमि में फैले 87 उद्यानों के विकास एवं रख–रखाव का कार्य किया। इसने शिव मंदिर खरडा; अजिमुन्निसा बेगम गुंबद, मुर्शिदाबाद, डुप्ले पैलेस, चंदरनगर, पीली मस्जिद, माहिमपुर, मुर्शिदाबाद, पश्चिम बंगाल; पवित्र अवशेष स्तूप उद्यान, वैशाली, बिहार; चतुर्दासदेवता मंदिर तथा मंदिर समूह गुणावती, राधा किशोरपुर तथा भुवनेश्वरी मंदिर, दक्षिण त्रिपुरा; प्राचीन अवशेष, बॉक्सनगर, पश्चिम त्रिपुरा; लक्ष्मण मंदिर, सिरपुर तथा शिव मंदिर संख्या–4, महासमुंद, भीमकेचक, मल्हार, छत्तीसगढ़ के उद्यानों का विकास किया।

पुरातत्व संस्थान

पुरातत्व संस्थान की स्थापना 1959 में की गई थी तथा उस समय से यह भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के तत्वाधान में कार्य कर रहा है। संस्थान के मुख्य उद्देश्य इस प्रकार हैं:–

- पुरातत्व विज्ञान के क्षेत्र में शिक्षा व प्रशिक्षण प्रदान करना तथा पुरातत्व विज्ञान में पीजीडीए डिप्लोमा प्रदान करना।
- संग्रहालय विज्ञान, संरक्षण, कला इतिहास, पुरालेखविज्ञान, मुद्रा शास्त्र, विरासत प्रबंधन, स्मारक परिरक्षण व अन्य संबंधित विषयों के लिए लधु अवधि पाठ्यक्रम आयोजित करना।
- समुचित ढंग से पुरातत्व विज्ञान पर सेमिनार/कार्यशालाओं, सम्मेलनों व विशेष व्याख्यानों का आयोजन करना ताकि उन क्षेत्रों से नए क्षेत्र उभर कर सामने आ सकें।

शैक्षिक गतिविधियाँ

विभिन्न विषयों यथा–पुरातत्व के सिद्धांत व उसकी पद्धति, पुरातत्व विज्ञान में विज्ञान का अनुप्रयोग, प्राक्इतिहास, प्रोटो हिस्ट्री, ऐतिहासिक पुरातत्व विज्ञान, कला एवं मूर्तिकला, स्थापत्यकला, पुरालेख विज्ञान, स्मारकों का ढॉचागत संरक्षण, स्मारकों एवं पुरावस्तुओं का रासायनिक संरक्षण, पुरावस्तु विधि पर विशेष व्याख्यानों एवं व्यावहारिक प्रशिक्षण के अलावा नियमित कक्षाएं आयोजित की गईं।

क्षेत्र प्रशिक्षण

- संस्थान अपने पाठ्यक्रम के तहत पीजीडीए के विद्यार्थियों को खोज व उत्खनन में प्रत्येक वर्ष प्रशिक्षण देता है। 2009–2010 सत्र के दौरान प्रथम सेमेस्टर (2009–11 बैच) के सभी विद्यार्थी 16

दिसम्बर, 2009 से 26 फरवरी, 2010 के दौरान मल्हार, जिला बिलासपुर, मध्य प्रदेश में उत्खनन प्रशिक्षण के लिए गए। इसे उत्खनन प्रशाखा, नागपुर द्वारा आयोजित किया गया था। इसके अलावा ड्राइंग करना, सर्वेक्षण करना, फील्ड फोटोग्राफी में भी उन्हें व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया गया।

- उत्खनन प्रशिक्षण के अलावा प्रथम सेमेस्टर (बैच 2009–11) के विद्यार्थियों को खोज अभियान का प्रशिक्षण भी एक सप्ताह के लिए दिया गया।
- दोनों बैचों (2008–10 तथा 2009–11) के विद्यार्थियों को प्राक्इतिहास पर एक सप्ताह के व्यावहारिक प्रशिक्षण के लिए मार्च, 2010 के महीने में होशंगाबाद (म.प्र.) भेजा जाएगा।

अखिल भारतीय अध्ययन भ्रमण

- पीजीडीए पाठ्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों को देश के प्रमुख पुरातात्विक स्मारकों एवं ऐतिहासिक स्थलों पर विरासत के कला व स्थापत्य के अध्ययन के लिए भेजा जाता है। इस सत्र 2009–11 के दौरान तीसरे सेमेस्टर (2009–10 बैच) के विद्यार्थियों ने दिसम्बर 2009 से फरवरी 2010 माह के दौरान अखिल भारतीय अध्ययन भ्रमण पूरा किया।

व्यावहारिक प्रशिक्षण

- चौथे सेमेस्टर (2007–09 का उत्तीर्ण बैच) के विद्यार्थियों ने जुलाई, 2009 माह के दौरान मध्य प्रदेश के सॉची के विश्वदाय स्थल के संरचनात्मक संरक्षण के लिए व्यावहारिक प्रशिक्षण में भाग लिया।
- रासायनिक उपचार, स्मारक के संरक्षण, चारों तरफ की वायु की गुणवत्ता, पाषाण संरक्षण प्रयोगशाला अनुप्रयोगों के बारे में चौथे सेमेस्टर (2007–09 का उत्तीर्ण बैच) के विद्यार्थियों को जून, 2009 के दौरान 15 दिन की अवधि का प्रशिक्षण दिया गया। जुलाई, 2009 माह के दौरान राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली में तीन दिनों के लिए मिनिएचर पेंटिंग तथा पांडुलिपियों के रासायनिक उपचार का प्रशिक्षण दिया गया। अगस्त 2009, के दौरान देहरादून में 15 दिनों के लिए कलावस्तुओं के रासायनिक उपचार एवं परिरक्षण पर भी प्रशिक्षण दिया गया।

विशेष व्याख्यान

संस्थान ने वर्ष के दौरान पीजीडीए व अन्य पाठ्यक्रमों के लिए विशेषज्ञों व प्रख्यात शिक्षाविदों के विशेष व्याख्यानों का आयोजन किया :

- कैंब्रिज विश्वविद्यालय के डॉ मिशेल डी. पेट्राग्लिया द्वारा 24 मार्च, 2009 को ''अर्ली ह्यूमन माइग्रेशन ड्यूरिंग लोअर पैलियोलिथिक एज'' पर।
- डॉ. जी. टी. शिंदे, सेवा निवृत्त निदेशक (पुरातत्व), भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा 18 अप्रैल, 2009 को ''सांस्कृतिक संपदा के संरक्षण के प्रति वैश्विक जागरूकता'' पर।
- प्रो. के. के थपलियाल द्वारा 22 जून, 2009 को 'सील एंड सीलिंग्स : देयर इंपोर्टेंस एंड रीडिंग मेथड्स'' पर।
- डॉ. मालती शेंग्दे, भारतविद्याविद द्वारा 4 मार्च, 2009 को ''इंडस स्क्रिप्ट डिकोडेड'' पर।
- डॉ. गुरिश्वर भट्टाचार्य, भारतविद्याविद व कला इतिहससकार द्वारा 11 मार्च, 2010 को ''रीसेंट डिस्कवरीज एट स्मैट्स इन गंधारा रीजन'' पर।

खोज अभियानों व उत्खनन में क्षेत्र प्रशिक्षण, प्रख्यात अध्येताओं के व्याख्यानों व अन्य रूटीन शैक्षिक गतिविधियों के अलावा संस्थान ने विद्यार्थियों तथा ए.एस. आई और अन्य संगठनों/संस्थानों के अधिकारियों के लिए कई कार्यशाला–सह–प्रशिक्षण कार्यक्रम तथा सेवारत पाठ्यक्रम चलाए। इसके अलावा निम्नानुसार महत्वपूर्ण कार्यशाला–सह–प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित किए गए :

1. 7 अप्रैल, 2009 को परशियन, टिमुरिड तथा मुगल स्थापत्य के संरक्षण व प्रबंधन पर इटिनरेंट वर्कशॉप।
2. 9 मई, 2009 को हुमायूँ के मकबरे के संरचनात्मक परिरक्षण पर कार्यशाला।
3. 22 से 27 जून, 2009 के दौरान पुरालेखशास्त्र व मुद्राशास्त्र पर पुनश्चर्या पाठ्यक्रम सह प्रशिक्षण कार्यशाला।

परीक्षाएं

- सितम्बर, 2009 के दौरान द्वितीय तथा चतुर्थ सेमेस्टर की परीक्षाएं आयोजित की गईं।
- मार्च, 2010 के दौरान प्रथम एवं तृतीय सेमेस्टर की परीक्षाएं आयोजित होनी हैं।

विश्वदाय स्कंध

- युनेस्को की विश्वदाय सूची में भारत से 27 स्थल (22 सांस्कृतिक व 5 नैसर्गिक) उत्कीर्णित किए गए हैं।
- युनेस्को की अनंतिम सूची में भारत से शांतिनिकेनत,

भारत के सिल्क रोड स्थल, भितरकनिका परिरक्षण क्षेत्र, वृहत् हिमालयी राष्ट्रीय उद्यान, नेवरा घाटी राष्ट्रीय उद्यान को शामिल किया गया है।

- यूनेस्को की विश्वदाय सूची में उत्कीर्णित किए जाने के लिए भारत के स्थाई प्रतिनिधि के माध्यम से सांस्कृतिक श्रेणी के तहत शांतिनिकेतन (पश्चिम बंगाल) के नोमिनेशन डोजियर को तथा नैसर्गिक श्रेणी के तहत भारत के पश्चिमी घाटों के सीरियल नोमिनेशन को भेजा गया।
- दिल्ली तथा आगरा में 6–12 अप्रैल, 2009 के बीच परशियन, तिमूरिद व मुगल स्थापत्य के संरक्षण व प्रबंधन पर कार्यशाला।
- बंगलादेश के डॉ शरीफ शम्स इमाम ने 29 सितम्बर से 4 अक्टूबर, 2009 तक भारत का दौरा किया तथा जयपुर स्थित जंतर–मंतर का इकोमॉस विशेषज्ञ के तौर पर विश्वदाय सूची में शामिल किए जाने के लिए मूल्यांकन किया।
- नई दिल्ली के कुतुब परिसर में 11 नवम्बर, 2009 को यूनेस्को–भारत के सांस्कृतिक सहयोग के 64 वर्ष का उत्सव मनाया गया।
- सचिव (संस्कृति) के नेतृत्व में एक भारतीय प्रतिनिधिमंडल ने 22 से 30 जून, 2009 के बीच सेविले, स्पेन में आयोजित हुई विश्वदाय समिति के 33 वें सत्र में भाग लिया तथा 2012 में विश्वदाय समिति के 36वें सत्र की बैठक, जो कन्वेंशन की 50 वीं वर्षगांठ तथा भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की 150 वीं वर्षगांठ एवं 2011 में रवीन्द्र नाथ टैगोर की 150 वीं वर्षगांठ के जारी उत्सवों से भी मेल खाता है, को अयोजित करने की पेशकश की।
- भारत में 2012 में विश्वदाय समिति की बैठक को आयोजित किए जाने की पेशकश की अनुवर्ती कार्रवाई के तौर पर निदेशक (परिरक्षण व विश्वदाय) ए एस आई के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल ने पेरिस में समिति की बैठक आयोजित किए जाने की पद्धति, तैयारियों, आयोजन आदि के संबंध में विचार–विमर्श करने के लिए विश्वदाय समिति का दौरा किया।
- मध्य व दक्षिण एशियाई देशो की उपक्षेत्रीय आवधिक कार्यशाला का देहरादून में 2 से 5 जून, 2010 के दौरान आयोजन होना है।

सिकंदर शाह का मकबरा, हलोल, जिला पंचशील

2.2
संग्रहालय

चार भुजाओं वाले गणेश

2.2.1

राष्ट्रीय संग्रहालय

प्रारंभ में 1949 में स्थापित राष्ट्रीय संग्रहालय को 1960 में इसके वर्तमान स्थान पर अंतरित किया गया था। यह संस्कृति मंत्रालय के अधीनस्थ कार्यालय के रूप में कार्य करता है। संप्रति इसके संकलन में मानव अस्तित्व के प्रागैतिहासिक काल से अब तक की 2.06 लाख से अधिक उत्कृष्ट कलाकृतियां हैं।

2009–2010 के दौरान संग्रहालय अनेक अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनियाँ आयोजित कीं जैसे कि 29 जनवरी से 26 अप्रैल, 2009 तक ***गार्डन एंड कॉसमोस : द रॉयल आर्ट ऑफ जोधपुर*** जिसमें ए.एम.सैकलर गैलरी, वॉशिंगटन डीसी से सिएटल आर्ट म्यूज़ियम, संयुक्त राज्य अमेरिका में अंतरित की गई 57 कलाकृतियाँ थीं, ब्रिटिश म्यूजियम, लंदन में 28 मई से 11 अक्तूबर, 2009 तक, न्यू साउथ वेल्स, सिडनी, ऑस्ट्रेलिया की आर्ट गैलरी में 29 अक्तूबर, 2009 से 26 जनवरी, 2010 तक, रिएटबर्ग म्यूज़ियम, स्विटज़रलैंड में ***शिव नटराज : द कॉस्मिक डांसर,*** नामक प्रदर्शनी 1 मार्च, 2009 तक अवलोकनार्थ रही जिसमें 11 कलाकृतियाँ थीं, विक्टोरिया एंड एल्बर्ट म्यूजियम, लंदन में ***महाराजा : द स्प्लेंडर ऑफ, इंडियाज रॉयल कोर्ट्स*** नामक प्रदर्शनी 10 अक्तूबर, 2009 से 17 जनवरी, 2010 तक अवलोकनार्थ रही जिसमें 61 कलाकृतियाँ थीं, ईऑर ऑफ इंडिया इन रशिया के तत्वावधान में स्टेट हिस्टॉरिकल म्यूजियम, मॉस्को, रूस में ***डिवाइन एंड मॉर्टल्स*** नामक प्रदर्शनी 8 दिसम्बर, 2009 से 15 फरवरी, 2010 तक जनसामान्य के अवलोकनार्थ रही जिसमें 111 कलाकृतियाँ (जिनमें 80 लघुचित्र, 28 प्रस्तर और कांस्य प्रतिमाएं और 3 काष्ठ प्रतिमाएं) थीं।

आउटरीच कार्यक्रम के भाग के रूप में संग्रहालय ने राष्ट्रीय संग्रहालय में वीथिकाओं के निःशुल्क गाइडिड टूर, प्रेक्षागृह में फिल्म शो एवं स्कूल तथा कॉलेज के विद्यार्थियों के लिए राष्ट्रीय संग्रहालय की वीथिकाओं में विशेष शैक्षिक भ्रमण की व्यवस्था की। दिल्ली नगर निगम/नई दिल्ली नगरपालिका विद्यालयों के विद्यार्थियों तथा जे.जे. कॉलोनियों के पिछड़े वर्ग के लिए निःशुल्क बस सुविधाएं भी उपलब्ध कराईं। सांस्कृतिक स्त्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित स्कूली शिक्षकों के लिए भारतीय कला पर वीथि वार्ताओं का आयोजन किया। कला केन्द्र, जम्मू में 17 फरवरी, 2009 को मुगल और डेक्कन चित्रों पर विशेष छायाचित्रात्मक प्रदर्शन का आयोजन किया गया। राष्ट्रीय संग्रहालय द्वारा जवाहर नवोदय विद्यालयों को उनके विद्यालयों में म्यूज़ियम कॉर्नर स्थापित करने में सहयोग दिया जा रहा है। संग्रहालय द्वारा कला केन्द्र, जम्मू में 15 फरवरी, 2009 को विद्यार्थियों के लिए ऑन–द–स्पॉट पेंटिंग प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। परमपावन ताइ सितु रिनपोचे द्वारा 10 फरवरी, 2009 को एटर्नल वैल्यूज ऑफ डिवोशन एंड कम्पैशन पर विशेष व्याख्यान दिया गया। संग्रहालय द्वारा 10 से 25 जून, 2009 तक स्कूली बच्चों के लिए ग्रीष्मावकाश कार्यक्रम के रूप में कला और शिल्प पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। नेशनल म्यूजियम ऑफ अफगानिस्तान, काबुल के पांच संग्रहाध्यक्षों के लिए 29 दिसम्बर, 2009 से 11 जनवरी, 2010 तक संग्रहालय–विज्ञान में प्रशिक्षण की व्यवस्था की गई।

राष्ट्रीय संग्रहालय को राष्ट्रपति भवन सचिवालय, नई दिल्ली से महात्मा गांधी से संबंधित नौ स्मरणीय वस्तुएं प्राप्त हुईं। ये वस्तुएं महामहिम राष्ट्रपति को

उनकी यूनाइटेड किंगडम की यात्रा के दौरान भेंटस्वरूप दी गई थीं। राष्ट्रीय संग्रहालय में 14 से 19 सितम्बर, 2009 तक हिन्दी सप्ताह, 3 से 7 नवंबर, 2009 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह और 18 दिसंबर, 2009 को स्थापना दिवस मनाया गया।

राष्ट्रीय संग्रहालय, राष्ट्रीय प्रदर्शनियों के साथ–साथ विश्वभर में अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनियों का आयोजन करता है।

रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान 31 दिसम्बर, 2009 तक कुल 2,12,082 दर्शकों ने राष्ट्रीय संग्रहालय का भ्रमण किया जिनमें भारतीय और विदेशी दर्शक थे। 4 पासपोर्ट आकार के फोटो सहित 1384 श्वेत–श्याम प्रिंट और 7548 कलर प्रिंट तैयार किए गए। 1362 प्रतिकृतियों का परिष्करण किया गया और 1223 प्रतिकृतियों पर रंग किया गया। संग्रहालय के पुस्तकालय संग्रह में 58,325 पुस्तकें हैं। लगभग 14,270 और 234 पुस्तकों को क्रमशः अवाप्त, वर्गीकृत और सूचीबद्ध किया गया।

समीक्षाधीन अवधि के दौरान संग्रहालय ने दशावतार और बारामासा पर पोर्टफोलियो का प्रकाशन किया और भारतीय लघुचित्र और राजस्थानी लघुचित्र पर पोर्टफोलियो का पुनर्मुद्रण करवाया।

संरक्षण कार्यकलाप कार्यकलापों के अंतर्गत संग्रहालय ने 'राम दरबार' नामक विशाल तंजौर चित्र सहित प्रयोगशाला, वीथिकाओं, भंडार, संग्रहालय के उद्यान और रोटॅन्डा की लगभग 450 कलाकृतियों का शोधन और परिरक्षण किया। संग्रहालय भंडार की 248 कलाकृतियों का निवारणात्मक उपचार किया गया। कुमाऊँ रेजीमेंट संग्रहालय, उत्तरांचल के 55 वस्त्रों/ध्वजों का रासायनिक उपचार किया गया। सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय और मंत्रिमंडल सचिवालय से प्राप्त एक–एक वस्तु का संरक्षण कर उन्हें लौटाया गया।

रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान संग्रहालय ने विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए। 16 नवम्बर, 2009 से 15 फरवरी, 2010 तक चित्रों की देखभाल पर तीन माह की कार्यशाला का आयोजन किया गया। मांग के अनुसार राष्ट्रीय संग्रहालय संस्थान के विद्यार्थियों के लिए शिक्षण और व्यावहारिक प्रदर्शन का आयोजन किया गया। एम.ए. के विद्यार्थियों को संरक्षण विषय पर लघु शोध–प्रबंध तैयार करने के लिए मार्गदर्शन दिया गया। 450 श्वेत–श्याम प्रिंटों का फोटो प्रलेखन किया गया। राष्ट्रीय बाल भवन और संसद भवन के चित्रों का छायाचित्रण भी किया गया। इनके अलावा संग्रहालय ने राष्ट्रीय बाल भवन, नई दिल्ली में एम.एफ. हुसैन के एक बड़े चित्र का शोधन और परिरक्षण, इंदिरा गांधी स्मारक न्यास, नई दिल्ली की संगमरमर की प्रतिमा और अन्य वस्तुओं का संपूर्ण संरक्षण किया और संसद भवन, नई दिल्ली के गलियारे में प्रदर्शित 53 फलकों के संरक्षण का कार्य चल रहा है।

2.2.2

राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय

1954 में स्थापित राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय (एन.जी.एम.ए.) एक विशिष्ट संस्था है, जो भारत में पिछली शताब्दी की ललित कलाओं के विकास–क्रम और उनमें हुए परिवर्तन को दर्शाती है। एनजीएमए का मुख्य उद्देश्य सामान्य रूप से भारतीय लोगों में दृश्य एवं मूर्तिकला के प्रति समझ एवं संवेदना उत्पन्न करना तथा विशेष रूप से समकालीन भारतीय कला के विकास को प्रोत्साहन देना है। एनजीएमए ने 19 जनवरी, 2009 को अपनी नई शाखाओं का उद्घाटन किया जिससे इसका प्रदर्शनी स्थल छः गुना बढ़ गया है। नई दिल्ली के प्रदर्शनी स्थलों के अतिरिक्त, एनजीएमए मुंबई में सर कोवासजी जहांगीर पब्लिक हॉल की कार्यकारी शाखा और बंगलुरु में ''माणिक्यवेलु हवेली'' का रखरखाव भी करता है।

एनजीएमए के कला संग्रह में मुख्यतः खरीदी गई और उपहार स्वरूप प्राप्त 19,815 चित्रकलाएं, मूर्तियां, रेखाचित्रों और तस्वीरों को रखा गया है। कला संग्रह में सन् 1857 ईस्वी से पहले और बाद की कलाकृतियां तथा संपूर्ण भारत और कुछ विदेशी कलाकारों की 1742 कलाकृतियां रखी गई हैं।

रिपोर्ट की अवधि के दौरान प्रयोगशाला में 86 कला कार्यों तथा बंगलुरु शाखा की प्रदर्शनी के लिए राष्ट्रीय संग्रहालय सहित 556 कलाकृतियों का पुनरुद्धार किया गया था। प्रदर्शन और तस्वीर खींचने के लिए 297 कलाकृतियों की सफाई और कंडीशनिंग की गई। दीर्घा द्वारा स्थिति रिपोर्टें तैयार की गईं तथा भावी और पिछली प्रदर्शनियों की 351 कलाकृतियों का पुनः परीक्षण किया गया। इसके अतिरिक्त, दीर्घा के आरक्षित संग्रह में कलाकृतियों की नेमी और नियमित जांच का कार्य भी किया गया था।

प्रदर्शनियां:

मुम्बई एनजीएमए में 2 जून से 6 सितम्बर, 2009 तक ''**सोक मुम्बई इन एन एस्टुअरी**'' नामक एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया था। जयपुर हाउस शाखा में भारतीय कला शिखर सम्मेलन के अवसर पर 22 अगस्त, 2009 से 4 प्रदर्शनियों का आयोजन किया गया:

- i) **इन द सीड ऑफ टाइम**
- ii) **रिद्म्स ऑफ इंडिया : द आर्ट ऑफ नंदलाल बोस**
- iii) **कंपनी पेंटिंग**
- iv) **एनजीएमए संग्रह से अंतरराष्ट्रीय कला** (एनजीएमए के स्थायी संग्रह से संग्रहीत)।

महुआ आर्ट फाउंडेशन तथा एनजीएमए के सहयोग से मालविका सरकारी और प्रो. बी.एन. गोस्वामी द्वारा 10 और 11 सितंबर, 2009 को **एक्सप्लोरिंग ग्रेट टेक्स्ट्स** विषय पर एक कार्यक्रम का आयोजित किया गया था। **इंडियन लाइफ एण्ड लैंड स्केप्स बाय वेस्टर्न आर्टिस्ट्स, ड्रॉइंग्स एण्ड पेंटिंग्स फ्रॉम द वीएण्डए, 1790–1927** नामक एक प्रदर्शनी 27 अक्तूबर–6 दिसम्बर, 2009 के बीच एनजीएमए, नई दिल्ली में आयोजित की गई थी। निमाई घोष द्वारा **''सत्यजीत रॉय फ्रॉम स्क्रिप्ट टू स्क्रीन''** नामक एक चित्र प्रदर्शनी

27 अक्तूबर से 27 नवम्बर 2009 तक बंगलुरु एनजीएमए में प्रदर्शित की गई थी। **साइन्स ऑफ स्क्रीन, क्लोडिया हाकिमः कंटेम्परी कोलम्बियन स्कल्पचर** नामक एक प्रदर्शनी (भारत और कोलम्बिया के बीच कूटनीतिक संबंधों के 50 वर्ष पूरे होने के अवसर पर आयोजित समारोह) 12 से 30 नवम्बर, 2009 के दौरान एनजीएमए की नई शाखा के अस्थायी स्थल पर एक प्रदर्शनी लगाई गई थी। भारत में फ्रांस महोत्सव के उद्घाटन के अवसर पर ''**इनफिनिटली इंडिया**'' नामक प्रदर्शनी में एल्बर्ट कान संग्रह की तस्वीरें: जर्नीज़ टू इंडिया पर एक प्रदर्शनी आयोजित की गई थी। लूइस वूइटॉन द्वारा समर्थित एक प्रदर्शनी का 29 नवम्बर–27 दिसम्बर, 2009 को एनजीएमए दिल्ली की नई शाखा के पहले तल पर आयोजन किया गया था।

कला दीर्घा में छात्रों के लिए प्रत्येक रविवार को रेखाचित्र कला क्लब आयोजित किया गया। छात्रों के लिए एनजीएमए में जून, 2009 में एक **ग्रीष्मकालीन चित्रकला कार्यशाला** का आयोजन किया गया, जिसे आयु के आधार पर तीन वर्गों में विभाजित किया गया था। इस कार्यशाला में 210 छात्रों ने भाग लिया जिन्हें प्रमाण–पत्र प्रदान किए गए थे। छात्रों के लिए जून 2009 माह के दौरान एनजीएमए में लगभग 153 **ग्रीष्मकालीन चित्रकला कार्यशालाओं** का आयोजन किया गया। इन कार्यशालाओं को आयु के आधार पर तीन श्रेणियों में विभाजित किया गया था, जिसमें 210 छात्रों ने भाग लिया और उन्हें प्रमाण–पत्र वितरित किए गए थे। लगभग 153 **भ्रमण सम्पन्न** कराए गए तथा वर्ष के दौरान विभिन्न आयु वर्ग के कुल 7580 छात्र कला संग्रहालय को देखने आए। विदेशी उच्चाधिकारियों, संग्रहालय सोसायटी के मित्र सदस्यों, विदेशी गणमान्य अतिथियों, समकालीन कला में रुचि रखने वाले संस्थानों के दौरों सहित कला एवं कला प्रथाओं पर कला संग्रहालय में नियमित अंतराल पर व्याख्यान एवं सेमिनार का आयोजन किया गया।

एक पूर्ण दिवसीय **अध्यापक व्यावसायिक विकास कार्यशाला** का आयोजन किया गया जिसमें दिल्ली के विभिन्न विद्यालयों से 25 अध्यापकों को आमंत्रित किया गया। इन्हें अपनी कक्षाओं में अध्यापन सहायक वस्तुओं के रूप में संग्रहालय के संग्रहों का उपयोग करने की जानकारी दी गई। इसके परिणामस्वरूप, 2000 से अधिक स्कूली बच्चों को यहां लाया जा सका। एनजीएमए और ब्रिटिश काउंसिल द्वारा संयुक्त रूप से युवाओं के लिए दो दिवसीय गोष्ठी **आर्ट केलाइडोस्कोपः लाइफ थ्रू द विजुअल आर्ट्स** आयोजित की गई थी। विजुअल आर्ट महाविद्यालयों और संस्थानों के 150 से अधिक युवाओं ने इसमें हिस्सा लिया, दूसरे दिन का कार्यक्रम एनजीएमए में आयोजित किया गया था। ये दोनों गतिविधियां वीएण्डए तथा ब्रिटिश काउंसिल के सहयोग से आयोजित की गई थीं।

राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय की एक नई शाखा बंगलुरू में स्थापित की गई है। अप्रैल 2009 से जनवरी 2010 तक यहां आने वाले कुल अतिथियों की संख्या 6792 है, जिसमें 370 विदेशी, 4462 वयस्क और 1896 छात्र/बच्चे थे। वर्ष के दौरान 4 दर्शक समूहों अर्थात् ओवर सीज़ वीमेन्स ऑर्गनाइजेशन, रोटरी क्लब, जयनगर वाईआईओ, वाइव्स क्लब और स्काइ लाइन अपार्टमेंट्स एसोसिएशन ने एनजीएमए बंगलुरू का दौरा किया। इसके अतिरिक्त, दीर्घा में 10 विद्यालय समूहों और 9 महाविद्यालय तथा अन्य संस्थानों ने दौरा किया था। सहायक संग्रहालयाध्यक्ष और कार्यक्रम सहायक के मार्गदर्शन में सभी समूहों को दीर्घा का दौरा कराया गया।

जन सम्पर्क

दीर्घा में प्रायोजक समूहों, भारतीय और विदेशी प्रतिनिधिमंडलों तथा अतिविशिष्ट व्यक्तियों के लिए कला संग्रहालय के दौरों का आयोजन किया गया। इसने स्कूली छात्रों के लिए मार्गदर्शी दौरों का आयोजन किया तथा तस्वीरें खीचने की अनुमति दी गई और शैक्षणिक उद्देश्य के लिए पूरी पारदर्शिता प्रदान की गई। इसने चित्रकलाओं, बधाई पत्रों, पोर्टफोलियो और मगों जैसे अन्य स्मृति–चिह्न वस्तुओं की बिक्री की व्यवस्था की। दीर्घा द्वारा विभिन्न प्रदर्शनियों/कार्यक्रमों के लिए संवाददाता सम्मेलन तथा प्रेस पुनरावलोकन का आयोजन भी किया गया।

वर्ष के दौरान एनजीएमए में लगाई गई प्रदर्शनियों के 1 सूची पत्र और 4 प्रदर्शनियों के पोस्टर प्रकाशित किए गए।

3.5 एकड़ स्थल में फैले ''माणिक्यवेलू हवेली'' नामक एक भवन का अधिग्रहण करके पुनरुद्धार किया गया है। तथापि, वर्तमान वित्तीय वर्ष के दौरान पिछले वित्तीय वर्ष के सिविल और विद्युत से संबंधित कुछ लंबित कार्य पूरे किए जाने की आशा है।

एनजीएमए, नई दिल्ली की एक नई शाखा, जिसमें 3 ब्लॉक शामिल हैं, का निर्माण–कार्य सीपीईडी द्वारा किया जा रहा है। यद्यपि दो ब्लॉक का कार्य बिलकुल पूरा हो गया है और इनका उपयोग किया जा रहा है। तीसरे ब्लॉक का संपूर्ण कार्य मार्च 2010 तक पूरा होने की आशा है।

बंगलुरू में राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय की एक नई शाखा स्थापित की गई है।

2.2.3

भारतीय संग्रहालय

एशिया–प्रशांत क्षेत्र में अपनी तरह की वृहत्तम और प्राचीनतम संस्था, भारतीय संग्रहालय, कोलकाता की स्थापना 1814 ई. में की गई थी। इस संग्रहालय में विज्ञान और प्राकृतिक विज्ञान तथा मानविकी से संबंधित भारतीय तथा गैर–भारतीय दोनों के अनेक दुर्लभ तथा अद्वितीय नमूनों का संग्रह है। इसके छह अनुभाग हैं, जिनके अन्तर्गत सांस्कृतिक और वैज्ञानिक कलावस्तुओं की बाइस वीथियां नामतः–कला, पुरातत्व, मानव–विज्ञान, भू–विज्ञान, प्राणि विज्ञान, एवं आर्थिक वनस्पति विज्ञान हैं। बहुविषयक कार्यकलापों से युक्त इस बहुउद्देश्यीय संस्था का नाम भारत के संविधान की सातवीं अनुसूची में एक राष्ट्रीय महत्व के संस्थान के रूप में शामिल होने के कारण यह राष्ट्र का गौरव है। पुरातत्व, कला और मानव विज्ञान खण्ड न्यासी बोर्ड के अधीन संग्रहालय निदेशालय के नियंत्रणाधीन है जबकि वैज्ञानिक खण्डों नामतः भू–विज्ञान, प्राणि विज्ञान, एवं वनस्पति विज्ञान के कार्यों की देखभाल भारतीय सर्वेक्षण के संबंधित कार्यालयों द्वारा की जाती है।

भारतीय संग्रहालय, कोलकाता के वर्ष 2014–15 में आयोजित किए जाने वाले द्वि–शताब्दी समारोह की रूपरेखा प्रोफेसर बरूण डे की अध्यक्षता में बनाई गई है। केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग (पूर्वी क्षेत्र), कोलकाता को भारतीय संग्रहालय के जीर्णोद्धार तथा स्तरोन्नयन के लिए कार्यनिष्पादन अभिकरण बनाया गया है।

लगभग 30 वर्ष बाद भर्ती नियमों को संशोधित किया जा रहा है और ये अंतिम चरण में हैं। रोस्टर बनाने का कार्य पूरा कर लिया गया है। भारतीय भू–वैज्ञानिक सर्वेक्षण, भारतीय प्राणी विज्ञान सर्वेक्षण और भारतीय वनस्पति विज्ञान सर्वेक्षण से संबंधित समिति की लगभग एक दशक बाद समीक्षा की गई है। भारतीय संग्रहालय में अनेक अस्थायी प्रदर्शनियां आयोजित की गई हैं।

भारतीय संग्रहालय में अनेक अस्थायी प्रदर्शनियाँ आयोजित की गईः

(i) रिदम एंड कलर : जैमिनी राय की पेंटिंग का समारोह

(ii) इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय, भोपाल के सहयोग से भारत की शैल–कला

चित्रकला प्रदर्शनी

(iii) मुखोश : पूर्वी और पूर्वोत्तर भारत के मुखौटे

(iv) संवाद सोसायटी, कोलकाता के सहयोग से वियतनाम में ब्राह्मण मंदिरों और मूर्तिकला की झांकी

(v) विभिन्न काल के सिक्के

(vi) संरक्षित संग्रह से मासिक प्रदर्शनी नियमित रूप से आयोजित की जाती है

कुछ अंतर–राज्य / अंतरा–राज्य प्रदर्शनियां भी आयोजित की गई हैं :

(i) इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय, भोपाल में जैमिनी राय की पेंटिंग की फोटो प्रदर्शनी आयोजित की गई।

(ii) कांडी राज उच्च विद्यालय, मुर्शिदाबाद, पश्चिम बंगाल में जैमिनी राय की पेंटिंग की फोटो प्रदर्शनी आयोजित की गई।

(iii) श्रीमती कला वीथिका, कोलकाता में भारतीय संग्रहालय के सहयोग से 'आमरा शिल्पी' ने बच्चों द्वारा बनाई गई पेंटिंग की प्रदर्शनी आयोजित की थी।

रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान संगोष्ठी और व्याख्यान भी आयोजित किए थे :

(i) डा0 हेनरीट्टा लुडची, विश्व संस्कृति कीपर, राष्ट्रीय संग्रहालय स्कॉटलैंड ने नैथानी वालिच स्मारक व्याख्यान दिया।

(ii) ''संग्रहालय और पर्यटन'' पर कार्यशाला का आयोजन किया गया।

(iii) प्रो0 बी.एन. मेधी ने मजुली, असम के मुखौटों पर व्याख्यान दिया।

(iv) डा0 के.के. चक्रवर्ती ने नया संग्रहालय विज्ञान : पूर्वोत्तर–भारतीय परिप्रेक्ष्य पर व्याख्यान दिया।

(v) पुरातत्व अध्ययन और प्रशिक्षण केन्द्र (पूर्वी क्षेत्र) के सहयोग से पूर्वोत्तर भारत की संस्कृति : नृजातीय और पुरातत्व पृष्ठभूमि पर राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई।

(vi) पद्मश्री के.सी. पाणिग्रही की जन्म शती मनाने के लिए संगोष्ठी आयोजित की गई।

भारतीय राष्ट्रीय संग्रहालय ने भी अंतर्राष्ट्रीय संग्रहालय दिवस, विश्व पर्यावरण दिवस, स्वतंत्रता दिवस, महिला और बाल दिवस मनाए।

श्रीमती कस्तूरी गुप्ता मेनन, पूर्व–महानिदेशक, राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली की अध्यक्षता में पुरावस्तुओं के भौतिक सत्यापन का कार्य चल रहा है। कला अनुभाग में 604, पुरातत्व अनुभाग में 3262, नृजाति विज्ञान अनुभाग में 778 और पुरालेख मुद्रा अनुभाग में 2218 पुरा–वस्तुएं हैं जिनका रिपोर्टाधीन अवधि में सत्यापन किया गया है।

सांस्कृतिक विविधता की जानकारी प्रदान करने और राष्ट्रीय एकीकरण के लिए विद्यालयों के बच्चों को पूर्वोत्तर से कोलकाता का विरासत भ्रमण कराने की नई स्कीम शुरू की जा रही है। पूर्वोत्तर के विद्यालयों के बच्चों के विरासत भ्रमण कार्यक्रम के तहत मिजोरम के विद्यार्थियों के दो दलों ने कोलकाता का दौरा किया।

प्रोफेसर के.के. बाशा ने राज्य संग्रहालय, गुवाहाटी, असम में 'समकालीन विश्व में संग्रहालय : मुद्दे और चुनौतियां' पर एक व्याख्यान दिया।

भारतीय संग्रहालय द्वारा अपने कार्यकलापों/कार्यक्रमों के लिए पूर्वोत्तर में अपनायी जाने वाली विभिन्न पद्धतियों और कार्यनीतियों पर विचार–विमर्श करने के लिए एक विचार–विमर्श सत्र आयोजित किया गया था जिसके संयोजक डा0 के.के. चक्रवर्ती, कुलपति, राष्ट्रीय शैक्षिक आयोजना और प्रशासन विश्वविद्यालय, नई दिल्ली थे।

लाभवंचित और अनुसूचित जातियों/अनुसूचित जनजातियों के बसंती (सुंदरबन), काकदीप (सुंदरबन) और चन्द्रेश्वर (उत्तरी 24 परगना) के विद्यार्थियों के लिए कार्यक्रम आयोजित किए गए थे। इनके अतिरिक्त पुस्तकालय में लिबसिस पद्धति अपनायी जाती है। श्रीमती कल्पना दास गुप्ता, पूर्व–पुस्तकाध्यक्ष, राष्ट्रीय पुस्तकालय, कोलकाता के मार्गदर्शन में पुस्तकालय के वर्गीकरण का कार्य शुरू कर दिया गया है। वीथिका में दो क्योस्क स्थापित किए गए हैं। सार्वजनिक सूचना प्रणाली शुरू की गई है। संग्रहालय के मुख्य भवन की ऊपरी छत और भूतल के गलियारे की छत की मरम्मत की गई है। भारतीय संग्रहालय परिसर के भीतर जल–मल प्रणाली का उन्नयन किया गया है और एबीसी हाल के नवीकरण का कार्य चल रहा है।

यह संग्रहालय लाभवंचित और अनुसूचित जातियों/ अनुसूचित जनजातियों के लिए कार्यक्रम आयोजित करता है।

स्कूली बच्चों द्वारा किया गया दौरा

2.2.4

विक्टोरिया मेमोरियल हॉल

विक्टोरिया मेमोरियल हाल की संकल्पना महारानी विक्टोरिया के निधन के बाद लॉर्ड कर्जन, ब्रिटिश भारत (1899–1905) के वायसराय ने वर्ष 1901 में की थी। इसकी संकल्पना भारत–ब्रिटिश इतिहास पर विशेष ध्यान देते हुए महारानी की याद में एक सजीव संस्था के रूप में की गई थी। शाही परिवार के सदस्य जॉर्ज, प्रिंस ऑफ वेल्स जो बाद में किंग जार्ज–V के रूप में विख्यात हुए, ने दिनांक 4 जनवरी, 1906 को इस मेमोरियल की आधारशिला रखी थी। इस मेमोरियल को वर्ष 1921 में औपचारिक रूप से आम जनता के लिए खोला गया था।

लार्ड इमरसन, अध्यक्ष, ब्रिटिश वास्तुकला संस्थान द्वारा डिजाइन किया गया और मकराना, राजस्थान से लाए गए संगमरमर और बलुआ पत्थर से निर्मित यह भवन एक शानदार इमारत है। इस इमारत की वास्तुकला के स्वरूप में इटली पुनर्जागरण के साथ–साथ प्राच्य शिल्प की झलक मिलती है।

एक संग्रहालय के रूप में मेमोरियल में लगभग अट्ठाइस हजार ऐतिहासिक वस्तुओं का भण्डार है, जो 1700 ई. से प्रारंभ होकर तीन शताब्दियों से अधिक के हमारे राष्ट्र के इतिहास को व्यक्त करता है। इसके संग्रह में तैल तथा जल रंगों में दृश्य, रेखाचित्र तथा चित्रकारी, पुरावस्तु और लिथोग्राफ, स्टाम्प एवं डाक लेखन सामग्री के चित्र, सिक्के तथा पदक, शस्त्र व कवच, पुस्तकें तथा पांडुलिपियां, मूर्तियां, पोशाकें, वैयक्तिक स्मृति चिन्ह तथा पुरालेखीय दस्तावेज़ शामिल हैं।

मेमोरियल में 18वीं–19वीं शताब्दी के यूरोपीय कलाकारों यथा जोहान जोफैनी, रेनोल्ड्स, विलियम हाज्स, जार्ज चिनरी, रॉबर्ट हॉम्ज, टॉमस हिक्की, टिली केटल, बाल्याज़र साल्विन्स, चार्ल्स डी आयली, ऐमली ईडन और सैमुअल डेविस की चित्रकलाओं का एक अद्वितीय संग्रह है। यहाँ डैनियल की विश्व में सर्वाधिक चित्रकलाओं का भण्डार है। मैमोरियल के संग्रह में वैसिलि विरैस्चैगिन की एक ही कैनवास पर **तीसरी सबसे बड़ी** पेंटिग **''वेल्स के राजकुमार की 1876 में जयपुर में राजकीय शोभायात्रा''** है। मैमोरियल की अन्य महत्वपूर्ण तथा रूचिकर वस्तुओं में सचित्र फारसी पांडुलिपियां, मुगल सम्राट औरंगज़ेब की हस्तलिखित कुरान, अबुल फैज फैजी द्वारा ***'नल–दमयंती'*** का फारसी अनुवाद, दारा शिकोह द्वारा ***'उपनिषद'*** का अनुवाद, कृतियां तथा क़जर चित्रकला, 'ईरान के राजकुमार और राजकुमारी' शामिल हैं।

आधुनिक भारतीय चित्रकारों विशेषकर बंगाल कला शैली से संबधित चित्रकारों की पेंटिंग के अधिग्रहण से विक्टोरिया मेमोरियल हाल के संग्रह को समृद्ध किया गया है। अत्यधिक सावधानीपूर्वक संरक्षित की गई कुछ कलाकृतियों को समय–समय पर आम जनता के लिए दीर्घा में प्रदर्शित किया जाता है।

विक्टोरिया मेमोरियल अधिनियम (वर्ष 1903 का अधिनियम 10) और संशोधन अधिनियम, 1981 सहित इसके संशोधन तथा इस अधिनियम के प्रावधानों के तहत बनाए गए नियमों और विनियमों से इस मेमोरियल हाल को प्रशासित किया जाता है। पश्चिम बंगाल के महामहिम राज्यपाल इसके न्यासी बोर्ड के पदेन अध्यक्ष हैं।

इस मेमोरियल हाल में एक ही कैनवास पर विश्व की सबसे बड़ी पेंटिंग है।

कार्यकलाप

समीक्षाधीन वर्ष के दौरान मेमोरियल ने 11,000 स्टाम्पों, 2218 नक्काशी, 327 शस्त्र और कवच तथा 185 पुस्तकों का भौतिक सत्यापन किया; प्रदर्शित की गई वस्तुओं के भौतिक सत्यापन का कार्य जारी है; पर्सी ब्राउन के संग्रह तथा विविध वस्तुओं की विस्तृत सूची तैयार की गई थी; दरबार हाल में प्रदर्शित की गई कलाकृतियों के पाठ को मल्टीमीडिया क्षेत्र के लिए संकलित किया गया था और कलाकृतियों के डिजिटीकरण का कार्य चल रहा है।

लगभग 9 तैल चित्रों का जीर्णोद्धार किया गया; जीर्णोद्धार के लिए संग्रह से 5 तैल चित्र प्राप्त किए गए; संग्रह के 7 पुरावस्तु फ्रेम का जीर्णोद्धार किया गया; चितरंजन सेवा सदन, राज भवन और उच्च न्यायालय, कोलकाता से एक–एक पुरावस्तु फ्रेम का जीर्णोद्धार किया गया था; राज भवन, कोलकाता के 3 तैल चित्रों का जीर्णोद्धार करके संबंधित संगठन को वापस किया गया; राजभवन, कोलकाता की संगमरमर की 12 अर्द्ध प्रतिमाओं को संरक्षित किया गया; उच्च न्यायालय, कोलकाता के 1 तैल चित्र का जीर्णोद्धार करने के पश्चात उसे वापस किया गया।

विक्टोरिया मेमोरियल हाल स्टोर/दीर्घा की लगभग 29 पेपर कलाकृतियों, रंगीन पुरावस्तुओं, जलरंग, पेन और इंक से बनाए गए रेखाचित्रों, पेपर पर बनाए गए और मुद्रित किए गए निक्षारण, फोटोग्राफ का संरक्षण किया गया। **''रजिस्टर ऑफ स्पेसिमेन''** शीर्षक से (विक्टोरिया मेमोरियल संग्रह से) एक पुरानी पुस्तक जिसमें 143 पृष्ठ हैं, को संरक्षित किया गया। इसके प्रत्येक पृष्ठ को गैर–अम्लीकृत, लेमिनेटिड और स्पाइन कार्डेड किया गया। विक्टोरिया मेमोरियल हाल पुस्तकालय/अभिलेखागार से लगभग 18 दुर्लभ पुस्तकों का संरक्षण किया गया। विक्टोरिया मेमोरियल हाल के संग्रह से धातु की 36 वस्तुओं का संरक्षण किया गया। राजभवन फ्लैग स्टाफ हाउस, बैरकपुर में संगमरमर की एक आदमकद मूर्ति और राजभवन, कोलकाता में चार कलश का संरक्षण किया गया तथा विक्टोरिया मेमोरियल हाल संग्रह से **न्यायमूर्ति हाइड रिपोर्ट** के 130 पृष्ठों का संरक्षण उपचार किया गया।

घटनाक्रम

1. मेमोरियल हाल ने मेमोरियल में दिनांक 15 जून, 2009 को **''संग्रहालय और पर्यावरण''** पर एक दिवसीय पैनल विचार–विमर्श का आयोजन करके **''विश्व पर्यावरण दिवस''** मनाया।

2. डॉ. ए.बी. मित्रा, संरक्षण अधिकारी, भारतीय संग्रहालय, कोलकाता द्वारा (तकनीकी कार्मिकों को शामिल करके) दिनांक 22 जून, 2009 को **''पेपर कलाकृतियों के संरक्षण''** पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया।

3. प्रोफेसर समीर कुमार मुखर्जी, सेवानिवृत्त प्रोफेसर और अध्यक्ष, पुरातत्व और संग्रहालय विज्ञान विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय ने दिनांक 29 जून, 2009 को मेमोरियल हाल में **''संग्रहालय और जन–जागरूकता''** शीर्षक पर एक विशेष व्याख्यान दिया।

4. मेमोरियल हाल के कर्मचारियों के लिए दिनांक 29 जून, 2009 को **''राजभाषा में टिप्पण और प्रारूपण''** पर एक आंतरिक कार्यशाला आयोजित की गई।

5. सुश्री एलिस सेडविक, प्रदर्शनी समन्वयक और सुश्री सन्द्रा स्मिथ, अध्यक्ष, संरक्षण, वी. और ए. लंदन द्वारा दिनांक 4 जुलाई, 2009 को **''प्रदर्शनी की व्यवस्था और संग्रहालय कलाकृतियों के संरक्षण''** पर एक कार्यशाला आयोजित की गई।

6. प्रोफेसर रंजन चक्रवर्ती, इतिहास विभाग, जाधवपुर विश्वविद्यालय ने दिनांक 20 जुलाई, 2009 को मेमोरियल हाल में **''सुन्दरबन का पर्यावरण इतिहास''** विषय पर एक विशेष व्याख्यान दिया।

7. प्रोफेसर चित्रव्रत पाली, यू.जी.सी. एमिरिटस फैलो, जाधवपुर विश्वविद्यालय और निदेशक, इतिहास अध्ययन संस्थान, कोलकाता ने दिनांक 24 अगस्त, 2009 को मेमोरियल हाल में **''औपनिवेशिक आमले बंगालीर बाइबाशा–ओ–बनिजया''** शीर्षक पर एक विशेष व्याख्यान दिया।

8. सुश्री मालाबिका घोष, सहायक पुस्तकाध्यक्ष–व–सूचना अधिकारी, राष्ट्रीय पुस्तकालय, कोलकाता ने दिनांक 9 सितम्बर, 2009 को **''अभिलेखागार सामग्री का संरक्षण''** पर एक आंतरिक कार्यशाला आयोजित की।

9. डा0 ओ.पी. अग्रवाल, महानिदेशक, इन्टेक, लखनऊ ने **''तेल चित्रों का जीर्णोद्धार''** विषय पर दिनांक 8–10 सितम्बर, 2009 को एक आंतरिक कार्यशाला आयोजित की।

10. श्री जी.डी. केसवानी, उप–निदेशक (राजभाषा), भारत सरकार ने दिनांक 7 सितम्बर, 2009 को **''टिप्पण और प्रारूपण''** पर एक आंतरिक कार्यशाला आयोजित की।

11. हिन्दी में **''टिप्पण/प्रारूपण और प्रश्नोत्तरी''** प्रतियोगिताओं का आयोजन करके दिनांक 14 से

20 सितम्बर, 2009 तक हिन्दी सप्ताह मनाया गया।

12. समाज कल्याण निदेशालय, पश्चिम बंगाल सरकार के सहयोग से विक्टोरिया मेमोरियल हाल में विचार–विमर्श सत्र का आयोजन करके दिनांक 1 अक्तूबर, 2009 को **''अंतर्राष्ट्रीय वरिष्ठ व्यक्ति दिवस''** मनाया गया।

13. दिनांक 3 से 7 नवम्बर, 2009 तक **''सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2009''** मनाया गया।

14. कलकत्ता मुस्लिम यतीम खाने के सहयोग से श्री वसीम.आर. कपूर, विख्यात चित्रकार ने दिनांक 14 नवम्बर, 2009 को विक्टोरिया मेमोरियल हाल में **''कला कार्यशाला–व–बैठो और रेखाचित्र बनाओ प्रतियोगिता और प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता''** का आयोजन करके **''बाल दिवस''** मनाया। इस कार्यक्रम में कलकत्ता मुस्लिम यतीमखाने, कलकत्ता यतीमखाने और कलकत्ता शरणार्थियों के लगभग 350 बच्चों ने भाग लिया।

बालदिवस पर कला कार्यशाला और प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

15. विक्टोरिया मेमोरियल हाल में दिनांक 23 से 27 नवम्बर, 2009 तक **''पेपर वस्तुओं का संरक्षण''** पर एक सम्मेलन–व–कार्यशाला का आयोजन किया गया।

16. बच्चों के लिए कलकत्ता में विरासत दौरे के अनुसरण में अरुणाचल प्रदेश के विद्यालयों के पुरस्कार विजेता बच्चों को शामिल करके दिनांक 25 नवम्बर, 2009 को **''लैण्डस्केप पेंटिंग''** एक कला कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विख्यात चित्रकार प्रोफेसर ईशा मोहम्मद उपस्थित थे और उन्होंने विद्यालय के बच्चों के साथ बातचीत की।

प्रदर्शनियाँ

1. मेमोरियल की चित्र वीथिका में दिनांक 9 अक्तूबर, 2009 को श्री अनिरबन मित्रा के संग्रह से **''राज भवन, कोलकाता''** पर श्वेत और श्याम फोटोग्राफ की प्रदर्शनी आयोजित की गई।

राजभवन, कोलकाता के श्वेत–श्याम चित्रों की प्रदर्शनी

2. सूचना और संस्कृति विभाग, पश्चिम बंगाल सरकार के सहयोग से दिनांक 12 से 14 अक्तूबर, 2009 को **''दार्जिलिंग की संस्कृति और विरासत''** पर एक प्रदर्शनी आयोजित की गई।

3. विक्टोरिया और अल्बर्ट संग्रहालय, लंदन और ब्रिटिश परिषद, कोलकाता के सहयोग से **''पश्चिमी कलाकारों द्वारा भारतीय जीवन और लैण्डस्केप (वी और ए से पेंटिंग और ड्राइंग, 1790–1927)''** विषय पर एक अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी आयोजित की गई। इस प्रदर्शनी में **''अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दी के पश्चिमी कलाकारों द्वारा भारत : जमीन और लोग''** विषय पर संक्षिप्त प्रदर्शनी आयोजित करके (विक्टोरिया मेमोरियल के स्वयं के संग्रह से चित्र और रेखाचित्र) सहयोग किया गया। इन दोनों प्रदर्शनियों को दिनांक 31 जनवरी, 2010 तक जारी रखा गया। इस अवसर पर कलकत्ता संगीत विद्यालय और सेना के बैंड ने भारतीय और पश्चिमी शास्त्रीय संगीत (वाद्य यंत्र) की संयुक्त प्रस्तुति दी।

अप्रैल से जून, 2009 तक और पुनः अक्तूबर से दिसम्बर, 2009 तक सोन–एट–लुमियर के बांग्ला और अंग्रेजी में दो पब्लिक शो (ध्वनि और प्रकाश)–**''गौरव और गरिमा : कलकत्ता की कहानी''** नियमित रूप से आयोजित किए गए।

समीक्षाधीन अवधि के दौरान भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) ने इस स्मारक की संरचना की मरम्मत की। छज्जे की खराब हो गई छत के पत्थर की स्लैब को बदला गया। चारों ओर के रास्ते की खराब हो गई टाइलों की मरम्मत की गई, छत के ऊपरी हिस्से में लगाई स्काई लाइटों के खराब हो गए शीशे और रबड़ की पट्टियों को बदला गया।

केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग (सीपीडब्ल्यूडी) द्वारा गैर–पारिवारिक ड्यूटी आवासों के दो कमरों की मरम्मत का कार्य चल रहा था। विक्टोरिया मेमोरियल में केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग (बागवानी) द्वारा एक गार्डन (57 एकड़ से भी अधिक) तैयार करने का कार्य चल रहा था।

श्री जवाहर सरकार, सचिव, भारत सरकार, संस्कृति मंत्रालय प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए

प्रशिक्षण

- जीर्णोद्धार यूनिट के चार सदस्यों ने एन.आर.एल.सी., लखनऊ का दौरा किया और संरक्षकों तथा वैज्ञानिकों के साथ बातचीत की।
- जीर्णोद्धार यूनिट के दो सदस्यों ने एन.आर.एल.सी., लखनऊ द्वारा राज्य पुरातत्व अध्ययन और प्रशिक्षण, पूर्वी भारत में **''पेंटिंग का संरक्षण''** पर आयोजित कार्यशाला में भाग लिया।
- दो सदस्यों ने सुश्री अलेक्जेंडर स्किज यून, जर्मनी द्वारा इन्टेक, नई दिल्ली में **''ग्लाइडिंग और सिल्वरिंग दी एण्टिक्यू फ्रेम सरफेस''** पर आयोजित की गई कार्यशाला में भाग लिया।
- संरक्षण यूनिट के दो सदस्यों ने राष्ट्रीय संग्रहालय संस्थान, दिल्ली में दिनांक 17 से 22 अगस्त, 2009 के दौरान **''वस्त्र कलाकृतियों का संरक्षण''** पर आयोजित की गई कार्यशाला में भाग लिया।
- विक्टोरिया मेमोरियल ऑल ने बिरला औद्योगिक और प्रौद्योगिक संग्रहालय (बीआईटीएम), कोलकाता के सहयोग से अपने कर्मचारियों के लिए कम्प्यूटर प्रशिक्षण परियोजना शुरू की है।

2.2.5

सालारजंग संग्रहालय

प्रस्तावना

सालारजंग संग्रहालय विश्व की विविध यूरोपीय, एशियाई, तथा सुदूर पूर्वी देशों की कलात्मक उपलब्धियों का भण्डार है। सालारजंग–III के देहांत के पश्चात् उनका कोई प्रत्यक्ष उत्तराधिकारी नहीं था अतः बहुमूल्य कलाकृतियों और पुस्तकालय को सालारजंग के पुराने महल अर्थात् दीवान ड्योढी में संरक्षित किया गया था। सालारजंग–III के नाम को विख्यात करने के लिए वर्ष 1951 में सालारजंग सम्पदा समिति की देख–रेख में दीवान ड्योढी में एक संग्रहालय स्थापित किया गया था। दिनांक 2 दिसम्बर, 1958 को एक समझौता दस्तावेज के जरिए भारत सरकार ने तत्कालीन वैज्ञानिक अनुसंधान और सांस्कृतिक कार्य मंत्रालय के अधीनस्थ कार्यालय के रूप में इस संग्रहालय और पुस्तकालय को अपने अधिकार में लिया। इसके बाद वर्ष 1961 में सालारजंग संग्रहालय और इसके पुस्तकालय को संसद के दिनांक 19 मई, 1961 के सालारजंग संग्रहालय अधिनियम के रूप में विख्यात अधिनियम के द्वारा राष्ट्रीय महत्व की संस्था घोषित किया गया और संग्रहालय का प्रशासन उपर्युक्त अधिनियम के तहत गठित किए गए एक स्वायत्त निकाय अर्थात सालारजंग संग्रहालय बोर्ड को हस्तांतरित कर दिया गया। वर्तमान संग्रहालय भवन का निर्माण मूसी नदी के किनारे पर किया गया था। इस संग्रहालय के संग्रह और पुस्तकालय को वर्ष 1968 में नए भवन में अंतरित किया गया था। अधिक से अधिक संग्रह को प्रदर्शित करने के लिए वर्ष 1999 के दौरान दो और भवनों अर्थात मीर तुराब अली खान भवन (पश्चिमी खण्ड) और मीर लायक अली खान भवन (पूर्वी खण्ड) का निर्माण मौजूदा भवन के दोनों ओर किया गया था।

संग्रहालय में न केवल भारतीय मूल की बल्कि पश्चिमी, मध्य–पूर्वी तथा सुदूर पूर्वी मूल की कलावस्तुओं तथा पुरावस्तुओं का अद्भुत वैश्विक संग्रह है। इनके अलावा संग्रहालय में बाल अनुभाग, समृद्ध संदर्भ पुस्तकालय है जिसमें संदर्भ पुस्तकें और दुर्लभ पाण्डुलिपियों का विशाल संग्रह है। इस प्रकार, यह संग्रहालय न केवल मनोरंजन के स्थान के रूप में अपितु शिक्षा के केन्द्र के रूप में भी लोकप्रिय हो गया है।

अप्रैल 2009 से जनवरी 2010 तक की अवधि के दौरान इस संग्रहालय में 6,73,989 आगंतुक, 1,71,334 बच्चे तथा विदेशी मूल के 6,932 आगंतुक आए जिससे संग्रहालय को 86,36,360 रुपए की आय हुई।

इस संग्रहालय का योजनागत बजट 15,00,00,000 रूपए और योजनेतर बजट 8,40,00,000 रूपए था।

क. प्रदर्शनियां :

(1) संग्रहालय ने महावीर जयंती के अवसर पर एक विशेष प्रदर्शनी **''भगवान महावीर शांति के अग्रदूत''** का दिनांक **6 अप्रैल, 2009** को आयोजन किया।

(2) डा0 बी.आर. अम्बेडकर की जयंती के अवसर पर सालारजंग संग्रहालय ने **13 अप्रैल, 2009 को ''भारत रत्न डा0 बी.आर. अम्बेडकर''** पर विशेष फोटो प्रदर्शनी आयोजित की।

(3) विश्व विरासत दिवस के अवसर पर, सालारजंग संग्रहालय ने दिनांक **18 अप्रैल, 2009 को ''प्रोट्रेट ऑफ प्रिन्सेस''** पर फोटो प्रदर्शनी आयोजित की।

(4) सिख वरासत प्रतिष्ठान हैदराबाद डेक्कन के सहयोग से दिनांक **26 अप्रैल, 2009 से 5 मई, 2009 तक ''श्री गुरूग्रंथ साहिब की गुरुता गद्दी के 300 वर्ष''** पर एक विशेष प्रदर्शनी आयोजित की गई।

(5) संग्रहालय ने बुद्ध जयंती के अवसर पर दिनांक **9 मई, 2009 को ''बौद्ध मूर्ति कला के माध्यम से दृष्टव्य भगवान बुद्ध की जीवन शिक्षा और महापरिनिर्वाण''** पर एक विशेष फोटो प्रदर्शनी का आयोजन किया।

(6) सालारजंग संग्रहालय और कर्नाटक उर्दू अकादमी बंगलौर ने संयुक्त रूप से **''गुलिस्तां–ए–उर्दू''** पर दिनांक **3 जून, 2009** को चित्रकला परिषद बंगलौर में एक अंतर–राज्य प्रदर्शनी का आयोजन किया।

(7) दिनांक **14 से 20 जून, 2009 तक ''सालारजंग संग्रहालय में जरदोजी कार्य''** पर एक विशेष प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

(8) आंध्र प्रदेश के महामहिम राज्यपाल और सालारजंग संग्रहालय बोर्ड के अध्यक्ष श्री नारायण दत्त तिवारी ने **''नवाब मीर युसुफ अली खान का व्यक्तित्व और कृतित्व : जैसा कि उसके संग्रह के माध्यम से देखा गया''** पर दिनांक **14 जून, 2009** को एक विशेष प्रदर्शनी का उद्घाटन किया।

(9) **''मौलूद–ए–काबा हजरत–ए–अली''** पर सालारजंग संग्रहालय ने दिनांक **7 जुलाई, 2009** को विशेष प्रदर्शनी आयोजित की।

(10) **''भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के मील के पत्थर : जैसा कि विवरण से देखा गया''** पर दिनांक **13 अगस्त, 2009** को एक विशेष फोटो प्रदर्शनी आयोजित की गई।

(11) **''सालारजंग संग्रहालय में श्री गणेश संग्रह''** पर दिनांक **24 अगस्त, 2009** को एक विशेष प्रदर्शनी आयोजित की गई।

(12) दिनांक **14 सितम्बर, 2009 को ''पवित्र कुरान''** पर एक प्रदर्शनी आयोजित की गई।

(13) दिनांक **18 सितम्बर, 2009 को ''कुरान की व्याख्या''** पर प्रदर्शनी आयोजित की गई।

(14) भारत सरकार द्वारा कुवैत में भारत महोत्सव के भाग के रूप में दिनांक **24 सितम्बर, 2009 को ''भारतीय समाज में मुस्लिमों का योगदान''** पर एक प्रदर्शनी आयोजित की गई।

(15) दिनांक **30 सितम्बर, 2009** को पलामुरू के श्री आर. नरसिम्हा गौड ने **''पालामुरू समकालीन चित्रकला''** पर प्रदर्शनी आयोजित की गई।

(16) डीएवीपी के सहयोग से दिनांक **1 अक्तूबर, 2009 को ''महात्मा सहस्राब्दि के व्यक्ति''** पर विशेष प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

(17) दिनांक **15 अक्तूबर, 2009 को ''खुशी का प्रकाश''** पर एक विशेष प्रदर्शनी आयोजित की गई।

(18) सालारजंग संग्रहालय ने दिनांक **6 अक्तूबर, 2009** को मौलाना आजाद अरबी फारसी अनुसंधान संस्थान, टोंक, राजस्थान में **''सूफी कवियों की झांकी''** पर एक अंतर–राज्य प्रदर्शनी आयोजित की।

(19) दिनांक **9 नवम्बर, 2009 को ''बिद्री मिट्टी के बर्तन – बीदर की कला''** पर एक विशेष प्रदर्शनी आयोजित की गई।

(20) होटल नोवाटेल, हैदराबाद में **9 नवम्बर से 14 नवम्बर, 2009 तक ''अरबी सुलेखन और भारतीय मुस्लिम धार्मिक पोस्टर तथा केलैंडर कला''** की एक प्रदर्शनी आयोजित की गई।

(21) बाल सप्ताह (**14–20 नवम्बर, 2009**) के अवसर पर दिनांक 14 नवम्बर, 2009 को **''बाल सृजन''** पर एक विशेष प्रदर्शनी आयोजित की गई।

(22) विश्व विरासत सप्ताह समारोह (19–25 नवम्बर, 2009) के अवसर पर दिनांक **19 नवम्बर, 2009 को ''जरदोजी और निर्मित विरासत''** पर एक विशेष प्रदर्शनी आयोजित की गई।

(23) सलारजंग संग्रहालय निर्माण दिवस के अवसर पर दिनांक **16 दिसम्बर, 2009 को ''सालारजंग संग्रहालय तब और अब''** पर

एक विशेष प्रदर्शनी आयोजित की गई।

(24) दिनांक **8 से 14 जनवरी, 2010** तक संग्रहालय सप्ताह मनाया गया था। इस अवसर पर **''कुछ अग्रणी राष्ट्रीय संस्थाओं के विशेष संदर्भ में भारत के संग्रहालय''** पर विशेष फोटो प्रदर्शनी आयोजित की गई थी। दिनांक 12 जनवरी, 2010 को महिलाओं के लिए रंगोली प्रतियोगिता आयोजित की गई।

(25) दिनांक **8 से 17 जनवरी, 2010** तक **''करबला के शहीदों के मकबरों''** पर एक प्रदर्शनी आयोजित की गई।

ख. व्याख्यान :

संग्रहालय के कार्यकलापों के भाग के रूप में, संग्रहालय ने हिस्टोरिकल सोसायटी ऑफ हैदराबाद के सहयोग से माह के प्रत्येक दूसरे शनिवार को मासिक व्याख्यान आयोजित किए। इसके अलावा, सालारजंग के जन्म दिवस समारोह के दौरान विशेष व्याख्यान आयोजित किए गए जिनमें भारत और विदेश के विशेषज्ञों ने भाग लिया।

आयोजित किए गए विशेष व्याख्यान इस प्रकार थे :–

1) डॉ0 विद्यार्थी नंदुरी द्वारा ***ब्रह्माण्ड विज्ञान के खगोल विज्ञान का इतिहास–पूर्व–पश्चिम व्याख्यान***।

2) श्री माइक व्हीलर, संरक्षक, विक्टोरिया और एल्बर्ट संग्रहालय, लंदन द्वारा ***विक्टोरिया और एल्बर्ट संग्रहालय में लघु इस्लामिक पेंटिंग का संरक्षण***।

3) श्री निक बर्नार्ड, क्यूरेटर, दक्षिणी एशिया कला द्वारा ***प्रिसियस स्टोंस टू सेरपेंट्स बोन्स : विक्टोरिया और एल्बर्ट संग्रहालय में भारतीय आभूषण***।

4) श्री बाबजी राव, सहायक पुरातत्वविद, ए.एस. आई. हैदराबाद क्षेत्र द्वारा : ***बौद्ध वास्तुकला के विकास में आंध्र बौद्धों की भूमिका– एक केस अध्ययन***।

5) श्री कन्द्रेगुला नागेश्वर राव द्वारा ***भारत में इस्लामिक कला***।

6) संग्रहालय के दो सेवानिवृत्त अधिकारियों अर्थात श्री डी. भास्कर राव, कीपर (शिक्षा) (सेवानिवृत्त) और श्री बी. कोटाईमाह, उप–कीपर (सेवानिवृत्त) द्वारा ***सालारजंग संग्रहालय अपनी शुरूआत से अब तक***।

7) श्री इरवाद मेहरनोश एच. भरूचा द्वारा ***गौरवशाली इरानी (फारसी) पैगम्बर जराथुष्ट्र का इतिहास और धर्म***।

8) श्रीमती अनुराधा रेड्डी, कोर समिति सदस्य, एच.एस.एच., इन्टेक द्वारा ***जापान के बौद्ध पैगोडा और पुरावस्तु***।

9) श्री खालिद मोहिउद्दीन, वास्तुविद, जे.एन.टी.यू. द्वारा ***चार मीनार–हैदराबाद के आइकान***।

10) श्री एन. रघुनंदन कुमार, संस्थापक और सचिव, प्लेनेटरी सोसायटी द्वारा (संयुक्त राष्ट्र विश्व अंतरिक्ष सप्ताह के भाग के रूप में बातचीत) ***चांद की यात्रा–चन्द्रयान***।

11) श्री एम.ए. कय्याम द्वारा ***बिद्री सनाथ (शिल्पकार का शिल्प)***।

12) डा0 एस. जयकिशन, रीडर, इतिहास द्वारा ***डेक्कन किलों में कैनोन : भारत का उपेक्षित सौन्दर्य***।

13) श्री जी. शंकर, महासचिव, आंध्र प्रदेश एस.सी. कल्याण संघ द्वारा ***संविधान समर्पण दिवस***।

14) डा0 वी.वी. कृष्णा शास्त्री और श्रीमती अनुराधा रेड्डी, कोर समिति सदस्य, एच.एस.एच., इन्टेक द्वारा ***रामायण, बौद्धो का चित्रात्मक परिचय और श्रीलंका में औपनिवेशिक स्थल***।

15) भारतीय इतिहास सोसायटी हैदराबाद और सालारजंग संग्रहालय ने दिनांक 9 जनवरी, 2010 को ***भारतीय पुरालेख शास्त्र और इसके विकास*** पर डा0 सी.ए. पद्मनाभा शास्त्री के व्याख्यान का आयोजन किया।

कार्यशालाएं :

(1) सिल्वर जरदोजी करीमनगर हस्तशिल्प सोसायटी (एसआईएफकेए) के सहयोग से दिनांक **15 से 17 जून, 2009** तक **''करीमनगर जरदोजी कला''** पर तीन दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई।

(2) गुलिस्तां बिद्री कार्य सहकारी समिति, हैदराबाद के सहयोग से दिनांक **9 नवम्बर, 2009 को ''बिद्री मृदभाण्ड–बीदर की कला''** पर सालारजंग संग्रहालय ने एक कार्यशाला आयोजित की। इस कार्यशाला में लगभग 12 शिल्पकारों ने भाग लिया। जवाहरलाल नेहरू ललित कला विश्वविद्यालय (जेएनएफएयू) के विद्यार्थियों ने भी इस कार्यशाला में भाग लिया।

(3) विश्व विरासत समारोह (19 से 25 नवम्बर, 2009) के अवसर पर सालारजंग संग्रहालय ने दिनांक **19 नवम्बर, 2009** को **''जरदोजी''** पर एक कार्यशाला आयोजित की।

सेमिनार

सालारजंग संग्रहालय ने दिनांक **26 अप्रैल, 2009 को ''श्री गुरू ग्रंथ साहिब जी – एक बौद्धिक मार्गदर्शक''** पर एक राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित की।

पैनल विचार–विमर्श :

विश्व विरासत समारोह (19 से 25 नवम्बर, 2009) के अवसर पर सालारजंग संग्रहालय ने दिनांक 19 नवम्बर, 2009 को ''विरासत और विज्ञान'' पर पैनल विचार–विमर्श का आयोजन किया जिसमें भारतीय भौगोलिक सर्वेक्षण, हैदराबाद, विरासत समिति और अन्य संगठनों के सदस्यों ने भाग लिया।

संग्रहालय के मार्गदर्शक लेक्चरर ने संग्रहालय के आगंतुकों का मार्गदर्शन करने के लिए दिनांक 21 जुलाई, 2009 को **भारतीय कांस्य और वस्त्र उद्योग** पर एक दीर्घा वार्ता आयोजित की। संग्रहालय के वरिष्ठ मार्गदर्शक लेक्चरर ने दिनांक 26 जुलाई, 2009 को अंतर्राष्ट्रीय शैक्षिक विनिमय परिषद, हैदराबाद विश्वविद्यालय के 21 विद्यार्थियों के साथ **हाथी दांत दीर्घा** पर एक वार्ता आयोजित की।

अन्य कार्यक्रम :

संग्रहालय शैक्षिक और सांस्कृतिक कार्यकलापों के भाग के रूप में प्रतिवर्ष ग्रीष्म कला शिविर आयोजित करता है। इस वर्ष भी संग्रहालय ने 8 से 15 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए 11 से 25 मई, 2009 के दौरान ग्रीष्म कला शिविर–2009 आयोजित किया। इस ग्रीष्म कला शिविर को वरिष्ठ समूह के 70 विद्यार्थियों और कनिष्ठ समूह के 134 विद्यार्थियों से शुरू किया गया था।

ग्रीष्मकालीन कला शिविर

बच्चों को पेंटिंग, ग्लास इम्बोसिंग, ओरिगमी (जापानी कला पेपर), जीवन जीने की कला, फैब्रिक पेंटिंग, वास्तुकला, इंटीरियर डिजाइन इत्यादि का प्रशिक्षण दिया गया था। इस शिविर के दौरान विद्यार्थियों के लाभार्थ भारत की विरासत के संबंध में फिल्म शो, विभिन्न प्रकार के कठपुतली शो और स्लाइड प्रस्तुति जैसे मनोरंजक और शिक्षाप्रद कार्यक्रम आयोजित किए गए।

प्रोफेसर पद्मावती, कुलपति, जवाहर लाल नेहरू प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (जेएनटीयू) ने दिनांक 25 मई, 2009 को मुख्य अतिथि के रूप में इसके समापन समारोह में भाग लिया। मुख्य अतिथि ने संग्रहालय द्वारा इस ग्रीष्म कला शिविर में बच्चों द्वारा किए गए कार्यों के संबंध में आयोजित विशेष प्रदर्शनी का उद्घाटन किया।

नवाब मीर यूसुफ अली खान, सालारजंग–III की पुण्य तिथि

संग्रहालय ने दिनांक 26 मई, 2009 को इसके संस्थापक नवाब मीर यूसुफ अली खान, सालारजंग–III की पुण्य तिथि मनाई। अधिकारी और कर्मचारी दायरा में एकत्र हुए और उन्होंने श्रद्धांजलि दी।

संग्रहालय ने दिनांक 14 जून से 20 जून, 2009 तक नवाब मीर यूसुफ अली खान बहादुर सालारजंग–III की जयंती मनाई। श्री नारायण दत्त तिवारी, महामहिम राज्यपाल, आंध्र प्रदेश और अध्यक्ष सालारजंग संग्रहालय बोर्ड ने जयंती समारोह का उद्घाटन किया था।

महामहिम राज्यपाल, आंध्र प्रदेश और अध्यक्ष, सालारजंग संग्रहालय बोर्ड ने तृतीय और चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारियों को उनके कार्यों में उत्कृष्ट निष्पादन के लिए सर्वोत्तम कर्मचारी पुरस्कार वितरित किए। महामहिम राज्यपाल ने उद्घाटन समारोह के दौरान संग्रहालय के कर्मचारियों के बच्चों को भी उनकी अकादमिक उत्कृष्टता के लिए पुरस्कार वितरित किए।

उपर्युक्त अवसर पर महामहिम राज्यपाल, आंध्र प्रदेश और अध्यक्ष सालारजंग संग्रहालय बोर्ड ने पूर्वी ब्लॉक में दो नई वीथिका अर्थात काष्ठकला नक्काशी वीथिका और फर्नीचर वीथिका का भी उद्घाटन किया; संग्रहालय क्लाक क्षेत्र में एल.सी.डी. टेलीविजन लगाए गए और (पूर्वी ब्लॉक) द्वितीय तल और संग्रहालय परिसर में भारतीय स्टेट बैंक के ए.टी.एम. केन्द्र की आधारशिला रखी।

सालारजंग–III की जयंती के एक सप्ताह तक चलने वाले समारोह के दौरान संग्रहालय ने विशेष प्रदर्शनी, कार्यशाला, सांस्कृतिक कार्यक्रम और स्मारक व्याख्यान आयोजित किए। इस दौरान संग्रहालय को शारीरिक रूप से विकलांग बच्चों के लिए आधे दिन तक खोला गया था। संग्रहालय के कर्मचारियों और सुरक्षा कर्मियों (केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल) के लिए खेलकूद प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं तथा विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए गए।

वीधिकाओं का उद्घाटन

समापन दिवस कार्यक्रम दिनांक 20 जून, 2009 को आयोजित किया गया जिसे नवाब अथरम अली खान, सदस्य, सालारजंग संग्रहालय बोर्ड ने सम्बोधित किया था।

स्वतंत्रता दिवस समारोह डॉ0 ए.एन. रेड्डी, निदेशक और प्रभारी सालारजंग संग्रहालय ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया। संग्रहालय तथा केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल के सभी कर्मचारियों ने इस समारोह में भाग लिया था।

दिनांक 14 से 19 सितम्बर, 2009 तक **हिन्दी सप्ताह** मनाया गया। प्रोफेसर देव शर्मा ने दिनांक 14 सितम्बर, 2009 को हिन्दी सप्ताह का उद्घाटन किया। इस अवधि के दौरान संग्रहालय ने अपने कर्मचारियों के लिए व्याख्यान, कवि सम्मेलन, काव्य पाठ और निबंध लेखन प्रतियोगिताओं का आयोजन किया। समापन कार्यक्रम दिनांक 19 सितम्बर, 2009 को आयोजित किया गया था जिसमें मुख्य अतिथि श्री आलोक पाण्डेय ने पुरस्कार वितरित किए।

बाल सप्ताह के दौरान संग्रहालय ने दिनांक 16–17 नवम्बर, 2009 को विद्यालयों के विद्यार्थियों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताएं अर्थात निबंध लेखन, काव्य पाठ और चित्रकला प्रतियोगिताएं आयोजित कीं।

संविधान समर्पण दिवस (26 नवम्बर, 1949) के अवसर पर सालारजंग संग्रहालय ने दिनांक 26 नवम्बर, 2009 को विशेष व्याख्यान आयोजित किया। इस अवसर पर श्री जी. शंकर, महासचिव, आंध्र प्रदेश अनुसूचित जाति कल्याण संघ ने व्याख्यान दिया।

सालारजंग संग्रहालय स्थापना दिवस के अवसर पर माननीया श्रीमती बी. कार्तिक रेड्डी, मेयर, ग्रेटर हैदराबाद नगर निगम और सदस्य सालारजंग संग्रहालय बोर्ड ने दिनांक 16 दिसम्बर, 2009 को संग्रहालय स्थापना दिवस समरोह का उद्घाटन किया।

समापन दिवस कार्यक्रम

2.2.6

इलाहाबाद संग्रहालय

इलाहाबाद संग्रहालय 1931 में इलाहाबाद नगरपालिका परिषद् के अन्तर्गत अस्तित्व में आया। भारत सरकार, संस्कृति विभाग द्वारा इसे 1985 में राष्ट्रीय महत्व की संस्था घोषित किया गया। इलाहाबाद संग्रहालय अब भारत सरकार, संस्कृति मंत्रालय द्वारा पूर्णतः वित्तपोषित संस्था है।

लघुचित्र वीथिका में प्रदर्शित सभी चित्रों की माउन्टिंग व फ्रेमिंग का कार्य पूर्ण किया गया। स्वतंत्रता संग्राम वीथिका एवं नेहरू वीथिका में नयी शीर्षक पट्टियों एक्रिलिक कवर लगाकर वीथिकाओं को सुसज्जित किया गया। साहित्यकार वीथिका को पुनर्संयोजित किया गया। तीन वीथिकाओं को आधुनिक स्वरूप देने की प्रक्रिया भी प्रारम्भ की गयी।

समीक्षाधीन अवधि के दौरान इलाहाबाद संग्रहालय द्वारा प्रारम्भ किए गए अभियान के अन्तर्गत संग्रहालय को 16वीं सदी ई. की चतुर्भुजी **गणेश** की बैठी मूर्ति तथा 12वीं सदी ई. **चामुण्डा** देवी की खड़ी मूर्ति प्राप्त हुई। ग्राम–मलाक पयागी (डिहवा), सोराँव से 11वीं शती ई. के कलचुरि शासक 'गांगेय देव' के 20 स्वर्ण सिक्के तथा सिराथू पुलिस थाना जिला कोशाम्बी से सल्तनत कालीन 120 ताम्र सिक्के प्राप्त हुए।

इस अवधि में विभिन्न विषयों की 51 पुस्तकों का अधिग्रहण और पंजीकरण किया गया। 397 पुस्तकों का वर्गीकरण एवं सूचीपत्रण किया गया। पत्रिकाओं/समाचार–पत्रों के लगभग 15 अंकों/प्रतियों के लिए अभिदान किया गया, 6 दैनिक समाचार–पत्र संग्रहालय में नियमित रूप से प्राप्त हुए। 3063 पाठक पुस्तकालय में आए तथा पुस्तकों का अध्ययन किया गया।

छायाचित्र अनुभाग द्वारा आलोच्य वर्ष में संग्रहालय की सभी गतिविधियों– जैसे कि संगोष्ठी, व्याख्यान, कार्यशालाएं, प्रदर्शनियाँ, बाल–सप्ताह आदि के छायांकन कार्य के अतिरिक्त कला क्रय समिति की बैठक के माध्यम से क्रय की गई कलाकृतियों एवं पुरावशेषों का छाया–अभिलेखीकरण किया गया। संगोष्ठियों, व्याख्यानों की आडियो रिकार्डिंग भी अनुभाग द्वारा की गई।

संरक्षण

रासायनिक उपचार की सामान्य गतिविधियों के अतिरिक्त दीमक एवं कीट प्रभावित स्थलों में धूम्रीकरण, दीमक एवं कीटरोधी उपचार एवं छिड़काव आदि आवश्यकता के अनुसार किया गया। 323 वस्तुओं का संरक्षण कार्य पूर्ण किया गया जिसमें 80 पाषाण मूर्तियाँ, 4 चित्र, 200 पाण्डुलिपियाँ (2000 पृष्ठ), 31 कांस्य एवं अन्य धातु मूर्तियाँ, 490 अभिलेखीय दस्तावेज और 3 जीवाश्म सम्मिलित हैं।

प्रकाशन

वर्ष के दौरान संग्रहालय ने निम्नलिखित प्रकाशन निकाले :–

- संग्रहालय के बहुरंगी परिचयात्मक फोल्डर को डिजाइन कराकर अंग्रेजी में प्रकाशित किया गया।
- प्रदर्शनियों के परिचयात्मक फोल्डर का प्रकाशन।

- शोध–पत्रिका 'चिति–वीथिका' के अंक 9 एवं 10 का संयुक्त प्रकाशन।
- वर्ष 2007–08 की वार्षिक–रिपोर्ट का प्रकाशन।

शैक्षिक एवं सांस्कृतिक कार्यकलाप

- डॉ. हरिवंश राय 'बच्चन' जन्मशती समारोह के अवसर पर साहित्य अकादमी, नई दिल्ली के साथ संयुक्त रूप से 17–18 जनवरी, 2009 को दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।
- प्रो. आर.डी. चौधरी, पूर्व महानिदेशक, राष्ट्रीय संग्रहालय, नयी दिल्ली द्वारा 9 जनवरी, 2009 को स्कल्पचर्स ऑफ असम विद स्पेशल रिफरेन्स टु दि स्टोन स्कल्पचर्स फ्राम पिंग्लेश्वर एण्ड मदन कामदेव विषयक व्याख्यान दिया गया।
- सत्य प्रकाश मिश्र साहित्य संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में एक व्याख्यान का आयोजन किया गया जिसमें वरिष्ठ समालोचक प्रो. नित्यानन्द तिवारी द्वारा 16 जनवरी, 2009 को ***मध्ययुगीन काव्यानुभव और विचारधारात्मक निर्मितियाँ*** विषय पर व्याख्यान दिया गया।
- अज्ञेय व्याख्यानमाला के अन्तर्गत श्री दूधनाथ सिंह का ***अज्ञेय की अन्तिम कविताएं*** विषयक एक व्याख्यान 29 जनवरी, 2009 को आयोजित किया गया। अध्यक्षता श्री मानस मुकुल दास, पूर्व विभागाध्यक्ष, अंग्रेजी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय ने की।
- पं. बृजमोहन व्यास स्मृति व्याख्यानमाला के अन्तर्गत प्रो. ओम प्रकाश, पूर्व कुलपति, रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली द्वारा 25 जून, 2009 को फुलफिलमेन्ट ऑफ पावर एण्ड प्लेन्टी : पास्ट एण्ड प्रेजेन्ट विषयक एक व्याख्यान दिया गया।
- प्रो. डी.एन. त्रिपाठी, पूर्व अध्यक्ष, भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा 8 जुलाई, 2009 को इण्डो–ग्रीक आर्ट पर एक व्याख्यान दिया गया।

संग्रहालय में 14 से 22 नवम्बर, 2009 तक बालोत्सव का आयोजन किया गया।

- डॉ. वी.एन. त्रिपाठी द्वारा 9 सितम्बर, 2009 को प्राचीन भारत में आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति विषयक व्याख्यान दिया गया।
- प्रो. सीताराम दुबे, प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा 20 सितम्बर, 2009 को मुद्राओं का सांस्कृतिक पक्ष विषयक व्याख्यान दिया गया।
- प्रो. ए.के. कुमारस्वामी स्मृति व्याख्यानमाला के अन्तर्गत 9 अक्टूबर, 2009 को पं. हरि प्रसाद चौरसिया का व्याख्यान एवं वादन का कार्यक्रम आयोजित किया गया।
- प्रो. रमानाथ मिश्र, पूर्व विभागाध्यक्ष, प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.) द्वारा 15 अक्टूबर, 2009 को ***अनामी कलाकारों की परम्परा : पुनरावलोकन*** विषयक एक व्याख्यान दिया गया।
- प्रो. के. के. थपलियाल, पूर्व विभागाध्यक्ष, प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय द्वारा 25 नवम्बर, 2009 को न्यूली डिस्कवर्ड अशोकन इन्स्क्रिप्शन्स विषय पर एक विवरणात्मक व्याख्यान दिया गया।
- 20 मई से 20 जून, 2009 तक एक माह की चित्रकला कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें विभिन्न संस्थाओं के बच्चों ने भाग लिया।
- 16 जून से 14 जुलाई, 2009 तक एक माह की मृण्मूर्तिकला कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में 12 वर्ष से अधिक आयु के बच्चों ने भाग लिया।
- प्रो. एम.सी. चट्टोपाध्याय, विभागाध्यक्ष, रसायन विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद ने 19 जुलाई, 2009 को एक माह तक चलने वाली संग्रहालय विज्ञान एवं संरक्षण विषयक कार्यशाला का उद्घाटन किया।
- 21 वीं शताब्दी में भारतीय संस्कृति विषय पर एक पोस्टर कार्यशाला 19–25 अगस्त, 2009 के मध्य आयोजित की गयी। जिसमें विभिन्न विद्यालयों एवं इलाहाबाद विश्वविद्यालय से 125 से अधिक विद्यार्थियों ने प्रतिभागिता की।
- संग्रहालय में 14 से 22 नवम्बर, 2009 तक **बालोत्सव** का आयोजन किया गया। जिसके अन्तर्गत विविध प्रतियोगिताएं– 1. वैदिक मंत्रपाठ 2. चित्रकला 3. व्याख्यान 4. कोलाज

बालउत्सव

5. वाद–विवाद और 6. शास्त्रीय–नृत्य प्रतियोगिता आयोजित की गईं।

- 18 नवम्बर, 2009 को विश्व धरोहर सप्ताह, बाल–सप्ताह के अन्तर्गत आयोजित किया गया।
- 19 नवम्बर, 2009 को श्रीमती इन्दिरा गांधी की जयन्ती बाल–सप्ताह के अन्तर्गत आयोजित की गयी।
- बालोत्सव (बाल–सप्ताह) के अंतर्गत 22 नवम्बर, 2009 को कार्यक्रमों का पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किया गया।

प्रदर्शनियाँ

- 28 जून, 2009 को नवागत कलाकारों की चित्रकला प्रदर्शनी **अभिरुचि–2009** का आयोजन किया गया। यह प्रदर्शनी 16 जुलाई 2009 तक रही।
- प्रो. सुरेन्द्र वर्मा के रेखाचित्रों पर आधारित प्रदर्शनी **सर्जना–2009** का 8 जुलाई, 2009 को आयोजन किया गया।
- **अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद : व्यक्तित्व एवं कृतित्व** विषयक एक विशेष प्रदर्शनी, जो आजाद से सम्बन्धित छायाचित्र, कथा रेखांकन एवं समाचार पत्रों की कतरनों पर आधारित थी, राजकीय संग्रहालय, झांसी के संयुक्त तत्वावधान में अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद की 103वीं वर्षगांठ पर 23 जुलाई, 2009 को अयोजित की गई।
- संग्रहालय में 27–31 अगस्त, 2009 के मध्य एक पोस्टर प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसमें प्रतिभागियों द्वारा पोस्टर कार्यशाला में तैयार किए गए रेखाचित्रों को प्रदर्शित किया गया।

प्रतिकृति अनुभाग

आलोच्य अवधि में अनुभाग ने मूर्तियों की 575 प्रतिकृतियाँ प्लास्टर ऑफ पेरिस में तैयार की, 785 प्रतिकृतियों को अन्तिम रूप दिया गया, 663 प्रतिकृतियों की रंगाई तथा डस्टिंग करने के उपरांत आपूर्ति की गई। 15 रबर के सांचे तथा 10 मदर सांचे तथा प्लास्टर साँचे भी तैयार किए गये। 20 मूर्तियों पर रबर लगाने का कार्य किया जा रहा है।

14–28 सितम्बर, 2009 के मध्य संग्रहालय में **हिन्दी पखवाड़ा** मनाया गया जिसमें निम्नलिखित कार्यक्रम आयोजित किए गए–

- हिन्दी की संवैधानिक स्थिति एवं कार्यालयों में उसका प्रयोग विषय पर श्री कामेश्वर प्रसाद शर्मा, सहायक निदेशक, राजभाषा (अवकाश प्राप्त) का एक विशेष व्याख्यान 16 सितम्बर, 2009 को आयोजित किया गया।
- आधुनिकीकरण के दौर में हिन्दी की अस्मिता विषय पर 23 सितम्बर, 2009 को एक परिसंवाद का आयोजन किया गया जिसमें हिन्दी की स्थिति सम्बन्धी विविध समस्याओं पर विचार विमर्श किया।
- 25 सितम्बर, 2009 को एक काव्य–गोष्ठी का आयोजन किया गया

अन्य कार्यकलाप

- गांधी स्मृति वाहन दिवस का आयोजन 12 फरवरी, 2009 को किया गया। इस असवर पर गाँधी–स्मृति–वाहन को फूलों से सुसज्जित कर विशेष रूप से दर्शकों के अवलोकनार्थ संग्रहालय के प्रांगण में रखा गया।
- 28 फरवरी, 2009 को इलाहाबाद संग्रहालय का 79वां स्थापना दिवस मनाया गया जिसमें इलाहाबाद के वरिष्ठ नागरिकों, विद्वानों को आमंत्रित किया गया।
- साम्प्रदायिक सद्भावना सप्ताह के अवसर पर एक परिचर्चा का आयोजन 25 नवम्बर, 2009 को किया गया जिसमें विभिन्न स्कूल एवं कालेजों के छात्रों एवं शिक्षकों तथा इलाहाबाद के नागरिकों ने भाग लिया।
- सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन 3 से 7 नवम्बर, 2009 के मध्य किया गया।

समीक्षाधीन वर्ष में 66,698 वयस्क, 14,395 बच्चे तथा 228 विदेशियों सहित कुल 86,321 व्यक्ति संग्रहालय देखने आए।

2.2.7

राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद

राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद (एनसीएसएम) विशेष रूप से विद्यार्थियों में तथा सामान्य रूप से आम जनता में व्यापक गतिविधियों एवं परस्पर कार्यक्रमों की श्रृंखला के माध्यम से मुख्यतः विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी को लोकप्रिय बनाने एवं जागरूकता उत्पन्न करने के काम में संलग्न है। राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद अब राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य में विज्ञान संचार के क्षेत्र में विचार धारा स्थापित करने वाला एक अग्रणी संस्थान बन चुका है।

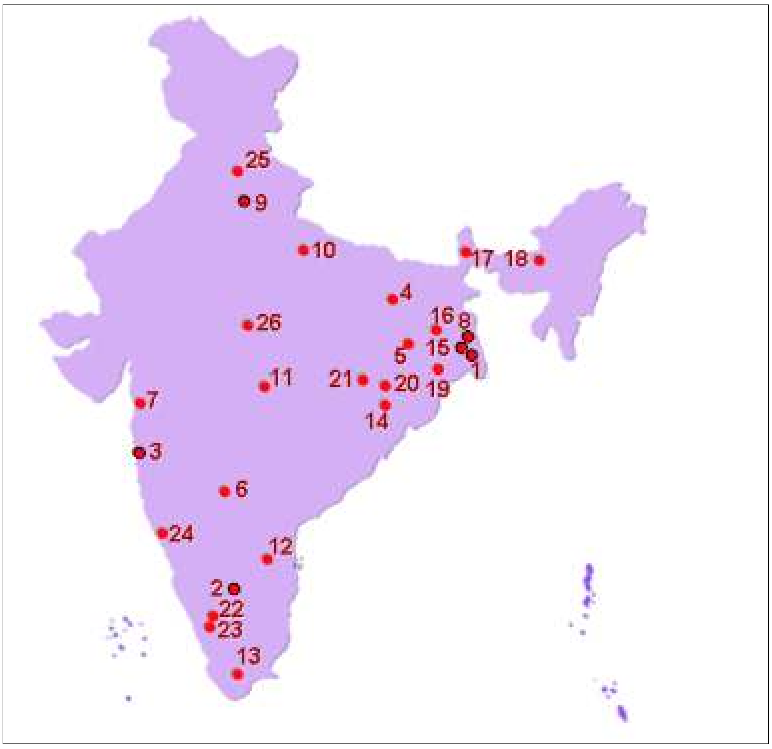

एनसीएसएम लोगों में वैज्ञानिक मनोवृति एवं प्रवृत्ति विकसित करने तथा सामान्य जागरूकता उत्पन्न करने, अन्तर्निवेशन और उसे कायम रखने के उद्देश्य से विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के विकास और उद्योग तथा मानव कल्याण में उनके प्रयोग को प्रस्तुत करता है। परिषद शहरों, कस्बों और ग्रामीण क्षेत्रों में विद्यार्थियों तथा आम जनता के लाभ के लिए विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी को लोकप्रिय बनाता है। यह विद्यार्थियों में वैज्ञानिक जिज्ञासा और रचनात्मकता के उत्साह को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से विद्यालयों तथा कॉलेजों में दिये जा रहे विज्ञान शिक्षण को संपुष्ट करता है। एनसीएसएम विज्ञान, प्रौद्योगिकी तथा उद्योग के विकास में महत्वपूर्ण घटनाओं को दर्शाने वाली ऐतिहासिक वस्तुओं का संग्रह, प्रतिष्ठापन और संरक्षण करता है। परिषद आधुनिक वैज्ञानिक तथा तकनीकी विचार के आलोक में परिषद की गतिविधियों से संबंधित क्षेत्रों में विज्ञान और प्रौद्योगिकी में अनुसंधान संचालित करता है एवं परम्परागत विज्ञान और प्रौद्योगिकी का मूल्यांकन करता है। यह विज्ञान प्रदर्शो और प्रदर्शन उपकरणों के विकास के लिए केन्द्रों की स्थापना करता है। यह विज्ञान संग्रहालयों की योजना बनाने तथा आयोजन में विश्वविद्यालयों, तकनीकी संस्थानों, संग्रहालयों, विद्यालयों और महाविद्यालयों तथा अन्य निकायों को सहायता भी प्रदान करता है और संग्रहालय से जुड़े कार्मिकों को प्रशिक्षण प्रदान करता है।

परिषद के पास विभिन्न प्रकार के दर्शकों के पास पहुँचने के लिए विज्ञान संचार के नये आयामों को विकसित एवं खोज करने की विशेषज्ञता प्राप्त है। इस वर्ष भी परिषद ने विभिन्न राज्य सरकारों और अन्य संगठनों से पूरी तैयारी के आधार पर उन क्षेत्रों में विज्ञान केन्द्रों की स्थापना के लिए प्रस्ताव आ रहे हैं जहाँ ऐसे केन्द्र नहीं हैं।

नए विज्ञान केन्द्रों की स्थापना करने के अतिरिक्त क्षेत्रीय विज्ञान केन्द्र, गुवाहाटी को विज्ञान नगरी में प्रोन्नत करने, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय द्वारा मुम्बई में गतिमान तस्वीरों के संग्रहालय की स्थापना, नेपाल में विज्ञान शिक्षा केन्द्र, मॉरीशस में विज्ञान केन्द्र की प्रोन्नति, नेहरू तारामंडल, दिल्ली के आधुनिकीकरण के प्रस्ताव कार्यान्वित किए जा रहे हैं। देहरादून, मैसूर, पांडिचेरी इत्यादि के लिए अन्य अनेक विज्ञान केन्द्रों के प्रस्ताव पर सक्रिय रूप से विचार किया जा रहा है जिन पर अगले वर्ष कार्य शुरू किया जा सकता है। गैंगटॉक में वर्तमान उप क्षेत्रीय विज्ञान केन्द्र के प्रसार के साथ एक तारामंडल का कार्य भी शुरू किया गया है।

एनसीएसएम ने उत्तर बंगाल विज्ञान केन्द्र, सिलीगुड़ी और धरमपुर, गुलबर्गा और तिरूनेल्वेली में जिला विज्ञान केन्द्रों में 8 एम गुम्बद तारामंडल स्थापित करने का कार्य भी हाथ में लिया है। धरमपुर, गुलबर्गा और तिरूनेल्वेली में तारामंडल के लिए बिल्डिंग तैयार हैं और उपकरणों की प्रतिस्थापना प्रगति पर है। उत्तर बंगाल विज्ञान केन्द्र, सिलीगुड़ी में तारामंडल उद्घाटन के लिए तैयार है।

नयी दीर्घाओं एवं सुविधाओं की शुरूआत के लिए एनसीएसएम के पास ऐसी विशेषज्ञता है कि विज्ञान केन्द्रों में शिक्षण स्थल का निर्माण कर सके जहाँ दर्शकों को विज्ञान का अभ्यास करने एवं विज्ञान की मूल अवधारणा को समझने का अवसर प्रदान कर सके। दीर्घा कहलाने वाले यह शिक्षण स्थल, गहन अन्तःक्रियात्मक माध्यम का प्रयोग कर आनन्दायक अनुमति के साथ विज्ञान सिखाने एवं समझाने का कार्य करते हैं। दर्शकों में अभिरुचि को जागृत करने एवं विज्ञान केन्द्रों में पुनरागमन को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से एनसीएसएम की सभी इकाइयाँ निरन्तर अपनी दीर्घाओं को प्रोन्नत करती हैं। इस प्रयास के फलस्वरूप निम्नलिखित दीर्घाएँ वर्ष के दौरान विकसित की गईं एवं आम लोगों के लिए खोली गईं :–

बी आई टी एम, कोलकाता में अंधकार की दुनिया

- 2 मई, 2009 को बीआईटीएम, कोलकाता में *'लोकप्रिय विज्ञान'*
- 7 सितम्बर, 2009 को आरएससी, तिरूपति में *'लोकप्रिय विज्ञान'*
- 21 अक्तूबर, 2009 को एनएससी, दिल्ली में *'हमारी विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विरासत'*
- 26 अक्तूबर, 2009 को आरएससी, भुवनेश्वर में *'लोकप्रिय विज्ञान'*
- 19 दिसम्बर, 2009 को क्षेत्रीय विज्ञान नगरी, लखनऊ में *'पदार्थों का विचित्र संसार'*

निम्नलिखित दीर्घाएं उद्घाटन के लिए तैयार हैं:–

- आरएससी, कालीकट में *'खगोल विज्ञान एवं अंतरिक्ष'*
- वीआईटीएम, बंगलौर में *'इलेक्ट्रो–तकनीक'*
- एनएससी, मुम्बई में *'मनुष्य एवं मशीन'*
- डीएससी, पुरुलिया में *'लोकप्रिय विज्ञान'*

एनबीएससी, सिलीगुडी में तारामंडल उद्घाटन के लिए तैयार है।

इसके अतिरिक्त, एनसीएसएम की इकाइयों को दर्शकों के लिए निम्नलिखित सुविधाओं से सुसज्जित किया गया है :

- 2 मई, 2009 को बीआईटीएम, कोलकाता में अन्तः क्रियात्मक गोलाकार प्रेक्षण ग्लोब *'गतिमान ग्लोब'*।
- 2 मई, 2009 को केपीएससी, कुरुक्षेत्र में *हाई–डेफिनेशन 3–वि फिल्म फैन्टेसी*।
- 21 मई, 2009 को जीएससी, पणजी में *'मॉन्स्टर्स ऑफ द एवीस'* शीर्षक फिल्म के साथ 3–वि प्रेक्षागृह।
- 2 जून, 2009 को आरएससी, लखनऊ में *'द लिविंग सी'* पर साइमैक्स शो।
- 5 जून, 2009 को केपीएससी, कुरुक्षेत्र में पक्षी–परिक्षेत्र।
- 25 अगस्त, 2009 को डीएससी, गुलबर्गा में *3 डी– प्रेक्षागृह*।
- 1 सितम्बर, 2009 को आरएससी, कालीकट में '**ब्रह्मांड**': आपके खोज के लिए शीर्षक तारामंडल शो।
- 7 सितम्बर, 2009 को आरएससी, लखनऊ में *'एस ओ एस–प्लानेट'* शीर्षक 3–डी शो।
- 10 सितम्बर, 2009 को क्षेत्रीय विज्ञान केन्द्र, लखनऊ में नयी भ्रमणशील विज्ञान प्रदर्शनी।
- 6 अक्तूबर, 2009 को दीर्घा विज्ञान केन्द्र में *'जुरासिक पार्क'* में प्रकाश एवं ध्वनि शो।

- 9 दिसम्बर, 2009 को विज्ञान नगरी, कोलकाता में ***'कोरल रिफ एडवेंचर'*** शीर्षक दीर्घाकार फिल्म।

एनसीएसएम स्थायी प्रदर्शनी दीर्घाओं के अतिरिक्त प्रत्येक वर्ष वर्तमान विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विकास से संबंधित तत्कालीन विषयों पर जागरूकता उत्पन्न करने के उद्देश्य से अपनी सभी इकाइयों में भ्रमणशील प्रदर्शनियाँ परिचालन के लिए विकसित करता है। वर्ष के दौरान एनसीएसएम की इकाइयों में निम्नलिखित प्रदर्शनियाँ विकसित की गईं और परिचालित रखी गई :–

- 2 मई, 2009 को बिऔप्रौसं, कोलकाता में ***'अंधेरे में दुनिया'***।
- 15 मई, 2009 को राविके, दिल्ली में ***'स्वर्ग से संदेश'***।
- 20 नवम्बर, 2009 को जिविके, धरमपुर में ***'जल एवं स्वच्छता'*** पर एक भ्रमणशील विज्ञान प्रदर्शनी

एनसीएसएम की विभिन्न इकाइयों में अन्य प्रदर्शनियाँ– 'जैवविविधता–जीवन का तंतु', 'नैनोटेकनोलॉजी', 'भ्रम', 'हयूमन जीनॉम ऐंड बियांड', 'आसमान में एक आँख', 'खगोलीय विज्ञान वेधशालाओं की दुनिया', 'शैतिकी की शताब्दी', 'नदियाँ', ध्रुवों की कहानी', 'हमारे अंगरक्षक' और 'हमारे ग्रह की माप' इत्यादि परिचालित होती रहीं।

अत्याधुनिक प्रदर्शों के उत्पादन, नयी संचार विधियों के विकास, नवप्रवर्तन प्रदर्शन तकनीक, अन्तःकियात्मक एवं अनुभव आधारित प्रदर्श/डिजीटल प्रौद्योगिकी के उपयोग में दक्षता के कारण देश एवं विदेशों के अन्य विज्ञान केन्द्रों एवं संग्रहालयों में एनसीएसएम की मांग हमेशा से बनी रहती है। अन्य संगठनों को एनसीएसएम द्वारा निम्नलिखित उत्प्रेरणात्मक सहयोग प्रदान किया गया :

- राँची, रायपुर, धारवाड़, कोयम्बटूर, पुणे, जयपुर और पिलिकुला में क्षेत्रीय विज्ञान केन्द्रों के लिए अन्तः एवं बाह्य प्रदर्शों के विकास।
- राजीव गाँधी विज्ञान केन्द्र, मॉरीशस के लिए तारामंडल (फूलाने योग्य गुम्बद तारामंडल)
- सुकांत अकादमी, अगरतला में 'त्रिपुरा की संपदा' पर दीर्घा के लिए 30 प्रदर्श।
- विज्ञान केन्द्र, इम्फाल, मणिपुर और विज्ञान केन्द्र, आइजोल, मिजोरम के लिए दो 3–डी प्रेक्षागृह।
- विज्ञान केन्द्र पोर्टब्लेयर के लिए 'लोकप्रिय विज्ञान पर 24 भ्रमणशील विज्ञान प्रदर्शनियों के साथ भ्रमणशील विज्ञान प्रदर्शनी बस।
- टीएनएसटीसी, चेन्नई के लिए 16 मनोरंजक विज्ञान प्रदर्श।
- सूरत विज्ञान केन्द्र, सूरत में मनोरंजक विज्ञान दीर्घा की स्थापना।

एनसीएसएम संस्कृति मंत्रालय के अन्तर्गत अन्य संग्रहालयों को डिजिटल प्रौद्योगिकी के माध्यम से उनकी दीर्घा प्रस्तुति में आधुनिकीकरण के लिए सहयोग दे रहा है। एनसीएसएम अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी एवं प्रदर्शो के साथ नेहरू तारामंडल, दिल्ली का आधुनिकीकरण भी कर रहा है।

प्रशिक्षण एवं कार्यशाला

संकल्पना, डिजाइन और विकास पर कार्यशाला

चूँकि परिषद की सफलता अपने समर्पित एवं कुशल श्रम शक्ति पर निर्ष्र करती है, मानव संसाधन विकास इसकी कार्यसूची में शीर्ष पर है। यह तदनुकूल प्रशिक्षण कार्यक्रमों एवं पेशेवर कार्यशालाओं तथा सम्मेलनों का आयोजन करता है। वर्ष के दौरान अत्याधुनिक संरचना और पेशेवर श्रमशक्ति के साथ, एनसीएसएम ने 25–29 मई, 2009 के दौरान सीआरटीएल में तारामंडल (फूलानेयोग्य गुम्बद तारामंडल) के प्रचालन एवं अनुरक्षण के लिए गुणवता विकास कार्यक्रम आयोजित किया। 03–12 अगस्त, 2009 के दौरान सीआरटीएल, कोलकाता में अन्तःक्रियात्मक प्रदर्शो की संकल्पना, डिजाइन एवं विकास पर कार्यशाला आयोजित की। 07–12 सितम्बर, 2009 के दौरान विज्ञान नगरी, कोलकाता में 'प्रदर्शनों में दक्षता' शीर्षक कार्यशाला का आयोजन किया। 01–31 अक्तूबर, 2009 के दौरान सीआरटीएल, कोलकाता में नव नियुक्त संग्रहाध्यक्षों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। 21–31 अक्तूबर, 2009 के दौरान आईआईएसडब्ल्युबीएम, कोलकाता में एनसीएसएम के वरिष्ठ स्तरीय संग्रहाध्यक्षों के प्रबंधन विकास कार्यक्रम आयोजित किया। 11–13 दिसम्बर, 2009 के दौरान रमन विज्ञान केन्द्र, नागपुर में 'विज्ञान संग्रहालय/केन्द्र : सामाजिक समावेशन में पहुँच' विषय पर संग्रहालयों के प्रमुखों का 9वां सम्मेलन।

अनुसंधान एवं विकास

एनसीएसएम केन्द्रों के अनुसंधान एवं विकास स्कंध प्रभवी विज्ञान संचार के लिए नये हार्डवेयर एवं सॉफ्टवेयर का व्यवहार में लाने के उद्देश्य से डिजाइन एवं विकास के लिए कठिन प्रयास करते हैं। इसके परिणामस्वरूप विचाराधीन अवधि के दौरान एनसीएसएम ने उच्च प्रभव डिजिटल

विषय वस्तुओं के 360° गोलाकार प्रदर्श का विकास किया, नयी शैतिकी अन्तराफलक तकनीक का प्रयोग करते हुए काल्पनिक शैतिकी प्रयोग का विकास किया, द्रव से भरे ट्यूबों की श्रृंखला में बुलबुलों के साँचे और बड़ी एलसीडी स्क्रीन पर जीवंत तस्वीरों का दीर्घाकार अवलोकन किया, वास्तविक समय नियंत्रण प्रणाली नियंत्रित अन्तः क्रियात्मक संरचना दर नियंत्रित के लिए जीवंत विडियो का समावेशन किया, एनीमैट्रोनिक्स तकनीक का उपयोग करते हुए नये अन्तः क्रियात्मक प्रदर्शों का विकास किया, तस्वीर प्रक्रियाकरण प्रौद्योगिकी का प्रयोग करते हुए काल्पनिक वास्तविकता अन्तः क्रियात्मक प्रदर्श का विकास किया, विज्ञान प्रदर्शन प्रयोगशाला के लिए किट्स का विकास किया।

सी आर टी एल, कोलकाता में नये प्रदर्शों का अनुसंधान और विकास

इस अवधि के दौरान दो कॉपीराइट प्राप्त किए गए :

- नदियों ने सभ्यताओं का निर्माण किया (सॉफ्टवेयर)
- अन्तःक्रियात्मक मैप ब्राउज़र (सॉफ्टवेयर)

परिषद पूरे विश्व में अन्तर्राष्ट्रीय सहयोगात्मक कार्यक्रमों जैसे कार्यशालाएँ, प्रदर्शनियाँ, प्रशिक्षण इत्यादि के माध्यम से विज्ञान संग्रहालयों/केन्द्रों के साथ ज्ञान का विनिमय एवं आदान–प्रदान करता है। इस वर्ष के दौरान एनसीएसएम ने 3–7 जून, 2009 के दौरान विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के राष्ट्रीय संग्रहालय, मिलान, इटली में यूरोपीयन नेटवर्क ऑफ साइंस सेंटर्स एण्ड म्यूजियम्स (ईसीएसआई) की 20वीं बैठक में भाग लिया, 7 जून, 2009 को मिलान, इटली में 6वें विज्ञान केन्द्र विश्व सभा के अन्तर्राष्ट्रीय कार्यक्रम समिति की बैठक में भाग लिया, 04–09 अगस्त, 2009 के दौरान सॉन, कोरिया में कोरिया विज्ञानोत्सव, 2009, 25 अक्तूबर–2 नवम्बर, 2009 के दौरान संग्रहालयों में विज्ञान संचार की समृद्धि पर द्विपक्षीय विनिमय कार्यक्रम टेक्सॉस में स्मिथसोनियन इन्स्टीट्यूशन, वाशिंगटन डीसी के साथ और एएसटीसी की बैठक में भाग लिया, सीआरटीएल, कोलकाता में 25 नवम्बर–4 दिसम्बर, 2009 के दौरान 'मापों' पर इन्डो–फिनिश कार्यशाला में भाग लिया, अगस्त–सितम्बर, 2009 के दौरान केगप्रप्र में विज्ञान संग्रहालयों एवं केन्द्रों के विभिन्न पहलुओं पर यमन में आने वाले विज्ञान केन्द्र से दो कार्मिकों को प्रशिक्षित किया।

शैक्षिक गतिविधियाँ

एनसीएसएम के प्रमुख कार्यक्रमों में से एक कार्यक्रम विद्यालयी विज्ञान शिक्षण को सम्पुष्ट करना है। वर्ष के दौरान एनसीएसएम द्वारा निम्नलिखित कार्यक्रम आयोजित किए गए :

एनसीएसएम के दूर–दराज़ स्थित विज्ञान केंद्रों में अनेक सामुदायिक कार्यक्रम आयोजित किए गए।

- 2 मई, 2009 को बीआईटीएम, कोलकाता ने अपनी 50वीं वर्षगांठ मनायी।
- 22 जुलाई, 2009 को 21वीं शताब्दी का सबसे लम्बे समय के पूर्ण सूर्यग्रहण के अवलोकन के लिए राविसंप की सभी इकाइयों में विशेष व्यवस्थाएं की गईं। इस संदर्भ में, एनसीएसएम की अनेक इकाइयों ने जागरूकता कार्यक्रम, लोकप्रिय विज्ञान व्याख्यान, लिखित एवं मुक्त प्रांगन प्रश्नोत्तरी, कार्यशाला, पोस्टर निर्माण प्रतियोगिता, कम लागत पर दूरबीन एवं सूर्य चित्रीय निर्माण, सूक्ष्म–छिद्र सौर प्रक्षेपक निर्माण, बैठकर चित्रकारी प्रतियोगिता, 'सूर्यग्रहण' पर प्रदर्शनी बहुमाध्यम एवं पावर प्वाइंट प्रस्तुति, सूर्य ग्रहण पर विज्ञान फिल्म शो इत्यादि का आयोजन किया। सूर्य ग्रहण की अवधि के दौरान एनसीएसएम की प्रमुख इकाइयों को वी–सैट चैनल के माध्यम से जोड़ा गया।
- 26 सितम्बर, 2009 को नेहरू विज्ञान केन्द्र, मुम्बई में स्कूली विद्यार्थियों के लिए 'चन्द्रायन : संभावनाएँ एवं चिन्ताएँ' पर राष्ट्रीय विज्ञान संगोष्ठी का आयोजन किया गया।
- 10 सितम्बर, 2009 को बीआईटीएम, कोलकाता में विद्यार्थियों के लिए राष्ट्रीय विज्ञान नाट्योत्सव का आयोजन किया गया।
- पीसीआरए के सहयोग से 2–12 दिसम्बर, 2009 के दौरान पूरे देश में एनसीएसएम की सभी जिला, राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर की इकाइयों में ईंधन बचायें यानी पैसा बचायें विषय पर राष्ट्रीय

राष्ट्रीय विज्ञान सेमिनार

स्तर पर चित्रकारी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

- पूरे वर्ष के दौरान सभी केन्द्रों/संग्रहालयों में खगोल विज्ञान से संबंधित कार्यक्रमों के आयोजन द्वारा एनसीएसएम ने अन्तर्राष्ट्रीय खगोल वर्ष–2009 मनाया।

पूरे वर्ष के दौरान अनेक अन्य कार्यक्रम जैसे विज्ञान प्रदर्शन व्याख्यान, तारामंडल शो, क्रियात्मक योग्यता कार्यक्रम, विज्ञान फिल्म शो, विज्ञान शिविर, कम्प्यूटर मेला, शिक्षक प्रशिक्षण इत्यादि आयोजित किए गए। दूरवर्ती क्षेत्रों में स्थित एनसीएसएम के विज्ञान केन्द्रों में अनेक सामुदायिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

प्रकाशन

विज्ञान संचार के क्षेत्र में प्रकाशन को सहयोग देने एवं संपुष्ट करने के लिए एनसीएसएम के पास प्रभावशाली संसाधन है। फलस्वरूप इस वर्ष निम्नलिखित प्रकाशन निकाले गए :

- वर्ष 2008–2009 के लिए कार्यकलाप रिपोर्ट।
- बीआईटीएम की 50वीं वर्षगांठ शीर्षक एक पुस्तक।
- राष्ट्रीय विज्ञान नाट्योत्सव और राष्ट्रीय विज्ञान संगोष्ठी पर स्मारिका।
- आचार्य जे. सी. बोस की 150वीं वर्षगांठ के आयोजन के संबंध में 'सर जे. सी. बोस आधुनिक विज्ञान के प्रवर सदस्य' शीर्षक एक वृत्तचित्र और बहुमाध्यम सीडी के साथ 'एक महान वैज्ञानिक के सरल प्रयोग' पर एक पुस्तक।
- नयी प्रदर्शनियों, नयी दीर्घाओं इत्यादि पर फोल्डर्स।
- एनसीएसएम इकाइयों में विभिन्न पुस्तकालयों ने पुस्तकें और सीडी खरीदीं और विज्ञान संचार से संबंधित पत्रिकाओं को खरीदा।
- वी–सैट कार्यक्रमों के लिए अपनी दीर्घाओं एवं अन्य विज्ञान विषयों पर 10–15 भिन्न प्रकार का बहुमाध्यम।

पूरे विश्व में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के बदलते परिदृश्य के साथ, यह आवश्यक है कि अधिक से अधिक लोग विज्ञान संग्रहालयों/केन्द्रों तक जा सकें। बदले में इसके लिए ऐसी गतिविधियों को बनाए रखने हेतु प्रशिक्षित श्रम शक्ति की सेवा आवश्यक होती है। तथापि, किसी भी भारतीय विश्वविद्यालय द्वारा विज्ञान संचार पर सु–संगठित औपचारिक पाठ्यक्रम प्रदान नहीं किया जाता। राविसंप ने बिट्स पिलानी के सहयोग से विज्ञान संचार के क्षेत्र में संभावित पेशेवरों को प्रशिक्षित करने के उद्देश्य से विज्ञान संचार में एम. एस. पाठ्यक्रम की शुरूआत की है।

इस वर्ष के दौरान तृतीय बैच के लिए कार्यक्रम चल रहा है। 10 अप्रैल, 2009 को एनसीएसएम (मुख्यालय), कोलकाता में विज्ञान संचार में एम. एस. पाठ्यक्रम के द्वितीय बैच के विद्यार्थियों के लिए स्नातकोत्सव का आयोजन किया गया।

वर्त्तमान में भारतीय विज्ञान केन्द्र सावधानीपूर्वक अपने कार्यक्रमों के व्यक्तिगत, सामाजिक एवं आर्थिक स्तरों पर प्रभाव का अध्ययन एवं मूल्यांकन कर रहे हैं। राविसंप द्वारा मूल्यांकन अध्ययन की शुरूआत की गई है और प्राप्त प्रतिक्रियाओं का उपयोग बेहतर कुशलता और ऊँचे प्रभावों के लिए किया जायेगा। एनसीएसएम द्वारा इसके लिए एक परियोजना सहायक को नियुक्त किया गया है।

गुणवत्ता सुधार कार्यक्रम

2.3
संग्रहालय से संबंधित कार्यकलापों में क्षमता निर्माण

2.3.1

राष्ट्रीय संग्रहालय : कला इतिहास, संरक्षण एवं संग्रहालय-विज्ञान संस्थान

संस्कृति मंत्रालय द्वारा पूर्णतः वित्त–पोषित स्वायत्त संगठन, राष्ट्रीय संग्रहालय संस्थान की स्थापना वर्ष 1989 जनवरी में एक संस्था के रूप में की गई थी तथा वर्ष 1989 अप्रैल में विश्वविद्यालय सम घोषित किया गया था। भारत में यह एकमात्र विश्वविद्यालय है जो विशेष रूप से संग्रहालयों से संबंधित है। इस समय यह संस्थान राष्ट्रीय संग्रहालय के परिसर में कार्य कर रहा है। इसके संगम–ज्ञापन के अनुसार, माननीय संस्कृति मंत्री सोसायटी के अध्यक्ष और संस्थान के कुलाधिपति होते हैं। महानिदेशक, राष्ट्रीय संग्रहालय संस्थान के पदेन कुलपति होते हैं।

संस्थान का उद्देश्य कला इतिहास, संरक्षण, संग्रहालय विज्ञान आदि के विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न अध्ययन, प्रशिक्षण और अनुसंधान की सुविधाएं उपलब्ध कराना तथा सांस्कृतिक संपदा से संबंधित अन्य संस्थानों के साथ सहयोग करना है ताकि सामग्री, संग्रह/तकनीकी सुविज्ञता तथा सुविधाओं का आदान–प्रदान किया जा सके। संस्थान उपर्युक्त क्षेत्रों में शिक्षण के मानकों में सुधार करने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर निरंतर आधार पर विचार–विमर्श करता है तथा शैक्षिक मार्गदर्शन और नेतृत्व प्रदान करता है और संस्थान की ऐसी कृतियों को प्रकाशित करता है जिनका विशिष्टता के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान रहा हो।

उपर्युक्त उद्देश्यों के अनुसरण में, राष्ट्रीय संग्रहालय संस्थान, कला इतिहास, संग्रहालय विज्ञान तथा संरक्षण में कला स्नातकोत्तर (एम.ए.) तथा वाचस्पति (पीएच.डी.) में उपाधियां प्रदान करता है; संस्थान, अंग्रेजी में ''भारतः कला एवं संस्कृति'' और ''कला मूल्यांकन'' तथा हिन्दी में ''भारतीय कलानिधि'' नामक पांच माह का प्रमाण–पत्र पाठ्यक्रम (अल्पकालिक पाठ्यक्रम) संचालित करता है; राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय सेमिनार, कार्यशालाएं तथा संगोष्ठियां आयोजित करता है और संगत विषयों पर लब्धप्रतिष्ठित विद्वानों के व्याख्यानों की व्यवस्था करता है और अपनी कृतियों का प्रकाशन करता है। संस्थान में स्लाइडों का आकर्षक संग्रह तथा एक लघु पुस्तकालय है जिनका अनुसंधान अध्येता तथा शिक्षाविद् लाभ उठा सकते हैं।

कार्यकलाप

वर्ष 2009 के दौरान संस्थान ने कला स्नातकोत्तर में 40 छात्रों, वाचस्पति में 11 छात्रों तथा अल्पकालिक पाठ्यक्रमों में 252 छात्रों को प्रवेश दिया गया।

प्रतिवेदनाधीन वर्ष के दौरान संस्थान ने 28 अप्रैल, 2009 को अपना 21वां स्थापना दिवस मनाया। प्रबंधन मंडल की बैठक 16 जून, 2009 को आयोजित की गई थी। नए शैक्षणिक सत्र में कला स्नातकोत्तर (एम.ए.) के लिए 2 और 3 जुलाई, 2009 तथा वाचस्पति (पीएच डी.) के लिए 6 जुलाई, 2009 को साक्षात्कार आयोजित किए गए थे और सत्र 6 अगस्त, 2009 को आरंभ हुआ। वी. सी., एनएमआई ने 7 अगस्त, 2009 को अल्पावधि पाठ्यक्रमों के सफल

छात्रों को प्रमाण–पत्र वितरित किए। ''हाउ टू केयर फॉर टेक्स्टाइल कलेक्शन–मेथड्स एण्ड प्रेक्टिकल एप्रोचिस'' पर एक कार्यशाला 17–22 अगस्त, 2009 के बीच आयोजित की गई थी। यूनिवर्सिटी ऑफ केलिफोर्निया एजुकेशन एब्रॉड कार्यक्रम 18 अगस्त, 2009 को आरंभ हुआ और 3 नवम्बर, 2009 को पूरा हुआ। भारत–ऑस्ट्रिया का सम्मेलन ''कल्चरल हेरिटेज काउंट्स रिसर्च, कंर्जवेशन एण्ड मैनेजमेंट'' 20–21 अगस्त, 2009 को आयोजित किया गया। सुश्री अनामिका बिस्वास को 19 अगस्त, 2009 को कला का इतिहास के लिए पी.एच.डी. और श्री अचल पांड्या, सहायक आचार्य (संरक्षण) को 29.08.2009 को पीएच.डी (संरक्षण) की डिग्री प्रदान की गई।

5 सितम्बर, 2009 को शिक्षक दिवस मनाया गया था। संस्थान का प्रगति प्रतिवेदन और प्रस्तुतीकरण विश्वविद्यालय अनुदान आयोग में 19 सितम्बर, 2009 को जमा किया गया था। सुश्री सुलेखा बनर्जी को पीएच. डी. (संग्रहालय विज्ञान) 22 सितम्बर, 2009 को प्रदान की गई। ''साउंड एण्ड इमेज कलेक्शन्स–2009'' पर अंतरराष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन सचिव (संस्कृति) द्वारा 16 नवंबर, 2009 को किया गया और यह 11 दिसम्बर, 2009 को पूरा हुआ। वित्त समिति की बैठक 16.11.2009 को आयोजित की गई थी। संस्थान के छात्रों ने 4 जनवरी से 14 जनवरी, 2010 तक त्रिवेन्द्रम का अध्ययन दौरान किया। संकाय अध्यक्ष (एए) ने त्रिवेन्द्रम में ''कंर्ज़वेशन ऑफ हिस्टोरिक बिल्डिंग्स विद स्पेशल रेफरेंस टू वुडन स्ट्रक्चर्स'' पर सम्मेलन में भाग लिया। उप कुलपति और विभागाध्यक्ष (एचओए) ने राष्ट्रमंडल खेल 2010 के दौरान कनाडा से नई दिल्ली तक एक प्रदर्शनी का आयोजन करने के लिए कनाडा का दौरा किया।

प्रतिवेदनाधीन वर्ष के दौरान पूर्वोत्तर में द्वितीयक भाव और पुराने बौद्ध अवशेष और गैर–विनाशी तकनीकों का इस्तेमाल करते हुए धात्विक दुर्लभ वस्तुओं की लाक्षणीकरण परियोजनाएं पूरी की गईं अथवा इन पर अभी कार्य चल रहा है। मध्य एशिया की कला और बहु सांस्कृतिक परिदृश्य में भारतीय महाद्वीप पर अंतरराष्ट्रीय गोष्ठी की कार्रवाइयां प्रकाशित की गई हैं। 'संघोल मूर्तिकला' का मुद्रण कार्य अभी चल रहा है।

केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग ने नोएडा परियोजना का योजना तथा परिव्यय तैयार किया है। इस परियोजना पर कुल 3339.09 लाख रुपए का व्यय होने की संभावना है। एसएफसी प्रस्ताव अनुमोदन हेतु मंत्रालय को भेजे गए हैं।

यूजीसी द्वारा आयोजित नेट परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले पीएच डी. के तीन छात्रों को यूजीसी कनिष्ठ अनुसंधान अध्येतावृत्ति प्राप्त हुई जबकि 3 पुराने अनुसंधान अध्येताओं और 2 अन्य ने भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली से अध्येतावृत्तियां प्राप्त कीं।

एनएमआई कला और संस्कृति तथा कला अभिमूल्यन में अंग्रेजी और हिन्दी भाषा में अल्पावधिक पाठ्यक्रम चलाता है।

2.3.2

राष्ट्रीय सांस्कृतिक सम्पदा संरक्षण अनुसंधानशाला (एन.आर.एल.सी.)

राष्ट्रीय सांस्कृतिक सम्पदा संरक्षण अनुसंधानशाला (एन.आर.एल.सी.) दक्षिण एवं दक्षिण–पूर्व एशिया में अपने प्रकार की एक प्रमुख संस्था है। इसकी स्थापना संस्कृति मंत्रालय द्वारा सन् 1976 में की गई थी और बाद में विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने इसे एक वैज्ञानिक संस्था की मान्यता प्रदान की। प्रयोगशाला का मुख्यालय लखनऊ में स्थित है।

राष्ट्रीय सांस्कृतिक सम्पदा संरक्षण अनुसंधानशाला के मुख्य उद्देश्य हैं–संरक्षण की बेहतर विधियों को विकसित करने के लिये शोध करना, कला एवं पुरातात्विक वस्तुओं का तकनीकी अध्ययन करना, संग्रहालयों, अभिलेखागारों, पुरातात्विक विभागों एवं अन्य संस्थाओं को सहायता एवं तकनीकी परामर्श प्रदान करना, अन्तर्राष्ट्रीय सम्पर्क।

समीक्षाधीन वर्ष के दौरान एन.आर.एल.सी. ने कागज संरक्षण के लिये विविध प्रकार के बीजों के लेपों के चिपकने वाले गुण–धर्म का मूल्यांकन किया, अमलतास, सिंघाड़ा एवं बबूल के बीज के लेप लगे हुए कागज के नमूनों का परीक्षण किया, आम एवं चावल के बीज के लेप लगे हुए नमूनों का परीक्षण किया, भण्डारण एवं प्रदर्शन हेतु प्रयुक्त सामग्री के मूल्यांकन के लिये विधि का विकास किया, पेंट किये गये कलात्मक वस्तुओं में प्रयुक्त रंगों एवं अन्य सामग्री का अध्ययन एवं पहचान की गई, एक्सआरडी, एलओआई, एलओएम द्वारा रंजकों एवं प्लास्टर का विश्लेषण करके भित्ति चित्रों में प्रयुक्त सामग्री का वैज्ञानिक अध्ययन पूर्ण किया गया, एवं परीक्षण किया गया, ताड़पत्र पाण्डुलिपियों के संरक्षण में प्रयुक्त मूलभूत तेलों का प्रयोग का फफूँद के विभिन्न रूपों के लिए परीक्षण किया गया, विश्व विरासत इमारतों की जैवीयक्षरण सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन किया और पत्थर तथा स्मारकों के लिए पौलिमर प्रोटेक्टोसिल डब्लयुएस 700पी जैसी लेपन सामग्रियों के मानदण्डों का अध्ययन किया।

प्रशिक्षण और अन्य कार्यकलाप

समीक्षाधीन अवधि के दौरान एन.आर.एल.सी. ने 18 अगस्त से 4 सितम्बर, 2009 तक बेहाला (पश्चिम बंगाल) के राज्य पुरातत्व संग्रहालय में पेंटिंग्स के संरक्षण पर कार्यशाला आयोजित की। 10 से 11 सितम्बर, 2009 तक राज्य संग्रहालय, गोवा में रोग के रोक–थाम सम्बन्धी संरक्षण विषय पर दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया। 23 से 26 सितम्बर, 2009 तक कोचीन में राज्य अभिलेखागार, त्रिवेन्द्रम के सहयोग से पुरातात्विक सामग्री के संरक्षण विषय पर चार दिवसीय कार्यशाला आयोजित की। अगस्त, 2009 में लखनऊ की सांस्कृतिक धरोहर की देखभाल एवं रख–रखाव पर कार्यशाला का आयोजन किया। सितम्बर, 2009 से फरवरी, 2010 तक संरक्षण विषय पर 6 माह के प्रशिक्षण पाठ्यक्रम की व्यवस्था की। 5 से 14 अक्टूबर, 2009 तक क्षेत्रीय संरक्षण प्रयोगशाला, मैसूर में सांस्कृतिक धरोहर की देखभाल एवं रख–रखाव विषय पर दो दिवसीय कार्यशाला का भी आयोजन किया। ध्वनि एवं प्रतिबिम्ब संग्रहों (एसओआईएमए 2009) पर आईसीसीआरओएम, रोम के सहयोग से

16 नवम्बर, 2009–11 दिसम्बर, 2009 तक अन्तर्राष्ट्रीय पाठ्यक्रम आयोजित किया। एन.आर.एल.सी. ने 1 से 3 मार्च, 2009 तक म्यूजियम्स एसोसियेशन ऑफ इण्डिया का वार्षिक संग्रहालय सम्मेलन का आयोजन किया। सम्मेलन का विषय था संरक्षण–संग्रहाध्यक्षों का उत्तरादायित्व।

एन.आर.एल.सी. ने क्षेत्रीय अभिलेखागार, कोचीन की हस्तलिपियों, क्राफ्ट्स म्यूजियम, लखनऊ के वस्त्रों, बोर्ड ऑफ रेवेन्यू, उ0प्र0 के 25 मानचित्रों का संरक्षण किया, कारसा गोम्पा, लद्दाख के दुरवांग गोम्पा से मित्तिचित्रों को स्थानान्तरित। किया, राज्य संग्रहालय, गोवा की पेंटिंग्स, सन्तूर मठ, मैसूर के फरदार खालों का संरक्षण किया। इसने देश के विविध सीानों पर स्थित मित्ति चित्रों के कार्यस्थलों की स्थिति का मूल्यांकन एवं सर्वेक्षण किया। मीनाक्षी मंदिर, मदुरै की कुछ बड़ी पेंटिंग्स का संरक्षण किया और बंलौर में रूस के चित्रकार डॉ. रोरिक की पेंटिंग्स की जॉच की।

वर्तमान में एन.आर.एल.सी. के पुस्तकालय में 14,000 से अधिक दस्तावेज तथा 350 माइक्रोफिश हैं और 55 राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पत्र–पत्रिकाएं मंगवाई जाती हैं। पुस्तकालय ने पोर्टेबल माइक्रो एक्स–रे लोरेसेन्स स्पेक्ट्रो फोटोमीटर सिस्टम खरीद लिया गया है और **संरक्षण प्रशिक्षण संस्थान का** निर्माण चल रहा है।

एन.आर.एल.सी. ने कागज संरक्षण के लिये विविध प्रकार के बीजों के लेपों के चिपकने वाले गुण–धर्म का मूल्यांकन किया है।

2.4

राष्ट्रीय संस्कृति निधि

राष्ट्रीय संस्कृति निधि की स्थापना, मानव संसाधन विकास से संबंधित संसदीय स्थायी समिति की 10वीं रिपोर्ट में विहित सिफारिशों के आधार पर धर्मस्व निधि अधिनियम, 1890 के तहत 28 नवंबर, 1996 को भारत सरकार की राजपत्रित अधिसूचना संख्या 695 के जरिए एक न्यास के रूप में की गई थी। ऐसा अतिरिक्त संसाधन जुटाने के उद्देश्य से किया गया था। इसे औपचारिक रूप से 29 मार्च, 1997 को शुरू किया गया। राष्ट्रीय संस्कृति निधि का उद्देश्य निगमित क्षेत्र, गैर–सरकारी संगठनों, राज्य सरकारों, निजी/सार्वजनिक क्षेत्र तथा अलग–अलग व्यक्तियों से भारतीय सांस्कृतिक विरासत के मूर्त और अमूर्त दोनों रूपों के प्रसार, संरक्षण और परिरक्षण हेतु भागीदारी आमंत्रित करना है।

प्रबंधन और प्रशासन

राष्ट्रीय संस्कृति निधि का प्रबंधन और प्रशासन, परिषद और एक कार्यकारी समिति द्वारा चलाया जाता है। पर्यटन और संस्कृति मंत्री, परिषद के अध्यक्ष होते हैं। इस परिषद में अध्यक्ष और सदस्य–सचिव सहित अधिकतम 24 सदस्य हो सकते हैं जिसमें से 19 गणमान्य सदस्य निगमित क्षेत्र, निजी प्रतिष्ठानों और गैर–लाभकारी संगठनों जैसे विभिन्न क्षेत्रों से होंगे। राष्ट्रीय संस्कृति निधि की संरचना के अनुरूप, इसके तत्वावधान में आयोजित कार्यकलापों के संबंध में यह भारतीय संसद और दानकर्ताओं के प्रति उत्तरदायी है। इसमें दानकर्ताओं, राष्ट्रीय संस्कृति निधि, नागरिक प्राधिकारियों तथा जहां आवश्यक है, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण को प्रतिनिधित्व दिया गया है। परियोजनाओं के लेखाओं को वार्षिक रूप से राष्ट्रीय संस्कृति निधि के लेखाओं में समाविष्ट किया जाता है, जिनकी लेखा परीक्षा, भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक द्वारा की जाती है।

कर लाभ

राष्ट्रीय संस्कृति निधि को दी जाने वाली दान की राशि पर आयकर अधिनियम की धारा 80 जी (2) के तहत कर से शत–प्रतिशत की छूट है।

अक्षय निधि :

भारत सरकार, संस्कृति मंत्रालय ने समीक्षाधीन वर्ष के दौरान 19.50 करोड़ रु. की पूरी राशि जारी की है और राष्ट्रीय संस्कृति निधि को अक्षय निधि के रूप में 19.50 करोड़ रुपए की राशि प्रदान करने का अपना वचन पूरा किया है।

कार्यकारिणी समिति की बैठक

एनसीएफई कार्यकारिणी समिति के अध्यक्ष की अध्यक्षता में 13 अक्तूबर, 2009 और 17 दिसम्बर, 2009 को राष्ट्रीय संस्कृति निधि की कार्यकारिणी समिति की 10वीं और 11वीं बैठकों का आयोजन किया गया था।

निम्नलिखित संगठनों के साथ राष्ट्रीय संस्कृति निधि द्वारा समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गए :

(i) गेल इंडिया लिमिटेड के साथ तुगलकाबाद किला, नई दिल्ली के जीर्णोद्धार और अनुरक्षण के लिए 13 अप्रैल, 2009 को। गेल की ओर से एनसीएफ को 30 लाख रुपए की राशि जारी की गई है। विस्तृत परियोजना रिपोर्ट एएसआई, दिल्ली सर्किल द्वारा तैयार की जा रही है।

(ii) नागरिक सेवा मंडल, अंबरनाथ द्वारा प्राचीन शिव मंदिर के संरक्षण के लिए–समझौता ज्ञापन प्रचालन द्वारा हस्ताक्षरित किया जा रहा है।

(iii) एनटीपीसी के साथ (क) स्मारकों का समूह, मांडू (म. प्र.) (ख) मंदिरों का समूह, जागेश्वर (उत्तराखण्ड) और (ग) पुरातात्विक स्थल, ललितगिरी/धौली (उड़ीसा) के संरक्षण और परिरक्षण के लिए 22.02.09 को। एनटीपीसी द्वारा 5 वर्ष की अवधि में 5.00 करोड़ रुपए का अंशदान दिया जाएगा।

(iv) मे. नॉरस ट्रस्ट द्वारा 11.12.2009 को इब्राहिम रौजा तथ गोल गुम्बज, बीजापुर के उद्यानों के सुधार के लिए।

(v) सहयोग का ज्ञापन भी ओएनजीसी के साथ 18 दिसम्बर, 2009 को हस्ताक्षरित किया गया, जिसमें वे संयुक्त रूप से सहयोग करने और पांच वर्ष की अवधि में राष्ट्रीय विरासत तथा संस्कृति को आगे बढ़ाने की परियोजनाएं लेने के लिए सहमत हुए है। ओएनजीसी द्वारा 5 वर्ष की अवधि में प्रत्येक वित्तीय वर्ष 2.00 करोड़ रुपए का अंशदान दिया जाएगा।

अमूर्त सांस्कृतिक विरासत

एनसीएफ की कार्यकारिणी समिति के निर्देशानुसार अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के क्षेत्र में कार्य करने की पहल की गई है।

वर्ष के दौरान पूर्ण परियोजनाएं :

1. भारत में कला और दृश्य संस्कृति (1857–2007) : एनसीएफ, में. बोधी आर्ट्स लि., दिल्ली और मे. मार्ग पब्लिकेशन, मुम्बई के बीच 24 मार्च, 2006 को आधुनिक कला पर एक संकलन जिसका नाम **आर्ट एण्ड विजुअल कल्चर इन इंडिया (1857–2007)** तैयार करने के लिए एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए थे।

   एनसीएफ को मे. मार्ग पब्लिकेशन्स, मुम्बई से पुस्तक की 200 प्रतियां प्राप्त हो गई हैं। यह परियोजना पूरी हो गई है।

2. **मीरों का संगीत** : एनसीएफ और देवहटी दामोदर स्वराज ट्रस्ट के बीच मीरों के संगीत के परिरक्षण और विकास के लिए 14 मार्च, 2006 को एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए थे। इस परियोजना का उद्देश्य मीरों के संगीत पर अनुसंधान और प्रलेखन करना था। इसका मुख्य लक्ष्य मीर समुदाय के इतिहास और वर्तमान सामाजिक–आर्थिक स्थिति को दर्ज करने के साथ पाठ्य और दृश्य–श्रव्य माध्यम में उनकी संगीत परंपरा को अभिलेखित करना था।

राष्ट्रीय संस्कृति निधि की पुनः संरचना :

एनसीएफ की पुनः संरक्षण पर मे. इन साइट बिजनेस कंसल्टेंसी द्वारा सितम्बर 2009 में मंत्रालय को एक रिपोर्ट प्रस्तुत की गई थी। इस रिपोर्ट को 6 अक्तूबर, 2009 को पीएमओ (पदेन–एनसीएफ की परिषद के अध्यक्ष) द्वारा अनुमोदित किया गया है। कार्यकारिणी समिति के अध्यक्ष (संस्कृति सचिव) को एनसीएफई पुनः संरचना का कार्य आगे बढ़ाने का निर्देश दिया गया है, जिसे कला और संस्कृति के क्षेत्र में विशेषज्ञों और प्रतिष्ठित व्यक्तियों के परामर्श के बाद करने का प्रस्ताव है।

परिणामस्वरूप एनसीएफ की कार्यकारिणी समिति को 13.10.2009 की दसवीं बैठक में भी इसे अनुमोदन दिया गया।

कार्य योजना के पहले चरण को कार्यान्वित करने के लिए कार्य विवरण को अंतिम रूप देने तथा नए कार्मिकों के कर्तव्यों और दायित्वों की सूची तैयार करने एवं प्रत्याशियों के चयन के विषय में सिफारिशों और उनके परिलब्धि पैकेज को अंतिम रूप देने के लिए 31 दिसम्बर, 2009 को एक उप समिति का गठन किया गया है।

2.5

अंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक संबंध प्रभाग

- संस्कृति मंत्रालय भारतीय संस्कृति को नए क्षेत्रों तक प्रसारित करने और दुनिया के विभिन्न देशों तथा भारत के बीच सांस्कृतिक करारनामों और सांस्कृतिक आदान प्रदान कार्यक्रमों (सीईपी) के माध्यम से सांस्कृतिक संबंधों को आगे बढ़ाने का लक्ष्य रखता है। सांस्कृतिक करारनामा किसी अन्य देश की सरकार के साथ भारत सरकार द्वारा एक बार हस्ताक्षरित किया जाने वाला कानूनी दस्तावेज है। यह सांस्कृतिक आदान प्रदान कार्यक्रमों (सीईपी) के रूप में विशिष्ट क्षेत्रीय हस्तक्षेपों के माध्यम से कार्यनीतिक मार्गों का आधार बनाता है।

- वर्तमान में 118 करारनामे हैं, जिसमें भारत तथा लोकतांत्रिक गणतंत्र कॉन्गो के बीच नवीनतम सांस्कृतिक करारनामा शामिल है, जिस पर 29 अक्तूबर, 2009 को नई दिल्ली में हस्ताक्षर किए गए।

- वर्ष 2009—2010 के दौरान (अब तक) आठ देशों कुवैत, कोरिया गणराज्य, बुल्गारिया, मंगोलिया, बेनिन, रूस, बांग्लादेश और आइसलैंड के साथ सांस्कृतिक आदान प्रदान कार्यक्रमों पर हस्ताक्षर किए गए हैं।

- सांस्कृतिक संबंधों को और अधिक बढ़ावा देने के लिए निम्नलिखित देशों में भारत महोत्सव/दिवस के रूप में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया था :

देश	**अवधि**
(क) कोरिया गणराज्य	7—23 सितम्बर, 2009
(ख) इंडोनेशिया और मलेशिया	29 अक्तूबर से 7 नवम्बर, 2009
(ग) कुवैत	8—14 नवम्बर, 2009
(घ) कजाखिस्तान	16—21 नवम्बर, 2009

  कोरिया गणराज्य के कलाकारों ने 9—15 सितम्बर, 2009 के दौरान जेजुद्वीप में आयोजित तीसरे डेल्फिक खेल 2009 में भी भाग लिया और अंतरराष्ट्रीय स्तर के इस प्रतिष्ठित सांस्कृतिक आयोजन में 11 पदक जीते। संस्कृति मंत्रालय ने 2009 के दौरान आयोजित ''रूस में भारतीय वर्ष'' कार्यक्रमों में भी योगदान दिया।

- भारत और कोरिया के बीच सिओल (आरओके) में 1—3 सितम्बर, 2009 के दौरान सातवां संयुक्त संस्कृति आयोग (जेसीसी) आयोजित किया गया। संस्कृति मंत्रालय के संयुक्त सचिव, श्री निहाल चंद्र गोयल के नेतृत्व में एक शिष्टमंडल ने बैठक में भाग लिया। इस बैठक के दौरान 2009—2012 के लिए सीईपी पर हस्ताक्षर किए गए थे।

- भारत—फ्रांस संयुक्त कार्य समूह (जेडब्ल्यूजी) का 16वां सत्र 29 सितम्बर, 2009 को आयोजित किया गया, जिसमें अन्य बातों के अलावा फ्रांसीसी

महोत्सव, बॉनजोर इंडिया, भारत में फ्रांस महोत्सव पर चर्चा की गई जिसका आयोजन फ्रांसीसी सहयोगियों और उनके संस्कृति मंत्रालय के सहयोग से फ्रांसीसी राज दूतावास द्वारा किया जा रहा है।

- सचिव (संस्कृति) ने कज़ान, रूस संघ में 25 से 28 अप्रैल, 2009 के बीच शंघाई को–ऑपरेशन ऑर्गनाइजेशन के सदस्य राज्यों के संस्कृति मंत्रियों की 6वीं बैठक में हिस्सा लिया। उन्होंने 6–8 दिसम्बर, 2009 के दौरान प्रधानमंत्री के नेतृत्व में शिष्टमंडल के सदस्य के रूप में रूस का दौरा भी किया, जहां उन्होंने 2010–12 के लिए भारत और रूस के बीच सीईपी पर हस्ताक्षर किए।

- भारतीय संस्कृति को भारत–विदेशी मित्रता/सांस्कृतिक संस्थाओं को सहायता अनुदान स्वीकृत करने के माध्यम से सुदृढ़ बनाया गया, जो विदेशों में कार्य करती हैं। प्रत्येक संगठन को अधिकतम 1,50,000 रुपए की वित्तीय सहायता (किसी देश में अधिक से अधिक तीन संगठनों को) संबंधित देश में हमारे मिशन/राज दूतावास की सिफारिश पर स्वीकृत की जाती है। नए संगठन/संस्था को 50,000 रु. की राशि स्वीकृत की जाती है। वर्तमान वर्ष के लिए 31 देशों की 50 संस्थाओं को इस योजना के तहत अनुदान प्राप्त हुए हैं।

2.6

यूनेस्को मामले

मंत्रालय, प्रत्यक्षतः संस्कृति से संबंधित तीन सम्मेलन, जिनका भारत द्वारा अनुसमर्थन किया गया है, के संबंध में सीधे कार्रवाई करता है, विश्व विरासत सम्मेलन (1972), अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की सुरक्षा संबंधी सम्मेलन (2003) तथा सांस्कृतिक अभिव्यक्ति की विविधता की सुरक्षा एवं प्रोत्साहन संबंधी सम्मेलन (2005)

(क) विश्व विरासत सम्मेलन : भारत ने 1977 में विश्व विरासत सम्मेलन का अनुसमर्थन किया। अब तक 186 देश सम्मेलन का या तो अनुसमर्थन कर चुके हैं या उसे स्वीकृत कर चुके हैं। यह सम्मेलन प्रकृति की सुरक्षा एवं सांस्कृतिक परिसम्पत्तियों के संरक्षण से संबद्ध है। सम्मेलन लोगों के प्रकृति के साथ पारस्परिक संबंध के तरीकों एवं दोनों के बीच संतुलन की सुरक्षा की मौलिक आवश्यकताओं को मान्यता प्रदान करता है। सम्मेलन सांस्कृतिक एवं प्राकृतिक स्थलों के प्रकार, जिसे विश्व विरासत सूची में शामिल करने पर विचार किया जा सकता है, को परिभाषित करता है। सम्मेलन के सदस्य देशों का, उनके राष्ट्रीय क्षेत्राधिकार की परिसम्पत्तियों को विश्व विरासत सूची में शामिल करने पर विचार करने के लिए पहचान एवं नामांकन के लिए सहमत होना आवश्यक है। इसके साथ ही किस प्रकार इन परिसम्पत्तियों को इनके अनुरक्षण के लिए सुरक्षित रखा जा सकता है, का प्रबंधन योजना सहित ब्यौरा उपलब्ध कराना आवश्यक है। सदस्य देशों से सूचीबद्ध परिसम्पत्तियों के विश्व विरासत महत्व की रक्षा करने तथा उनकी स्थिति पर नियमित प्रतिवेदन प्रस्तुत करने के लिए प्रोत्साहन की भी उम्मीद की जाती है। सदस्य देश, क्षेत्रीय योजना कार्यक्रमों में सांस्कृतिक एवं प्राकृतिक विरासत संरक्षण के समन्वय करने वाले, उस स्थान पर कर्मचारी एवं सेवाओं की व्यवस्था करने वाले, वैज्ञानिक एवं तकनीकी संरक्षण अनुसंधान सम्पन्न कराने वाले एवं इस विरासत को समुदाय के दिन–प्रतिदिन के जीवन में काम आने वाले उपायो को अपनाने को बढ़ावा देते हैं।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण जो कि संस्कृति मंत्रालय का संबद्ध कार्यालय है, सम्मेलन से संबंधित अन्य मुद्दों के अतिरिक्त 'विश्व विरासत सूची' में शामिल करने के लिए फाइलों के प्रस्तुतीकरण का समन्वय करता है। इस समय विश्व विरासत सूची में भारत के 27 स्थल शामिल हैं, ये हैं :–

(i) आगरा का किला

(ii) अजन्ता की गुफाएं

(iii) सांची के बौद्ध स्मारक

(iv) चंपानेर – पावागढ़ पुरातात्विक उद्यान

(v) छत्रपति शिवाजी टर्मिनस

(vi) गोवा के गिरजाघर एवं मठ

(vii) एलिफेंटा की गुफाएं

(viii) एलोरा की गुफाएं

(ix) फतेहपुर सीकरी

(x) चिर स्थायी चोल मंदिर
(xi) हम्पी का स्मारक समूह
(xii) महाबलीपुरम का स्मारक समूह
(xiii) पट्टाडकल का स्मारक समूह
(xiv) हुमायूं का मकबरा, दिल्ली
(xv) काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान
(xvi) केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान
(xvii) खजुराहो का स्मारक समूह
(xviii) महाबोधि मंदिर परिसर, बोध गया।
(xix) मानस वन्यजीव अभयारण्य
(xx) भारतीय पहाड़ी रेलवे
(xxi) नंदा देवी एवं फूलों की घाटी राष्ट्रीय उद्यान
(xxii) कुतुब मीनार एवं इसके स्मारक, दिल्ली
(xxiii) लाल किला परिसर
(xxiv) भीमबेटका का चट्टान आश्रय
(xxv) सूर्य मंदिर, कोणार्क
(xxvi) सुंदरवन राष्ट्रीय उद्यान
(xxvii) ताज महल

हाल ही में भारत ने वर्तमान वर्ष के लिए विश्व विरासत सूची में शामिल करने के लिए दो मदों को प्रस्तुत किया है।

(ख) **अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के प्रोत्साहन एवं अनुरक्षण संबंधी सम्मेलन** : भारत ने 2005 में अमूर्त सांस्कृतिक विरासत (आईसीएच) का अनुरक्षण करने वाले सम्मेलन का अनुसमर्थन किया। अब तक 121 देश सम्मेलन का या तो अनुसमर्थन कर चुके हैं या उन्हें स्वीकृति दे चुके हैं। इस समय भारत सम्मेलन की 24 सदस्यीय अन्तर–सरकारी समिति (आईजीसी) का सदस्य है तथा समिति की विभिन्न बैठकों में नियमित रूप से भाग लेता है। यह सम्मेलन, संबंधित समुदायों/समूहों/व्यक्तियों द्वारा आई.सी.एच. की सुरक्षा एवं आदर सुनिश्चित करता है। इसके साथ ही इसके महत्व को बढ़ाने एवं इस प्रकार की विरासत की मदों के लिए अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग एवं सहायता की व्यवस्था करता है। इस सम्मेलन के देशों के उत्तरदायित्वों का एक भाग अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की प्रतिनिधि सूची तैयार करना है। अब तक आई.सी. एच. की 166 मदों की प्रतिनिधि सूची यूनेस्को द्वारा तैयार की जा चुकी है। इस सूची में भारत की पांच मदें हैं – वैदिक मंत्र, कुटियट्टम, रामलीला, रमज़ान और नवरोज़। इस सूची की अंतिम दो मदों को अंतर–सरकारी समिति की हाल ही में सितम्बर–अक्तूबर, 2009 में आबूधाबी में आयोजित की गई बैठक के बाद जोड़ा गया है। जबकि भारत ने अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की प्रतिनिधि सूची में शामिल करने के लिए दूसरे दौर हेतु 20 मदों को नामांकित करने की मांग की है तथापि यूनेस्को ने केवल तीन मदों को ही इस दौर में विचारार्थ लिया है। यह मंत्रालय तात्कालिक सुरक्षा के मद्देनजर अमूर्त सांस्कृतिक विरासत सूची में शामिल करने के लिए दो डोजियर प्रस्तुत करने की कार्यवाही कर रहा है।

(ग) **सांस्कृतिक अभिव्यक्ति की विविधता की सुरक्षा एवं प्रोत्साहन संबंधी सम्मेलन : भारत ने इस सम्मेलन का दिसम्बर, 2006 में अनुसमर्थन किया** : सम्मेलन को अब तक 106 देश या तो स्वीकृत कर चुके हैं या इसका अनुसमर्थन कर चुके हैं। इस समय भारत सम्मेलन की 24 सदस्यीय अन्तरसरकारी समिति का सदस्य है तथा समिति की विभिन्न बैठकों में नियमित रूप से भाग लेता है। इस सम्मेलन का उद्देश्य सांस्कृतिक अभिव्यक्ति को संरक्षण एवं प्रोत्साहन देना, संस्कृतियों के बीच संवाद को बढ़ावा देना, अंतर–सांस्कृतिकता का पोषण करना, सांस्कृतिक अभिव्यक्ति की विविधता के लिए आदर को प्रोत्साहित करना तथा संस्कृति एवं विकास के मध्य संबंध के महत्व का पुनःसमर्थन करना है। सम्मेलन के अन्य प्रमुख उद्देश्य, सांस्कृतिक कार्यकलापों की विशिष्ट प्रकृति को मान्यता प्रदान करना, तथा इससे सम्बद्ध देशों के उनके क्षेत्राधिकार की सांस्कृतिक अभिव्यक्ति को संरक्षण एवं प्रोत्साहन देने के लिए नीतियों को बनाए रखने, स्वीकार करने तथा इनके कार्यान्वयन के लिए सार्वभौम अधिकारों का अनुसमर्थन करना है।

(घ) **यूनेस्को से संबंधित अन्य कार्यकलाप** :

विश्व कार्यकम की स्मृति : यूनेस्को के विश्व कार्यक्रम स्मृति का उद्देश्य पूरे विश्व में बहुमूल्य अभिलेखागार संग्रह और पुस्तकालय संग्रह का संरक्षण तथा इनका प्रचार–प्रसार करना है। विश्व कार्यक्रम स्मृति की स्थापना 1992 में विश्व के विभिन्न भागों में विरासत के संरक्षण की अनिश्चित स्थिति के संबंध में बढ़ती जागरूकता तथा दस्तावेजी विरासत सुलभता के कारण की गई थी। विश्व कार्यक्रम स्मृति का मिशन निम्नलिखित के संबंध में है :–

(i) विश्व की दस्तावेजी विरासत के संरक्षण को सर्वाधिक उपयुक्त तकनीकों के माध्यम से सुकर बनाना।

(ii) दस्तावेजी विरासत की सार्वभौमिक सुलभता में सहायता करना।

(iii) दस्तावेजी विरासत की मौजूदगी और इसके महत्व के बारे में विश्वव्यापी जागरूकता बढ़ाना।

यह तीसरे उद्देश्य का भाग है कि विश्व की स्मृति (एम.ओ. डब्ल्यू.) का रजिस्टर तैयार करने की मांग की जाती है। विश्व स्मृति रजिस्टर सार्वभौमिक रूप से मूल्यवान दस्तावेजों, पाण्डुलिपियों, वाचिक परम्पराओं, श्रृव्य–दृश्य सामग्री, पुस्तकालय और अभिलेखागार संग्रह का संक्षिप्त विवरण है। इस प्रकार की सामग्री को रजिस्टर में शामिल करने से और सूचना का आदान–प्रदान करने और सामग्री के संरक्षण, डिजिटीकरण तथा प्रचार–प्रसार करने के लिए विशेषज्ञों के कार्यक्रम नेटवर्क पर इसका उपयोग करने से दस्तावेजी विरासत का बेहतर संरक्षण किया जाता है। इसका उद्देश्य अधुनातन प्रौद्योगिकी का उपयोग करके विरासत की व्यापक सुलभता तथा इसका प्रचार–प्रसार करना भी है। इस समय भारत की 4 मदों को विश्व स्मृति रजिस्टर में शामिल किया गया है। ये आई.ए.एस. तमिल चिकित्सा पाण्डुलिपि संग्रह, डच ईस्ट इंडिया कम्पनी के अभिलेख, पांडिचेरी में साइवा पाण्डुलिपि और ऋग्वेद पाण्डुलिपि हैं। मंत्रालय इस समय अपने कुछ स्वायत्र संगठनों के सहयोग से विश्व स्मृति रजिस्टर के लिए 2 नामांकन डोजियर प्रस्तुत करने की कार्यवाही कर रहा है।

Badal Mahal Gate, Chanderi

2.7
राष्ट्रीय मिशन

2.7.1

राष्ट्रीय स्मारक और पुरावस्तु मिशन

स्मारकों व पुरावस्तुओं का राष्ट्रीय मिशन

19 मार्च, 2007 को स्मारकों व पुरावस्तुओं के राष्ट्रीय मिशन की शुरूआत की गई जिसका बजटीय परिव्यय 90.00 करोड़ रूपये था। इसके अधिदेश में निर्मित विरासत, स्थलों व पुरावस्तुओं के लिए नेशनल रजिस्टर तैयार करना तथा निर्मित विरासतों, स्थलों व पुरावस्तु संपत्ति के लिए राज्य स्तर पर योजनाकारों, अनुसंधानकर्ताओं इत्यादि की सूचना–प्रसरण के लिए व ऐसे सांस्कृतिक संसाधनों के बेहतर प्रबंधन के लिए डाटाबेस तैयार करना है। एनएमएमए को अपने अधिदेश को पूरा करने के लिए पाँच वर्ष दिए गए हैं।

स्मारकों व पुरावस्तुओं के राष्ट्रीय मिशन की समिति:

एनएमएमए की निगरानी दो उच्चाधिकार प्राप्त समितियों यथा राष्ट्रीय निगरानी समिति मिशन एवं वित्त समिति द्वारा एनएमएमए के कार्य की जॉच हेतु निगरानी की जाती है तथा सभी राज्यों में राज्य की विभिन्न गतिविधियों के कार्यान्वयन के लिए एक राज्य स्तर की कार्यान्वयन समिति है।

राष्ट्रीय मिशन निगरानी समिति : राष्ट्रीय मिशन निगरानी समिति में सचिव (संस्कृति) अध्यक्ष, महानिदेशक (एएसआई) उपाध्यक्ष, तीन सदस्य अपर महानिदेशक, एएसआई; संयुक्त सचिव, संस्कृति मंत्रालय; संयुक्त महा निदेशक, (एएसआई) तथा एक सदस्य सचिव (निदेशक, एनएमएमए) हैं।

राष्ट्रीय मिशन निगरानी समिति की बैठक सचिव, संस्कृति, भारत सरकार की अध्यक्षता में दिनांक 03.10.2009 को सम्पन्न हुई थी।

नेशनल मिशन वित्त समिति : राष्ट्रीय मिशन वित्त समिति में वित्त सलाहकार (संस्कृति) अध्यक्ष, संयुक्त सचिव, संस्कृति मंत्रालय तथा (ii) संयुक्त निदेशक (लेखा), एएसआई तथा (iii) निदेशक (एनएमएमए) सदस्य सचिव हैं।

नेशनल मिशन वित्त समिति की बैठक संस्कृति मंत्रालय के अपर सचिव एवं वित्तीय सलाहकार की अध्यक्षता में 1–12–2009 को आयोजित हुई।

राज्य स्तरीय कार्यान्वयन समिति : राज्य स्तरीय कार्यान्वयन समिति में राज्य के सचिव (संस्कृति) अध्यक्ष, भारत सरकार द्वारा मनोनीत दो सदस्य तथा संबंधित राज्य द्वारा मनोनीत दो सदस्य होते हैं तथा निदेशक (एनएमएमए) सदस्य एवं एएसआई के संबंधित मंडल कार्यालय के अधीक्षण पुरातत्ववेत्ता को सदस्य सचिव के तौर पर इसे राज्य के संस्कृति सचिव की अध्यक्षता में गठित किया गया है।

राष्ट्रीय मिशन ने प्रत्येक राज्य में राष्ट्रीय मिशन की विभिन्न गतिविधियों को समन्वित व कार्यान्वित करने के लिए तथा राज्य स्तरीय कार्यान्वयन समिति एवं एनएमएमए के बीच संपर्क के लिए 22 राज्य परियोजना समन्वयकों को संलग्न किया है।

राष्ट्रीय मिशन ने निर्मित विरासत, स्थलों व पुरावस्तुओं के प्रलेखन के लिए दो टेम्प्लेट्स तैयार किए हैं साथ साथ उसने निर्मित विरासत, स्थलों व पुरावस्तुओं पर राष्ट्रीय डाटाबेस की तैयारी के लिए टेम्प्लेटों को भरने के लिए विस्तृत दिशा निर्देश तैयार किए हैं।

द्वितीय स्रोतों से विरासत एवं स्थलों के प्रलेखीकरण के लिए उन सभी प्रमुख विश्वविद्यालयें में जहाँ पुरातत्व विज्ञान एवं प्रचीन इतिहास की पढ़ाई हो रही है, एक **''प्रलेखन संसाधन केंद्र''** अभिज्ञात किया गया है। इसी प्रकार पुरावस्तुओं के लिए राष्ट्रीय मिशन ने सभी राष्ट्रीय संग्रहालयों, राज्य संग्रहालयों तथा राज्य विभाग के नियंत्रणाधीन संग्रहालयों को **''पुरावस्तु प्रलेखन केंद्र''** के रूप में अभिज्ञात किया है।

प्रत्याशित परिणामः

1. निर्मित विरासत व स्थलों का राष्ट्रीय रजिस्टर।
2. पुरावस्तुओं का राष्ट्रीय रजिस्टर।
3. यह अनुमानित है कि हजारों शिक्षित युवाओं को ठेकागत रोजगार हासिल होगा।
4. प्रकाशन।

विधिक ढाँचा

1. प्रचीन स्मारक एवं पुरातात्विक स्थल एवं अवशेष अधिनियम 1958 तथा नियम 1959।
2. एंटिक्यूटीज एंड आर्ट ट्रेजर एक्ट, 1972 एवं नियम 1973

राष्ट्रीय मिशन ने राष्ट्रीय डाटाबेस को तैयार करने के लिए एनएमएमए द्वारा विकसित किए गए विनिर्दिष्ट टेम्प्लेट में **1,20,000** पुरावस्तुओं एवं **50,000** निर्मित विरासत व स्थलों को प्रलेखीकृत किया है। केन्द्रीय पुरावस्तु संग्रह, पुराना किला में रखी गई पुरावस्तुओं के प्रलेखीकरण का कार्य भी चल रहा है।

संपर्क कार्यक्रम के तौर पर एनएमएमए ने निर्मित विरासत, स्थलों व पुरावस्तुओं की थीम पर अपना एक कैलेंडर विभिन्न संगठनों को एक डायरी के साथ वितरित किए जाने के लिए तैयार किया है। राष्ट्रीय मिशन जागरूकता कार्यक्रम के तहत निर्मित विरासत, स्थलों व पुरावस्तुओं पर एक लधु फिल्म भी तैयार कर रहा है।

विश्वविद्यालयों तथा संरक्षण से जुड़े वास्तुविदों के लिए विभिन्न संरक्षण से जुड़े वास्तुविदों/संस्थानों से औपनिवेशिक/ स्थानीय वर्नाक्यूलर निर्माणों के सूचीकरण के एक राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। राष्ट्रीय मिशन ने एनएमएमए की गतिविधियों के कार्यान्वयन की पद्धतियों पर विचार–विमर्श करने के लिए राज्य परियोजना कोऑर्डिनेटरों की राज्य स्तर पर कार्यशाला भी आयोजित की। राज्य पुरातत्व विभागों/ राज्य संग्रहालयों के साथ उनके यहाँ उपलब्ध निर्मित विरासत, स्थलों व पुरावस्तुओं के प्रलेखीकरण की पद्धतियों पर विचार –विमर्श करने के लिए भी कार्यशाला आयोजित की।

2.7.2

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन

भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन की स्थापना आईजीएनसीए के साथ मिलकर 2003 में नोडल एजेंसी के रूप की गई थी। इसका प्राथमिक उद्देश्य पाण्डुलिपियों के विशाल भण्डार के रूप में मौजूद भारतीय ज्ञान की विरासत का पुनरुद्धार करना है। पाण्डुलिपियां केवल 'ऐतिहासिक दस्तावेज ही नहीं बल्कि ये दर्शन, विज्ञान, साहित्य, कला और भारत की बहुल–विश्वास पद्धतियों के क्षेत्रों में सदियों के ज्ञान को संजोए रखती हैं। ये अनेक सदियों के विचारकों के सामूहिक ज्ञान और अनुभव को दर्शाती हैं। इस मिशन के मुख्य कार्यकलापों में देश के पाण्डुलिपि संसाधन का प्रलेखन, संरक्षण, डिज़िटीकरण और प्रचार–प्रसार करना शामिल है।

यह मिशन देश भर में स्थापित विभिन्न श्रेणियों के केन्द्रों के जरिए कार्य करता है। इसमें 46 पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्र (एमआरसी), 33 पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्र (एमसीसी), 42 पाण्डुलिपि भागीदार केन्द्र (एमपीसी) और 300 पाण्डुलिपि संरक्षण भागीदार केन्द्र (एमसीपीसी) हैं।

एनएमएम के कार्यकलापों के मुख्य भाग : सर्वेक्षण के जरिए पाण्डुलिपियों का दस्तावेजीकरण, निवारक और सुधारात्मक संरक्षण करना, संरक्षण, पाण्डुलिपि–विज्ञान और पुरातत्व विज्ञान पर प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों और कार्यशालाओं का आयोजन, अंकीकरण के जरिए दस्तावेज बनाना, पाण्डुलिपियों का संरक्षण करने और इनका प्रचार–प्रसार करने के लिए जन–जागरुकता पैदा करने के लिए अनुसंधान, प्रकाशन और जन संपर्क कार्यक्रम आयोजित करना है।

सर्वेक्षण और सर्वेक्षण उपरांत दस्तावेज बनाना

एनएमएम के मुख्य कार्यों में से एक कार्य पाण्डुलिपियों के स्थल और स्थिति के बारे में जानकारी एकत्र करना है। भण्डारों के बारे में सूचना एकत्र करने के लिए सर्वेक्षण कराया जाता है, प्रत्येक पाण्डुलिपि के बारे में सूचना का प्रलेखन करने के लिए सर्वेक्षण उपरांत प्रक्रियाओं का डिजाइन बनाया जाता है। आवश्यक सुधार करने के बाद सूचना को एनएमएम वेबसाइट **www.namami.org** पर डाला जाता है।

बिहार (10 जिले), उड़ीसा, तमिलनाडु और कर्नाटक में सर्वेक्षण उपरांत कार्य पूरा किया गया था। केरल, उत्तर प्रदेश और हिमाचल प्रदेश में अब सर्वेक्षण उपरांत प्रलेखन कार्य किया जा रहा है। उत्तर प्रदेश, बिहार, कर्नाटक और हिमाचल प्रदेश से लगभग एक लाख आंकड़े प्राप्त हुए हैं। वर्ष 2008–09 में उत्तर प्रदेश के संत रविदास नगर और उन्नाव, हिमाचल प्रदेश के चम्बा और हमीरपुर, कर्नाटक के बीजापुर और बेल्लारी जिलों का प्रलेखन कार्य किया गया था।

इस अवधि के दौरान एनएमएम 77,000 (लगभग) पाण्डुलिपियाँ एकत्र कर सका तथा एक पाण्डुलिपि के बारे में डाटा आधारित सूचना तैयार कर सका। इस संबंध में 66,281 आंकड़े वेबसाइट पर उपलब्ध कराए गए और 28,930 आंकड़े वेबसाइट पर उपलब्ध कराने के लिए तैयार हैं।

संरक्षण

मिशन ने पाण्डुलिपि संरक्षण में प्रशिक्षण देने तथा इनके संदेश का प्रचार–प्रसार करने के लिए जयपुर, पटना, चम्बा और दिल्ली में चार कार्यशालाओं का आयोजन किया। इनमें भागीदारों को पाण्डुलिपियों का निवारक और सुधारात्मक प्रशिक्षण दिया गया। इन कार्यशालाओं के दौरान पाण्डुलिपियों का निवारक और सुधारात्मक उपचार भी किया गया था।

एन.एम.एम. के प्रतिनिधिमंडल ने अरूणाचल प्रदेश के तवांग मठ और जम्मू तथा कश्मीर के लद्‌दाख का दौरा वहां उपलब्ध पाण्डुलिपियों की स्थिति की जानकारी प्राप्त करने इन्हें संरक्षित करने के उपाय शुरू करने के लिए किया था।

अंकीकरण

इस अवधि के दौरान 10,362 पाण्डुलिपियों (1226170 पृष्ठों) का अंकीकरण किया गया। अद्यतन स्थिति के अनुसार मिशन ने 31515 पाण्डुलिपियों (4927208 पृष्ठ) का कार्य पूरा किया है। इस समय राष्ट्रीय मिशन की अभिरक्षा में 8200 डीवीडी हैं।

प्रकाशन

इस मिशन के कार्यकलापों में अप्रकाशित पाण्डुलिपियों, पाण्डुलिपियों के विशिष्ट संस्करण, सम्मेलन पेपर, व्याख्यान इत्यादि के प्रकाशन को प्राथमिक महत्व प्रदान किया जाता है। अन्य प्रकाशनों के अतिरिक्त एनएमएम के चार मुख्य प्रकाशन अर्थात–तत्वबोध (व्याख्यान पेपर), कृतिबोध (विशिष्ट संस्करण), समीक्षिका (सम्मेलन पेपर) और संरक्षिका (संरक्षण से संबंधित संगोष्ठी के पेपर) हैं। अब तक एनएमएम ने तत्वबोध श्रृंखला के तहत दो खण्ड, कृतिबोध के तहत एक खण्ड, समीक्षिका के तहत दो खण्ड और संरक्षिका के तहत एक खण्ड प्रकाशित किए हैं। अप्रकाशित पाण्डुलिपियों के प्रकाशन को गति प्रदान करने के लिए एनएमएम ने भारत के विभिन्न संग्रहालयों की 300 अप्रकाशित महत्वपूर्ण पाण्डुलिपियों की सूची तैयार की है। इस संबंध में 200 और पाण्डुलिपियों का चयन करके 500 पाण्डुलिपियों की सूची तैयार की जाएगी जिसे 100 पाण्डुलिपियों की संक्षिप्त सूची तैयार करने के लिए समिति को विचारार्थ भेजा जाएगा तथा इसके बाद एनएमएम इन्हें कृतिबोध श्रृंखला के तहत प्रकाशित करेगा।

जनसंपर्क

मिशन विद्वानों को एक मंच पर लाने के लिए सार्वजनिक व्याख्यानों, संगोष्ठियों और कार्यशालाओं का आयोजन करता है और विभिन्न अनुसंधान कार्यकलापों की सूचना का प्रचार–प्रसार करता है।

तत्वबोध व्याख्यान : यह मासिक व्याख्यान श्रृंखला है जिसमें विभिन्न विषयों के विद्वानों को लोगों के साथ अपने विचारों का आदान–प्रदान करने के लिए आमंत्रित किया जाता है। अब तक 73 व्याख्यानों का आयोजन किया गया है – जिनमें से 56 दिल्ली में तथा 17 देश के विभिन्न भागों में आयोजित किए गए। इस वर्ष के व्याख्यानों की सूची अंत में दी गई है।

कृति रक्षणा: इस न्यूजलेटर के दो अंक प्रकाशित किए गए थे।

पाण्डुलिपि–विज्ञान और पैलियोग्राफी कार्यशालाएं :

अप्रैल, 2009 से चार कार्यशालाएं वाराणसी, दिल्ली, जादवपुर (पश्चिम बंगाल) और त्रिपुनिथुरा (केरल) में आयोजित की गई थी। इनमें 130 से भी अधिक विद्यार्थियों ने प्राचीन लिपि अर्थात शारदा, नेवारी, गौड़ी इत्यादि सीखने के साथ–साथ प्रयोगात्मक प्रशिक्षण प्राप्त किया तथा विशिष्ट संपादन प्रक्रियाविधियों को सीखा था। बी.एल. भारत विद्या संस्थान, दिल्ली में बुनियादी स्तर की कार्यशाला के आयोजन को जारी रखा गया।

"यहुदी की बेटी"

3
अमूर्त सांस्कृतिक विरासत

3.1

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय विश्व की अग्रणी नाट्य प्रशिक्षण संस्थाओं में से एक और भारत में अपनी तरह का एकमात्र संस्थान है। इसकी स्थापना संगीत नाटक अकादमी द्वारा 1959 में एक घटक इकाई के रूप में की गई थी। वर्ष 1975 में यह एक स्वतंत्र इकाई बना और इसे संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के संपूर्ण निधिकरण से संस्था पंजीकरण अधिनियम 1860 की धारा 21 के तहत एक स्वायत्त संगठन के रूप में पंजीकृत किया गया था।

तीन वर्ष की अवधि के प्रशिक्षण कार्यक्रम के अतिरिक्त, विद्यालय ने बाल रंगमंच के क्षेत्रों में नई संभावनाओं का पता लगाया है और विस्तार कार्यक्रम के अंतर्गत कार्यशालाओं के माध्यम से रंगमंच प्रशिक्षण का विकेन्द्रीकरण किया। विद्यालय ने वर्ष 1999 में भारत रंग महोत्सव के नाम से अपने प्रथम राष्ट्रीय नाट्य महोत्सव का आयोजन किया जो अब वार्षिक समारोह बन गया है और सामान्यतः इसका आयोजन प्रति वर्ष जनवरी माह के दूसरे सप्ताह में किया जाता है।

विद्यालय में दिया जाने वाला प्रशिक्षण अत्यंत गहन होता है और यह समग्र, व्यापक और सुनियोजित पाठ्यक्रम पर आधारित होता है जिसमें रंगमंच के सभी पहलुओं को समाहित किया गया है, प्रशिक्षण के भाग के रूप में छात्रों को नाटक निर्मित करने होते हैं जिनकी प्रस्तुति जनता के समक्ष की जाती है। छात्रों का चयन सम्पूर्ण भारत से किया जाता है और केवल 24 छात्रों को ही प्रवेश दिया जाता है।

विद्यालय के दो प्रस्तुति स्कंध हैं– रंगमंडल और संस्कार रंग टोली (थिएटर–इन–एजुकेशन कंपनी)। रंगमंडल की स्थापना स्नातकों को प्रायोगिक और व्यावसायिक आधार पर सृजनात्मक रंगमंच द्वारा प्रस्तुतियों को तैयार कर प्रदर्शित करने के लिए एक मंच उपलब्ध करवाने के उद्देश्य से की गई थी। रंगमंडल प्रतिवर्ष ग्रीष्मकालीन रंगमंच समारोह का आयोजन करता है। इस समारोह के दौरान नई और पुरानी प्रस्तुतियों का चयन कर उनका मंचन किया जाता है। नाटकों का प्रदर्शन बड़े पैमाने पर भारत और विदेशों में भी किया जाता है। दूसरे प्रस्तुति स्कंध (थिएटर–इन–एजुकेशन कम्पनी) की स्थापना 1989 में की गई जिसका उद्देश्य 8 से 18 वर्ष के आयु वर्ग के बच्चों के मध्य रंगमंच को प्रोत्साहित करना था। बाद में इसका नाम बदलकर संस्कार रंग टोली रखा गया, इन्होंने पूरे देश में 975 से भी अधिक प्रस्तुतियां की हैं।

वर्ष के दौरान कार्यकलाप

संस्कार रंग टोली

संस्कार रंग टोली ने 20–24 अप्रैल, 2009 के बीच सात विद्यालयों में हैड या टेल नामक नाटक प्रस्तुत किया। ग्रीष्मकालीन रंग कर्म कार्यशालाओं का आयोजन 15 मई–14 जून, 2009 के बीच दिल्ली के 6 विद्यालयों में किया गया था। इन कार्यशालाओं में लगभग 600 बच्चों ने भाग लिया। संस्कार रंग टोली ने 1–15 दिसम्बर, 2009 के बीच दिल्ली के आठ विद्यालयों में पंडिता रामाबाई नामक नाटक प्रदर्शित किया।

संस्कार रंग टोली ने ग्रीष्मकालीन रंगमंच क्लब और रविवार रंगमंच कार्यशाला का आयोजन 3–31 जुलाई, 2009 को गुवाहाटी में किया। बच्चों के लिए 1–14 नवम्बर, 2009 के बीच राष्ट्रीय रंगमंच महोत्सव जश्ने बचपन का आयोजन किया गया, जिसमें देश के अलग–अलग हिस्सों से 14 रंगमंच समूहों ने भाग लिया। हिन्दी के अलावा अनेक क्षेत्रीय भाषाओं जैसे मणिपुरी, असमिया, बंगला, उड़िया और कन्नड़ में भी नाटक प्रदर्शित किए गए।

रंग मंडल

रंग मंडल द्वारा 1–17 जून, 2009 के बीच ग्रीष्मकालीन रंगमंच महोत्सव का आयोजन किया गया। अगस्त 2009 में रंगमंडल ने सार्वजनिक नाटक प्रदर्शित किए जिसमें आचार्य तारतूफे, जात ही पूछो साधु की और घासीराम कोतवाल शामिल हैं। रंगमंडल में सप्ताहांत रंगमंच कार्यक्रमों का आयोजन किया जिसमें जात ही पूछो साधू की, उत्तररामचरित और काफका : एक अध्याय का प्रदर्शन सितम्बर 2009 में किया गया। अक्तूबर 2009 के दौरान रंगमंडल ने इंदौर में तथा नवम्बर 2009 में अमृतसर की यात्रा के दौरान मोरे गांव, नासिक, दमन और सिलवासा में जात ही पूछो साधु की, राम नाम सत्य है, काफका : एक अध्याय, घासीराम कोतवाल और आचार्य तारतूफे का प्रदर्शन किया।

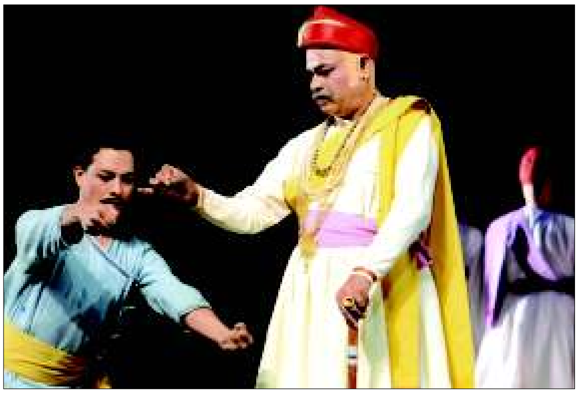

रंगमंच कार्यशाला

पश्चिमी क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र (डब्ल्यूजेडसीसी) उदयपुर के प्रायोजन में रंगमंडल ने राजकोट और जोधपुर में 4–17 दिसम्बर, 2009 के बीच प्रदर्शन किए। इसने जात ही पूछो साधु की के प्रदर्शन सहित 23 और 24 दिसम्बर, 2009 को नंदीकर रंगमंच महोत्सव में भी हिस्सा लिया।

विस्तार कार्यक्रम

पिछले वर्षों की भांति इस वर्ष भी देश के विभिन्न भागों में वहां की स्थानीय एजेंसियों के तत्वावधान में प्रस्तुतिपरक रंगमंच कार्यशालाओं, प्रस्तुतिपरक बाल रंगमंच कार्यशालाओं, शिक्षण और प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया जिसमें अधिकतर कार्यशालाएँ प्रादेशिक भाषाओं

ग्रीष्म रंगमंच उत्सव

में थीं। इसी प्रकार क्षेत्रीय संसाधन केन्द्र, बैंगलोर ने भी चार दक्षिणी राज्यों के प्रमुख शहरों में कार्यशालाएं आयोजित कीं।

पूर्वोत्तर क्षेत्र के कार्यकलाप

थिएटर मिरर, इंफाल के सहयोग से 27 अक्तूबर–25 नवम्बर 2009 के बीच रंगमंच कार्यशालाओं का आयोजन किया गया था। उत्पादन उन्मुख बाल कार्यशालाओं का आयोजन भी सरस्वती विद्या निकेतन के सहयोग से नामची (सिक्किम) में किया गया था। त्रिपुरा में 26 अक्तूबर–6 नवम्बर, 2009 के दौरान पूर्वोत्तर नाट्य समारोह का आयोजन किया गया था।

बंगलुरु अध्याय

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय ने इस बात को गहराई से अनुभव किया कि रंगमंच प्रशिक्षण और अभ्यास, विशेष रूप से अभिनय के लिए केवल अपनी भाषा और सांस्कृतिक अवस्थिति में सर्वोत्तम रूप से किया जा सकता है। इसने छात्रों और कलाकारों को अपनी स्वयं की भाषा और सांस्कृतिक संदर्भों में रंगमंच की कला सीखने और उसका अभ्यास करने का अवसर देने के लिए प्रशिक्षण तथा प्रदर्शन गतिविधियों को विकेन्द्रित करने का प्रयास किया है। इस उद्देश्य को पूरा करने के विचार से एनएसडी ने पांच राज्यों में रंगमंच प्रशिक्षण केन्द्रों की स्थापना में सहायता देने का प्रस्ताव किया है। इसका प्रथम अध्याय 2009 में साकार हुआ जब बंगलुरु में गुरूनानक भवन अक्तूबर 2008 के दौरान राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय को सौंपा गया था।

प्रकाशन कार्यक्रम

नियमित प्रकाशनों के अलावा प्रकाशन इकाई ने दो नई पुस्तकें प्रवासी की कलम से, बादल सरकार की पुस्तक प्रवासेर हिजी बिजी का हिन्दी अनुवाद और सतीश कुमार वर्मा लिखित पंजाबी नाटक और रंग मंच की एक सदी प्रकाशित कीं।

3.2

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र

वर्ष 1987 में, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की स्थापना, कलाओं के क्षेत्र में अनुसंधान, शैक्षणिक गतिविधियों तथा इनके प्रचार–प्रसार हेतु संस्कृति मंत्रालय के अधीन एक स्वायत्तशासी संस्थान के रूप में की गई थी। यहां पुरातत्व विज्ञान तथा मानव विज्ञान से लेकर दृश्य–श्रव्य तथा मंच कलाओं तक के विस्तृत कला–क्षेत्र को एक परिपूर्ण और अन्योन्याश्रित रूप में देखा जाता है। इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र अपने उद्देश्य में सफल रहा है तथा इसी दिशा में प्रगतिशील है।

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में छः वर्गीकृत एकक हैं– एक बहु–रूपात्मक पुस्तकालय **कलानिधि;** भारतीय भाषाओं के आधारभूत ग्रन्थों के अध्ययन एवं प्रकाशन हेतु समर्पित **कलाकोश;** जीवन शैली अध्ययनों हेतु **जनपद–सम्पदा; कलादर्शन** जो इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के सम्पादित कार्यों, अनुसंधानों एवं अध्ययनों को प्रदर्शनियों के माध्यम से परिकल्पित करता है, **सांस्कृतिक सूचना विज्ञान प्रयोगशाला**– सांस्कृतिक संरक्षण एवं प्रसारण हेतु प्रौद्योगिकी यंत्रों का प्रयोग करता है। **सूत्रधार** प्रशासनिक प्रभाग है जो सारे कार्यकलापों के समन्वयन एवं सहयोग का प्रबंधन सुचारू रूप से करता है। आईजीएनसीए के तहत पांडुलिपि कार्य हेतु राश्ट्रीय मिशन कार्य करता है। इसके सदस्य सचिव शैक्षिक और प्रशासनिक प्रभागों के कार्यकारी प्रमुख हैं। इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र का एक न्यास है जो केन्द्र के कार्य के विषयों में निरंतर दिशा–निर्देश देता है। एक कार्यकारिणी समिति जो न्यास के सदस्यों से मिलकर बनी है, एक अध्यक्ष की अध्यक्षता में कार्य करती है। यह समिति, न्यास एवं इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के बीच एक कड़ी का कार्य करती है। 31 दिसम्बर 2009 तक श्री चिमय आर घारेखन आईजीएनसीए न्यास के अध्यक्ष और न्यास की कार्यकारिणी समिति के सभापति हैं तथा प्रो. जोतिन्द्र जैन सदस्य सचिव हैं

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र का दक्षिणी क्षेत्रीय केन्द्र मुख्यालय बंगलौर में स्थित है। इस केन्द्र की स्थापना 2001 में दक्षिणी क्षेत्रीय कला एवं सांस्कृतिक धरोहर का गहन अध्ययन करने के उद्देश्य से की गई थी। प्रो. एस सेतार मानद निदेशक हैं।

पूर्वी क्षेत्रीय केन्द्र का कार्यालय वाराणसी में स्थित है। यह कार्यालय भारत विद्या–शास्त्र एवं संस्कृत अध्ययनों में कलाकोश विभाग को शैक्षणिक जानकारी एवं योगदान प्रदान करता है। प्रो. के डी त्रिपाठी मानद निदेशक हैं।

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र का पूर्वोत्तर क्षेत्र केन्द्र गुवाहाटी में स्थित है। इसका मुख्य कार्य पूर्वोत्तर क्षेत्र के सांस्कृतिक रूप से समृद्ध समुदायों से संबंधित कार्यक्रमों में सहयोग देना है। प्रो. ए सी भगवती मानद निदेशक हैं।

इस वर्ष की महत्वपूर्ण गतिविधियां

नवम्बर 2009 में आईजीएनसीए द्वारा बृज महोत्सव आयोजित किया गया। इस महोत्सव में प्रदर्शनियां, व्याख्यान और चर्चाएं तथा सांस्कृतिक प्रदर्शन किए गए। केन्द्र के लॉन में वार्षिक दस्तकार बाजार आयोजित किया गया जिसमें बड़ी संख्या में लोग आए। केन्द्र ने प्रलेखन संग्रह में काफी वृद्धि की है। कुछ प्रमुख प्रलेख थे राम कथा और छार बायात (400 वर्ष पुरानी कविता परंपरा) केन्द्र ने चार प्रकाशन किए और इसकी वेबसाइट संस्कृति की उच्च साइटों में एक बनी रही।

कलानिधि

संदर्भ पुस्तकालय, अध्येताओं को मुद्रित पुस्तकें, पत्र–पत्रिकाओं, स्लाइड्स, पांडुलिपि, माइक्रोफिल्म, ऑडियो–वीडियो टेप, सीडी/डीवीडी एवं डिजिटल पुस्तकालय के रूप में स्रोत सामग्री प्रदान करता है। अमूल्य संग्रहों से युक्त एक सांस्कृतिक अभिलेखागार, एक सुव्यवस्थित संरक्षण प्रयोगशाला एवं मल्टीमीडिया एकक भी पुस्तकालय के भाग हैं। इसमें एक पूर्णतया समर्पित ग्रन्थसूची अनुभाग भी है।

स्रोत सामग्रियों को कम्प्यूटर के ऑनलाइन कैटलॉग द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। दक्षिण और दक्षिण पूर्वी एशियाई कला और पुरातात्विक इंडेक्स, एबीआईए इंडिया पर अंतरराष्ट्रीय परियोजना के लिए कलानिधि भारत का नोडल पुस्तकालय है। इस परियोजना से अध्येताओं तथा संस्थानों के बीच परस्पर मेलजोल और सूचना का आदान–प्रदान बढ़ता है।

- वर्ष के दौरान पुस्तकालय ने **6434 पुस्तकें** खरीदी। लगभग 2000 नई पुस्तकें श्री अमित जैन से जैन साहित्य पर और डॉक्टर रंग नायिकी आयांगार से संगीत पर लगभग 500 पुस्तकें पुस्तकालय को महत्वपूर्ण दान थीं। संदर्भ पुस्तकालय द्वारा लगभग 800 दुर्लभ पुस्तकों का अधिग्रहण किया गया।
- विभिन्न विषयों पर **179 पत्रिकाएं** मंगाई जाती हैं। कुल मिलाकर इस वर्ष पुस्तकालय में 1818 अंक प्राप्त हुए।
- दुर्लभ पुस्तकों के डिजिटल रूप में परिवर्तन के भाग के रूप में केन्द्र के संग्रह से लगभग 200,000 पृष्ठ रूपांतरित किए गए। यहां 17 से 19वीं शताब्दी के बीच प्रकाशित संग्रह में लगभग 2800 पुस्तकें हैं।
- ये दुर्लभ डिजिटल पुस्तकें पीडीएफ फॉर्मेट में बदली जा रही हैं। इसके तहत 700,000 पृष्ठ सहित 2465 दुर्लभ पुस्तकें रूपांतरित की गई हैं।
- इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र जनवरी, 2007 से पाँच वर्षों के लिए एबीआईए परियोजना का क्षेत्रीय समन्वय कार्यालय बन गया है।
- **स्लाइड** एकक ने चित्रमय दुर्लभ पुस्तकों से 200 पुस्तकों के लिए ग्रंथ सूची विवरण और एनोटेशन तैयार किए हैं।
- 4 इलेक्ट्रॉनिक डेटाबेस – ईबीएससीओ ह्यूमेनिटीज़ इंटरनेशनल कम्पीट, जे–गेट आर्ट एण्ड ह्यूमेनिटीज़, विलसन आर्ट इंडेक्स और एब्स्ट्रेक्ट एड जेएसटीओआर पुस्तकालय में लगाए गए हैं।
- **माइक्रोफिल्मिंग** एकक ने ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट, मैसूर और राजस्थान ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट से 428 रोल पांडुलिपि तैयार की है जिसमें 4576 पांडुलिपियां शामिल हैं। माइक्रोफिल्म रोल के डुप्लीकेशन का कार्य अनेक पुस्तकालयों और संस्थानों में दिया गया है।
- जून 2009 में रेप्रोग्राफिक सामग्री में 2.5 लाख पांडुलिपियों के रिकॉर्ड बनाने का कार्य आरंभ हुआ है। यह सूचना ऑनलाइन सार्वजनिक अभिगम्य कैटलॉग द्वारा उपलब्ध होगी।
- सांस्कृतिक पुरातत्व सामग्री, जिसे आनंद के कुमारस्वामी संग्रह से प्राप्त किया गया, सभी पुस्तकों में अधिग्रहीत की गई है तथा पेंटिंग के अधिग्रहण का कार्य जारी है। पुरातत्व सामग्री को दूसरे तल पर 11, मानसिंह रोड में स्थानांतरित किया जा रहा है, जहां दृश्य भंडारण स्थान की व्यवस्था की जा रही है।
- पुस्तकालय के संपूर्ण संग्रह की बार कोडिंग का कार्य प्रगति पर है। लगभग 50,000 पुस्तकों की बार कोडिंग की गई है।
- इस वर्ष पुस्तकालय अध्येतावृत्तियां आरंभ की गई, जिसके तहत पांच विद्वानों को विभिन्न अनुसंधान कार्यक्रमों में नियुक्त किया गया था।

संरक्षण प्रयोगशाला

आईजीएनसीए की संरक्षण प्रयोगशाला पांडुलिपियों के राष्ट्रीय अभियान के तहत पांडुलिपि संरक्षण संवर्धन हेतु एक नाम निर्दिष्ट प्रयोगशाला है। यह देश भर के निजी और सरकारी संस्थानों में पांडुलिपि के निवारणात्मक संरक्षण पर कार्यशालाएं आयोजित करती है।

प्रयोगशाला द्वारा सभी पुरातात्विक संग्रहों, दुर्लभ पुस्तक संग्रहों और पुस्तकों तथा पुस्तकालय की अन्य संदर्भ सामग्रियों का आंतरिक संरक्षण किया जाता है। वर्ष के दौरान अन्य के अलावा यहां कश्मीर से चित्रमय रामायण और महावीर जैन पुस्तकालय की पांडुलिपि का संरक्षण किया गया है।

संरक्षण प्रयोगशाला कला के कार्यों के संरक्षण हेतु अंतरराष्ट्रीय मानक प्राप्त करने के लिए आधुनिकीकरण और उन्नयन की प्रक्रिया में है।

दृश्य कला विभाग

दृश्य कला विभाग की स्थापना अक्तूबर 2009 में की गई थी। इसका मुख्य उद्देश्य महान कलाकारों के कार्यों तथा ऐतिहासिक महत्व के कार्यों का अभिलेखन करना, प्रदर्शनियों का आयोजन करना, पुरातत्व हेतु दृश्य कलाओं से संबंधित स्रोतों को अभिज्ञात करना चित्रकला, शिल्पकला, ग्राफिक और फोटोग्राफी के क्षेत्र में कार्यशालाओं, गोष्ठियों और व्याख्यानों के आयोजन करना है।

यहां ली गई एक प्रथम प्रमुख परियोजना कला भवन, शांति निकेतन के स्मारकीय अनुपातों में भित्ति चित्र पर प्रो. के जी सुब्रमणियन के कार्यों के प्रलेखन पर थी। यहां वे एक ऐसे स्थान पर नए भित्ति चित्रों की पेंटिंग कर रहे थे जो 1990–93 में उसी स्थान पर उन्होंने की है। जो पहले ही दीवार से उधड़नी शुरू हो गई है। पूर्व प्रतिष्ठित स्थान और ऐतिहासिक भूमिका रखने वाले के जी सुब्रमण्यम भारतीय आधुनिक कला के एक महत्वपूर्ण व्यक्ति हैं, यह वास्तव में एक ऐतिहासिक अवसर था जब एक अनुसंधान सामग्री का प्रलेखन और संरक्षण किया गया, जिसमें कलाकार, कला इतिहासकार, प्रो. आर शिव कुमार द्वारा वार्ता और कुछ अन्य व्यक्तियों के व्याख्यान शामिल थे, जिन्होंने उनकी सहायता की।

संचार माध्यम निर्माण एकक

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र डी डी भारती पर **कलातरंग** नामक कार्यक्रम हफ्ते में दो बार प्रसारित करता है। इस एक घंटे के कार्यक्रम में इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की विविध गतिविधियों एवं प्रलेखनों का परिचय दिया जाता है। यह कार्यक्रम वर्ष भर जारी रहा।

एकक ने असम और बिहार की मनसा पूजा परंपरा का क्षेत्र प्रलेखन किया। अमूर्त सांस्कृतिक विरासत परियोजना के लिए फाड चित्रकला परंपरा, बुंदेलखण्ड रामलीला और छार बायाट की कविता परंपरा पर प्रलेखन किया गया। अनेक विद्वानों और कलाकारों के साथ साक्षात्कार संपादित किए गए और इन्हें परिचालन तथा स्क्रीनिंग के लिए तैयार किया गया। एकक द्वारा अपने निर्माण और अपने तकनीकी उपकरणों के उन्नयन के अनेक उपाय किए जाते हैं।

एकक द्वारा आईजीएनसीए के सभी कार्यक्रमों का नियमित रूप से ऑडियो–विजुअल प्रलेखन किया जाता है। इसमें आईजीएनसीए विद्वानों द्वारा संदर्भ तथा प्रसार हेतु जीवन शैली अध्ययन, विशिष्ट प्रदर्शन और रीति रिवाजों का प्रलेखन किया जाता है।

सांस्कृतिक सूचना–विज्ञान प्रयोगशाला:

सांस्कृतिक सूचना–विज्ञान प्रयोगशाला की स्थापना 1994 में यू.एन.डी.पी. की सहायता से चलने वाली बहु माध्यमिक प्रलेखन परियोजना ''सांस्कृतिक संसाधन के परस्पर क्रियात्मक बहु माध्यम प्रलेखन हेतु राष्ट्रीय सुविधा का सुदृढ़ीकरण'' द्वारा की गई थी। विषय विशेषज्ञों के मार्ग दर्शन में केन्द्र के दल को परस्पर क्रियात्मक बहु माध्यम प्रलेखन एवं सांस्कृतिक सूचना के गहन विश्लेषण में प्रशिक्षित किया गया है। इस दक्षता का प्रयोग संस्कृति की व्यापक एवं अंतःसंबद्ध संकल्पना में सांस्कृतिक धरोहर के यथार्थ रूप में पुनः सृजन के दिखावे के लिए किया जा रहा है। इससे नवीन प्रौद्योगिकी के प्रयोग, विकास एवं प्रदर्शन तथा सांस्कृतिक प्रलेखन के नए द्वार खुले हैं। परियोजना में उच्च स्तरीय बहुमाध्यमिक सामग्री–निर्माण हेतु नए संरचना–मॉडल्स, विकास–प्रक्रियाओं तथा पुनः अनुप्रयोज्य सॉफ्टवेयर टूल्स की संकल्पना, विकास एवं अनुप्रयोग किया गया है।

डिजिटल संसाधन वृद्धि

आईजीएनसीए संग्रह के माइक्रोरूपों से पांडुलिपियों का डिजिटल रूपांतरण : 1137 रोल से 583260 फोलियो पांडुलिपियों तथा 188608 पांडुलिपि फोलियो का इस अवधि के दौरान डिजिटल रूपांतरण किया गया जो 3726 माइक्रोफिश से लिए गए। हाल ही में अर्जित आनंद के कुमार स्वामी संग्रह का डिजिटल रूपांतरण पूरा किया गया था, जिसमें लगभग 27,197 पृष्ठ के सम्प्रेषण और अन्य सामग्री, चित्र, रेखाचित्र और चुनी हुई पुस्तकें शामिल हैं।

सांस्कृतिक विषयवस्तुओं का डिजिटल प्रसारण

सांस्कृतिक कार्टोग्राफी : आईजीएनसीए ने सैन डिएगो में कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के कैलिफोर्निया इंस्टीट्यूट ऑफ टेली कम्यूनिकेशन्स एण्ड इंफॉरमेशन टेक्नोलॉजी (केलिट 2) पर सहयोग के लिए चर्चा आरंभ की है। यह डिजिटल भविष्य के लिए सहयोगात्मक और बहुविषयक अनुसंधान का एक प्रख्यात केन्द्र है। यह शिक्षा जगत और उद्योग के बीच कार्यरत प्रयोगशाला के रूप में सेतु द्वारा तकनीकी व्यवसायिकता प्रदान करता है। यह केन्द्र कला, वास्तुकला और पुरातत्व विज्ञान के लिए अंतर विषयक विज्ञान (सीआईएसए 3) मुख्यतः केलिट 2 में नई मीडिया कलाओं (वर्चुअल वॉक थ्रू), डिजिटल सिनेमा, नैनो क्लीन रूम और आपदा प्रबंधन आदि जैसे क्षेत्रों में कार्य करता है। चर्चा के प्रमुख क्षेत्रों में आईजीएनसीए, में भारत की सांस्कृतिक विरासत के लिए साइबर मूल संरचना की स्थापना, वॉक थ्रू की डिजाइन और डिस्प्ले में क्षमता निर्माण और पुरातात्विक स्थलों तथा वस्तुओं के त्रिआयामी मॉडल और यूसीएसडी में विकसित तकनीकों का उपयोग करते हुए संरक्षण के क्षेत्र में क्षमता निर्माण करता है।

वेबसाइट

आईजीएनसीए की वेबसाइट www.ignca.nic.in का अनुरक्षण सीआईएल द्वारा किया जाता है। इस अवधि के दौरान औसत हिट संख्या 19 लाख प्रतिमाह थी। आईजीएनसीए ने भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (www.asi.nic.in) की वेबसाइट भी विकसित और डिजाइन की है, जिसे प्रयोक्ताओं और विद्वानों द्वारा सराहा गया है।

भारतीय कला एवं संस्कृति पर राष्ट्रीय डाटा बैंक

एक प्रायोगिक परियोजना (भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, संचार एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय, नई दिल्ली के सूचना प्रौद्योगिकी विभाग की सहयोग से) प्रवर्तित की गई थी। इस परियोजना का उद्देश्य डिजिटल प्रौद्योगिकी का उपयोग करते हुए भारतीय सांस्कृतिक संसाधनों की पहुंच बढ़ाना है। प्रायोगिक परियोजना के परिणाम में संरक्षित और असंरक्षित पुरातात्विक तथा विरासत स्थलों से लिए गए लगभग 1 लाख से अधिक दृश्य, दुर्लभ पुस्तकें और चुने हुए पुरातात्विक स्मारकों के द्विआयामी वॉक थ्रू शामिल होंगे।

इस परियोजना के तहत 4221 पुस्तकें (2212525 पृष्ठ) केन्द्रीय पुरातात्विक पुस्तकालय में डिजिटल रूपांतरित की गई थीं। लगभग 40000 दृश्य और चुने गए ऑडियो विजुअल दिल्ली, असम, अरुणाचल प्रदेश, त्रिपुरा, मेघालय, नागालैंड और उड़ीसा के संरक्षित तथा असंरक्षित स्मारकों से प्राप्त कर वेब पर अपलोड किए गए थे। केशव मंदिर (सोमनाथपुरा, कर्नाटक), रानी–की–वाव (पाटन, गुजरात), सुल्तानगढ़ी का मकबरा (नलिकपुर कोही, दिल्ली), बृहदेश्वर मंदिर (तंजौर), लाल मंदिर (दिल्ली) खान–खान का मकबरा (दिल्ली) के विहंगम दृश्य भी साइट पर अपलोड किए गए थे।

आईजीएनसीए को सूचना विरासत के **अभूतपूर्व स्टीवार्ड शिप हेतु ईएमसी हेरिटेज ट्रस्ट परियोजना की मान्यता** दी गई है, जिसके लिए यह एक संरक्षक, मार्गदर्शक और समर्थक के रूप में कार्य करता है।

कलाकोश प्रभाग

यह प्रभाग, कलाओं से जुड़ी बौद्धिक तथा पाठपरक परम्पराओं का उनके बहुस्तरीय एवं विविध विषयगत आयामों में अनुसंधान करता है। मूलभूत ग्रन्थों (कलातत्वकोश) शब्दावलियों, महान लेखकों की कृतियों का पुनर्प्रकाशन एवं भारतीय संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में दक्षिण, दक्षिण पूर्व तथा मध्य एशिया के साथ संबंध तथा उन पर प्रभाव आदि इसके श्रृंखलागत कार्यक्षेत्र हैं।

इस प्रभाग के कार्य प्रकाशनों की श्रृंखला में प्रदर्शित हैं। इसकी तीन दीर्घ अवधि प्रकाशन श्रृंखलाएं है **1. कलातत्वकोश,** भारतीय कलाओं की मूलभूत संकल्पनाओं का एक संग्रह, **2. कलामूलशास्त्र, कला पर मूलभूत पाठ की एक श्रृंखला** और **3. कला समालोचना**, जो अलोचनात्मक विद्वत्ता और अनुसंधान का प्रकाशन है।

अंतिम श्रृंखला के तहत आनंद के कुमार स्वामी द्वारा संगीत पर निबंध, जिसका संपादन स्वर्गीय डॉ. प्रेम लाल शर्मा ने किया, प्रस्तुत की गई। इस श्रृंखला के तहत अनेक प्रकाशन पूरे होने के समीप हैं। पिछले वर्ष 10 खण्ड प्रकाशित किए गए थे।

क्षेत्र अध्ययनों के तहत आईजीएनसीए द्वारा आस–पास के क्षेत्रों के विभिन्न क्षेत्रों के साथ सांस्कृतिक संबंध और आपसी प्रभावों की खोज की जाती है। इसका प्रमुख हिस्सा थे दक्षिण और दक्षिण पूर्वी एशिया, मध्य एशिया और चीन। पिछले वर्ष केन्द्र ने इरान के संस्थानों के साथ अनेक शैक्षिक कार्यक्रम किए।

जनपद–सम्पदा प्रभाग

जनपद संपदा, सांस्कृतिक एवं आर्थिक, सामाजिक–आर्थिक दृष्टियों से समुदायों की जीवन शैलियों, परंपराओं, लोक साहित्य तथा कला पद्धतियों सहित संस्कृति के सैद्धांतिक आयामों पर शोध तथा प्रलेखन से संबंधित कार्य करता है।

एक प्रमुख उत्सव बृज महोत्सव 21 नवम्बर से 8 दिसम्बर 2009 तक आयोजित किया गया। यह उत्सव आईजीएनसीए की जारी बृज प्रकल्प परियोजना का एक बड़ा पड़ाव है। इस उत्सव से उन प्रक्रियाओं को समझने और जानने का अवसर मिला जिन्होंने सांस्कृतिक क्षेत्र के नवीकरण और निरंतर पुनःजनन की क्षमता पर प्रभाव डाला। केन्द्र ने अपनी क्षेत्र संपदा परियोजना के तहत धार्मिक पूजा के दो केन्द्र–तमिलनाडु में तंजौर और उत्तर में बृज क्षेत्र के लिए लोगों द्वारा इन स्थानों का सांस्कृतिक – सामाजिक प्रभाव पर समग्र अध्ययन कार्य लिया है। ये प्रायोगिक अध्ययन हैं, जिन्हें अन्य स्थानों पर दोहराया जाएगा। बृज महोत्सव के दौरान श्री चैतन्य प्रेम संस्थान, वृंदावन के सहयोग से बृज की संकल्पना को प्रदर्शनियों (बृज दर्शन) व्याख्यान और चर्चा (बृज व्याख्यान) और प्रदर्शन (बृज लीला) के माध्यम से खोजा गया। इस उत्सव में खाने पीने का आयोजन भी था।

रामायण के विभिन्न संस्करणों, विशेष रूप से लोक नाटक का प्रलेखन आईजीएनसीए द्वारा किया जा रहा है। इसके भाग के रूप में सागर, मध्य प्रदेश के कलाकारों द्वारा बुंदेली लोक रामायण का प्रलेखन किया गया। यह आईजीएनसीए

के प्रयासों से संभव हुआ है कि रामलीला को यूनेस्को द्वारा अमूर्त विरासत घोषित किया गया है।

वार्षिक तीज उत्सव, मौसम परिवर्तन का स्वागत करने के लिए 24 जुलाई, 2009 को मनाया गया। श्री चैतन्य प्रेम संस्थान, वृंदावन के श्री वत्स गोस्वामी ने ''राधे झूला पधारो महिलाओं का एक उत्सव'' पर एक सुंदर वार्ता प्रस्तुत की। जाने माने कजरी कलाकार श्री राम कैलाश यादव, मिर्जापुर और सुश्री मालिनी अवस्थी, लखनऊ ने इस अवसर पर गायन प्रस्तुत किया। मिथिला की 10 तस्वीरों और राम कथा पर 34 गौंड तस्वीरों की प्रदर्शनी आयोजित की गई थी।

प्रभाग ने प्रो. लोकेश चंद्र और डेसाकू इकेडा द्वारा लिखित ''बुद्धिज़म : ए वे ऑफ वैल्यूज़ – ए डायलॉग एक्रॉस टाइम एण्ड स्पेस'' पुस्तक पर 7 अगस्त, 2009 को पैनल चर्चा का आयोजन किया। डेकासू एकेडा के 2009 शांति प्रस्ताव ''टूवर्ड्स ह्यूमेनीटेरियन कम्पीटिशन, ए न्यू करंट इन हिस्ट्री'' पर 8 सितम्बर, 2009 को एक गोष्ठी का आयोजन किया गया।

डॉक्टर रोमा चटर्जी द्वारा लिखित आईजीएनसीए अनुसंधान परियोजना की पुस्तक ''राइटिंग आइडेंटिटीज़, फोक लोर एण्ड परफॉरमेटिव आर्ट्स ऑफ पुरुलिया'' पर 26 अक्तूबर, 2009 को एक पैनल चर्चा का आयोजन किया गया।

झारखण्ड की पाषाण कला पर एक जारी परियोजना ''पाषाण कला और संबद्ध विषयों का अध्ययन और प्रलेखन'' के तहत एक डीवीडी तैयार की गई। एक फिल्म ''लैंडस्केपिंग द डिवाइन – स्पेस एण्ड टाइम अमंग द गड्डी'' 24 जुलाई, 2009 को जारी की गई थी।

वर्ष के दौरान जारी की गई पुस्तकें थीं : ''पिलग्रीमेज – सेक्रेड लैंडस्केप्स एण्ड सेल्फ ऑर्गनाइजड कम्प्लेक्सिटी'', जिसका संपादन जॉन मैक कीम मेलविल और बी एन सरस्वती ने किया, ''सेक्रेड कॉम्प्लेक्स ऑफ द गुरू वायूर टेम्पल'' जिसे पी आर जी माथुर ने लिखा तथा ''राइटिंग आइडेंटिटीज़, फोक लोर एण्ड परफॉरमेटिव आर्ट्स ऑफ पुरुलिया'' जिसे डॉ. रोमा चटर्जी द्वारा लिखा गया।

कला दर्शन प्रभाग

कला दर्शन प्रभाग इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के विभिन्न प्रभागों के कार्यकलापों के प्रस्तुतीकरण एवं विविध कलाओं के बीच सृजनात्मक एवं समालोचनात्मक संवाद हेतु मंच उपलब्ध करवाता है। अपने कार्यक्रमों के माध्यम से इस प्रभाग ने अभिव्यक्ति तथा प्रस्तुति की एक अद्भुत शैली विकसित की है। यह प्रभाग इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के शैक्षणिक कार्यकलापों से संबंधित प्रदर्शनियों, संगोष्ठियों, सम्मेलनों एवं व्याख्यानों, प्रदर्शनियों, कार्यशालाओं तथा कला–प्रस्तुतियों का आयोजन करता है जो इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के वृहत अध्याय को परिपूर्ण बनाता है। प्रदर्शनियों/व्याख्यानों की सूची अंत में दी गई है।

क्षेत्रीय केन्द्र

पूर्वोत्तर क्षेत्रीय केन्द्र

पूर्वोत्तर क्षेत्रीय केन्द्र द्वारा नमक के एक प्रतिस्थापक : विभिन्न प्रकारों के एल्कली (खार) से संबंधित जानकारी पूर्वोत्तर भारत के स्वदेशी समुदायों से ''पारंपरिक ज्ञान आधार'' पर तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन 17 से 19 दिसम्बर 2009 के बीच किया गया। एल्कली और नमक के प्रतिस्थापकों पर एक प्रदर्शनी इस अवसर पर लगाए गए। पूर्वोत्तर भारत के पांचों राज्यों से प्रतिभागी यहां आए।

आईजीएनसीए ने क्षेत्र में दो परियोजनाएं आयोजित कीं। 1. पारंपरिक बार्टर के जरिए अंतर–सामुदायिक संबंध और असम के कामरूप तथा मौरी गांव जिले में वार्षिक मेलों में व्यापार 2. एशियन राजमार्ग और जन अवधारणा : संसाधन संभाव्यता और प्रस्तावित एशियाई राजमार्ग 1 में असम की संभावित उपयोगिता पर एक अध्ययन। इन दोनों परियोजनाओं पर रिपोर्ट का संकलन किया जा रहा है। भारत के पूर्वोत्तर राज्यों तथा दक्षिण एशियाई देशों के बीच अंतर – सांस्कृतिक वार्तालाप विषय पर फरवरी – मार्च 2010 में एक अंतरराष्ट्रीय गोष्ठी का आयोजन किया जाना है जिसमें सांस्कृतिक विरासत का उत्सव शामिल है।

पूर्वी क्षेत्रीय केन्द्र ,वाराणसी

क्षेत्रीय केन्द्र वाराणासी में मुख्यतः कालाकोश प्रभाग की प्रकाशन श्रृंखला से संबंधित कार्य किया जाता है। यहां विद्वान विभिन्न पाठों और चुने हुए प्रकाशनों के विषय से संबंधित सामग्री पर अपार सूचना देने वाले संदर्भ कार्ड तैयार करने के कार्य में संलग्न हैं। इस वर्ष ऐसे 2215 कार्ड तैयार किए गए थे।

पांडुलिपि विज्ञान और पेलियोग्राफी पर 25 जून से 10 जुलाई 2009 के बीच 16 दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसके दौरान 10 प्राचीन लिपियां सिखाई गई थीं। अनेक विद्वानों ने ''पाठ आलोचना के सिद्धांत'' के विभिन्न पक्षों पर व्याख्यान दिए।

दक्षिणी क्षेत्रीय केन्द्र, बैंगलुरु

यह कार्यालय दक्षिणी राज्यों में प्रलेखन कार्य, परियोजना अध्ययन और प्रकाशन करता है।

जनता के लिए

आईजीएनसीए एक शैक्षिक अनुसंधान संगठन है जो कला

के क्षेत्र में मुख्य रूप से कार्य करता है। अध्ययन, प्रलेखन, संरक्षण, परिरक्षण और प्रसार इसके कार्यों के हिस्से हैं। केन्द्र में एक पुस्तकालय है जहां अनेक भारतीय और विदेशी भाषाओं की पुस्तकें बड़ी संख्या में हैं। पुस्तकालय की संदर्भ सुविधा सभी के लिए खुली है। इस पुस्तकालय में नाम मात्र शुल्क पर फोटोकॉपी भी प्रदान की जाती है। पुस्तकालय में अन्य रूपों में भी संदर्भ सामग्री उपलब्ध है अर्थात माइक्रोफिल्म, स्लाइड, फोटोग्राफ और ऑडियो विजुअल रिकॉर्डिंग। इन सभी को अधिवासी प्रयोक्ता उपयुक्त पूर्व जानकारी से देख सकते हैं।

आईजीएनसीए प्रकाशन – पुस्तकें और डीवीडी – सरकारी कामकाजी दिवसों पर कार्यकाल समय के दौरान बिक्री काउंटर पर उपलब्ध हैं।

केन्द्र द्वारा समय समय पर प्रदर्शनियों, व्याख्यानों, वार्ताओं और अन्य कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है जो जनता के लिए खुली हैं। इनका समाचार पत्रों में विज्ञापन किया जाता है। पिछले कुछ वर्षों में केन्द्र ने हमारे कार्यक्रमों में जनता की भागीदारी बढ़ती देखी है।

आईजीएनसीए की वेबसाइट को wwww.ignca.nic.in पर देखा जा सकता है और यह संस्कृति के क्षेत्र में सबसे अधिक देखी जाने वाली साइटों में से एक है।

व्याख्यान

अप्रैल से दिसम्बर 2009 तक आईजीएनसीए द्वारा निम्नलिखित व्याख्यानों की मेज़बानी की गई:

1.	सिंधु सरस्वती सभ्यता और ऋग्वेद पर प्रो. भगवान सिंह द्वारा व्याख्यान	06.04.09
2.	प्रो. बी बी चौबे द्वारा वेदिक कमेंटेरियल टेक्स्ट : इर्म्पोटेंस एण्ड एवेलेबल मैनूस्क्रिप्ट्स	24.04.09
3.	प्रो. प्रकाश पांडे द्वारा शारदा लिपि का उद्भव, विकास और महत्व	29.05.09
4.	श्री सुशील कुमार द्वारा हिमाचल प्रदेश में स्थायी विकास के लिए पांडुलिपियों की उपयोगिता	01.06.09
5.	प्रो. राजेन्द्र मिश्रा द्वारा राम कथा की सार्वभौमिकता	26.06.09
6.	प्रो. विलार्ड वान डे बोगार्ट द्वारा विष्णु की वापसी : भारतीय पुराणों पर खगोल विज्ञान का अनुप्रयोग	13.06.09
7.	डॉ. के संपत नारायण द्वारा विशिष्ट अद्वैत की परंपरा	31.06.09
8.	प्रो. डॉ. हैरी फॉक द्वारा इंस्टीट्यूशन एण्ड इंस्टीट्यूटर्स ऑफ द एराज़ ऑफ एजल, शक एण्ड यवण, फॉर रिकॉनिंग ऑफ टाइम इन इंडिया : सम न्यू फैक्ट्स	17.08.09
9.	प्रो. एब्बाकोच द्वारा मुगल उद्यान और दृश्यावली तथा प्रकृति के अन्य मार्ग	27.08.09
10.	प्रो. एडमहार्डी द्वारा टेम्पल्स, टेम्पलेट, टेक्स्ट्स : मेकिंग मूवमेंट्स इन मेडिवल इंडिया	03.09.09
11.	प्रो. खेतान द्वारा भारत में जनजातीय कला और संस्कृति के प्रस्तुतीकरण–सह अंत:क्रियात्मक संग्रहालय प्रदर्शन ''वाछा''	15.09.09
12.	डॉ. विनोद डेनियल द्वारा संग्रहालय पर अंतरराष्ट्रीय रुझान	08.10.09
13.	श्री बिनय के बहल द्वारा भारत के भित्ति चित्र	16.10.09
14.	श्री बिनय के बहल द्वारा पहाड़ों पर कविताएं	20.11.09
15.	प्रो. एन वीजी नाथन द्वारा वेदों में दर्शन शास्त्र की विद्वता	08.12.09
16.	प्रो. के डी त्रिपाठी द्वारा आधुनिक संदर्भ में संस्कृत नाटक का महत्व	15.12.09
17.	श्री बिनय के बहल द्वारा स्तूपों की घाटी	18.12.09

प्रदर्शनी

1.	मिस्त्र की समकालीन कला की चित्रकला	21 मई—30 मई, 2009
2.	राम कथा पर मिथिला और गौंड चित्रकला	24 जुलाई—31 जुलाई, 2009
3.	तिहाड़ के कैदियों और समकालीन कलाकारों द्वारा कला की अभिव्यक्ति	12 अगस्त—2 सितम्बर, 2009
4.	श्री बिनय के बहल द्वारा रिन चैनजांगो के मठ — फोटो	24 सितम्बर—20 अक्तूबर, 2009
5.	युवा पोलिश मुद्रकों द्वारा कल्पना के मार्ग	3 अक्तूबर—14 अक्तूबर, 2009
6.	बृज दर्शन — चित्र तथा अन्य सामग्रियां	21 नवम्बर—8 दिसम्बर, 2009
7.	कश्मीर से रॉयल पशमीना शॉल	21 दिसम्बर—3 जनवरी, 2009

प्रकाशन

1. पिलग्रीमेज — सेक्रेड लैंडस्केप्स एण्ड सेल्फ ऑर्गनाइज़ड कम्प्लेक्सिटी''जॉन मैक कीम मेलविल और बी एन सरस्वती
2. ''सेक्रेड कॉम्प्लेक्स ऑफ द गुरू वायूर टेम्पल'' पी आर जी माथुर
3. ''राइटिंग आइडेंटिटीज़, फोक लोर एण्ड परफॉरमेटिव आर्ट्स ऑफ पुरुलिया'' डॉ. रोमा चटर्जी
4. एसेज़ ऑन म्यूज़िक, डॉ. आनंद कुमार स्वामी द्वारा लिखित, डॉक्टर प्रेम लाल शर्मा द्वारा संपादित।

3.3

अकादमी

संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार ने 1952 से 1954 की अवधि के दौरान स्वायत्त संगठनों के रूप में तीन अकादमियां नामतः संगीत नाटक अकादमी, साहित्य अकादमी तथा ललित कला अकादेमी स्थापित की है। ललित कला अकादमी, संगीत नाटक अकादेमी तथा साहित्य अकादमी क्रमशः दृश्य कलाओं, मंच कलाओं तथा साहित्यिक मानकों के संवर्धन में कार्यरत हैं।

उपर्युक्त सभी तीनों अकादमियां साहित्यिक मानकों के सक्रिय विकास, चित्रकला, मूर्तिकला, रेखा–चित्रकला, संगीत, नाटक, नृत्य आदि जैसी सृजनात्मक कलाओं के क्षेत्रों में अध्ययन और अनुसंधान के संवर्धन तथा समन्वय और भारत की विविध संस्कृति की विशाल अमूर्त विरासत के परिरक्षण तथा संवर्धन की दिशा में कार्य कर रही हैं। ये राष्ट्रीय अकादमियां सेमिनारों, उत्सवों, कार्यशालाओं, संगोष्ठियों आदि के आयोजन में राज्य अकादमियों, स्वैच्छिक संगठनों, एन जी ओ तथा व्यक्तियों के साथ समन्वय तथा सहयोग करती है। कलाकारों के कला और संस्कृति के संवर्धन तथा प्रसार में किए गए योगदानों के सम्मान में अकादमियां प्रत्येक वर्ष कलाकारों को अकादमी पुरस्कारों तथा अध्येतावृत्तियों से सम्मानित करती हैं।

अकादमी ने जनजातीय कला संस्कृति और नृत्य रूपों के संवर्धन हेतु श्रंखलाबद्ध कार्यक्रम आयोजित करके देश के पूर्वोत्तर क्षेत्र में भी उल्लेखनीय रूप से अपने अस्तित्व की पहचान बनाई है। अकादेमी के समन्वित प्रयासों से, भारत के अन्य भागों की कला और संस्कृति का पूर्वोत्तर राज्यों से परिचय कराया गया है। इसी प्रकार, पूर्वोत्तर राज्यों की जनजातीय कलाओं तथा नृत्य रूपों को शेष भारत के ऐसे ही कलारूपों के साथ प्रस्तुत किया गया है।

3.3.1

साहित्य अकादमी

प्रस्तावना

साहित्य अकादमी एक राष्ट्रीय संगठन है जिसका उद्देश्य भारतीय भाषाओं के विकास के लिए सक्रियता से कार्य करना और इस क्षेत्र में उच्चस्तरीय मानदंड स्थापित करना, सभी भारतीय भाषाओं के बीच साहित्यिक कार्यकलापों को प्रोत्साहित करना और उनका समन्वयन करना और इनके माध्यम से राष्ट्रीय सांस्कृतिक एकता के उद्देश्य को प्रोत्साहित करना तथा पूरा करना है।

प्रकाशन कार्यक्रम

साहित्य अकादमी देश में साहित्यिक संवाद, प्रकाशन और भाषाई विकास का केन्द्रीय संस्थान है और यह एकमात्र ऐसी संस्था है जो अंग्रेजी सहित 24 भारतीय भाषाओं के साहित्यिक कार्यकलापों को संचालित करती है। अपने अस्तित्व के 54 वर्षों में इसने संगोष्ठियों, व्याख्यानों, वार्ताओं, परिचर्चाओं, विचार–विमर्श, पाठन एवं निष्पादन के जरिए अच्छी रूचि एवं स्वस्थ पठन–पाठन की आदत को विकसित किया है; भारत के विभिन्न भाषाई एवं साहित्यिक अंचलों के बीच संवाद को जीवंत बनाए रखा है तथा यह कार्यशालाओं एवं व्यक्तिनिष्ठ समनुदेशनों के माध्यम से परस्पर अनुवाद को बढ़ाने और पत्रिकाओं, मोनोग्राफ, लेखकों की सब प्रकार की रचनात्मक कृतियों, ग्रंथ सूचियों, विश्वकोशों, शब्दकोशों, संदर्भ ग्रंथों, राइटर्स डायरेक्ट्री और साहित्यिक इतिहासों के प्रकाशन से गंभीर साहित्यिक संस्कृति विकसित करने की दिशा में निरंतर प्रयत्नशील रही है।

प्रकाशन

साहित्य अकादमी ने अपने अस्तित्व में आने के बाद से अब तक 24 भारतीय भाषाओं में लगभग 5600 पुस्तकें प्रकाशित की हैं। दिसंबर, 2009 तक इसके द्वारा 422 पुस्तकें (पुनः मुद्रण सहित) प्रकाशित की जा चुकीं हैं।

पुस्तकालय

साहित्य अकादेमी में अंग्रेजी और हिंदी की पुस्तकों सहित एक बहुभाषी पुस्तकालय है जिसके संग्रह में साहित्य और सम्बद्ध विषयों की पुस्तकें हैं। यह पुस्तकालय आम लोगों के लिए है बशर्ते कि उन्होंने अपना नामांकन कराया हो। यहॉ लगभग 1,51,704 पुस्तकों का संग्रह है। अकादेमी का पुस्तकालय दिल्ली और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के लोगों को सेवाएं प्रदान करता है। यह पुस्तकालय समकालीन भारतीय साहित्य में अध्ययन और अनुसंधान का महत्वपूर्ण स्रोत है और इसके 9345 से भी अधिक पंजीकृत सदस्य हैं। क्षेत्रीय कार्यालय, बंगलौर के पुस्तकालय में 1032 पुस्तकें, क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता के पुस्तकालय में 279 पुस्तकें और क्षेत्रीय कार्यालय, मुम्बई के पुस्तकालय में 464 पुस्तकें खरीदी गईं।

कार्यक्रम

फेलोशिप

श्री रमाकांत रथ, विख्यात उडिया लेखक, प्रोफेसर गोपीचन्द नारंग, विख्यात सिद्धांतवादी, साहित्यिक समालोचक और विद्वान को ''अमर साहित्य'' फेलो जिनकी एक समय पर अधिकतम संख्या 21 होती है, के लिए चुना गया है।

साहित्य अकादमी के फेलो का चयन भारतीय साहित्य में उनके उत्कृष्ट योगदान को मान्यता प्रदान करने के लिए किया जाता है।

वार्षिक पुरस्कार 2009

नई दिल्ली में दिनांक 16 फरवरी, 2010 को 23 भाषाओं के 23 लेखकों को पुरस्कार प्रदान किए गए थे। इस कार्यक्रम के बाद दिनांक 17 फरवरी, 2010 को लेखकों की बैठक आयोजित की गई थी जिसमें पुरस्कार प्राप्त लेखकों ने अपनी सृजनात्मकता के बारे में चर्चा की।

अनुवाद पुरस्कार 2008

22 भाषाओं के 22 अनुवादकों को अनुवाद पुरस्कार प्रदान किए गए थे। निर्णय लेने की वर्षभर चली प्रक्रिया में 431 लेखकों, विद्वानों और आलाचकों, अनुवादकों और अकादेमी द्वारा मान्यता प्राप्त संबंधित भाषाओं के अनेक संघों ने भाग लिया। यह कार्यक्रम 20 अगस्त, 2009 को बंगलौर में आयोजित किया गया था।

भाषा सम्मान 2008

4 लेखकों / विद्वानों को भाषा सम्मान प्रदान किया गया। दो को शास्त्रीय और मध्यकालीन साहित्य में योगदान के लिए और दो को हिमाचली भाषा के लिए किए गए योगदान के लिए संयुक्त रूप से यह सम्मान दिया गया था।

कार्यकलाप

अकादेमी द्वारा इस अवधि के दौरान आयोजित किए गए कुछ महत्वपूर्ण कार्यक्रम इस प्रकार हैं:—

संगोष्ठियाँ

- नई दिल्ली में दिनांक 15 दिसम्बर, 2009 को ''मैं बच्चों के लिए क्यों लिखता हूं'' पर एक दिवसीय संगोष्ठी।
- नई दिल्ली में दिनांक 22 दिसम्बर, 2009 को रांगेय राघव पर संगोष्ठी।
- हैदराबाद में दिनांक 5 जून, 2009 को टी.आर.एस. शर्मा द्वारा सम्पादित पुस्तक ''महाभारत से संबंधित विमर्श और विभिन्नता'' के बारे में संगोष्ठी और पुस्तक विमोचन कार्यक्रम।
- मास्टर जिन्दा कौल पर दिनांक 26 फरवरी, 2009 को जम्मू में संगोष्ठी।
- भक्तिमय साहित्य पर दिनांक 27 से 29 मार्च, 2009 तक श्रीनगर में संगोष्ठी।
- अब्दुल रहीम आमा पर दिनांक 2 मई, 2009 को बनिहाल में संगोष्ठी।
- गुलाम रसूल नज्की पर दिनांक 5 नवम्बर, 2008 को श्रीनगर में संगोष्ठी।
- पंजाबी साहित्य आज पर दिनांक 28 मार्च, 2009 को कोलकाता में संगोष्ठी।
- उत्तर—स्वतंत्रता कविता पर दिनांक 27 फरवरी, 2009 को गुवाहाटी में संगोष्ठी।
- विश्व नाट्य पर दिनांक 27 फरवरी, 2009 को गुवाहाटी में संगोष्ठी।
- दिनांक 30—31 जुलाई, 2009 को ''मणिपुर साहित्य और संस्कृति'' के आधारभूत सिद्धांत पर इम्फाल, मणिपुर में संगोष्ठी।
- दिनांक 27—28 अगस्त, 2009 को थाऊबल, मणिपुर में कवि गोष्ठी सहित लिटेनथेम राम सिंह के जाट ओनबा और अन्य साहित्यिक कृतियों पर संगोष्ठी।
- इम्फाल पूर्व के मिथक और दंतकथाओं पर दिनांक 11 अक्तूबर, 2009 को कैना, मणिपुर में संगोष्ठी।
- असमी वैष्णव साहित्य और संस्कृति पर दिनांक 24 नवम्बर, 2009 को डिब्रूगढ़ में संगोष्ठी।
- पुदुवई सिवान शताब्दी पर दिनांक 17 जुलाई, 2009 को पुद्दुचेरी में संगोष्ठी।
- आनंदरंगापिल्लै—300वीं जयंती पर दिनांक 18 जुलाई, 2009 को पुद्दुचेरी में संगोष्ठी।
- भावी कविता और कविता के भविष्य पर दिनांक 19 जुलाई, 2009 को तमिल विरासत केन्द्र, ऑरोविले में संगोष्ठी।
- जनजातीय साहित्य पर दिनांक 21 अगस्त, 2009 को चेन्नई में संगोष्ठी।
- महिलाओं से संबंधित कृतियां : चुनौतियां और उपलब्धियाँ तथा अस्मिता पर दिनांक 25 अगस्त, 2009 को त्रिवेन्द्रम में संगोष्ठी।
- सिंधी साहित्य पर दिनांक 28 मार्च, 2008 को मुम्बई में संगोष्ठी।
- एकांकी नाटक पर दिनांक 8 मार्च, 2009 को मेहसाणा, गुजरात में संगोष्ठी।
- साहित्य और सिनेमा पर दिनांक 8 फरवरी, 2009 को मुम्बई में संगोष्ठी।

- वर्तमान समय : समकालीन कोंकणी कविता में विमर्श पर दिनांक 5 जुलाई, 2009 को बालमट्टा में संगोष्ठी।

- कोंकणी भाषा और संस्कृति के उद्भव पर दिनांक 11 जुलाई, 2009 को बेलगाम में संगोष्ठी।

- मराठी में स्वातंत्र्योत्तर महिला साहित्य पर दिनांक 26 सितम्बर, 2009 को मुम्बई में संगोष्ठी।

- आज के पूर्वोत्तर साहित्य पर दिनांक 8 नवम्बर, 2009 को सूरत में संगोष्ठी।

कार्यशालाएं

- चम्बा में महिला विरासत के प्रलेखन पर दिनांक 21 मार्च, 2009 को पटौदी में कार्यशाला।

- दिनांक 2–3 जुलाई, 2009 को शिमला में चंबा में महिला संस्कृति विरासत पर कार्यशाला।

- दिनांक 4 से 11 अक्तूबर, 2009 तक चम्बा क्षेत्र की महिला विरासत पर चम्बा और भरमौर में कार्यशाला।

- साहित्यिक अनुवाद पर दिनांक 10 से 12 सितम्बर, 2009 तक कार्यशाला।

- असमी से बोडो भाषा में अनुवाद पर दिनांक 9–10 जनवरी, 2009 को गुवाहाटी में अनुवाद कार्यशाला।

- मैक्समूलर भवन और साहित्य अकादेमी सभागार, कोलकाता में दिनांक 23–24 फरवरी, 2009 को जर्मन, बंगाली, कविता अनुवाद कार्यशाला।

- जर्मन बंगला कविता अनुवाद कार्यशाला, फेज–II, 23–24 मार्च, 2009 कोलकाता।

- कोलकाता में दिनांक 24 से 26 अगस्त तक बंगाली अनुवाद कार्यशाला।

- कोलकाता में दिनांक 26 से 28 अगस्त, 2009 तक मिजो–बंगाली अनुवाद कार्यशाला।

- कोलकाता में दिनांक 24 से 26 अगस्त, 2009 तक बोडो–बंगाली लघु कहानी अनुवाद कार्यशाला।

- आइजोल में दिनांक 10 से 12 अक्तूबर, 2009 तक मणिपुर की जनजातीय भाषाओं की कोशकला पर कार्यशाला।

- कोलकाता में दिनांक 1 से 3 दिसम्बर, 2009 तक उडिया–बंगाली कविता अनुवाद कार्यशाला।

- गोवा में दिनांक 1 से 4 मार्च, 2009 तक कश्मीरी लघु कहानी अनुवाद कार्यशाला।

कवि संधि / कथा संधि

- इम्फाल, मणिपुर में दिनांक 29 अगस्त, 2009 को श्री सुधीर नेरोयिबम के साथ कथा संधि; ककचिंग, मणिपुर में दिनांक 30 अगस्त, 2009 को बिजेन्द्रजीत नैरोम के साथ; दिनांक 24 अक्तूबर, 2009 को कार्बी आंगलोंग के साथ;दिनांक 26 नवम्बर, 2009 को नागेन सैकिया के साथ डिब्रूगढ़ में; दिनांक 25 जून, 2009 को तमिल लेखक एम.एस.पी. मुरूगेसन वैयियावन के साथ चेन्नई में और दिनांक 20 अगस्त, 2009 को अनुमंडला भूमिया के साथ बंगलौर में कवि–संधि आयोजित की गई।

काव्य पाठ कार्यक्रम

- अर्जेन्टिना के कवि जुआन जेलमैन द्वारा दिनांक 7 अप्रैल, 2009 को नई दिल्ली में काव्य पाठ।

- बिल्किस जफर–उल–हसन और सुकृता पाल कुमार द्वारा दिनांक 29 मार्च, 2009 को दक्षिण परिसर, दिल्ली विश्वविद्यालय में काव्य पाठ।

- केकी दारूवाला और लक्ष्मी कन्नन द्वारा दिनांक 29 अगस्त, 2009 को दक्षिण परिसर, दिल्ली विश्वविद्यालय में अपनी रचनाओं का काव्य पाठ।

- डेविड मैनिकाम और आलोक भल्ला द्वारा दिनांक 29 नवम्बर, 2009 को काव्य पाठ। अग्रहारा कृष्णामूर्ति और एस.एस.नूर ने दिनांक 16 दिसम्बर, 2009 को दक्षिण परिसर, दिल्ली विश्वविद्यालय में काव्य पाठ किया।

- दिनांक 7–8 नवम्बर, 2009 को नाभा (पंजाब) में भारत कविता उत्सव (जिसमें कश्मीरी लेखकों ने भाग लिया)।

- दिनांक 13–14 फरवरी, 2009 को इम्फाल में लोक (वाचिक) कविता महोत्सव।

- दिनांक 21 फरवरी, 2009 को कोलकाता में कविता उत्सव।

- दिनांक 21 और 22 फरवरी, 2009 को कोलकाता में उत्तर–पूर्वांचल कविता उत्सव।

- दिनांक 27 मार्च, 2009 को कोलकाता में पंजाबी काव्य संध्या।

- दिनांक 5 सितम्बर, 2009 को तंगला में बोडो कवि सम्मेलन।
- दिनांक 1 फरवरी, 2009 को धारवाड में कवि सम्मेलन।
- दिनांक 5 अगस्त, 2009 को चेन्नई में कवि संधि।
- दिनांक 25 अक्तूबर, 2009 को बेलापुर, नवी मुम्बई में पंजाबी कविता उत्सव।

लोक : अनेक स्वर (लोक साहित्य कार्यक्रम जिसमें व्याख्यान और प्रदर्शन शामिल हैं)

- लोक : अनेक स्वर : दिनांक 13 सितम्बर, 2009 को दिल्ली में बुंदेली गीत और राई नृत्य तथा असम के बिहू गीत और नृत्य पर एक लोक संध्या।
- लोक : अनेक स्वर और अवधी कवि गोष्ठी, दिनांक 16 नवम्बर, 2009, नई दिल्ली।
- लोक : अनेक स्वर : दिनांक 24 जनवरी, 2009, आर. के. मिशन आश्रम, नरेन्द्रपुर।
- लोक : अनेक स्वर : दिनांक 19 मई, 2009, कोलकाता।
- लोक : कविता, दिनांक 27 जून, 2009, गंगटोक, सिक्किम।
- लोक : कविता, दिनांक 13 अक्तूबर, 2009 अनिखम्बम मण्डप, इम्फाल।
- लोक : अनेक स्वर : 'पेना म्यूजिक आन काओ फाबा एंड लेमजेट',13 अक्टूबर, अतिखंबम, मंडप, इंफाल।
- लोक कार्यक्रम दिनांक 31 मई 2009, मुम्बई

पूर्वोत्तर भाषाओं में कार्यक्रम

- देश के विभिन्न भागों में पूर्वोत्तर भाषाओं में आयोजित किए गए कुछ कार्यक्रम इस प्रकार हैंः–
- बोडो कवि गोष्ठी, दिनांक 19 जनवरी, 2009, बिजनी, असम में ।
- 'बोडो कथा–साहित्य के तीन विद्वान' पर संगोष्ठी, दिनांक 20 जनवरी, 2009, कोलकाता।
- पूर्वोत्तर भारत के लेखकों से मिलिए : दिनांक 29 जनवरी, 2009, कोलकाता पुस्तक मेला।
- उत्तर–पूर्वांचल कविता उत्सव, दिनांक 21–22 फरवरी, 2009, कोलकाता।
- दिनांक 25–26 फरवरी, 2009 को गुवाहाटी विश्वविद्यालय, गुवाहाटी में समकालीन बोडो कविता पर संगोष्ठी।
- दिनांक 8 मार्च, 2009 को अगरतला, त्रिपुरा में पूर्वोत्तर मौखिक साहित्य केन्द्र का उद्घाटन।
- दिनांक 28–29 जुलाई, 2009 को सिल्चर, असम में मणिपुर के बाहर मणिपुर साहित्य पर संगोष्ठी।
- दिनांक 18–19 अगस्त को भारतीय भाषा परिषद, कोलकाता में साहित्य संगम : पूर्वोत्तर प्रवृत्तियां और विषय पर संगोष्ठी।
- दिनांक 26 से 28 अगस्त, 2009 तक कोलकाता में मिजो–बंगाली अनुवाद कार्यशाला।
- दिनांक 1 से 3 सितम्बर, 2009 तक कोलकाता में गारो–बंगाली अनुवाद कार्यशाला।
- दिनांक 12–13 अक्तूबर, 2009 को इम्फाल में पूर्वी क्षेत्रीय कवि सम्मेलन।
- दिनांक 20 से 22 नवम्बर, 2009 तक कूचबिहार में पूर्वोत्तर लघु पत्रिका मेला।
- दिनांक 21–22 फरवरी, 2009 को गोवा में पूर्वी–पश्चिमी लेखक सम्मेलन।

सांस्कृतिक आदान–प्रदान कार्यक्रम

- छः भारतीय लेखकों के शिष्टमंडल ने दिनांक 9 से 14 अगस्त, 2009 तक चीन का दौरा किया।
- दिनांक 21 अक्तूबर, 2009 को नई दिल्ली में कोलम्बिया के कवियों द्वारा काव्य पाठ।
- दिनांक 1 से 11 नवम्बर, 2009 तक वियतनाम के लेखकों ने भारत का दौरा किया।
- दिनांक 19 नवम्बर, 2009 को नई दिल्ली में उज्बेक के कवि उक्तामोयी खोल्डरोवा का व्याख्यान/निदर्शन।
- दिनांक 20 नवम्बर, 2009 को नई दिल्ली में आयरिश और भारतीय कवियों की काव्य संध्या।
- चीन के पांच लेखकों ने दिनांक 23 से 29 नवम्बर, 2009 तक भारत का दौरा किया।

- दिनांक 6 से 8 सितम्बर, 2009 तक कोलकाता में ब्रिटिश परिषद के साथ साहित्यिक अनुवाद कार्यशाला।

- दिनांक 26 नवम्बर, 2009 को चीन के लेखकों का कोलकाता दौरा।

- वियतनाम के लेखकों द्वारा दिनांक 5 नवम्बर, 2009 को मुम्बई का दौरा।

अन्य महत्वपूर्ण कार्यकलाप

- देश के विभिन्न भागों में साहित्यिक मंचों की अनेक बैठकें आयोजित की गईं।

- दिनांक 24 से 26 मार्च, 2009 तक कोलकाता में आशापूर्णा देवी पर राष्ट्रीय संगोष्ठी।

- दिनांक 13–14 सितम्बर, 2009 को नई दिल्ली में बुंदेली भाषा सम्मेलन।

- जाधवपुर विश्वविद्यालय, कोलकाता के सहयोग से अनुवाद पर प्रोफेसर के. सच्चिदानंद के व्याख्यान।

- दिनांक 9–10 अगस्त, 2009 को धारवाड में विनायक कृष्ण गोकाक जन्मशती संगोष्ठी।

- दिनांक 15–16 अगस्त, 2009 को श्री काकुलम में कोदावतीगंती कुटुम्बा राय की जन्मशती पर संगोष्ठी।

- दिनांक 26 से 28 अगस्त, 2009 तक गुडूर में तेलुगू महाकाव्य में नैतिक मूल्य पर संगोष्ठी, कथा लेखक सम्मेलन, कवि गोष्ठी और पुस्तक प्रदर्शनी।

- अकादेमी ने 138 से भी अधिक स्थानों अर्थात् अगरतल्ला, अकोला, बर्दवान, जलपाईगुडी, जम्मू, गुवाहाटी, मदुरै, मुम्बई, नैनीताल, नासिक, पुरूलिया, सिंगुर, सूरत, तेजपुर, तिरुवनंतपुरम, विजयवाडा वारंगल आदि में पुस्तक प्रदर्शनियों में भाग लिया और इनका आयोजन किया।

- अकादेमी ने लंदन और मास्को में आयोजित किए गए पुस्तक मेलों में भाग लिया।

- भारतीय साहित्य का अभिलेखागार पहले से बनाई गई 81 फिल्मों में भोलाभाई पटेल, बुद्धदेव बोस, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, असम की लोक कथाओं पर बनी नई फिल्मों को शामिल किया गया। नौ और फिल्में बनाई जा रही हैं।

लोक : विविध स्वर

3.3.2

ललित कला अकादमी

ललित कला अकादमी, राष्ट्रीय कला अकादमी, नई दिल्ली की स्थापना भारत सरकार द्वारा 5 अगस्त, 1954 को एक स्वायत्त निकाय के रूप में की गई थी। संविधान में निर्धारित उद्देश्यों के अनुसरण में यह संगठन महा परिषद, कार्यकारी मंडल और अन्य समितियों, जिनमें कलाकार, कला आलोचक, वास्तुकार, फोटोग्राफर, लोक कला, जनजातीय एवं पारंपरिक कलाओं के विशेषज्ञ, कला प्रशासक एवं विभिन्न सरकारी संगठनों के प्रतिनिधि शामिल हैं, के माध्यम से कार्य करता है।

यह भारत में दृश्य कलाओं के क्षेत्र में शीर्षस्थ सांस्कृतिक निकाय है और यह संस्कृति मंत्रालय द्वारा पूरी तरह निधिकृत है। इसे राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनियों, कार्यक्रमों से संबंधित निर्णय लेने और कलाकारों तथा कला संगठनों को छात्रवृत्ति एवं अनुदानों के माध्यम से वित्तीय सहायता प्रदान करने की पर्याप्त स्वतंत्रता है।

ललित कला अकादमी एक ऐसा संस्थान है जो भारत कला के वैश्विक प्रभाव तक दुनिया के जागृत होने से पहले से राष्ट्र की कलाओं को सेवा प्रदान करता है। इसके सदस्यों और कर्मचारियों के नेतृत्व से ललित कला अकादमी उच्चतम स्तर की कला की स्थापना, परिरक्षण और प्रलेखन द्वारा कलाओं की सेवा के प्रति वचनबद्धता प्रकट करती है, जो भारत में आधुनिक और समकालीन कला की जीवंतता, जटिलता और नए पैटर्न प्रदर्शित करती है। पूरे वर्ष यह अतुलनीय महत्व की प्रदर्शनियां और शैक्षिक कार्यक्रम प्रस्तुत करती है। यहां एक पुस्तकालय, कला संग्रह, पुरातात्विक संरक्षण प्रयोगशाला है और यहां बौद्धिक स्तर की पुस्तकों और पत्रिकाओं का प्रकाशन किया जाता है।

ललित कला अकादमी का मुख्य लक्ष्य आधुनिक और समकालीन कला की गहरी समझ और उसके आनंद लेने को बढ़ावा देना है ताकि यह विविध स्थानीय, राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय श्रोताओं तक पहुंच सके। राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी और ट्रिनेले – इंडिया ऐसे प्रयास है जिन्हें नए कलात्मक रुझानों की खोज के लिए आयोजित किया गया है। अकादमी भारतीय कला एवं कलाकारों को विभिन्न प्रकारों की गतिविधियों तथा कार्यनीतिक भागीदारियों के माध्यम से प्रोत्साहन देने संबंधी गतिविधियों की व्यापक श्रेणी शामिल हैं।

कलाओं के विकास के प्रति अकादमी की निष्ठापूर्ण वचनबद्धता नई दिल्ली में स्थित मुख्यालय और भुवनेश्वर, चेन्नै, कोलकाता, लखनऊ, शिमला और गढ़ी, नई दिल्ली में स्थित क्षेत्रीय केन्द्रों द्वारा आयोजित राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनी कार्यक्रमों के माध्यम से स्पष्ट है। एक सांस्कृतिक निकाय होने के नाते यह संपूर्ण भारतीय उप प्रायद्वीप के लिए भारत की विविध संस्कृतियों के बीच आपसी संबंध बनाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है जो सांस्कृतिक प्रसार को जोड़ता है और यह रचनात्मक बुद्धिमत्ता एवं चमकदार डिजाइनों के रंग बिरंगे धागों के लिए एक विहंगम दृश्य है, जो भारतीय जीवन की मनमोहक विशेषताओं को प्रस्तुत करता है। भारतीय संस्कृति को इसकी सभी कलात्मक संवेदनाओं, विवादों, विरोधाभासों और सीमाओं के साथ अनुभव करते हुए अकादमी अपनी गतिविधियों में सभी प्रकार के विहंगम दृश्य के साथ कार्य करती है। इसकी संकल्पना भारत की पारंपरिक कलाओं की देखभाल और

कलाकारों को अंतरराष्ट्रीय कला परिदृश्य में समकालीन घटनाओं को आत्मसात करने में सहायता देने की है।

अकादमी की एक प्रमुख कला संवर्धन गतिविधि स्टुडियो को भारतीय और अंतरराष्ट्रीय कलाकार प्रदान करना है जो अकादमी के क्षेत्रीय केन्द्रों में कला के विभिन्न विषयों में कार्य करें। दिल्ली में अकादमी द्वारा गढ़ी कलाकार स्टुडियो का प्रशासन संभाला जाता है, जिसमें विभिन्न विषयों जैसे पेंटिंग, शिल्पकला, ग्राफिक और सिरामिक कार्य के कलाकार पूरे वर्ष इन स्टुडियो में कार्य करते हैं।

अकादमी द्वारा **ट्रिनाले इंडिया** शुरूआत 1968 में की गई थी। **सांस्कृतिक आदान–प्रदान कार्यक्रम**– भारतीय कला तथा कलाकारों को प्रोत्साहन देने के लिए अंतरराष्ट्रीय सहभागियों के सहयोग से भारतीय आधुनिक और समकालीन कला की बड़ी प्रदर्शनियों का आयोजन किया जाता है। **राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी** : इस प्रदर्शनी की शुरूआत 1955 में देश के बड़े शहरों से परे के कलाकारों और कला प्रेमियों की सार्थक भागीदारी सुश्चित करने, उन्हें बढ़ावा देने और उनकी सहायता करने के लिए की गई थी। **राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय शिविर/कार्यशालाएं** : सहभागियों में उनकी कलात्मक क्षमता सुधारने में मदद करने के लिए दृश्य कलाओं के विभिन्न क्षेत्रों में कार्यशालाएं। **व्याख्यान, गोष्ठियां, पैनल चर्चा और फिल्म शो** : कला एवं संस्कृति के क्षेत्र में समारोह छात्रों और अनुसंधानकर्ताओं विशेष रूप से कलाकारों तथा कला पर राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय फिल्मों का प्रदर्शन किया जाता है।

अकादमी द्वारा प्रमुख पत्रिकाओं जैसे ***ललित कला एंशिएंट पत्रिका ललित कला कंटेंपररी, समकालीन कला,*** प्रतिष्ठित कलाकारों पर मोनोग्राफ, पोर्टफोलियो, पुस्तकों और समाचार पत्रिकाओं का प्रकाशन भी किया जाता है। अकादमी अध्येतावृत्तियां प्रदान करके उन व्यक्तियों को मान्यता देती है जिन्होंने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर दृश्य कलाओं के क्षेत्र में अपार योगदान दिया है। अकादमी द्वारा भारत के विभिन्न राज्यों में भारतीय कला को प्रोत्साहन देने तथा गतिविधियां आयोजित करने के लिए राज्य कला अकादमियों और विभिन्न अन्य गैर लाभकारी कला एवं सांस्कृतिक संगठनों को वित्तीय सहायता दी जाती है। यह दृश्य कलाओं के क्षेत्र में कलाकारों को छात्रवृत्तियां भी प्रदान करती है।

राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी और ट्रिनाले–इंडिया का आयोजन करना नए कलात्मक रुझानों की खोज करने का प्रयास है।

अकादमी में लगभग 5500 कलाकृतियों का संग्रह है, जिसे 56 वर्ष की अवधि में अर्जित किया गया है। अकादमी में कला के कार्यों को परिरक्षित करने के सशक्त उपाय भी आरंभ किए गए हैं। ये कलाकृतियां आंतरिक खोज प्रदर्शनियों का नियमित हिस्सा होती हैं, जिन्हें नई दिल्ली में आयोजित किया जाता है और इन्हें अधिक से अधिक दर्शकों तक पहुंचाने के लिए देश के विभिन्न भागों में यात्रा हेतु भेजा जाता है। **ललित कला अकादमी वीथि** : एक महत्वपूर्ण स्थल है जहां आधुनिक और समकालीन कला का प्रदर्शन किया जाता है। राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय दोनों स्तरों पर प्रमुख कला प्रदर्शनियां, प्रतिष्ठित भारतीय कलाकारों के पूर्व व्यापी प्रदर्शन और सामूहिक प्रदर्शन भी नियमित रूप से आयोजित किए जाते हैं। अकादमी के पुस्तकालय में भारतीय और पश्चिमी कला पर कला और संस्कृति की ढेर सारी नई पुस्तकें लाई गई हैं। अकादमी के संदर्भ पुस्तकालय में 8000 से अधिक पुस्तकें हैं और यहां कला तथा कलाकारों पर लगभग 50 दृश्य–श्रव्य सामग्री का संग्रह है। अकादमी द्वारा भारत और विदेश जाने और आने वाले कलाकारों को स्टुडियो की सुविधाएं प्रदान की जाती हैं। उन्हें अकादमी द्वारा पेंटिंग, ग्राफिक, शिल्पकला, प्रिंट मेकिंग और सिरामिक स्टुडियो में प्रवेश दिया जाता है।

ललित कला अकादमी द्वारा अपने क्षेत्रीय केन्द्र, कोलकाता के माध्यम से और प्रत्यक्ष रूप से भारत के पूर्वोत्तर राज्यों में राष्ट्रीय कला महोत्सव, कार्यशालाओं, प्रदर्शनियों और गोष्ठियों का नियमित रूप से आयोजन किया जाता है।

महोत्सव

अकादमी ने शिमला के 122 वर्ष पुराने ऐतिहासिक उल्लास रंगमंच परिसर में एक नई कला वीथिका खोली है। इस विषय में नई दिल्ली में डॉक्टर सुधाकर शर्मा, सचिव, ललित कला अकादमी, नई दिल्ली और डॉक्टर प्रेम शर्मा, निदेशक, भाषा एवं संस्कृति विभाग, हिमाचल प्रदेश द्वारा 12 जून, 2009 को एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए। अकादमी इसे एक प्रमुख उपलब्धि मानती है और इस उपलब्धि को मनाने के लिए अकादमी द्वारा 25 जून से 12 जुलाई, 2009 तक **''उल्लास महोत्सव''** का आयोजन किया गया। भारत में कलाओं के राष्ट्रीय निकाय के रूप में अकादमी हमेशा भारत में कलाओं के विकास से संबंधित मामलों, दृश्य कलाओं से संबंधित महत्वपूर्ण सामग्री के संरक्षण और कला संस्थानों एवं कलाकारों को वित्तीय सहायता देने में आगे रहती है। अकादमी ने उल्लास रंगमंच के जीर्णोद्धार और पुनः निर्माण में अपार योगदान दिया है। उल्लास रंगमंच और इसके परिसर में सांस्कृतिक गतिविधियां, प्रदर्शन और पेंटिंग प्रदर्शनियों का आयोजन, उद्घाटन दिवस पर ललित कला अकादमी द्वारा किया गया था।

अकादमी ने **कला पर कलाकार** नामक एक नई श्रृंखला आरंभ की है। यह कार्यक्रम अकादमी का मासिक कार्यक्रम है। इसमें मुख्यतः उन कलाकारों के अनुभवों और यादों से कला के मौखिक इतिहास को प्रलेखित करने की संकल्पना की गई है जिन्होंने आधुनिक और समकालीन भारतीय

कला की प्रगति में अपार योगदान दिया है। इस कार्यक्रम के लिए अकादमी द्वारा एक प्रतिष्ठित कलाकार और एक कला आलोचक या एक कला इतिहासविद या संग्रहालय अध्यक्ष को कलाकार के साथ बात करने के लिए आमंत्रित किया जाता है। कलाकार अपने कला के कार्यों पर एक स्लाइड शो प्रस्तुत करता है और उनके अंतरंग विवरण प्रदान करता है तथा कला की उस विशिष्ट कृति को बनाने की प्रक्रिया समझाता है। आलोचक कलाकार की यात्रा को गहराई से समझ प्रदान करता है, जिससे उस कलाकार और उसकी कलाकृति को समझने में आसानी होती है। इस परियोजना के पीछे उद्देश्य यह है कि अकादमी में यह सामग्री परिरक्षित की जा सके ताकि इसका उपयोग अनुसंधानकर्ताओं के लिए किया जा सके।

अकादमी ने 10 अगस्त 2009 को कला पर अन्य कार्यक्रम आयोजित किया और कला पर अपने कार्यों को प्रदर्शित करने के लिए तथा स्लाइड शो दिखाने के लिए डॉक्टर पुष्पा भार्गव को आमंत्रित किया। उनके व्याख्यान का विषय था ''कला और विज्ञान के बीच संबंध''।

व्याख्यान, गोष्ठियां, पैनल चर्चा और फिल्म शो

- अकादमी ने 20 अप्रैल, 2009 को ''सेंसरशिप इन आर्ट'' पर एक पैनल चर्चा का आयोजन किया।
- ऑस्ट्रिया राजदूतावास फिल्म प्रिव्यू : भारत स्थित ऑस्ट्रिया राजदूतावास ने ललित कला अकादमी और राष्ट्रीय संग्रहालय के सहयोग से 21 अगस्त, 2009 को डॉ. गेब्रिएला क्रिस्ट द्वारा फिल्म प्रिव्यू और व्याख्यान प्रस्तुत किया। फिल्म का नाम था ''द कंर्जवेशन एण्ड प्रिजर्वेशन ऑफ द टेम्पलस इन नाको'' जिसमें ऐतिहासिक महत्व की कला, कलात्मक वस्तुओं और वास्तुकला को संरक्षित करने के कार्य और प्रयासों को गहराई से समझा गया है।
- क्यूबा राजदूतावास, नई दिल्ली के सहयोग से अकादमी ने कौस्तुभ प्रेक्षागृह में 27 अक्तूबर, 2009 को क्यूबा के कलाकार ज़ैदा डेल रियो द्वारा व्याख्यान का आयोजन किया।

प्रदर्शनियां

- अकादमी ने 18 अगस्त से 2 सितम्बर, 2009 के बीच जॉनी एमएल द्वारा प्रस्तुत इमेजिंग द इमिडिएट नामक एक प्रदर्शनी का आयोजन किया। इस प्रदर्शनी में अकादमी के प्रतिष्ठित संग्रह से कलाकृतियों को प्रस्तुत किया गया था।
- अकादमी ने क्यूबा के राजदूतावास और भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद के सहयोग से एक प्रदर्शनी ज़ैदा डेल रियो : अर्थर्स डांस पेंटिंग एक्ज़िबिशन का आयोजन किया जिसमें क्यूबा की प्रतिष्ठित कलाकार ज़ैदा डेल रियो के कार्यों को दर्शाया गया।

अकादमी में 14 से 22 सितम्बर, 2009 तक हिन्दी सप्ताह का आयोजन किया गया। इस अवधि में हिन्दी की विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं।

अकादमी ने एपीजे कॉलेज ऑफ फाइन आर्ट्स, जालंधर के सहयोग से जालंधर में 8 से 14 अक्तूबर, 2009 के बीच राष्ट्रीय चित्रकला शिविर का आयोजन किया। इस शिविर में 10 कलाकारों ने भाग लिया।

अकादमी ने कला और संस्कृति विभाग, बिहार तथा पटना आर्ट एण्ड क्राफ्ट कॉलेज के सहयोग से राष्ट्रीय कला सप्ताह का आयोजन किया। ''राष्ट्रीय कला सप्ताह'' के भाग के रूप में जानी मानी महिला कलाकारों के कार्यों की प्रदर्शनी लगाई गई और अनुनय चौबे, अनिल बिहारी, राजेश सिंह, अनिल सिन्हा, भावना कक्कड़ और नरेन्द्र पाल सिंह द्वारा समकालीन कला के नए आयाम पर पैनल चर्चा का आयोजन किया गया। राष्ट्रीय कला सप्ताह के दौरान स्लाइड शो प्रस्तुतीकरण और फिल्म शो की भी व्यवस्था की गई।

अकादमी ने फाइन आर्ट्स संकाय, एम.एस. विश्वविद्यालय, बड़ौदा के सहयोग से **राष्ट्रीय प्रिंटमेकिंग शिविर** का आयोजन किया। यह कार्यक्रम 30 दिसम्बर, 2009 को प्रारम्भ किया गया था।

प्रकाशन

अकादमी ने समकालीन और प्राचीन श्रृंखला के निम्नलिखित प्रकाशन निकाले :

- **केटलॉग**
  - 52वीं राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी
  - डिग्रेशन्स
- **पत्रिकाएं**
  - समकालीन कला – 34
  - समकालीन कला – 35
- **पुस्तकें**
  - द किंगडम देट वॉस कोटा
  - हिस्ट्रीकल डेवलपमेंट ऑफ कंटेम्पोररी इंडियन आर्ट
  - साहचर्य–निबंध, लेखकः ए. के. दत्ता
  - शिल्पी रामकिंकर
  - वार्षिक रिपोर्ट 2007–2008
  - सरबरी राय चौधरी : आकार प्रकार
- **पोर्टफोलियो**
  - एस एच रज़ा
- **कला संवाद**

- हिन्दी समाचार पत्रिका (अगस्त 2008)
- अंग्रेजी समाचार पत्रिका (अगस्त 2008)

अकादमी ने प्रतिष्ठित कलाकारों, कला समीक्षकों, कला इतिहासविदों और संग्रहाध्यक्षों के साथ बातचीत करने का मंच पंदान करने के लिए 'कला पर कलाकार' नामक एक मासिक श्रृंखला आरंभ की है।

क्षेत्रीय केन्द्र, कोलकाता में कार्यक्रम और प्रदर्शनियां

- क्षेत्रीय केन्द्र कोलकाता ने 29 जून, 2009 को प्रो. सौवन सोम द्वारा प्रस्तुत रवीन्द्र नाथ टेगौर की तस्वीरों और संगीत रचनाओं पर लिरिकल विजन नामक एक दृश्य श्रव्य कार्यक्रम आयोजित किया।
- क्षेत्रीय केन्द्र, कोलकाता ने 14–22 सितम्बर, 2009 के दौरान हिन्दी सप्ताह का आयोजन किया। हिन्दी सप्ताह के दौरान केन्द्र के सभी कर्मचारियों के लिए हिन्दी की विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित कीं।
- क्षेत्रीय केन्द्र, चेन्नै और क्षेत्रीय केन्द्र कोलकाता ने कला भवन, विश्व भारती, विश्वविद्यालय, शांति निकेतन के सहयोग से 27 अक्तूबर, 2009 को पैटन्र्स ऑफ रिफ्लेक्शन्स : राइटिंग कंटेम्परारी इंडियन आर्ट पर एक गोष्ठी का आयोजन किया। अकादमी के अध्यक्ष, श्री अशोक वाजपेयी ने मुख्य उद्‌बोधन दिया।

क्षेत्रीय केन्द्र, गढ़ी, नई दिल्ली में कार्यक्रम और प्रदर्शनिया

- सुश्री हेमवती गुहा द्वारा 17 अप्रैल, 2009 को 'माइ वर्ल्ड ऑफ फेंटेसी' पर एक व्याख्यान।
- सुशांत गुहा द्वारा 14 अप्रैल, 2009 को 'माइ इमेजिज़ इन ब्लैक एण्ड वाइट' पर एक व्याख्यान।
- क्षेत्रीय केन्द्र, गढ़ी ने डी.पी.धर मेमोरियल ट्रस्ट, श्री नगर के सहयोग से 23 से 29 अक्तूबर, 2009 के बीच श्रीनगर में नेशनल आर्ट फेस्टिवल आयोजित किया।
- क्षेत्रीय केन्द्र, गढ़ी ने दृश्य कला विभाग, कुमाऊं विश्वविद्यालय के सहयोग से 27 अक्तूबर से 8 नवम्बर, 2009 के बीच जाने माने शिल्पकार एलेक्स मैथ्यू द्वारा प्रस्तुत आर्टिस्ट इन रेसीडेंस नामक कार्यक्रम आयोजित किया। इस रेसीडेंसी का उद्‌घाटन प्रो. के. एन. पाण्डे ने किया और दृश्य कला अध्ययन और संचार पर एक अंतरराष्ट्रीय पत्रिका का विमोचन किया।
- क्षेत्रीय केन्द्र, गढ़ी ने 7 से 11 नवम्बर, 2009 के बीच दीन दयाल उपाध्याय इंडोर स्टेडियम, सूरत, गुजरात में चित्रकला, शिल्पकला और प्रिंट की एक प्रदर्शनी ओक्टा वेलेंस आयोजित की। इस प्रदर्शनी में 24 कलाकृतियां प्रदर्शित की गई थीं।
- सुश्री इरमा टोंटर, प्रिंट मेकर, इंग्लैंड द्वारा 20 नवम्बर, 2009 को स्लाइड शो प्रस्तुत किया गया।
- क्षेत्रीय केन्द्र, गढ़ी ने चंडीगढ़ ललित कला अकादमी के सहयोग से 9 से 13 दिसम्बर, 2009 के दौरान इंडियन अकादमी ऑफ फाइन आर्ट्स, अमृतसर में डिग्रेशन्स : एन एक्ज़िबिशन ऑफ पेंटिंग्स, स्कल्पचर्स, सिरामिक्स एण्ड प्रिंट्स का आयोजन किया।
- क्षेत्रीय केन्द्र, गढ़ी ने पंजाब कला परिषद, चंडीगढ़ के सहयोग से 18 से 22 दिसम्बर, 2009 के दौरान इंडियन अकादमी ऑफ फाइन आर्ट्स, अमृतसर में डिग्रेशन्स : एन एक्ज़िबिशन ऑफ पेंटिंग्स, स्कल्पचर्स, सिरामिक्स एण्ड प्रिंट्स का भी आयोजन किया।

क्षेत्रीय केन्द्र, चेन्नै

- क्षेत्रीय केन्द्र, चेन्नै ने जवाहर लाल नेहरू वास्तुकला और फाइन आर्ट विश्वविद्यालय, हैदराबाद के सहयोग से 15 से 22 सितम्बर, 2009 के बीच डेमोंस्ट्रेशन ऑफ स्कल्पचर का आयोजन किया। यह कार्यक्रम संस्थान के वरिष्ठ छात्रों के लाभ के लिए आयोजित किया गया था।
- क्षेत्रीय केन्द्र, चेन्नै ने 18 से 27 सितम्बर, 2009 के दौरान मेक्समुलर भवन, चेन्नै के सहयोग से 40 इयर्स वीडियो आर्ट डे नामक एक प्रदर्शनी का आयोजन किया। इस प्रदर्शनी के दौरान क्षेत्रीय केन्द्र में 59 फिल्में दिखाई गई।
- क्षेत्रीय केन्द्र, चेन्नै ने 22 और 23 सितम्बर, 2009 को हिन्दी सप्ताह मनाया। हिन्दी सप्ताह के दौरान केन्द्र ने कर्मचारियों के लिए हिन्दी की विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया।
- क्षेत्रीय केन्द्र, चेन्नै और क्षेत्रीय केन्द्र, कोलकाता ने कला भवन, विश्व भारती, विश्वविद्यालय, शांति निकेतन के सहयोग से 27 अक्तूबर, 2009 को पैटन्र्स ऑफ रिफ्लेक्शन्स : राइटिंग कंटेम्परारी इंडियन आर्ट पर एक गोष्ठी का आयोजन किया।
- क्षेत्रीय केन्द्र, चेन्नै ने 7 से 13 दिसम्बर, 2009 के बीच अंतःक्रियात्मक कार्यशाला आयोजित की। महाराष्ट्र और गोवा सहित दक्षिण क्षेत्र और पूर्वोत्तर राज्यों के 20 कलाकारों ने इस कार्यशाला में भाग लिया।
- क्षेत्रीय केन्द्र, चेन्नै और कोलकाता ने संयुक्त रूप से 17 से 23 दिसम्बर, 2009 के बीच आर्टिस्ट इन रेसीडेंसी एण्ड इंटर रीजनल कोलेबोरेटिव ब्रॉन्ज़ कास्टिंग कैम्प कार्यक्रम का आयोजन किया।

क्षेत्रीय केन्द्र, भुवनेश्वर

- क्षेत्रीय केन्द्र, भुवनेश्वर ने 15 और 16 अक्तूबर, 2009

को 'कला धारा' का आयोजन किया।

- क्षेत्रीय केन्द्र, भुवनेश्वर ने तत्तापानी, गंजाम, उड़ीसा में 8 से 12 नवम्बर, 2009 के बीच क्षेत्रीय चित्रकला शिविर आयोजित किया।
- क्षेत्रीय केन्द्र, भुवनेश्वर में 14 से 18 नवम्बर, 2009 के बीच तत्तापानी चित्रकला शिविर आयोजित किया जिसमें चित्रों की प्रदर्शनी लगाई गई।
- क्षेत्रीय केन्द्र, भुवनेश्वर ने 15 से 25 दिसम्बर, 2009 के बीच नेशनल सिरामिक म्यूरल कैम्प – प्रकृति पुरुष का आयोजन किया। इस शिविर में 9 कलाकारों ने हिस्सा लिया।

क्षेत्रीय केन्द्र, लखनऊ

- क्षेत्रीय केन्द्र, लखनऊ की ओर से 27 अक्तूबर, 2009 को डॉ. ओ.पी.अग्रवाल द्वारा एक अंतःक्रियात्मक व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस व्याख्यान का शीर्षक था ***क्या हम अमर कर सकते हैं अपनी कला निधि को***?
- एन आर्टिस्ट इन रेसीडेंसी कार्यक्रम केन्द्र के परिसर में 28 अक्तूबर से 6 नवम्बर, 2009 के बीच आयोजित किया गया।
- क्षेत्रीय केन्द्र, लखनऊ ने शुरूआत समिति के सहयोग से 26 नवम्बर से 2 दिसम्बर, 2009 के बीच राहुल सांकृत्यायन प्रेक्षागृह, आजमगढ़ में आर्ट वर्कशॉप ऑफ पेंटिंग इन रिमोट एरिया का आयोजन किया। इस कार्यशाला में 19 कलाकारों ने हिस्सा लिया।
- क्षेत्रीय केन्द्र, लखनऊ ने जवाहर कला केन्द्र, जयपुर के सहयोग से 1 से 7 दिसम्बर, 2009 के बीच आर्टिस्ट इन रेसीडेंसी का आयोजन किया। उन्होंने अपने कार्य और तकनीकों का प्रदर्शन किया।
- क्षेत्रीय केन्द्र, लखनऊ ने एम.एस. विश्वविद्यालय, बड़ौदा के सहयोग से राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के उपाध्यक्ष और संपादक, जाने माने कला अलोचक, कमेंटेटर, श्री समिक बंदोपाध्याय द्वारा एक व्याख्यान 'एज़ इमेज ट्रेवल थ्रू द आर्ट्स' का आयोजन फाइन आर्ट्स, एम.एस. विश्वविद्यालय, बड़ौदा में 16 दिसम्बर, 2009 को किया।
- क्षेत्रीय केन्द्र, लखनऊ ने जाने माने शिक्षाविद और लेखक, प्रो. सीतांशु यशचंद्र द्वारा 21 दिसम्बर, 2009 को राजस्थान राज्य ललित कला अकादमी, जयपुर के सहयोग से चित्र ***तुरागा न्याय : एस्थेटिक्स ऑफ द इल्यूसरी*** पर एक व्याख्यान का आयोजन किया।
- क्षेत्रीय केन्द्र, लखनऊ ने 14 से 25 सितम्बर, 2009 के बीच हिन्दी सप्ताह का आयोजन किया। हिंदी सप्ताह के दौरान केन्द्र के सभी कर्मचारियों के लिए हिन्दी की विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

राष्ट्रीय कला उत्सव

3.3.3

संगीत नाटक अकादमी

संगीत नाटक अकादमी – राष्ट्रीय संगीत नृत्य और नाटक अकादमी, की स्थापना 31 मई 1952 को शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के संकल्प द्वारा की गई थी और इसका उद्घाटन भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद द्वारा 28 जनवरी 1953 को किया गया था।

जिन उद्देश्यों को लेकर संगीत नाटक अकादमी की स्थापना की गई थी, उन्हें में निम्नानुसार बताया गया है :

i) संगीत, नृत्य और नाटक की क्षेत्रीय या राज्य अकादमियों की गतिविधियों का समन्वय, ii) भारतीय संगीत, नृत्य और नाटकों के क्षेत्र में अनुसंधान को प्रोत्साहन देना और इस प्रयोजन के लिए पुस्तकालय और संग्रहालय आदि की स्थापना करना, iii) संगीत, नाटक और नृत्य के विचारों के आदान प्रदान को प्रोत्साहन देना तथा संगीत, नृत्य और नाटक की कलाओं के विषय में विभिन्न क्षेत्रों के बीच तकनीकों का समृद्धिकरण, iv) क्षेत्रीय भाषाओं और अलग अलग थिएटर केन्द्रों के बीच सहयोग के आधार पर थिएटर केन्द्रों की स्थापना को प्रोत्साहन देना, v) अभिनेता प्रशिक्षण पर अनुदेश, मंच सज्जा के अध्ययन तथा नाटकों के प्रस्तुतीकरण सहित थिएटर की कला में प्रशिक्षण प्रदान करने वाले संस्थानों की स्थापना को प्रोत्साहन देना, vi) संदर्भ पुस्तकों जैसे चित्रमय शब्दकोश या तकनीकी पदावली की हस्तपुस्तिका सहित भारतीय संगीत, नृत्य और नाटक पर साहित्य प्रकाशित करना, vii) गैर पेशेवर नाटक कार्यकलाप, बाल थिएटर, ओपन एयर थिएटर और ग्रामीण थिएटर के विभिन्न रूपों के विकास को प्रोत्साहन देना, viii) देश के विभिन्न क्षेत्रों में लोक संगीत, लोक नृत्य और लोक नाटक को पुनःजीवित और संरक्षित करना तथा सामुदायिक संगीत, मार्शल संगीत और अन्य प्रकार के संगीत के विकास को बढ़ावा देना, ix) अखिल भारतीय आधार पर संगीत, नृत्य और नाटक उत्सवों, गोष्ठियों, सम्मेलनों को प्रायोजित करना तथा ऐसे क्षेत्रीय उत्सवों को बढ़ावा देना, x) संगीत, नृत्य और नाटक के क्षेत्रों में असाधारण उपलब्धि के लिए अलग अलग कलाकारों को पुरस्कार और सम्मान प्रदान करना और मान्यता देना, xi) कथित विषयों में शिक्षण के अनुसार आयोजित करने के उद्देश्य से संगीत, नृत्य और नाटक में शिक्षा के उचित और पर्याप्त मानकों का अनुरक्षण करने के उपयुक्त कदम उठाना, xii) देश और साथ ही अन्य देशों के विभिन्न क्षेत्रों के संगीत, नृत्य और नाटक के क्षेत्र में सांस्कृतिक संविदाओं को पोषण देना।

अपने उद्देश्यों को आगे बढ़ाने के लिए अकादमी निम्नलिखित योजना स्कीमों का प्रचालन करती है, जो देश की प्रदर्शन कला विरासत के परिरक्षण और प्रोत्साहन से संबंधित है : i) सर्वेक्षण, अनुसंधान, प्रलेखन और प्रचार तथा प्रकाशन ii) राष्ट्रीय संग्रहालय, पुस्तकालय और पुरातत्व iii) कथक केन्द्र, नई दिल्ली, कुटियट्टम केन्द्र, केरल, छाउ केन्द्र, बारीपाडा/जमशेदपुर, जवाहरलाल नेहरू मणिपुर नृत्य अकादमी, इम्फाल, सत्रीय केन्द्र, गुवाहाटी और पूर्वोत्तर केन्द्र, शिलॉग में भारत के विशेष क्षेत्रों/रूपों के लिए राष्ट्रीय संस्थान और अकादमी के केन्द्र, iv) प्रशिक्षण और निष्पादन समर्थन नामतः परंपरागत,

लोक कला और जनजातीय प्रदर्शन कला का प्रशिक्षण और परिरक्षण, युवा कलाकारों का प्रायोजन और संवर्धन, युवा थिएटर कर्मियों को सहायता, कठपुतली का संवर्धन और परिरक्षण, संगीत, नृत्य थिएटर के समकालीन तथा प्रायोगिक कार्यों को सहायता और समर्थन, बाल थिएटर को समर्थन, निष्पादनकारी के अभिज्ञात क्षेत्रों में प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम, थिएटर कलाओं में डिप्लोमा, मानवता की अमूर्त विरासत के परिरक्षण और संवर्धन को सहायता, v) अनुदान, जैसे स्वैच्छिक सांस्कृतिक संस्थानों को अनुदान, व्यक्तियों को परियोजना अनुदान, निष्पादन कलाओं में शैक्षिक अनुसंधान के लिए अनुदान और प्रकाशन अनुदान, vi) महोत्सव, कार्यशाला और राष्ट्रीय प्रदर्शनी, vii) पुरस्कार, सम्मान और इनाम, viii) सांस्कृतिक आदान प्रदान कार्यक्रम, साथ ही अंतर–राज्य सांस्कृतिक आदान प्रदान कार्यक्रम, भारत–एशिया सांस्कृतिक आदान–प्रदान कार्यक्रम, भारत–विदेशी सांस्कृतिक आदान–प्रदान कार्यक्रम और द्विवार्षिक अंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक महोत्सव तथा, ix) कलाकारों के कल्याण उपाय।

संगीत नाटक अकादमी का प्रबंधन कार्यकारी मंडल की सहायता से महापरिषद द्वारा किया जाता है, जो अकादमी के निर्देशों का पालन और कार्यों का नियंत्रण करती है। अकादमी के अध्यक्ष की नियुक्ति भारत के राष्ट्रपति द्वारा पांच वर्ष की अवधि के लिए की जाती है पिछली महा परिषद का कार्यकाल 27 मई, 2009 को समाप्त हुआ और नई महा परिषद का गठन पाँच वर्ष के लिए 8 जुलाई, 2009 को किया गया था।

वर्ष के दौरान अकादमी ने 15 जुलाई, 2009 को जोधपुर में क्षेत्रीय केन्द्र (पश्चिम) का उद्घाटन किया। उल्लेखनीय है कि पूर्वोत्तर क्षेत्र के शिलॉग में 2008 में स्थापित यह पहला क्षेत्रीय केन्द्र था।

अप्रैल, 2009 से दिसम्बर, 2009 के बीच अकादमी द्वारा की गई प्रमुख गतिविधियां इस प्रकार हैं :

प्रकाशन

अकादमी का प्रकाशन कार्यक्रम 1953 में इसके आरंभ के बाद शीघ्र ही किया गया और इसमें निष्पादनकारी कलाओं पर मोनोग्राफ और संगीत नाटक नामक तिमाही पत्रिका का प्रकाशन शामिल है। प्रतिवेदनाधीन अवधि के दौरान अकादमी के निम्नलिखित प्रकाशन प्रस्तुत किए गए : क) 'हिन्दुस्तानी म्यूज़िक एण्ड एस्थेटिक्स टूडे' प्रो. एस. के. सक्सेना, ख) हिमाचल के प्राचीनतम संगीत वाद्य (हिन्दी) : नंद लाल गर्ग, ग) एवेन्यूस टू ब्यूटी : एस. के. सक्सेना, घ) इंडियन सिनेमा इन रेट्रोस्पेक्ट : आर एम राय और ङ) हिन्दुस्तानी संगीत : सम प्रर्सपेक्टिव, सम परफॉर्मर्स : एस. के. सक्सेना। इस अवधि में अकादमी की पत्रिका संगीत नाटक के तीन अंकों का भी प्रकाशन किया गया।

वर्ष के दौरान विद्वानों को अनुसंधान अनुदान के अतिरिक्त, प्रदर्शन कलाओं की पुस्तकों के प्रकाशन के लिए 7 पत्रिकाओं और 2 पुस्तकों को वित्तीय सहायता प्रदान की गई।

प्रलेखन और प्रचार–प्रसार

अप्रैल 2009 से दिसम्बर, 2009 के दौरान 221 घंटे तथा 54 मिनट की वीडियो रिकॉर्डिंग, 76 घंटे और 2 मिनट की ऑडियो रिकॉर्डिंग, 5933 श्वेत एवं श्याम तस्वीरें तथा रंगीन तस्वीरें अकादमी के अभिलेखागार में शामिल की गईं। अभिलेखागार में कुल 2,26,934 फोटो (श्वेत एवं श्याम तथा रंगीन तस्वीरें) और 40,443 कलर स्लाइड, 7325 घंटे की वीडियो रिकॉर्डिंग, 7802 घंटे की ऑडियो रिकॉर्डिंग और 16 एमएम की अनुमानतः 1.44 लाख फीट फिल्म सामग्री है।

पुस्तकालय, श्रव्य–दृश्य पुस्तकालय और फोटो लाइब्रेरी

अकादमी का पुस्तकालय मुख्यतः प्रदर्शन कला के छात्रों और अनुसंधानकर्ताओं को लाभान्वित करता है। इसमें गत वर्षों की प्रदर्शन कलाओं की विशिष्ट पुस्तकों का संग्रह है जिनमें से बहुत सी दुर्लभ पुस्तकें हैं और जिनकी प्रतियाँ उपलब्ध नहीं हैं। पुस्तकालय में लगभग 150 भारतीय और विदेशी पत्रिकाएं आती हैं। अकादमी के पुस्तकालय में इस समय 24283 पुस्तकें उपलब्ध हैं जबकि 1035 पुस्तकें उपहार स्वरूप प्राप्त हुई हैं। ऑडियो विजुअल लाइब्रेरी में बहुत सी कैसेट डिस्क और ऑडियो/वीडियो सी डी है। ऑडियो विजुअल के संग्रह में अब 9827 डिस्क, 761 पूर्व रिकॉर्ड कैसेट, जो अकादमी के पुरातत्व संग्रह से हैं, नृत्य, नाटक, संगीत के 92 वीडियो कैसेट, वाणिज्यिक ऑडियो कैसेट 1602, भारतीय संगीत के उपहार में दिए गए ऑडियो कैसेट 154 और 1088 सीडी, 08 उपहार में दी गई सीडी, 51 वीडियो कॉम्पेक्ट डिस्क, 6 उपहार में दी गई वीसीडी, भरतनाट्यम नृत्य की 2 डीवीडी हैं।

तस्वीर पुस्तकालय में लगभग 2,30,000 तस्वीरें हैं और इनको डिजिटल रूप में बदलने का कार्य प्रगति पर है।

संग्रहालय

वर्ष 1953 में अकादमी की स्थापना के समय से ही अकादेमी मंचीय कला से संबंधित कलात्मक वस्तुएं हासिल करती रही है। विदेश से उपहार स्वरूप प्राप्त वाद्यों के अतिरिक्त अब इसमें संगीत उपकरणों, मुखौटों कठपुतलियों, मुकुट, पोशाकें तथा मंच कला से संबंधित अन्य कलावस्तुओं सहित 2000 से ज्यादा कलात्मक वस्तुएं हैं। इस वर्ष राजस्थान के सुदूर क्षेत्रों से 25 दुर्लभ वाद्यों को संग्रहित किया गया और आंध्र प्रदेश के सात मानव आकार के चमड़े से बने कठपुतले (टोलू बोमालाटा) इसमें जोड़े गए। अकादमी द्वारा जवाहर कला केन्द्र, जयपुर में 200

कठपुतलियों और संगीत वाद्यों की प्रदर्शनी आयोजित की गई, जिसे 15000 से अधिक लोगों ने देखा। केन्द्र द्वारा प्रदर्शन कलाओं के राष्ट्रीय संग्रहालय की परियोजना के तहत कोलकाता और मेरठ में संगीत वाद्यों के निर्माण हेतु प्रशिक्षण का प्रचालन किया जा रहा है।

अकादमी में 16 नवम्बर से 11 दिसम्बर, 2009 के बीच 4 सप्ताह लंबे अंतरराष्ट्रीय पाठ्यक्रम के दो सत्र आयोजित किए गए जिसका नाम था ''सोइमा 2009'' ''सेफगार्डिंग साउंड एण्ड इमेज कलेक्शन''।

उत्सव / समारोह

तबला महोत्सव, कोल्हापुर, 14 – 18 अप्रैल, 2009

कोल्हापुर में गुनीदास फाउंडेशन के सहयोग से तबला संगीत की विभिन्न परंपराओं पर केन्द्रित एक प्रमुख तबला महोत्सव को 14–18 अप्रैल, 2009 के बीच आयोजित किया गया था। इस उत्सव में शाम के प्रदर्शन और सुबह के सत्रों में व्याख्यान प्रदर्शन किए गए जो तबला संगीत की विभिन्न परंपराओं, शैलियों और घरानों के विशेष गुणों पर केन्द्रित थे। यह उत्सव पंडित किशन महाराज, एसएनए अध्येता और पद्म विभूषण को समर्पित था। मुम्बई, कोलकाता, दिल्ली, पुणे, वाराणसी, भोपाल, पटियाला, खैरागढ़ के कलाकारों और विद्वानों ने इसमें हिस्सा लिया।

नाट्य संतति, मुम्बई
27–29 अप्रैल, 2009

अपने प्रकार का एक अनोखा आयोजन ''नाट्य संतति'' में 27 – 29 अप्रैल, 2009 के बीच भारत की तीन प्रमुख पारंपरिक थिएटर नृत्य शैलियों की झलक प्रायोगिक थिएटर में नेशनल सेंटर फॉर परफॉर्मिंग आर्ट्स, मुम्बई द्वारा प्रस्तुत की गई। यह तीन दिवसीय कार्यक्रम एसएनए के तीन नए केन्द्रों द्वारा प्रस्तुत किया गया, कुटियट्टम केन्द्र, जो तिरुवनंतपुरम में स्थापित किया गया, ने कुटियट्टम प्रस्तुत किया (सबसे अधिक प्राचीन संस्कृत थिएटर परंपरा), सत्रीय केन्द्र, गुवाहाटी ने सत्रीय नृत्य और छाउ केन्द्र, जमेशदपुर ने पूर्वी भारत का छाउ नृत्य प्रस्तुत किया। यह सर्वाधिक दुर्लभ और अनोखा पक्ष था कि प्रदर्शन मंच की प्रत्येक परंपरा को पारंपरिक प्रदर्शन स्थलों और प्रत्येक परंपरा के तत्वों के आधार पर विशिष्ट रूप से डिजाइन किया गया था।

प्रदर्शन और मुद्रित शब्द
28 अप्रैल – 6 मई, 2009

यह भारत या दुनिया के किसी भी हिस्से में होने वाला संभव तथा पहला अवसर था जब संगीत, नृत्य और नाटक के प्रकाशनों पर एक विशिष्ट प्रदर्शनी आयोजित की गई थी। भारतीय प्रकाशनों के संघ से सहयोग से आयोजित इस प्रदर्शनी में प्रमुख प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित पुस्तकों की बिक्री भी की जानी थी। मूलतः यह आयोजन 28 अप्रैल से 3 मई, 2009 के बीच किया जाना था, किन्तु बाद में जनता की मांग पर इसे तीन दिन आगे बढ़ा दिया गया था। यह आयोजन युवाओं और बड़ी उम्र के लोगों के बीच अत्यंत सफल रहा जिसमें नर्तकों, संगीतकारों, थिएटर कर्मियों, कवियों आदि द्वारा तत्काल और प्रायोगिक प्रस्तुतीकरण किए गए। यह आयोजन अकादमी के अपने परिसर – रवीन्द्र भवन, नई दिल्ली में मेघदूत थिएटर कॉम्प्लेक्स के जीर्णोद्धार किए गए प्रदर्शनी हॉल में किया गया था।

स्वरांजलि, दिल्ली
4–6 मई, 2009

नई दिल्ली के सिरी फोर्ट ऑडिटोरियम में 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की 150वीं वर्षगांठ और भारत की आजादी की 60वीं वर्षगांठ के अवसर पर 4 से 6 मई, 2009 के दौरान वाद्य संगीत और समूह संगीत का एक उत्सव आयोजित किया गया। देश के प्रख्यात वाद्य संगीत और सामूहिक संगीत समूहों ने इसमें हिस्सा लिया जैसे मद्रास यूथ कॉयर, चेन्नई; कोलकाता कॉयर, कोलकाता; गंधर्व कॉयर, दिल्ली; ऑल इंडिया वाद्य वृंद, दिल्ली और चेन्नई तथा पंडित विश्व मोहन भट्ट, जयपुर द्वारा वाद्य संगीत।

नाट्यांजलि, इलाहाबाद
15–19 मई, 2009

इलाहाबाद में उत्तर सांस्कृतिक क्षेत्र, इलाहाबाद के सहयोग से 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की 150वीं वर्षगांठ और भारत की आजादी की 60वीं वर्षगांठ के अवसर पर 15–19 मई, 2009 के बीच चार दिवसीय थिएटर उत्सव नाट्यांजलि का आयोजन किया गया। देश के विभिन्न राज्यों से चार निर्देशकों ने अपने कार्य प्रस्तुत किए।

कोरियोग्राफी पर कार्यशाला और गोष्ठी
27 मई – 5 जून, 2009

अकादमी में पदातिक, कोलकाता के सहयोग से 27 मई से 5 जून, 2009 के बीच कोलकाता में कोरियोग्राफी पर एक कार्यशाला और गोष्ठी का आयोजन किया गया था।

नाट्यांजलि थिएटर उत्सव, कोलकाता
9–13 जून, 2009

पूर्वी क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र, कोलकाता के सहयोग से 9–13 जून, 2009 के बीच कोलकाता में पांच दिवसीय थिएटर उत्सव–नाट्यांजलि 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की 150वीं वर्षगांठ और भारत की आजादी की 60वीं वर्षगांठ के अवसर पर आयोजित किया गया था। देश के विभिन्न राज्यों से चार निर्देशकों ने अपने कार्य प्रस्तुत किए।

संगीत संगम, बैंगलुरु
9 – 13 जून, 2009

अकादमी ऑफ म्यूजिक, बैंगलुरु के सक्रिय समर्थन से 9–13 जून, 2009 के बीच वरिष्ठ संगीतकारों का एक

उत्सव आयोजित किया गया। इस उत्सव में हिन्दुस्तानी संगीत की अलग अलग धाराओं का समागम देश के प्रख्यात संगीतकारों द्वारा ध्रुपद, ख्याल और वाद्य संगीत द्वारा सितार, तबला, वायलिन और पखावज पर प्रस्तुत किया गया। इस उत्सव में भाग लेने वाले कुछ संगीतकारों ने अपने–अपने क्षेत्रों में व्यापक प्रतिष्ठा हासिल की है। इसके अलावा लय लहरी के रूप में उत्सव में दक्षिण भारत का समृद्ध वाद्य संगीत – एक आघात वाद्य और पंचवीणा – शामिल किया गया, जिसमें पांच वीणाओं का संगम है, प्रस्तुत किया गया। इस उत्सव का बैंगलोर के रसिकजनों ने स्वागत किया।

नाट्यांजलि थिएटर उत्सव, दीमापुर
6–9 जुलाई, 2009

1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की 150वीं वर्षगांठ और भारत की आजादी की 60वीं वर्षगांठ के अवसर पर अकादमी ने श्रृंखला का तीसरा नाट्यांजलि थिएटर उत्सव दीमापुर में एनईजेडसीसी दीमापुर के सहयोग से आयोजित किया। चार दिवसीय इस उत्सव में नागालैंड, असम, मणिपुर, मिजोरम, मेघालय और त्रिपुरा के कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए।

संगीत नाटक अकादमी अध्येतावृत्तियां और पुरस्कार 2008 प्रस्तुतीकरण समारोह और उत्सव
14–23 जुलाई, 2009

2008 के लिए अध्येतावृत्तियां और अकादमी के पुरस्कार विज्ञान भवन, नई दिल्ली में 14 जुलाई, 2009 को आयोजित कार्यक्रम में प्रदान किए गए। माननीय भारत के राष्ट्रपति ने प्रदर्शनकलाओं के क्षेत्र में चार जाने माने व्यक्तित्वों को अध्येतावृत्ति से सम्मानित किया, जो हैं श्रीमती सितारा देवी, श्री खालिद चौधरी, श्री आर सी मेहता और श्री भूपेन हजारिका तथा संगीत, नृत्य थिएटर के 34 व्यक्तियों को सम्मानित किया गया। इस कार्यक्रम के बाद 15–23 जुलाई, 2009 के बीच अध्येताओं और पुरस्कार विजेताओं द्वारा 9 दिवसीय संगीत, नृत्य और नाटक उत्सव जारी रहा। यह उल्लेखनीय है कि यह उत्सव एनसीआर के विभिन्न स्थानों अर्थात सीसीआरटी, द्वारका, अयप्पा मंदिर, आर के पुरम, एपि सेंटर, गुड़गांव और कृभको ऑडिटोरियम, नोएडा के अलावा मेघदूत थिएटर कॉम्प्लेक्स तथा शहर के बीच स्थित कमानी ऑडिटोरियम में आयोजित किया गया था। इन सभी स्थानों पर बड़ी संख्या में दर्शक आए।

नौटंकी – उत्तर प्रदेश की एक प्रमुख परंपरा, लखनऊ का प्रलेखन और उत्सव
24–28 जुलाई, 2009

उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी, उ. प्र. के सहयोग से 24–28 जुलाई, 2009 के बीच नौटंकी पर पांच दिवसीय कार्यक्रम अकादमी द्वारा प्रस्तुत किया गया था। उ. प्र. के विभिन्न स्थानों से आए 8 नौटंकी समूहों ने कार्यक्रम प्रस्तुत किए। सुबह के सत्रों में प्रदर्शन और चर्चा तथा शाम के दौरान निष्पादन किए गए थे। अकादमी के संग्रह हेतु कार्यक्रम का प्रलेखन किया गया था। राज्य और देश के अन्य हिस्सों के विशेषज्ञों को नौटंकी के आकलन और सिम्हावलोकन के लिए आमंत्रित किया गया था, ताकि गुरूओं और समूहों के लिए समर्थन कार्यक्रम आयोजित किए जा सके, जो नौटंकी की परंपरा में गंभीरतापूर्वक शामिल हैं। उत्सव के दौरान नौटंकी पर लगभग 20 घण्टों का प्रलेखन किया गया है।

उस्ताद बिसमिल्लाह खां युवा पुरस्कार 2008
10–16 सितम्बर, 2009

श्री रामनिवास मिर्धा, अध्यक्ष, संगीत नाटक अकादमी ने वर्ष 2008 के लिए उस्ताद बिसमिल्लाह खान युवा पुरस्कार उन 33 युवा कलाकारों को प्रदान किए जिन्होंने देश की प्रदर्शन कलाओं के अपने–अपने क्षेत्र में एक स्थान बनाया है। यह कार्यक्रम गुरूवार, 10 सितम्बर, 2009 को मेघदूत थिएटर, रविन्द्र भवन, नई दिल्ली में एक विशेष आयोजन में किया गया। इस कार्यक्रम के बाद 10–16 सितम्बर, 2009 के बीच मेघदूत थिएटर, नई दिल्ली में कुछ पुरस्कार विजेताओं द्वारा संगीत, नृत्य और थिएटर का एक सप्ताह लंबा आयोजन किया गया।

कजाखिस्तान में भारत उत्सव
16–20 नवम्बर, 2009

संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की ओर से संगीत नाटक अकादमी ने संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार, कजाखिस्तान में भारतीय दूतावास और कजाखिस्तान गणतंत्र के संस्कृति और सूचना मंत्रालय के सहयोग से नवम्बर 2009 में कजाखिस्तान का भारत महोत्सव आयोजित किया।

सात भारतीय प्रमुख नृत्य शैलियों, जो हैं भरतनाट्यम, कथक, कथकली, मणिपुरी, ओडिसी, मोहिनीअट्टम और छाउ के 60 कलाकारों को लेकर 16 नवम्बर को अस्टाना के कॉन्ग्रेस हॉल में और 19 नवम्बर, 2009 को फिलारमोनिया हॉल, अल्माटी में एक कोरियोग्राफिक रचना ''लयंगिकम – कनफ्लूएंस ऑफ सेवेन इंडियन मेजर डांस स्टाइल'' प्रस्तुत की गई।

कोरियोग्राफिक कार्य के भव्य प्रदर्शन के अलावा 17 नवम्बर को अस्टाना के विभिन्न स्थानों पर अलग अलग समूहों द्वारा प्रदर्शन/व्याख्यान–प्रदर्शन और अल्माटी में 20 नवम्बर, 2009 को आयोजित किए गए।

73 व्यक्तियों के प्रतिनिधि जिसमें कलाकार अकादेमी संस्कृत मंत्रालय के अधिकारी और तकनीकी कर्मचारी शामिल थे, को उत्सव के लिए तजाखिस्तान भेजा गया।

ध्रुपद महोत्सव, वृंदावन
27 – 29 नवम्बर, 2009

वृंदावन में बृज कला परिषद, वृंदावन के सहयोग से 27–29 नवम्बर, 2009 के बीच वृंदावन में ध्रुपद संगीत का एक उत्सव आयोजित किया गया। इस तीन दिवसीय उत्सव में कंठ वाद्य–पखावज और वीणा सहित ध्रुपद संगीत के विख्यात संगीतकारों ने भाग लिया। इस उत्सव की प्रशंसा की गई और वृंदावन के रसिकों ने इसका स्वागत किया।

मेघदूत कॉम्प्लेक्स में लोक पारंपरिक प्रदर्शन

श्रीमती कृष्णा माथुर और उनके समूह द्वारा उत्तर प्रदेश की नौटंकी का प्रदर्शन 18 नवम्बर, 2009 को किया गया।

श्री महेशदास और समूह द्वारा 30 दिसम्बर 2009 को धुलिया भवन, असम का प्रदर्शन किया गया।

अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति/अन्य पिछड़ा वर्ग कार्मिकों हेतु कल्याणकारी कदम

अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति/अन्य पिछड़ा वर्ग के कल्याणार्थ उठाए गए कदमों के तहत इन वर्गों के कार्मिकों को अकादमी के दिल्ली और दिल्ली के बाहर आयोजित होने वाले कार्यक्रमों/उत्सवों आदि में नियुक्त किया। अकादमी में पदोन्नति के आधार पर भरे जाने वाले पदों में भी आरक्षण का पूरा ध्यान रखा गया है।

i) कथक केन्द्र, दिल्ली

संगीत नाटक अकादेमी की एक अंगीभूत इकाई कथक केन्द्र देश में नृत्य सिखाने वाली अग्रणी संस्थाओं में से एक है। इसकी स्थापना 1964 में हुई थी। यह कथक नृत्य के साथ–साथ अन्य संबद्ध विषयों जैसे स्वर–संगीत गायन और पखावज़ में पाठ्यक्रमों की पेशकश करता है। प्राथमिक पाठ्यक्रम हैं : 7–16 आयु वर्ग के लिए नृत्य में पांच साल का बुनियादी पाठ्यक्रम (अंशकालिक) और एक तीन साल का डिप्लोमा (पास कोर्स) 13–22 आयु वर्ग के लिए (अंशकालिक)। नृत्य में उच्च पूर्णकालिक पाठ्यक्रम डिप्लोमा (ऑनर्स) पाठ्यक्रम 3 साल का है और यह 19–26 आयु वर्ग के लिए है। हिन्दुस्तानी स्वर संगीत और पखावज़ में तीन साल के विशेष पाठ्यक्रम हैं। नृत्य शिक्षकों और केन्द्र के छात्र–छात्राओं के लिए एक साल तक का पुनश्चर्या कोर्स है। यह डिप्लोमा (ऑनर्स) या पोस्ट डिप्लोमा कर चुके उन लोगों के लिए है, जो कथक नृत्य प्रशिक्षण को अपना कैरियर बनाना चाहते हैं।

प्रतिवेदनाधीन अवधि में कथक केन्द्र द्वारा निम्नलिखित गतिविधियों का आयोजन किया गया।

17–23 सितम्बर, 2009

भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद द्वारा प्रायोजित ''बैंकॉक अंतरराष्ट्रीय संगीत और नृत्य उत्सव'' के अवसर पर कथक केन्द्र ने 17 सितम्बर, 2009 को बैंकॉक में 21 सितम्बर, 2009 को लुइस में और 23 सितम्बर, 2009 को सिंगापुर में श्रीमती गीतांजलि लाल, रेपर्टरी प्रमुख के पर्यवेक्षण के रेपर्टरी के कलाकारों द्वारा ''पुनर्नवा'' प्रस्तुत किया।

21 अक्तूबर से 2 नवम्बर, 2009

कथक केन्द्र के रेपर्टरी कलाकारों ने शिकागो के अंतरराष्ट्रीय नृत्य उत्सव के भाग के रूप में और पंडित सुंदर लाल गंगानी द्वारा कथक के लिए 80 वर्ष के समर्पित कार्य हेतु अनिला सिन्हा फाउंडेशन, कथक नृत्य कला केन्द्र और सुंदर कला केन्द्र, लॉस एंजेल्स में प्रदर्शन किया। कोरियाग्राफी श्रीमती गीतांजलि लाल, रेपर्टरी प्रमुख ने की।

दीक्षांत समारोह 2008

जिन छात्रों ने अपना प्रशिक्षण पूरा कर लिया है और डिप्लोमा (ऑनर्स) और पोस्ट डिप्लोमा कोर्स पास कर चुके हैं उन्हें दीक्षांत समारोह में श्री सुनील कोठारी और श्रीमती सितारा देवी द्वारा प्रमाण–पत्र/डिप्लोमा प्रदान किया। यह समारोह 26 से 27 नवम्बर, 2009 को रवीन्द्र भवन के मेघदूत थियेटर, नई दिल्ली में हुआ। समारोह के उपरान्त केन्द्र के गुरूओं श्री किशन मोहन मिश्रा और राजेन्द्र कुमार गंगानी के समूह नृत्य कलाओं की प्रस्तुति की गई।

ii) जवाहर लाल नेहरू मणिपुर डांस अकादेमी, इम्फाल

जवाहर लाल नेहरू मणिपुर डांस अकादेमी, इम्फाल संगीत नाटक अकादेमी, नई दिल्ली की अंगीभूत इकाई है। यह मणिपुरी नृत्य और संगीत व थांगटा जैसे अन्य संबद्ध विषय सिखाने वाली प्रमुख संस्था है। इसकी स्थापना 1954 में हुई थी। यह उपरोक्त विषयों में व्यापक पाठ्यक्रमों की पेशकश करता है। इस संस्थान के कर्मचारियों में जाने–माने लोग शिक्षक हैं और एक प्रोडक्शन यूनिट है जिसे कई नृत्य–नाटकों के मंचन का अनुभव है। अकादमी का प्रबंधन संगीत नाटक अकादमी का कार्यकारी बोर्ड करता है जिसे स्थानीय सलाहकार समिति सहायता देती है (मणिपुर के राज्यपाल इसकी अध्यक्षता करते हैं)। यह अकादमी के स्तर को कायम रखने तथा इसके कार्यक्रमों और योजनाओं को तैयार करने का कार्य करता है। अप्रैल 09–दिसम्बर, 09 के दौरान हुए कार्यक्रमों की संक्षिप्त रिपोर्ट इस प्रकार है :

55वां संस्थापना दिवस समारोह

अकादमी का संस्थापना दिवस 1 अप्रैल, 2009 को अकादेमी ऑडिटोरियम में मनाया गया। मणिपुर के माननीय राज्यपाल श्री गुरूवचन जगत और जेएनएमडीए के अध्यक्ष की उपस्थिति में फिल्म निर्माता श्री ए श्याम शर्मा ने समारोह की शोभा बढ़ाई।

जेएनएमडीए की नई प्रस्तुति

अकादमी के पुंग और ढोल चोलम के दल ने 22 अगस्त, 2009 को इम्फाल से रवाना होकर मॉस्को में 3 सितम्बर, 2009 को भारतीय सांस्कृतिक प्रदर्शन किया। इसका आयोजन आईसीसीआर, नई दिल्ली द्वारा किया गया था।

''मेघानन्द तूबा'' पर अकादमी के रंगमंडल ने 14 सितम्बर, 2009 को कार्यक्रम प्रस्तुत किया। श्री रत्न थियाम, उपाध्यक्ष, एसएनए ने उद्घाटन कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

जेएनएमडीए के वसंत रास और पुंग चोलम कलाकारों के दल ने 24 अक्तूबर, 2009 से 3 नवम्बर, 2009 तक कजाखिस्तान के भारती संस्कृति उत्सव में हिस्सा लिया।

29 अक्तूबर से 2 नवम्बर, 2009 तक लाइ–हारा ओबा विभाग के छात्रों और गुरूओं सहित 46 सदस्यों मौरे के पास कुवाठा में एक अध्ययन दल ने प्रदर्शन किया।

अकादेमी का दीक्षांत समारोह 2009, 28 दिसम्बर, 2009 को जेएनएमडीए ऑडिटोरिम में आयोजित किया गया। माननीय शिक्षा मंत्री श्री एल जयंत कुमार सिंह ने दीक्षांत भाषण दिया और विजेताओं को 45 स्वर्ण पदक तथा प्रमाणपत्र बांटें। छात्रों ने लाइ–हारा ओबा, पुंगचोलम और वसंतरास प्रस्तुत किया। इस अवसर पर एक स्मारक जारी किया गया।

कचर, असम और त्रिपुरा में 28 दिसम्बर, 2009 से 40 सदस्यों के दल ने महारास प्रस्तुत किया।

iii) कुटियाट्टम केन्द्र, तिरुवनन्तपुरम

केन्द्र द्वारा कुटियट्टम के नांगिया कुठ, कूठु, मिझाविल और थयम्बक आदि कार्यक्रम हर माह आयोजित किए जाते हैं। केरल के विभिन्न क्षेत्रों में दूरस्थ कार्यक्रम भी आयोजित किए गए।

कुटियट्टम पोशाक और आभूषण बनाने में प्रशिक्षण के अतिरिक्त अलग–अलग गुरूकुलों में प्रशिक्षण कार्यक्रम को नियमित रूप से समर्थन दिया जाता था।

iv) सत्रिय केन्द्र, गुवाहाटी

सत्रिय नृत्य, संगीत और रंगमंच परम्परा का केन्द्र

सत्रीय पर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित करने के अलावा सत्रीय केन्द्र ने मुम्बई में लास्य नृत्य उत्सव, सत्रीय संगीत परंपरा पर गोष्ठी और अंकीय भावना तथा सत्रीय नृत्य की वेशभूशा पर कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

3.4

सांस्कृतिक स्त्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र

परिचय

साठ के दशक के दौरान विश्व के विभिन्न भागों में शिक्षा पद्धति में क्रांतिकारी परिवर्तन देखे गए। वे देश जिन्होंने वर्षों के औपनिवेशिक शासन के पश्चात् हाल ही में आजादी प्राप्त की थी, उन्होंने अपनी जड़ों को पहचानना शुरू किया और विकास के सभी क्षेत्रों में सांस्कृतिक मूल्यों का समावेश करने हेतु कार्यक्रम बनाने की आवश्यकता को महसूस किया। चूंकि शिक्षा मानव आत्मा के विकास का आधारभूत रूप है, देश की आजादी, अपने साथ नई उभरती सामाजिक व्यवस्था को स्थापित करते हुए शिक्षा में भारतीय जीवन शैली पर आधारित विचार–धाराओं और दार्शनिक संकल्पनाओं को बढ़ावा देने की आवश्यकता को ले कर आई।

प्रबल रूप से यह अनुभव किया गया कि एक ऐसा संगठन होना चाहिए जो पाठ्यक्रम शिक्षण में सांस्कृतिक अवययों के विचार को पूर्ण कर सके, जो सार रूप में, सांस्कृतिक शिक्षा के प्रति नवीन दृष्टिकोण हेतु शैक्षणिक कार्यप्रणालियों पर प्रकाश डालते हुए एवं सांस्कृतिक आधार का उपयोग करते हुए शिक्षा के प्रति समेकित दृष्टिकोण को प्राप्त करने का उद्देश्य लिए हो।

यह अभिकल्पित किया गया कि प्रशिक्षण के लिए एक अत्यंत संवेदनशील दृष्टिकोण अपनाया जाए, जिसमें शैक्षणिक स्कूली विषयों को ही नहीं अपितु सभी स्तरों पर इस देश में विद्यमान साहित्यिक, दृश्यात्मक तथा निष्पादित रचनात्मक अभिव्यक्तियों को शामिल किया जाए – जिसमें लोकप्रिय या परंपरागत अभिव्यक्तियों से लेकर उच्च परिष्कृत कला रूप हों जिन्हें भारत की जनसंख्या का विशाल भाग बहुलता से प्रस्तुत करता हो चाहे शहरी, ग्रामीण या आदिवासी और फिर इस ज्ञान को शिक्षा प्रणाली में सम्मिलित कर दिया जाए।

वर्ष 1979 में शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करने हेतु सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र ;सीसीआरटीद्ध को एक स्वायत्त संगठन के रूप में स्थापित किया गया। इसका मुख्य उद्देश्य शिक्षा में सांस्कृतिक अवययों को प्रदान करना था। केन्द्र सभी स्तरों के प्रशासकों, शिक्षक प्रशिक्षकों, सेवारत अध्यापकों तथा छात्रों हेतु विविध प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करता है। केन्द्र का उद्देश्य प्रतिभागियों को सभी रचनात्मक अभिव्यक्तियों को प्रभावित करने वाले सौन्दर्यपरक तथा सांस्कृतिक मानदण्डों से सुग्राही बनाना है।

वर्ष 1979 में अपने प्रारंभ से ही केन्द्र ने तेजी से प्रगति की है और संगठन का एक नेटवर्क तैयार किया गया है ताकि प्रादेशिक संस्कृति और मुख्य रूप से भारतीय संस्कृति में उनके योगदान पर बल देते हुए शिक्षा प्रणाली को पुनर्जीवन प्रदान किया जा सके। केन्द्र का मुख्यालय नई दिल्ली में है और तीन क्षेत्रीय केन्द्र पश्चिम में उदयपुर, दक्षिण में हैदराबाद तथा उत्तर पूर्व में गुवाहाटी में हैं ताकि भारतीय कला तथा संस्कृति के व्यापक प्रचार–प्रसार को शिक्षा के माध्यम से सुसाध्य बनाया जा सके।

उद्देश्य

इस केन्द्र का मुख्य उद्देश्य भारत की क्षेत्रीय संस्कृतियों की भूमिका और विभिन्नता में एकता तथा अपनी प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण और परिरक्षण, के विषय में विद्यार्थियों में जागरूकता पैदा करते हुए भारतीय शिक्षा पद्धति का पुनरुत्थान करना एवं तत्पश्चात् इस ज्ञान को स्कूली शिक्षा में अन्तर्निहित करना है। इन उद्देश्यों की पूर्ति करने के उद्देश्य से सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र की गतिविधियाँ निम्नलिखित श्रेणियों में आयोजित की जाती हैं:–

(i) प्रशिक्षण
अनुस्थापन प्रशिक्षण कार्यक्रम
कार्यशालाएं
पुनश्चर्या प्रशिक्षण कार्यक्रम

(ii) संगोष्ठियाँ

(iii) व्याख्यान, व्याख्यान–प्रदर्शन श्रृंखला

(iv) विस्तार एवं सामुदायिक पुनर्निवेशन कार्यक्रम

(v) संसाधन संग्रहण

(vi) प्रकाशन

(vii) सांस्कृतिक क्लब योजना

(viii) सांस्कृतिक प्रतिभा खोज छात्रवृत्ति योजना का कार्यान्वयन

प्रशिक्षण

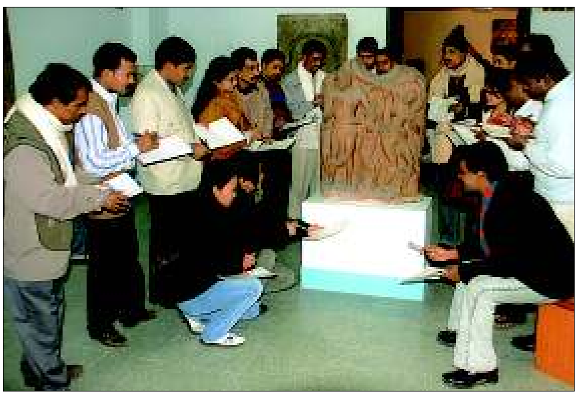

अनुस्थापन प्रशिक्षण कार्यक्रम

- अनुस्थापन प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का उद्देश्य पूरे भारतवर्ष के सेवारत शिक्षकों को भारतीय संस्कृति के विकास के मूलभूत सिद्धांतों से अवगत कराना है।

- इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भारतीय कला और संस्कृति के सैद्धान्तिक पक्ष को केन्द्र में रखते हुए प्रख्यात कलाकारों एवं विद्वानों द्वारा व्याख्यान दिए जाते हैं। प्रशिक्षण कार्यक्रमों में व्यावहारिक कक्षाओं के आयोजन का उद्देश्य विद्वानों एवं हस्तकला विशेषज्ञों द्वारा कम कीमत की सामग्री का प्रयोग करते हुए शिल्प सिखाना, देश के विभिन्न भागों की क्षेत्रीय भाषाओं के गीत सिखाना, संप्रेषण वृद्धि के लिए मूक अभिनय पर कक्षाओं का आयोजन तथा कक्षा की पढ़ाई में सांस्कृतिक तत्व के सम्मिश्रण के लिए सह शिक्षा सामग्री उपलब्ध कराना और ऐतिहासिक तथा प्राकृतिक महत्व के स्थलों के भ्रमण का आयोजन करना है। रिपोर्ट की अवधि के दौरान सीसीआरटी द्वारा 12 अनुस्थापन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए जिसमें 1092 शिक्षक/शिक्षिकाओं को प्रशिक्षण दिया गया।

- शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं (जहां बी.एड. एवं एम.एड. के पाठ्यक्रम चलाए जाते हैं), एससीईआरटी एवं डाइट आदि के व्याख्याताओं हेतु अभिकल्पित अनुस्थापन प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रतिभागियों को भारतीय कला एवं संस्कृति के विभिन्न पक्षों की जानकारी तथा भावी शिक्षकों हेतु निर्धारित पाठ्यक्रम में शिक्षा एवं संस्कृति के सम्मिश्रण में कार्यप्रणालियां विकसित करने हेतु सहायता प्राप्त होती है।

- सीसीआरटी शिक्षक प्रशिक्षकों/जिला स्रोत व्यक्तियों हेतु 'पाठ्यक्रम शिक्षण में सांस्कृतिक तत्व' विषय पर आयोजित कार्यशाला द्वारा पूर्व प्रशिक्षित शिक्षकों को पाठ्यक्रम शिक्षण में सांस्कृतिक तत्व अन्तर्निहित कराने हेतु विशेष रूप से गहन प्रशिक्षण दिया जाता है। इस प्रकार की आयोजित 4 प्रशिक्षण कार्यशालाओं में 81 शिक्षक प्रशिक्षकों/जिला स्रोत व्यक्तियों ने भाग लिया। रिपोर्ट अवधि के दौरान शिक्षक प्रशिक्षकों द्वारा 22 विभिन्न राज्यों में 45 कार्यशालाएं आयोजित की गईं, जिनमें देश के विभिन्न भागों के 1750 शिक्षकों को प्रशिक्षण दिया गया।

- सीसीआरटी द्वारा प्राथमिक एवं माध्यमिक स्कूलों के शिक्षकों को नाट्यकला, पुतलीकला, संगीत और प्राकृतिक और सांस्कृतिक धरोहर एवं कला रूपों के संरक्षण का व्याख्यात्मक एवं व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया जाता है एवं उन्हें ऐसे कार्यक्रम विकसित करने के लिये प्रेरित किया जाता है जिनके द्वारा पाठ्यक्रम शिक्षण में इन कला रूपों का उपयोग लाभदायक हो। सीसीआरटी द्वारा ऐसी 22 कार्यशालाओं का आयोजन किया गया जिनमें 1864 शिक्षकों ने भाग लिया।

- केन्द्र ने उदयपुर, राजस्थान स्थित अलाभकारी संस्था 'धरोहर' की सहभागिता से डॉ. शैल चोयल, विश्व विख्यात चित्रकार के निर्देशन में दिनांक 2 से 4 सितम्बर, 2009 को तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया, जिसमें उदयपुर के सरकारी तथा निजी स्कूलों के शिक्षकों, बच्चों तथा उनके अभिभावकों ने भाग लिया।

- सीसीआरटी द्वारा पुनश्चर्या प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित किए जाते हैं। इन कार्यक्रमों में पूर्व प्रशिक्षित चुनिंदा शिक्षकों को अर्जित ज्ञान एवं अनुभवों

को सुदृढ़ करने एवं कार्यप्रणालियों के क्रियान्वयन पर चर्चा करने हेतु आमंत्रित किया जाता है। यह कार्यक्रम पूर्व में सीसीआरटी द्वारा प्रशिक्षित शिक्षकों से पुनर्निवेश प्राप्त करने के लिए तैयार किया गया है। रिपोर्ट अवधि के दौरान 03 पुनश्चर्या पाठ्यक्रम आयोजित किए गए जिसमें 193 शिक्षकों को प्रशिक्षित किया गया।

संगोष्ठियां

- सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र द्वारा यूनाइटेड स्टेट्स इंडिया एजुकेशनल फाउन्डेशन की सहभागिता से 16 अमेरीकी शिक्षकों के लिए जुलाई, 2009 में नयी दिल्ली में एक संगोष्ठी – ''भारतीय संस्कृति की समझ'', विषय पर आयोजित की गई। इस संगोष्ठी का उद्घाटन श्रीमती शोभना नारायण द्वारा किया गया।

- सीसीआरटी में एक कार्यशाला ब्रिटिश प्रधानमंत्री की फैलोशिप कार्यक्रम के तहत युवा लीडर्स के लिए 31 जुलाई, 2009 को नयी दिल्ली में आयोजित की गई। भ्रमणकारी, अध्ययनरत इन ब्रिटिश युवा सदस्यों को भारतीय संस्कृति के आदर्शवादी सिद्धान्तों के बारे में अवगत कराया गया, जिससे उन्हें भारतीय कला में अन्तर्निहित भाव एवं सौन्दर्यात्मकता को समझने में मदद मिली। प्रतिभागियों को सीसीआरटी में चल रहे प्रशिक्षण कार्यक्रम में भारतीय हस्तशिल्पों की पारम्परिक धरोहर पर व्यावहारिक गतिविधियाँ करवाई गई।

- टीचर्स इंटरनेशनल प्रोफेशनल डवलपमैन्ट, यूनाइटेड किंगडम के तहत एक संगोष्ठी स्कूली शिक्षकों के लिए दिनांक 19 अक्टूबर, 2009 को ब्रिटिश काउंसिल, नई दिल्ली के अनुरोध पर सीसीआरटी में आयोजित की गई जिसमें, 15 ब्रिटिश शिक्षकों को भारतीय रूपंकर एवं निष्पादनीय कलाओं की जानकारी दी गई और उन्हें भारतीय समृद्ध प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक धरोहर का अनुभव प्राप्त करने का सुअवसर प्रदान किया गया।

व्याख्यान/व्याख्यान प्रदर्शन श्रृंखला

व्याख्यान/प्रदर्शन श्रृंखला का उद्घाटन

केन्द्र ने श्रीमती कमलादेवी चट्टोपाध्याय की स्मृति में दिनांक 29 मई, 2009 को वार्षिक व्याख्यान का आयोजन किया जिसमें डॉ. कपिला वात्स्याय़न, आजीवन सदस्य, इंडिया इंटरनेशनल सेन्टर (आईआईसी) के एशिया प्रोजेक्ट की अध्यक्षा ने 'कलाओं के माध्यम से शिक्षा : मूल्य और कौशल' पर सीसीआरटी, नयी दिल्ली में यह स्मृति व्याख्यान दिया। इस समारोह की अध्यक्षता श्री जवाहर सरकार, सचिव, संस्कृति मंत्रालय ने की।

सुविख्यात कलाकारों, विद्वतजनों तथा शिक्षाविदों द्वारा भारतीय कला और संस्कृति से संबंधित विभिन्न विषयों पर व्याख्यान दिए गए।

विस्तार एवं सामुदायिक पुनर्निवेश कार्यक्रम

अपने विस्तार एवं सामुदायिक पुनर्निवेश कार्यक्रम के अन्तर्गत केन्द्र स्कूली छात्रों, शिक्षकों तथा सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओं के बच्चों हेतु विभिन्न शैक्षिक गतिविधियों का आयोजन करता है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत विभिन्न औपचारिक एवं अनौपचारिक स्कूलों के लगभग 17,867 बच्चों को इस कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रशिक्षण दिया गया।

''कला और संस्कृति के प्रति जागरूकता'' विषयक एक ग्रीष्मकालीन कार्यशाला दिनांक 1 जून से 12 जून, 2009 तक सीसीआरटी नई दिल्ली में आयोजित की गई जिसमें 300 स्थानीय एवं बस्ती स्कूलों के बच्चों ने भाग लिया।

कला और संस्कृति के प्रति जागरूकता के लिए कार्यशाला

कला और संस्कृति निदेशालय, गोवा के सहयोग से 21 से 25 अक्तूबर, 2009 तक मारगॉव, गोवा में सृजनात्मक कार्यकलापों पर एक विशेष कार्यशाला का आयोजन कियाा गया। इस कार्यशाला में लगभग 400 स्थानीय बच्चों ने भाग लिया और माइम, कठपुतली कला, मधुबनी पेंटिंग, जिल्दसाज़ी, बंधानी रंगाई, मेक्रेम, फूल बनाना, वर्ली पेंटिंग, पॉटरी, रंगोली और राष्ट्रीय भाषाओं के गीत सीखे।

संसाधनों का संग्रहण

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र, देश भर के विद्यालयों एवं शिक्षण संस्थानों को प्रदान की जाने वाली अपनी 'शैक्षिक किट' को समृद्ध बनाने और शिक्षकों, शिक्षक प्रशिक्षकों तथा अन्य शोधरत छात्रों को भारत की

सांस्कृतिक विरासत संबंधी सामग्री उपलब्ध कराने के लिए ऑडियो रिकॉडिंग, स्लाइड्स, फोटोग्राफ, फिल्म तथा लिखित पाठ आदि के रूप में देश की कलाओं और शिल्पों से संबंधित सामग्री संग्रहित करता है। रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान असम के सत्रिय नृत्य का प्रलेखन पूरा किया गया। निम्नलिखित कला शैलियों एवं ऐतिहासिक स्थलों की स्लाइड्स तैयार की गईं:—सत्रिय नृत्य, कालका शिमला रेल, पुराना किला, जामा मस्जि़द, स़फदरजंग मकब़रा, फिरोजशाह कोटला, बहाई पूजा स्थल, गुरुद्वारा बंगला साहिब तथा हौज खास।

शैक्षिक किट

अनुस्थापन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेने वाले शिक्षकों को दिए गए प्रशिक्षण के उद्देश्यों को पूरा करने की दृष्टि से प्रतिभागी संस्था को दृश्य—श्रव्य सामग्री और सीसीआरटी की प्रकाशन सामग्री से युक्त एक शैक्षिक किट उपलब्ध कराई जाती है। फिलहाल, शैक्षिक किट में भारत की कलाओं संबंधी पाठ्य सामग्री और स्लाइड केटलॉग रूपंकर कलाओं संबंधी 520 स्लाइडों तथा प्रदर्शनकारी कलाओं संबंधी 348 स्लाइडों के 2 एलबम, प्रदर्शनकारी कलाओं पर 9 घंटों की आठ रिकॉर्ड की गई केसेटों की एक केसेट एलबम शैक्षिक पैकेज, लघु पुस्तिकाएँ और उन संस्थाओं को एक टेपरिकार्डर और 35 मि.मि. का हस्तचालित प्रोजेक्टर भी दिया जाता है जिनके पास यह उपकरण नहीं होते। विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों के दौरान विभिन्न विद्यालयों को 710 शैक्षिक किट वितरित की गईं।

प्रकाशन

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र का उद्देश्य शिक्षकों तथा छात्रों के बीच भारतीय संस्कृति की जानकारी का प्रसार एवं समझ पैदा करना है। इसके लिए केन्द्र, भारतीय संस्कृति पारिस्थतिकी तथा प्राकृतिक पर्यावरण से संबंधित विभिन्न पहलुओं से संबंधित विषयों पर कार्य पुस्तिकाएं, लघु पुस्तिकाएं, कलाओं तथा शिक्षा संबंधी मोनोग्रापफ, पोस्टर्स, फोलियो, पैकेज आदि प्रकाशित करता है।

सांस्कृतिक क्लब योजना

इस योजना का मुख्य उद्देश्य, देश के दूर—दराज के स्कूलों में नृत्य, संगीत, नाट्यकला, मूर्तिकला तथा दृश्य—कलाओं की शैलियों के सैद्धान्तिक ज्ञान की समझ पैदा करना तथा उसे सुदृढ़ता प्रदान करना है। इस योजना में स्कूल विशेष के प्रधानाचार्य एवं जिला शिक्षाधिकारी या उनके समकक्ष के पूर्ण नियंत्रण तथा दिशा—निर्देशों के अन्तर्गत सीसीआरटी द्वारा प्रशिक्षित एवं जिला स्रोत व्यक्ति के रूप में नियुक्त शिक्षक/शिक्षिका द्वारा विभिन्न शैक्षिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। इस योजना के कार्यान्वयन हेतु चयनित विद्यालय को सीसीआरटी द्वारा वित्तीय अनुदान तथा शिक्षक विशेष को मानदेय प्रदान किया जाता है। इस योजना के माध्यम से कलाओं के संरक्षण तथा छात्रों में प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक धरोहर के प्रति शैक्षणिक जागृति उत्पन्न करने के लिए प्रयास किया गया है। रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान देश के 185 विभिन्न विद्यालयों में सांस्कृतिक क्लबों का गठन किया गया।

सांस्कृतिक प्रतिभा खोज छात्रवृत्ति योजना

सांस्कृतिक प्रतिभा खोज छात्रवृत्ति योजना के अंतर्गत वर्ष 1982 में योजना के प्रारम्भ से ही सीसीआरटी 10—14 वर्ष आयु वर्ग के प्रतिभाशाली छात्रों को प्रदर्शनकारी कलाओं तथा अन्य कलाओं के अध्ययन के लिए छात्रवृत्तियाँ प्रदान करता आ रहा है। मान्यता प्राप्त स्कूलों के छात्रों या परम्परागत, प्रदर्शनकारी तथा अन्य कला रूपों का प्रदर्शन करने वाले घरानों के बच्चों को विभिन्न कला रूपों में, विशेषतः दुर्लभ कला रूपों में इस छात्रवृत्ति के लिए चुना जाता है। इस दौरान 472 छात्रों को चुना गया और उन्हें विभिन्न कला रूपों में छात्रवृत्तियाँ दी गईं।

छात्रवृत्ति प्राप्तकर्ताओं के लिए उत्सव

युवाओं में सौन्दर्य एवं सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति समझ पैदा करने, उन्हें सांस्कृतिक विकास में शामिल करने तथा उनमें, सौहार्द्रता एवं मिल—जुल कर रहने की भावना पैदा करने की दृष्टि से छात्रवृत्ति प्राप्तकर्ताओं के लिए उत्सवों का आयोजन भी किया जाता है। ''विभिन्नता में एकता'' विषय पर तीन उत्सव आयोजित किए गए। जिनमें पहला दिनांक 20—26 जुलाई, 2009 तक हैदराबाद में आयोजित किया गया, जिसमें देशभर से 125 छात्रवृत्ति प्राप्तकर्ताओं ने भाग लिया । दूसरा 5 से 11 अक्टूबर, 2009 तक अगरतल्ला में तथा तीसरा 26 दिसम्बर, 2009 से 1 जनवरी, 2010 तक भोपाल में आयोजित किया गया जिनमें क्रमशः 67 तथा 68 छात्रवृत्ति प्राप्तकर्ताओं ने भाग लिया ।

पूर्वोत्तर अंचल में सीसीआरटी की पहल

प्राचीन समय से ही भारत का पूर्वोत्तर अंचल समुदायों, आस्थाओं एवं संस्कृतियों का संगम रहा है। अपनी सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण की उपयोगिता हेतु विद्यार्थियों एवं शिक्षक समुदाय में सिक्किम राज्य सहित पूर्वोत्तर भारत की समृद्ध प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक विरासत के प्रति सतत् संवदेनशीलता जागृत करने हेतु सीसीआरटी द्वारा विशिष्ट विषयों पर पूर्वोत्तर अंचल में कार्यशालाएं आयोजित की जाती हैं।

इस अंचल की पारंपरिक हस्तकलाओं व विशिष्ट कलारूपों का उपयोग करते हुए देश भर के प्राथमिक, माध्यमिक व उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों को कक्षा शिक्षण में नवीनतम शैक्षिक कार्यप्रणालियों से परिचित कराया जाता है। रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान सीसीआरटी द्वारा 6 कार्यशालाएं और पुनश्चर्या प्रशिक्षण कार्यक्रम पूर्वोत्तर राज्यों में आयोजित किए गए, जिनमें 721 शिक्षकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

विकलांग बच्चों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम

सीसीआरटी द्वारा विकलांग बच्चों के लिए विभिन्न कार्यशालाओं एवं शैक्षिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। इन कार्यक्रमों के माध्यम से उन बच्चों को भी सीखने का अवसर मिलता है जो मुख्यधारा में आसानी से शामिल नहीं हो सके हैं। इन कार्यक्रमों के दौरान विकलांग बच्चों को कौशल प्रदान करने का उद्देश्य उन्हें जीवन का सामना उत्साह एवं विश्वास के साथ करने तथा उन्हें शारीरिक, मानसिक और सामाजिक रूप से विकसित करना एवं उनमें स्कूल जाने की मानसिकता उत्पन्न करना है।

रिपोर्ट की अवधि के दौरान सीसीआरटी द्वारा 15 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन कर 492 विकलांग बच्चों को प्रशिक्षण दिया गया। शिक्षा में नाट्य कला विषय पर आधारित विशेष स्कूली शिक्षा से जुड़े 103 शिक्षकों के लिए पुणे में एक कार्यशाला आयोजित की गई। इन कार्यशालाओं में बच्चों को अधिक स्वतन्त्र बनाने तथा उनमें रूचि उत्पन्न करने के उद्देश्य से खेल, चित्रकला, कहानी कहने एवं लेखन तथा अन्य शिल्पों को शामिल किया गया।

राजभाषा पुरस्कार

राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा सीसीआरटी को वर्ष 2007–2008 के लिए तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया। सीसीआरटी के महानिदेशक, श्री सुरेन्द्र कौल ने राजभाषा विभाग द्वारा देहरादून में आयोजित राजभाषा सम्मेलन के अवसर पर माननीय केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री श्री अजय माकन के कर कमलों से राजभाषा शील्ड प्राप्त की।

सीसीआरटी में 15–29 सितम्बर, 2009 तक हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। 05–06 अगस्त, 2009 को सीसीआरटी के क्षेत्रीय केन्द्र हैदराबाद में दो दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें क्षेत्रीय केन्द्र एवं अन्य स्थानीय कार्यालयों सहित 22 कर्मचारियों ने भाग लिया। इसके अलावा दो हिन्दी कार्यशालाएं, सीसीआरटी मुख्यालय नई दिल्ली में 25 जुलाई, 2009 एवं 19 दिसम्बर, 2009 को आयोजित की गईं, जिनमें क्रमशः 20 एवं 30 कर्मचारियों ने भाग लिया।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें दिनांक 29 जून, 2009, 30 सितम्बर, 2009 एवं 31 दिसम्बर, 2009 को आयोजित की गईं।

3.5

कलाक्षेत्र फाउण्डेशन

कलाक्षेत्र फाउण्डेशन में भरतनाट्यम, कर्नाटक संगीत और दृश्य कलाओं पर संकेंद्रित रुक्मिणी देवी कॉलेज ऑफ फाइन आर्ट्स, दो हाई स्कूल, एक बुनाई केंद्र और प्राकृतिक रंगाई तथा मुद्रण केंद्र और स्कूल व कॉलेज के छात्रों के लिए एक छात्रावास सम्मिलित है। कलाक्षेत्र की स्थापना आधुनिक भारत में, हमारी राष्ट्रीय बहुमूल्य कलात्मक परम्पराओं की पहचान को पुनर्जीवित करने और युवाओं में कला की वास्तविक भावना जागृत करने के उद्देश्य से रुक्मिणी देवी द्वारा सन् 1936 में की गई थी। अपनी स्थापना से ही इसने भारत की पारम्परिक कला की समृद्धता का संरक्षण करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। रुक्मिणी देवी का निधन हो जाने के पश्चात सन् 1993 में संसद के एक अधिनियम द्वारा कलाक्षेत्र को राष्ट्रीय महत्व की संस्था घोषित कर दिया गया था। संस्था के रूप में 'कलाक्षेत्र' जो अब अपने हीरक जयन्ती वर्ष में है, पर्यावरणिक उत्तरदायित्व के उच्च मानकों को बनाए हुए है, जो इसके कर्मचारियों और छात्रों में रच–पच गए हैं।

यह रिपोर्ट कलाक्षेत्र फाउण्डेशन के बहुत से तथ्यों पर केंद्रित है। कालेज ऑफ फाइन आर्ट्स कलाओं और शैक्षिक उत्कृष्टता में प्रशिक्षण देने के अलावा कला संसार के मान्यता प्राप्त कलाविदों और विद्वानों के साथ सार्थक सम्पर्क के लिए बहुत से अवसर प्रदान करता है। आम जनता के समक्ष कलाक्षेत्र के महत्व को प्रदर्शित करने के लिए समारोह तथा कलात्मक कार्य निष्पादन प्रस्तुत करता है अनुसंधान और विकास विभाग अभिलेखीकरण, डिजिटलीकरण तथा रुक्मिणी देवी के जीवन पर एक नवीन संग्रहालय बनाने के प्रारम्भिक कार्य करने सहित कला और संस्कृति को सुरक्षित रखने के लिए बहुत सी परियोजनाएं चलाता है। कलाक्षेत्र में विभिन्न, पर्यावरणिक पहलों को कार्यान्वित किया जा रहा है और परिसर में नृत्य के अभ्यास और सूचना प्रौद्योगिकी अवसंरचना के लिए सुविधाओं का उन्नयन किया जा रहा है।

कलाक्षेत्र गत वर्षो से सुदृढ़ कार्य नैतिक आधार वाले शिक्षाविदों पर ध्यान केंद्रित करता रहा है। इस संस्थान ने भारत और विदेश में पर्याप्त प्रतिष्ठा प्राप्त की है। कलाक्षेत्र पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास के अपने कार्यक्रम के भाग के रूप में भारत के पूर्वोत्तर भाग के छात्रों की सहायता भी करता है।

कक्षाओं में प्रशिक्षण देने के अलावा 'कलाक्षेत्र' अभ्यास के जरिए शिक्षण देने पर बल देता है। इस शैक्षणिक वर्ष के पाठ्यक्रमों के दौरान कलाक्षेत्र ने छात्रों और कलाप्रेमियों के लिए स्वानुभव 2009 नामक एक छः दिवसीय शास्त्रीय नृत्य और संगीत के कार्यक्रम को सह–प्रायोजित किया। इसमें पण्डित बिरजू महाराज और श्रीमती स्वप्नसुन्दरी जैसे कलाकारों ने भाग लिया और छात्रों के लाभ के लिए कार्यक्रम प्रस्तुत किए। विरासत और संस्कृति के क्षेत्र की जानकारी देने के लिए छात्रों के लिए महाबलीपुरम, कांचीपुरम, तिरुवारूर और कुम्भकोणम के दौरों का आयोजन किया गया। कलाक्षेत्र के समीप, विद्यमान नौवीं शताब्दी के मरुन्दीश्वर मन्दिर के अधिकारियों की अनुमति से छात्रों ने मन्दिर परिसर में महीने में एक बार भजन आदि कार्यक्रम आयोजित किए।

कालेज ऑफ फाइन आर्ट्स में फिलहाल दस आइ.सी.सी. आर. छात्र हैं जो रूस श्रीलंका, युक्रेन जापान और दक्षिण अफ्रीका के हैं। इसके अलावा चालू वर्ष में कलाक्षेत्र फाउण्डेशन ने 23 योग्य व प्रतिभावान छात्रों को छात्रवृत्तियाँ प्रदान की हैं जिससे छात्रवृत्ति की राशि बढ़कर कुल 5,57,600 रुपए (पांच लाख सत्तावन हजार छह सौ रुपए) हो गई है।

नियमित डिप्लोमा कार्यक्रम, वयस्कों और विभिन्न आयु वर्गों के लिए कार्यक्रमों तथा अतिथि विशेषज्ञों के व्याख्यानों के अलावा कलाक्षेत्र का दृश्य कला विभाग छात्रों और आम जनता के लिए नियमित रूप से प्रदर्शनियों और शिविरों का आयोजन करता है। नए रूप में बनाए गए वीथिका स्थल पर दो सफल पेंटिंग प्रदर्शनियाँ लगाई गईं जिनमें हैदराबाद के विख्यात कथक कलाकार राघव राय भट्ट के विभिन्न कला रूपों पर सितम्बर 2009 में लगाई गई प्रदर्शनी और चेन्नई की श्रीमती लक्ष्मी कृष्णमूर्ति द्वारा बनाए गए चित्रों की श्रृंखला दिसम्बर 2009 में प्रदर्शित की गई थीं।

चालू वर्ष में कलाक्षेत्र फाउण्डेशन द्वारा पूर्वोत्तर के छात्रों को 3,16,000/–रुपए की छात्रवृत्तियाँ प्रदान की गईं। फाउण्डेशन ने कलै (पाण्डिच्चेरी) दक्षिण चित्र (चेन्नै) और कलाक्षेत्र में मणिपुरी लोक एवं शास्त्रीय नृत्य का पन्द्रह दिनों की अवधि का कार्यक्रम आयोजित किया। कलाक्षेत्र मार्च 2010 से पहले दो और प्रमुख पूर्वोत्तर कार्यक्रम आयोजित करने की योजना बना रहा है।

समारोह और प्रदर्शन

कलाक्षेत्र द्वारा आयोजित किए जाने वाले समारोहों और प्रदर्शनों को संस्थान की दृश्य प्रस्तुति के रूप में अधिकांश आम जनता द्वारा देखा जाता है।

भारत के बेहतरीन नृत्य और संगीत को प्रदर्शित करने के लिए कलाक्षेत्र प्रत्येक वर्ष दिसम्बर माह में अपना वार्षिक समारोह आयोजित करता है। इस समारोह में कला क्षेत्र की बेहतरीन प्रतिभाओं को आमंत्रित किया जाता है। कलाक्षेत्र का 57वॉ वार्षिक समारोह 20 दिसम्बर, 2009 से 6 जनवरी, 2010 तक आयोजित किया गया था। इस वर्ष आयोजित किए गए इस समारोहों में कलाक्षेत्र रंगमंडल द्वारा रुक्मिणी देवी की छः भागों में रामायणम श्रृंखला, गन्धर्व महाविद्यालय, नई दिल्ली के सहयोग से छः दिनों का उत्तर भारतीय संगीत कार्यक्रम और पाँच दिनों का कर्नाटक संगीत व नृत्य कार्यक्रम शामिल थे।

कलाक्षेत्र में सितम्बर 2009 में चार दिनों का कथकली समारोह आयोजित किया गया था। इस समारोह को संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित किया गया था और कला रूपों की बारीकियों पर निष्पादन, प्रदर्शन और कार्यशाला का आयोजन किया गया। कलाक्षेत्र **प्रतिभावान युवा कलाकारों** के कार्यक्रमों का भी नियमित आयोजन करता है और आम लोगों में अपनी कला को प्रदर्शित करने के लिए उन्हें मंच प्रदान करता है। बीस वर्ष से कम आयु के युवा और प्रतिभावान संगीतज्ञों को प्रोत्साहित करने के लिए कलाक्षेत्र द्वारा दिशा श्रृंखला आरम्भ की गई है। इसके अलावा युवा नर्तकों को प्रोत्साहित करने के लिए मासिक सांस्कृतिक श्रृंखला भी शुरू की गई है। इस वर्ष कलाक्षेत्र रंगमंडल ने चेन्नै, कोयम्बतूर, गोवा और बंगलुरु के प्रतिष्ठित स्थलों पर 22 सार्वजनिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

जनवरी 2010 में कलाक्षेत्र ने दस्तकारी हाथ समिति, नई दिल्ली के सहयोग से **शिल्प बाजार** का आयोजना किया। इसमें 105 स्टॉल लगाए गए थे जिनमें भारत भर के शिल्प उत्पादों की प्रदर्शनी और बिक्री की गई।

अनुसन्धान, विकास और प्रशिक्षण

कलाक्षेत्र का अनुसन्धान और विकास विभाग हमारी बहुमूल्य विरासत और परम्परा का संरक्षण करने का कार्य करता है। यह विभाग पाठ्यक्रम, अध्ययन सामग्री तैयार करने और प्रकाशन निकालने का कार्य करता है।

कलाक्षेत्र ने श्रीमती रुक्मिणी देवी केरा नृत्य निर्देशन में 6 भागों की रामायणम श्रृंखला की 3 डी.वी.डी का लोकार्पण किया। इनका लाकार्पण 57वें वार्षिक समारोह के पहले दिन किया गया था। शेष तीन डी.वी.डी का लोकार्पण फरवरी 2010 में किया जाना है। कलाक्षेत्र के प्रार्थना गीतों की दो सीडी का लाकार्पण भी कलाक्षेत्र बानी या शैली पर बनी सीडी के साथ 57वें वार्षिक समारोह के अवसर पर किया गया।

विभाग वर्तमान में कर्नाटक, हिन्दुस्तानी और पाश्चात्य शस्त्रीय संगीत के अनेक दुर्लभ संगीत समारोहों और व्याख्यान–प्रदर्शनों की विभिन्न फार्मेटों में प्राप्त हुई रिकार्डिंग को डिजिटलाइज़ कर रहा है। यह विभाग सेमिनार, मासिक संगीत कार्यक्रमों और व्याख्यान–प्रदर्शनों सहित विभिन्न आंतरिक गतिविधियों की विडियो रिकॉर्डिंग करता है। तेलुगु पद्म व जावली पाण्डुलिपियों का सम्पादन योग्य फार्मेट में डिजिटलीकरण किया गया।

विभाग द्वारा कलाक्षेत्र के छात्र और कर्मचारियों के लिए मन्दिर वास्तुकला, रामायण, संगम साहित्य, रस सिद्धान्त, विभिन्न तमिल कवियों का व्यक्तित्व व कृतित्व, नाट्यशास्त्र और अभिनय जैसे विभिन्न विषयों पर व्याख्यान आयोजित किए गए।

विभाग ने कलाक्षेत्र के पुस्तकालय संग्रह में वृद्धि करने के लिए विभिन्न स्रोतों से लगभग 7000 पुस्तकें प्राप्त की हैं। इन नई प्राप्तियों पर 7,51,733 रुपए की लागत आई। दुर्लभ

पुस्तकें, पत्रिकाएँ, ताड़ पत्र पाण्डुलिपियॉं, निजी नोट्स, वाद्ययंत्र (जैसे वीणा व हार्मोनियम) भी एक उदारमना दानी से प्राप्त किए गए जिन्होंने अपने निजी पुस्तकालय की सभी वस्तुएं संस्थान को दान में दीं। पुस्तकालय में उपलब्ध खण्ड की बेहतर ट्रैकिंग और प्रबंधन के लिए पुस्तकालय के डाटाबेस को सुदृढ़ किया गया है।

कलाक्षेत्र ने संम्पूर्ण भारत के परम्परागत शिल्प को प्रदर्शित करने के लिए शिल्प बाज़ार का आयोजन किया।

श्रीमती रुक्मिणी देवी के समय से ही चल रही पर्यावरणिक पहलों के प्रति फाउण्डेशन ने अपनी प्रतिबद्धता को जारी रखा। कलाक्षेत्र में किए गए पर्यावरणिक सुधार के भाग के रूप में राज्य वन विभाग की सहायता से 600 से अधिक वृक्ष लगाए गए। योजनाबद्ध विभिन्न वनरोपण पहलों के लिए कलाक्षेत्र में एक बागवानी पौधशाला प्रारम्भ की गई। कलाक्षेत्र परिसर में राज्य वन विभाग द्वारा वन दिवस मनाया गया। कलाक्षेत्र के परिवेश की डिजिटल लैण्डस्केपिंग करने का कार्य चल रहा है ।

परिसर में मौजूद जलाशयों से खरपतवार और गाद निकालने का कार्य शुरू किया गया। भोजनशाला से निकलने वाले अपशिष्ट जल का उपचार किया जाता है और उसे पक्षियों को आकर्षित करने के लिए बनाए गए तालाबों में छोड़ा जाता है।

3.6
क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र

3.6

क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र

इन केन्द्रों के मुख्य उद्देश्य में अन्य बातों के साथ–साथ भारतीय संस्कृति की प्रमाणक विशेषताओं के रूप में ''विविधता में एकता'' की भावना को मजबूत करने के उद्देश्य से अंगीभूत राज्यों के भीतर लोक तथा विलुप्त होते कलारूपों पर विशेष ध्यान केंद्रित करने के साथ संगीत, नृत्य, रंगमंच, दृश्य कलाओं, साहित्यिक कार्यकलापों तथा शिल्प परंपराओं के विस्तृत विषयों को कवर करते हुए विभिन्न कलारूपों का परिरक्षण, नव परिवर्तन, संवर्धन तथा प्रसार करना शामिल है। इसके अलावा लोक कलारूपों विशेषकर विलुप्त होती परंपराओं का प्रलेखन और उसे प्रकाशित करना भी इनका उद्देश्य है। सांस्कृतिक केंद्रों को स्वयं को प्रादेशिक सीमाओं या भाषायी प्रभागों में सीमित नहीं करना चाहिए। मूल विचार आवश्यक होने पर इन विभेदन बिन्दुओं को हटाना तथा सांस्कृतिक संबंधों और समरूपता की वृहत्तर पहचान तक पहुँचना है। क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र इस बात को सुनिश्चित करने के लिए कि केन्द्र न केवल विशेष राज्य वरन् समग्र भारत की संस्कृति के पोषण तथा उसे बढ़ावा देने में मदद करता है, लोगों की भागीदारी तथा विलुप्त होती कलाओं के पुनरूद्धार पर विशेष बल देता है।

3.6.1

पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र

पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र (डब्ल्यूजेडसीसी) का मुख्यालय उदयपुर, राजस्थान में स्थित है, जो मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार की प्रत्यक्ष पहल पर फरवरी 1986 में स्थापित किए गए सात क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्रों में से एक है।

डब्ल्यूजेडसीसी एक पंजीकृत संस्था है तथा राजस्थान के महामहिम राज्यपाल इसके अध्यक्ष है। इस केंद्र का शासी निकाय, कार्यकारी बोर्ड, कार्यक्रम समिति व वित्त समिति है जिसमें भारत सरकार एवं सदस्य राज्यों की सरकारों के अधिकारी व अन्य गैर सरकारी प्रतिनिधि सदस्य बनाए गए हैं।

उद्देश्य

इस केंद्र की स्थापना भारत के पश्चिमी क्षेत्र के राज्य राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, गोवा और संघ शासित क्षेत्र दमन, दीव व दादरा नगर हवेली में सांस्कृतिक रचनात्मक विकास, प्रदर्शनकारी कलाओं, दृश्य कलाओं, साहित्यिक कार्य, पारंपरिक लोक व जनजाति कलाओं के उन्नयन और संरक्षण के लिए की गई थी।

क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्रों की स्थापना का मुख्य बल ग्रामीण भारत में सांस्कृतिक गतिविधियों की नेटवर्किंग और प्रसार, विभिन्न कलाओं और दस्तकारी की समृद्ध विविधता और विलक्षणता को प्रोत्साहन देना और भारत की समृद्ध तथा व्यापक सांस्कृतिक विरासत के बारे में लोगों को जागरूक बनाना है। लोगों की सहभागिता एवं लुप्त और लुप्त प्रायः कला रूपों और शिल्प को पुनर्जीवित करने पर विशेष दिया गया है।

इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए केंद्र विभिन्न राज्यों, केंद्रीय अकादमियों व स्वयंसेवी संस्थाओं के सहयोग से ग्रामीण स्तर, तालुका स्तर, जिला स्तर, राज्य स्तर, अंतः क्षेत्र व बाह्य क्षेत्र तथा संपूर्ण भारत में विभिन्न कार्यक्रम एवं सांस्कृतिक गतिविधियां संचालित करता है।

डब्ल्यूजेडसीसी ने निम्नलिखित का गठन किया है;

(i) बागोर की हवेली संग्रहालय

हवेली संग्रहालय की स्थापना ''गणगौर घाट'' स्थित बागोर की हवेली में की गई है जहॉ से पिछौला झील दिखाई देती है। यह संग्रहालय मेवाड़ की भव्य संस्कृति को आभूषणों के डिब्बे, चौपड़ के खेल, पान के डिब्बे, मेवा तोड़ने के औजार, हाथ के पंखे, गुलाबजल के फव्वारे, तांबे के बर्तन और दैनिक जीवन के अन्य घरेलू सामानों को सांकेतिक रूप में प्रदर्शित किया गया है। संग्रहालय में शाही महिलाओं के निजी कमरे, उनके तैयार होने के कमरे, स्नान गृह, शयन कक्ष, मंदिर और मनोरंजन कक्ष, इंद्र विमान–हाथी के रथ और पगड़ी जिसका वजन लगभग 30 किलो है प्रदर्शित किए गए हैं।

(ii) शिल्पग्राम

केंद्र ने उदयपुर के पश्चिम में ''ग्रामीण कला व शिल्प परिसर– शिल्पग्राम'' की स्थापना की है। यह एक जीवंत नृवंश विज्ञान संग्रहालय है जिसमें

पश्चिम क्षेत्र के लोक एवं जनजाति लोगों की विशाल विविधता, वास्तुकला व जीवन शैली को प्रदर्शित किया गया है। यह परिसर अरावली की पहाड़ियों के बीच 130 बीघा (70 एकड़) भूमि पर बना हुआ है जिसमें सदस्य राज्यों की 31 प्रतिनिधि झोपड़ियां हैं।

यहाँ मृण संग्रहालय, जनजाति संग्रहालय, गोल संग्रहालय, कोठी संग्रहालय, शिल्प कला पार्क, मुक्ताकाशी रंगमंच, दर्पण सभागार, शिल्प बाजार (हाट्) है जहां भारतीय गॉव के प्राकृतिक वातावरण में रोजाना सांस्कृतिक संध्या का आयोजन किया जाता है।

डब्ल्यूजेडसीसी विभिन्न कलाओं एवं शिल्पों की संपन्न विविधता और अद्वितीयता को बढ़ावा देता है

वर्ष के दौरान गतिविधियां

केंद्र द्वारा बाल भवन, दमन के सहयोग से केंद्र शासित प्रदेश दमन में 5 से 7 अगस्त, 2009 को पारंपरिक उत्सव **''नारियल पूर्णिमा''** का आयोजन किया गया। इस उत्सव में राजस्थान के चारी व मांगणियार गायक, गुजरात के रास गरबा व मेवासी नृत्य, गोवा के समाई/देखणी नृत्य और उड़ीसा के गोटीपुआ नृत्य कलाकारों ने भाग लिया। इस आयोजन की श्रृंखला में दिनांक 7 अगस्त, 2009 को सिल्वासा में भी कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

देवस्थान विभाग, बीकानेर के सहयोग से राजस्थान के श्रीगंगानगर में 14 व 15 अगस्त, 2009 को **''गोगामेड़ी मेला''** का आयोजन किया गया। इस उत्सव में राजस्थान का कुचामणी ख्याल तथा चकरी नृत्य का प्रदर्शन किया गया।

डब्ल्यूजेडसीसी द्वारा गोवा सरकार के कला एवं संस्कृति निदेशालय के सहयोग से गोवा के विभिन्न स्थलों पर 28 अगस्त से 2 सितंबर, 2009 तक पारम्परिक ''गणेशोत्सव'' का आयोजन किया गया। गोवा के समाई/देखणी स्थानीय नृत्य रूपों के अलावा उत्सव में भाग लेने वाले कला दलों में दक्षिण–मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र से मध्य प्रदेश का राई नृत्य, उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र से पंजाब का भांगड़ा, तथा पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र से महाराष्ट्र का लावणी व पोवाड़ा नृत्य, गुजरात से गरबा दल ने समाहरोह में भाग लिया।

केंद्र शासित प्रदेश दादरा नगर हवेली के पर्यटन विभाग एवं बाल भवन सिल्वासा द्वारा 27 से 29 दिसंबर, 2009 तक सिल्वासा में **''तारपा उत्सव''** का आयोजन किया गया। इस उत्सव में कला प्रदर्शन हेतु पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र द्वारा नागपुर से छत्तीसगढ़ का पंथी नृत्य (एससीजेडसीसी), मिजोरम का चांगलाईज्वान और मणिपुर का लाय हरोबा (एनईजेडसीसी), तमिलनाडु का थपट्टम (एसजेडसीसी), पश्चिम बंगाल का पुरूलिया छाऊ (ईजेडसीसी), उत्तराखंड का हारूल व तांदी नृत्य दल (एनजेडसीसी) प्रायोजित किए गए। उत्सव में 29 दिसंबर 2009 को जयपुर के श्री आसिफ षेर अलीखान द्वारा निर्देशित नाटक ''मिस अहलुवालिया'' का मंचन किया गया।

रंगायन (रंगमंच)

कथारंग – कहानियों पर आधारित नाट्य समारोह : उदयपुर सामाजिक मुद्दों को उद्घाटित करने के लिए विख्यात लेखकों की कहानियों पर आधारित विषयपरक रंगमंच उत्सव है। राष्ट्रपिता महात्मा गॉधी गांधी के दर्शन पर केंद्रित नाट्य समारोह दिनांक 5 से 7 जुलाई, 2009 तक शिल्पग्राम में आयोजित किया गया। इस उत्सव में ''मत रो सालिगराम'', (महिला समस्या) ''एक क्लर्क की मौत'', (आत्म सम्मान) ''सबसे बड़ा रुपया'', ''ना जाने केहि वेश में'', ''बारबर शॉप'', ''ईदगाह'', ''घायल की गति'' तथा ''बड़े भाई साहब'' का मंचन किया गया।

सरदार पटेल विश्वविद्यालय, आनंद के हिंदी विभाग के सहयोग से 1 से 6 अक्तूबर, 2009 तक वल्लभ विद्यानगर आनंद गुजरात में **"रंग परंपरा"**–''लोक नाट्य समारोह'' का आयोजन किया गया। समारोह में डब्ल्युज़ेडसीसी की ओर से **''भवाई–जसमा ओडन''** (गुजरात), एसज़ेडसीसी, तंज़ावुर की ओर से **''स्वांग–हीर रांझा''** (हरियाणा), **''कोडियाट्टम''** (केरल), एससीज़ेडसीसी, नागपुर की ओर से **''नाचा–अक्कल बड़ी के भैंस''**, (छत्तीसगढ़) एनसीज़ेडसीसी, पटियाला की ओर से **''बिदेसिया''** (बिहार) तथा ईज़ेडसीसी, कोलकाता की ओर से ''अंकिया नट– रावण वध'' (असम) का मंचन किया गया।

नाट्योत्सव– बहुभाषीय नाट्य समारोहः कुड़चड़े, गोवा का आयोजन गोवा सरकार के कला एवं संस्कृति निदेशालय के सहयोग से गोवा के कुड़चड़े में 10 से 14 अक्तूबर, 2009 तक किया गया। इस समारोह में श्री गोविंद रायकर द्वारा निर्देशित कोंकणी नाटक **''आ बैल मुझे मार''**, हिमाचल कल्चरल रिसर्च फोरम तथा थियेटर रेपर्टरी मंडी द्वारा श्री सुरेश शर्मा द्वारा निर्देशित हिंदी नाटक **''सखाराम बाइंडर''**, श्री पी.एस. चारी द्वारा निर्देशित गुजराती नाटक ''केम मकनजी क्यां चाल्या'', मुंबई विश्वविद्यालय के एकेडमी ऑफ थियेटर आर्ट्स द्वारा री मिलिंद ईमानदार द्वारा निर्देशित मराठी नाटक ''अजिन्था'' तथा पश्चिम बंगाल के लिटिल थैस्पियन ग्रुप द्वारा एस. एम अजहर द्वारा निर्देशित (हिंदी) नाटक ''पतझड़'' का मंचन किया गया।

रंग यात्रा (यात्रात्मक नाट्य समारोह) का आयोजन रंगमंच आंदोलन को प्रोत्साहित करने तथा रंगमंचीय प्रवृत्तियों में अभिवृद्धि करने एवं स्थानीय रंगकर्मियों व नाट्य विभाग के छात्रों के मध्य रंगमंच को बढ़ावा देने के ध्येय से राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के रंगमंडल व अन्य स्थानीय

संस्थाओं के सहयोग से किया गया था। इसके अंतर्गत गोवा में 9 से 13 नवंबर, 2009 तक, नासिक में 17 से 21 नवंबर, 2009 तक, दमन में 26 से 28 नंवबर, 2009, सिल्वासा में 29 से 30 नंवबर, 2009, राजकोट में 4 से 8 दिसंबर, 2009 तथा जोधपुर में 13 से 17 दिसंबर, 2009 तक नाट्य समारोह आयोजित किए गए। मंचित किए गए नाटकों में ''जात ही पूछो साधु की'', ''राम नाम सत्य है'', ''काका – एक अध्याय'', ''घासीराम कोतवाल'' तथा ''आचार्य तारतुफ'' उल्लेखनीय हैं।

डब्ल्यूजेडसीसी ने रंग आंदोलन के प्रोत्साहन तथा नाट्य गतिविधियों की अनवरतता को बनाए रखने के लिए गैर पेशेवर नाट्य दलों, प्रतिभावान कलाकारों, निर्देशकों आदि को अपने नाट्य प्रदर्शन करने के लिए सुविधाएं प्रदान करने का अभियान चलाया। प्रत्येक माह नियमित रूप से **रंगशाला–मासिक रंगमंच प्रदर्शनः उदयपुर, राजस्थान** आयोजित किए गए।

शिल्पग्राम उत्सव – विकास आयुक्त हस्त शिल्प एवं विकास आयुक्त हथकरघा, भारत सरकार, केंद्रीय ऊन विकास बोर्ड, एवं सभी क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्रों के सहयोग

शिल्पग्राम उत्सव

से शिल्पग्राम उदयपुर में दिनांक 21 दिसंबर से 30 दिसंबर, 2009 तक वार्षिक राष्ट्रीय हस्त शिल्प एवं लोक कला उत्सव ''शिल्पग्राम उत्सव'' का आयोजन किया गया। इस उत्सव में सम्पूर्ण देश के 454 लोक कलाकारों व 421 शिल्पकारों व 25 पाक कला शिल्पियों ने भाग लिया। शिल्पग्राम उत्सव के अवसर पर उदयपुर के लब्धप्रतिष्ठित चित्रकारों व मूर्तिकारों द्वारा सृजित कृतियों की प्रदर्शनी का आयोजन भी किया गया जिसमें 120 चित्रकारों व मूर्तिकारों की कृतियां प्रदर्शित की गई।

पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, उदयपुर ने भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय, पूर्वोत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, दीमापुर, गुजरात सरकार के युवा सेवा एवं सांस्कृतिक कार्यकलाप विभाग तथा सूरत महानगर पालिका के सहयोग से सूरत में 7 से 11 नवंबर, 2009 तक पूर्वोत्तर राज्यों की कला एवं शिल्प का इंद्रधनुष ''ऑक्टेव'' का आयोजन किया। इस उत्सव में साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली, संगीत नाटक अकादेमी, नई दिल्ली, ललिता कला अकादेमी, नई दिल्ली, राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली तथा ट्राइफेड, नई दिल्ली द्वारा रचनात्मक सहयोग दिया गया व सक्रियता से भाग लिया गया।

डब्ल्यूजेडसीसी ने संघ प्रशासन एवं बाल भवन, दमन के सहयोग से दमन में 19 से 20 दिसंबर, 2009 तक ''दमन उत्सव'' का आयोजन किया। इस उत्सव में राजस्थान के लंगा मांगणियार लोक गायकों, गुजरात का सिद्धि धमाल, पंजाब का भांगड़ा (उ.क्षे.सां.केंद्र), असम का बिहु तथा मणिपुर का पुंगचोलम नृत्य (पू.क्षे.सां. केंद्र) का प्रदर्शन किया गया।

डब्ल्यूजेडसीसी ने दीव प्रशासन के सहयोग से दीव में 19 से 20 दिसंबर, 2009 तक ''दीव उत्सव'' का आयोजन किया। इस उत्सव में असम के बिहु नृत्य (पू.क्षे.सां. केंद्र), गुजरात के रास तथा महाराष्ट्र के लावणी नृत्य का आयोजन किया गया।

डब्ल्यूजेडसीसी ने रंगमंच आंदोलन को पुनर्जीवित करने और प्रोत्साहित करने के लिए एक अभियान चलाया है।

बाल गतिविधियां

डब्ल्यूजेडसीसी ने बाल भवन, जयपुर के सहयोग से 23 से 29 अप्रैल, 2009 तक जयपुर में उल्लास–09–बाल थियेटर कार्यशाला का आयोजन किया, जिसमें विभिन्न क्षेत्रों के लगभग 120 बच्चों ने सक्रियता से भाग लेकर और 29 अप्रैल, 2009 को राष्ट्रीय एकता एवं बाल अधिकारों पर तीन नाटकों का मंचन करके अपने अभिनय कौशल का प्रदर्शन किया।

डब्ल्यूजेडसीसी ने हिंदुस्तान जिंक उदयपुर के सहयोग से 5 से 8 अक्तूबर, 2009 को उदयपुर में विकलांग बच्चों को समर्पित सांस्कृतिक उत्सव **उमंग 2009** का आयोजन किया। इस उत्सव का प्रमुख उद्देश्य शारीरिक रूप से विकलांग बच्चों, मंदबुद्धि, नेत्रहीन एवं मूक–बधिर बच्चों को प्रोत्साहन देना, उनमें विद्यमान कौशल को सार्वजनिक रंगमंच प्रदान करना एवं कलात्मक आदान–प्रदान के लिए आदर्श वातावरण सुलभ कराना था। इस उत्सव में केंद्र के सदस्य राज्यों 144 विकलांग बच्चों और 38 प्रशिक्षकों ने भाग लिया और अपने कौशल का प्रदर्शन किया।

उमंग उत्सव

डब्ल्यूजेडसीसी ने से बाल भवन, दमन के सहयोग से श्री राजू शुक्ल (रंगमंच), सुश्री मर्लिन परेरा (लोक नृत्य), श्रीमती अश्विनी टंडेल (संगीत) तथा श्री अनूप शाह (शिल्प कला) के विशेष मार्गदर्शन में दमन में 19 से 24 अक्तूबर, 2009 तक बालोत्सव का आयोजन किया। इस कार्यशाला में लगभग 80 बालकों ने भाग लिया।

गोवा सरकार के कला एवं संस्कृति निदेशालय एवं पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र के संयुक्त तत्वावधान में गोवा के बिचोलिम के श्री शांतादुर्गा हाई स्कूल में 12 से 16 अक्तूबर, 2009 तक बालोत्सव का आयोजन किया गया। इस उत्सव में 263 बच्चों को 8 विशेषज्ञों द्वारा कला विधाओं का प्रशिक्षण दिया गया। विशेषज्ञों द्वारा 10 से 16 वर्ष की आयु के इन बालकों को पारंपरिक कलाओं जैसे टाई एंड डाई, कपड़े के खिलौने बनाने, रंगमंच तथा राष्ट्रीय एकता से गीतों का प्रशिक्षण दिया गया।

अन्य कार्यक्रम

डब्ल्यूजेडसीसी ने बोधी नाट्य परिषद, मुंबई तथा महाराष्ट्र सरकार के सांस्कृतिक कार्य संचालनालय के सहयोग से मुंबई में 11 से 16 मई, 2009 तक बोधी नाट्य महोत्सव का आयोजन किया गया। इस नाट्य महोत्सव में मुंबई, नागपुर, बीड़, कल्याण तथा नासिक के विभिन्न नाट्य दलों द्वारा नाटकों का मंचन किया गया इनमें जाता नहीं जाट (मुंबई), या अल्लाह हे राम (नागपुर), खेल (बीड़), येतन बुधवां सासन (कल्याण) और गांधी अम्बेडकर (नासिक) उल्लेखनीय हैं।

डब्ल्यूजेडसीसी ने महागामी, औरंगाबाद के सहयोग से पारंपरिक कठपुतली कला को पुर्नजीवन देने व प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से औरंगाबाद में 12 से 14 मई, 2009 तक कठपुतली पर गुरूकुल कार्यशाला का आयोजन किया। इस कार्यशाला में राजस्थान के 10 कठपुतली कलाकारों ने भाग लिया और उदयपुर में आयोजित कार्यशाला में तैयार पुतली नाटक शिकार में राजा का साला का प्रदर्शन किया गया।

भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय सभी क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्रों का सांस्कृतिक प्रभाव आकलन अध्ययन करना चाहता है। इसका उद्देश्य क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्रों के उद्देश्यों, गतिविधियों, उपलब्धियों तथा उनकी कमियों का मूल्यांकन करना और भावी दिशानिर्देश तैयार करना है। इसका अनुपालन करने के लिए उद्यपुर में पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र द्वारा 22 व 23 मई, 2009 को केंद्र द्वारा सदस्य राज्यों में सृजित सांस्कृतिक वातावरण की समीक्षा व उसके मूल्यांकन हेतु दो दिवसीय सेमिनार का आयोजन किया गया। इस सेमिनार में लब्धप्रतिष्ठित कलाकर्मियों ने सदस्य राज्यों का प्रतिनिधित्व किया।

डब्ल्यूजेडसीसी ने मृण कला प्रोत्साहन हेतु इस शिल्प का चयन कर मृण शिल्पियों के कौशल में अभिवृद्धि करने व उत्पाद में बढ़ोत्तरी के साथ उसकी लागत को कम करने एवं उन्हें विपणन के लिए समुचित सुविधा का ज्ञान करवाने के लिए पारंपरिक मृणकला कार्यशाला की शुरूआत 15 मई, 2009 को उदयपुर के शिल्पग्राम की गई। इस कार्यशाला में राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र तथा गोवा से 25 मृण शिल्पकारों ने भाग लिया। कार्यशाला का समापन 28 जून 2009 को हुआ। कार्यशाला के दौरान प्रतिभागियों द्वारा तैयार मृण उत्पादों की प्रदर्शनी 28 जून, 2009 से 7 जुलाई, 2009 तक लगाई गई।

डब्ल्यूजेडसीसी ने महाराष्ट्र सरकार के सांस्कृतिक कार्य निदेशालय एवं वसंत राव देशपांडे संगीत सभा, मुंबई के सहयोग से 18 अगस्त, 2009 को मुंबई के रवींद्र नाट्य मंदिर में भारतीय शास्त्रीय / लोक आधारित संगीत समारोह ''कन्हैया तेरो कारो'' का आयोजन किया। इस समारोह की परिकल्पना और निर्देशन डॉ. चंद्रशेखर रेले द्वारा की गई थी। यह समारोह इस बात पर आधारित था कि समसामयिक शास्त्रीय संगीत, प्राचीन शास्त्रीय, उप शास्त्रीय तथा सुगम संगीत से कैसे उत्पन्न हुआ है।

डब्ल्यूजेडसीसी ने लंगा व मांगणियार के तीन लोक गायकों को कोरिया गणराज्य में आयोजित भारत महोत्सव में भाग लेने के लिए भेजा। इन कलाकारों ने 9 से 15 सितंबर, 2009 तक जेजू द्वीप पर आयोजित तृतीय डेल्फिक खेल–2009 में आयोजित कला स्पर्धा में भाग लिया तथा ताल वाद्य श्रेणी में रजत पदक प्राप्त किया।

सदस्य राज्यों में आयोजित उत्सवों में केंद्र ऐसे महत्वपूर्ण समारोह में सक्रिय रूप से भाग लेता है जहां अधिसंख्य लोगों की सहभागिता नियमित रूप से होती है। इस क्रम में केंद्र द्वारा चित्तौड़गढ़ में जिला प्रशासन, चित्तौड़गढ़ व मीरा स्मृति संस्थान द्वारा 5 अक्तूबर, 2009 को आयोजित मीरा महोत्सव में गुजरात का डांडिया रास व गरबा रास दल प्रायोजित किया गया।

डब्ल्यूजेडसीसी ने अजमेर जिला प्रशासन की ओर से पुष्कर में 30 से 31 अक्तूबर, 2009 तक आयोजित पुष्कर मेले में गुजरात का मेवासी नृत्य, सिद्धि धमाल नृत्य, हरियाणा का हरियाणवी लोक नृत्य, मध्य प्रदेश का राई नृत्य तथा राजस्थान की भपंग वादन कला को कला प्रदर्शन हेतु प्रायोजित किया गया।

संस्कृति मंत्रालय की सांस्कृतिक उद्यमिता की पायलट योजना के अंतर्गत पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र द्वारा कठपुतली कलाकारों के कौशल को निखारने, कठपुतली बनाने तथा उसके प्रदर्शन का अवसर उपलब्ध करवाने के ध्येय से उदयपुर के शिल्पग्राम में 21 अक्तूबर, 2009 को कठपुतली निर्माण कार्यशाला का आयोजन किया। इसका समापन 14 दिसंबर, 2009 को किया गया। कार्यशाला में कठपुतली के क्षेत्र के विशेषज्ञों द्वारा अपने अनुभव प्रतिभागियों के साथ बांटे गए।

मद्रास क्राट फाउंडेशन ने डब्ल्यूजेडसीसी के सहयोग से चेन्नई के दक्षिण चित्र में गुजराती समारोह का आयोजन 17 से 27 दिसंबर, 2009 तक किया। इस समारोह में गुजरात के 21 कलाकारों ने अपनी प्रस्तुतियां दी।

प्रकाशन

द्विभाषी त्रैमासिक पत्रिका ''कला प्रयोजन'' का प्रकाशन करवाया गया जिसमें देश के कई जाने माने साहित्यकारों, संस्कृतिकर्मियों व विचारकों के आलेखों का प्रकाशन किया गया। केंद्र द्वारा ही चित्रकारों व मूर्तिकारों की प्रदर्शनी पर आधारित पुस्तिका ''अभिव्यक्ति'' का प्रकाशन करवाया गया।

प्रलेखन

लुप्त प्रायः कला शैलियों के संरक्षण और उन्हें प्रोत्साहित करने की दृष्टि से दुर्लभ कला और शिल्प का प्रलेखन कार्य किया गया। केंद्र द्वारा कठपुतली कला पर एक वृत्तचित्र का निर्माण किया गया जिसमें राजस्थान की परम्परागत कठपुतली कला के विभिन्न आयामों को दर्शाया गया। एक अन्य वृत्तचित्र ''माटी से सोना'' का निर्माण किया गया। मृणकला पर वेबसाइट तैयार की गई। प्रलेखन योजना में ही केंद्र दक्षिण पश्चिम गुजरात के डांग, नर्मदा, बड़ौदा, सुरेन्द्रनगर तथा कच्छ भुज के ''पारंपरिक पहनावे'' का प्रलेखन छायांकन भी किया गया।

चल रही गतिविधियां

डब्ल्यूजेडसीसी ने देशी तथा विदेशी पर्यटकों को सांस्कृतिक धरोहर के माध्यम से आकर्षित करने के लिए बागोर की हवेली में नियमित सांस्कृतिक संध्या धरोहर का आयोजन किया।

शिल्पदर्शन शिल्पग्राम में आयोजित की जाने वाली सतत गतिविधि है जिसमें केंद्र के सदस्य राज्यों के लोक कलाकारों व शिल्पकारों को कला प्रदर्शन हेतु आमंत्रित किया जाता है, जो शिल्पग्राम में आने वाले देशी–विदेशी पर्यटकों के समक्ष 15 दिवस के चक्र से अपनी कला का प्रदर्शन करते हैं।

डब्ल्यूजेडसीसी ने दुर्लभ और विलुप्त प्रायः कलाओं में युवा प्रतिभाओं को तराशने तथा उन्हें प्रोत्साहन देने के लिए उत्तराधिकार–गुरू शिष्य परंपरा प्रारंभ की है। डब्ल्यूजेडसीसी ने वर्ष के दौरान 18 योजनाओं पर गुरू शिष्य परंपरा के तहत शिक्षण प्रशिक्षण का कार्य किया।

शिल्पग्राम उत्सव

3.6.2

उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र

1985 में स्थापित स्वायत्तशासी संगठन उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र सोसायटी पंजीकरण अधिनियम, 1860 के अंतर्गत एक पंजीकृत सोसायटी है।

वर्ष 2009–10 के दौरान एनजेडसीसी ने कला तथा संस्कृति के सभी पहलुओं अर्थात् मेले तथा उत्सव, चित्रकला शिविर, रंगमंच कार्यशालाएं, लोक नृत्यों पर कार्यशालाएं आदि जैसे विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों/समारोहों का आयोजन किया।

प्रतिवेदनाधीन अवधि के दौरान एनजेडसीसी के नेतृत्व में आयोजित प्रमुख सांस्कृतिक कार्यकलाप निम्नवत थे :

- **पटियाला (पंजाब) और पिंजौर (हरियाणा) में बैसाखी आयोजन**

  एनजेडसीसी ने 11 अप्रैल, 2009 को पटियाला (पंजाब) में आयोजित बैसाखी उत्सव के दौरान सूफी संगीत कार्यक्रम प्रस्तुत किया। एनजेडसीसी ने यादविन्द्र गार्डन, पिंजौर (हरियाणा) में 14 अप्रैल, 2009 को हरियाणा पर्यटन विभाग, हरियाणा द्वारा आयोजित बैसाखी मेले में लोक नृत्यों का एक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। इसमें पंजाब, हरियाणा के लगभग 50 लोक कलाकारों और एक पंजाबी लोक गायक ने कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

- **धर्मशाला (हिमाचल प्रदेश) में ग्रीष्मोत्सव–2009**

  भाषा, कला और संस्कृति विभाग, हिमाचल प्रदेश, शिमला ने 30 और 31 मई, 2009 को धर्मशाला (हिमालच प्रदेश) में ग्रीष्मोत्सव–2009 आयोजित किया। इस मेले में एनजेडसीसी ने विभिन्न लोक नृत्यों को प्रायोजित किया।

- **पटियाला (पंजाब) में बच्चों के लिए विभिन्न कार्यशालाएं**

  एनजेडसीसी ने जून 2009 माह के दौरान विरसा विहार केंद्र, पटियाला में बच्चों के लिए पेंटिंग, भांगड़ा, गिद्दा (लाक नृत्य) और रंगमंच पर विभिन्न

बच्चों के लिए रंगमंच कार्यशाला

कार्यशालाओं का आयोजन किया। उपर्युक्त कार्यशालाओं में लगभग 300 बच्चों ने भाग लिया। छात्रों को यह प्रशिक्षण अपने क्षेत्र के विख्यात विशेषज्ञों द्वारा दिया गया था।

- **चम्बा (हिमालच प्रदेश) में भनोरी गोम्पा के 150 वर्ष पूरे होने के अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम**

  एनजेडसीसी ने भनोरी, चम्बा (हिमालच प्रदेश) में भाषा, कला और संस्कृति विभाग, हिमाचल प्रदेश, शिमला द्वारा भनोरी गोम्पा के 150 वर्ष पूरे होने के अवसर पर 15 से 17 जून, 2009 तक आयोजित किए गए समारोह में लोक नृत्य कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

- **पटियाला (पंजाब) में 'ग्रीष्मकालीन रंगमंच उत्सव'**

  एनजेडसीसी ने नाटकवाला–रंगमंच उत्साही समूह, पटियाला के सहयोग से विरसा विहार केंद्र, पटियाला में 26 से 28 जून, 2009 तक 'ग्रीष्मकालीन रंगमंच उत्सव' का आयोजन किया। इस उत्सव के दौरान बच्चों द्वारा तीन नाटकों–'कीमा मलकी', 'रानी कोकलन' और 'स्वाधीनता संग्राम' का मंचन किया गया।

- **चम्बा (हिमालच प्रदेश) में 'मिंजर मेला'**

  जिला प्रशासन, चम्बा और भाषा, कला और संस्कृति विभाग, हिमाचल प्रदेश, शिमला द्वारा चम्बा में 27 से 28 जुलाई, 2009 तक वाषिक 'मिंजर मेला' का आयोजन किया गया। एनजेडसीसी ने इस मेले में विभिन्न लोक नृत्यों और पंजाबी लोक गायक श्री बॉबी सिद्धू को प्रायोजित किया।

- **श्रावणी मेला, जोगेश्वर धाम (उत्तराखण्ड)**

  जिला प्रशासन, अल्मोड़ा और संस्कृति विभाग, उत्तराखण्ड ने 30 जुलाई, 2009 और 8 से 11 अगस्त, 2009 को जोगेश्वर धाम (उत्तरखण्ड) में श्रावणी मेला का आयोजन किया। एनजेडसीसी ने इस मेले में विभिन्न लोक नृत्यों का प्रायोजन किया।

- **चंडीगढ़ (संघ राज्य क्षेत्र) में तीज उत्सव**

  एनजेडसीसी ने नगर निगम, संघ राज्य क्षेत्र चंडीगढ़ द्वारा 1 अगस्त, 2009 को आयोजित तीज उत्सव में लोक नृत्य प्रस्तुत किए।

- **लुधियाना (पंजाब) में मेला ध्यान दा**

  सांस्कृतिक कार्य विभाग, पंजाब और पंजाब कला परिषद, चंडीगढ़ ने लुधियाना (पंजाब) में 30 और 31 अगस्त, 2009 को मेला ध्यान दा आयोजित किया। एनजेडसीसी ने इस मेले में विभिन्न लोक नृत्यों का प्रायोजन किया।

- **जेजू द्वीप, दक्षिण कोरिया में तीसरा डेलफिक खेल 2009 में भागीदारी सहित कोरिया गणतंत्र में ''भारत महोत्सव''**

  संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार ने 17 से 21 सितम्बर, 2009 के दौरान दक्षिण कोरिया गणतंत्र के बूसान, नामी द्वीप और सियोल में भारत महोत्सव का आयोजन किया और 9 से 15 सितम्बर, 2009 के बीच कोरिया गणतंत्र के जेजू द्वीप में आयोजित तीसरे डेलफिक खेल–2009 में भी हिस्सा लिया। इस दोहरे आयोजन के लिए एनजेडसीसी को नोडल एजेंसी बनाया गया था।

  एनजेडसीसी ने 49 कलाकारों की भागीदारी सहित इस दोहरे आयोजन को सफलतापूर्वक आयोजित किया। भारत ने तीसरे डेलफिक खेल की विभिन्न कला प्रतियोगिताओं में एक स्वर्ण पदक, दो रजत पदक और पांच कांस्य पदक तथा तीन लॉरेल पुरस्कार प्राप्त किए। भारत को 54 देशों में तीसरा स्थान मिला। बूसान, नामी द्वीप और सिओल में आयोजित भारत महोत्सव एक सफल कार्यक्रम रहा और इसकी सभी ने प्रशंसा की।

- **श्रीनगर (जम्मू और कश्मीर) में कश्मीरी /उर्दू /पहाड़ी और गोजरी नाट्य मुशायरा**

  जम्मू और कश्मीर कला, संस्कृति और भाषा अकादेमी, श्रीनगर ने एनजेडसीसी के सहयोग से 9 से 16 सितम्बर, 2009 तक **श्रीनगर (जम्मू और कश्मीर) में कश्मीरी/उर्दू/पहाड़ी और गोजरी नाट्य मुशायरा आयोजित किया। इस मुशायरे में लगभग 125 कवियों ने भाग लिया।**

- **फरीदकोट (पंजाब) में 24वाँ बाबा फरीद आगमन पर्व**

  जिला प्रशासन, फरीदकोट और फरीदकोट जिला सांस्कृतिक संस्था ने फरीदकोट (पंजाब) में 24वें बाबा फरीद आगमन पर्व का आयोजन किया। एनजेडसीसी ने 22 सितम्बर, 2009 को इस अवसर पर लोक नृत्यों का प्रायोजन किया।

- **भूमटी और बताल (हिमाचल प्रदेश) में दशहरा महोत्सव**

  जिला प्रशासन, सिरमौर और भाषा, कला और संस्कृति विभाग, हिमाचल प्रदेश, शिमला ने 27 और 28 सितम्बर, 2009 को भूमटी और बताल में दशहरा महोत्सव आयोजित किया। एनजेडसीसी ने इस महोत्सव में विभिन्न लोक नृत्यों का प्रायोजन किया।

- **अल्मोड़ा (उत्तराखण्ड) में दशहरा महोत्सव**

  जिला प्रशासन, अल्मोड़ा और संस्कृति विभाग,

उत्तराखण्ड ने 28 सितम्बर, 2009 को अल्मोड़ा में दशहरा महोत्सव आयोजित किया। एनजेडसीसी ने इस महोत्सव में विभिन्न लोक नृत्यों का प्रायोजन किया।

- **रूपनगर (पंजाब) में सरस मेला**

  उत्तरी क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र ने जिला प्रशासन, रूपनगर (पंजाब) के सहयोग से 1 से 12 अक्तूबर, 2009 के बीच रूपनगर, पंजाब में सरस मेले के दौरान सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया। लगभग 150 लोक नृत्य कलाकारों ने लोक नृत्यों का जीवंत प्रदर्शन किया जैसे गिद्दा, भांगड़ा, जिंदुआ आदि (पंजाब), घूमर, धमाल, खोडिया आदि (हरियाणा), कालबेलिया/भवाई (राजस्थान), मयूर नृत्य और बरसाने की होली (उ. प्र.), डांडिया और गर्बा (गुजरात) और बीहू (असम) का प्रदर्शन किया। एनजेडसीसी को 8.20 लाख रु. (आठ लाख बीस हजार रुपए) का राजस्व प्राप्त हुआ।

- **स्पिक मेके – पटियाला (पंजाब) में उत्तर क्षेत्र सम्मेलन**

  उत्तरी क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र ने पटियाला में उपरोक्त उल्लिखित सम्मेलन के दौरान फुलकारी, भांगड़ा, गिद्दा और टेराकोटा की कार्यशालाएं आयोजित कीं तथा लोक नृत्य जैसे डोगरी (जम्मू और कश्मीर), बम लहरी (हरियाणा), झूमर, गिद्दा (पंजाब), मुखौटा नृत्य (हिमाचल प्रदेश) के जीवंत प्रदर्शन भी किए गए।

- **जयपुर (राजस्थान) में 16वां लोक रंग महोत्सव**

  उत्तरी क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र ने जयपुर में जवाहर कला केन्द्र, जयपुर के सहयोग से 16वां लोक रंग महोत्सव आयोजित किया। लगभग 100 नृत्य कलाकारों ने गनगौर नृत्य और काठी (मध्य प्रदेश), भांगड़ा, गिद्दा, जिंदुआ आदि (पंजाब), डोगरी (जम्मू और कश्मीर), नागा नृत्य (नागालैंड) और मयूर भंज छाउ (पश्चिम बंगाल) जैसे लोक नृत्य प्रदर्शित किए।

- **टैगोर थिएटर, चंडीगढ़ में राष्ट्रीय थिएटर महोत्सव – 2009**

  उत्तरी क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र (एनजेडसीसी), उत्तरी मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र (एनसीजेडसीसी) इलाहाबाद और हरियाणा के सूचना एवं जनसंपर्क विभाग द्वारा टैगोर थिएटर, सेक्टर 18, चंडीगढ़ में 19 से 25 अक्तूबर, 2009 के बीच राष्ट्रीय थिएटर महोत्सव – 2009 संयुक्त रूप से आयोजित किया। एनजेडसीसी ने इस महोत्सव के दौरान राजेश जोशी की कहानियों हम सफर और फूल नौटंकी बिलास पर आधारित नाटकों का प्रायोजन किया। दर्शकों से अच्छी प्रतिक्रिया मिली।

- **कालाग्राम, चंडीगढ़ में पहला चंडीगढ़ राष्ट्रीय दस्तकारी मेला**

  उत्तरी क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र के सहयोग से संघ राज्य क्षेत्र प्रशासन चंडीगढ़ ने 24 अक्तूबर, 2009 से 2 नवम्बर, 2009 के बीच कालाग्राम, चंडीगढ़ में पहले चंडीगढ़ राष्ट्रीय दस्तकारी मेले का आयोजन किया। इस मेले का केन्द्रित राज्य जम्मू और कश्मीर था। माननीय राज्यपाल, पंजाब और एनजेडसीसी के अध्यक्ष डॉ. एस.एफ. रॉड्रिग्स (सेवानिवृत्त) ने 24 अक्तूबर, 2009 को मेले का उद्घाटन किया। इस मेले में पूरे भारत से 150 से अधिक दस्तकार आए। एनजेडसीसी ने सुबह 10.00 बजे से शाम 7.30 बजे तक प्रतिदिन एक सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया, जिसमें सम्पूर्ण भारत से आए 250 से अधिक लोक नर्तकों ने अपनी कला का प्रदर्शन किया। लगभग 5.30 लाख लोग इस मेले में आए।

- **रेणुका महोत्सव और किन्नौर महोत्सव –2009 (हिमाचल प्रदेश)**

  एनजेडसीसी ने भाषा, कला और संस्कृति विभाग, हिमाचल प्रदेश, शिमला के सहयोग से 1 और 2 नवम्बर, 2009 के दौरान में रेणुका जी में रेणुका महोत्सव और रेकॉन्ग पियो में किन्नौर महोत्सव–2009 आयोजित किया। एनजेडसीसी ने इन महोत्सवों में लोक नृत्य प्रस्तुत किए।

- **पिथौरागढ़ में छलिया महोत्सव और पौढ़ी में शारदोत्सव (उत्तराखण्ड)**

  एनजेडसीसी के साथ संस्कृति विभाग, उत्तराखण्ड ने पिथौरागढ़ में 5 से 9 नवम्बर, 2009 के दौरान छलिया महोत्सव और साथ ही 10 से 12 नवम्बर, 2009 के दौरान पौढ़ी में शारदोत्सव का भी आयोजन किया। एनजेडसीसी ने इन उत्सवों में रंगारंग लोक नृत्य प्रस्तुत किए गए।

- **श्रीनगर (जम्मू और कश्मीर) में लोक थिएटर महोत्सव**

  एनजेडसीसी ने जम्मू और कशमीर कला, संस्कृति और भाषा अकादमी, श्रीनगर के साथ मिलकर 16 से 23 नवम्बर, 2009 के दौरान श्रीनगर में लोक थिएटर महोत्सव का आयोजन किया। इस महोत्सव में 21 लोक थिएटर समूहों ने हिस्सा लिया।

- **कुरुक्षेत्र (हरियाणा) में कुरुक्षेत्र उत्सव–गीता जयंती समारोह – 2009**

  एनजेडसीसी ने कुरुक्षेत्र विकास मंडल और हरियाणा सरकार के सहयोग से 24 से 28 नवम्बर, 2009 के बीच **कुरुक्षेत्र में** कुरुक्षेत्र उत्सव गीता जयंती समारोह–2009 **आयोजित किया। हमने ब्रह्म**

सरोवर, कुरुक्षेत्र में सांस्कृतिक कार्यक्रम जैसे श्री राम भारतीय कला केन्द्र द्वारा नृत्य नाटिका कृष्णा, अग्निहोत्री बंधुओं द्वारा भजन संध्या, डॉक्टर ममता जोशी द्वारा सूफी गायन, सावरी बंधुओं द्वारा कव्वाली और वडाली बंधुओं द्वारा सूफी गायन कार्यक्रम का आयोजन किया। इस महोत्सव के हिस्से के रूप में 18 से 28 नवम्बर, 2009 के बीच एक दस्तकारी मेला और लघु चित्रकला शिविर/चित्रकार शिविर तथा रंगोली शिविर का भी आयोजन किया गया, जिसमें लाखों लोग आए।

कुरूक्षेत्र उत्सव–गीता जयंती

- **चंडीगढ़ कार्निवल – 2009 चंडीगढ़**

  एनजेडसीसी ने संघ राज्य क्षेत्र प्रशासन, चंडीगढ़ के सहयोग से 28 और 29 नवम्बर, 2009 के दौरान चंडीगढ़ के चंडीगढ़ कार्निवल–2009 के दौरान सीधी धमाल, डांगी (गुजरात), कालबेलिया (राजस्थान), मयूर नृत्य (उ. प्र.) पुरुलिया छाउ (पश्चिम बंगाल), पंथी (छत्तीसगढ़) और भांगड़ा (पंजाब) आदि जैसे लोक नृत्यों का रंगारंग प्रदर्शन किया।

- **भटिंडा (पंजाब) में 6वां विरासत मेला**

  एनजेडसीसी ने सांस्कृतिक कार्य विभाग, पंजाब और मालवा हेरिटेज फाउंडेशन, भटिंडा के सहयोग से 4 से 6 दिसम्बर, 2009 के दौरान भटिंडा (पंजाब) में 6वें विरासत मेले के दौरान लोक नृत्यों का प्रदर्शन किया।

- **जम्मू (जम्मू और कश्मीर) में लोक संगीत और नृत्य उत्सव**

  एनजेडसीसी ने जम्मू और कश्मीर कला, संस्कृति और भाषा अकादमी, जम्मू के सहयोग से जम्मू (जम्मू और कश्मीर) के लोक संगीत और नृत्य कार्यक्रम का आयोजन 15 से 21 दिसम्बर, 2009 के दौरान किया। इस महोत्सव में लगभग 125 कलाकारों ने भाग लिया।

- **गुवाहाटी (असम) में कृषक समारोह**

  एनजेडसीसी ने सांस्कृतिक कार्य विभाग और कृषि विभाग, असम के सहयोग से 19 और 20 दिसम्बर, 2009 के दौरान गुवाहाटी, असम में कृषक समारोह के दौरान लोक नृत्यों का प्रदर्शन किया।

- **देहरादून (उत्तराखण्ड) में विरासत महोत्सव**

  एनजेडसीसी ने संस्कृति विभाग, उत्तराखण्ड और रीच, देहरादून के सहयोग से 20 से 22 दिसम्बर, 2009 के दौरान देहरादून, उत्तराखण्ड के विरासत महोत्सव में पंजाब, जम्मू और कश्मीर, हरियाणा के लोक नृत्य तथा पंजाब के धाधी गायन का आयोजन किया।

- **नई दिल्ली में गणतंत्र दिवस आयोजन**

  भारत सरकार, संस्कृति मंत्रालय द्वारा एनजेडसीसी को नई दिल्ली में गणतंत्र दिवस परेड 2010 में भाग लेने के लिए आए पूर्वोत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, दीमापुर और दक्षिणी क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, तंजौर से आए बच्चों के दल को ठहराने, खाने–पीने की व्यवस्था और स्थानीय परिवहन का कार्य सौंपा गया था। एनजेडसीसी द्वारा 3 से 30 जनवरी, 2010 के दौरान अनिवार्य व्यवस्था गांधी स्मृति और दर्शन समिति परिसर, राजघाट के पास, नई दिल्ली में की गई थी।

- **सूरजकुंड, (हरियाणा) में 24वां सूरजकुंड शिल्प मेला**

  सूरजकुंड, फरीदाबाद (हरियाणा) में वार्षिक अंतरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त मेला एनजेडसीसी के सहयोग से पर्यटन और संस्कृति विभाग, हरियाणा द्वारा आयोजित किया जाता है। 24वां सूरजकुंड दस्तकारी मेला 1 से 15 फरवरी, 2010 तक आयोजित किया गया। इस वर्ष महोत्सव के दौरान एनजेडसीसी ने कई सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। जिसमें शामिल हैं डॉक्टर ममता जोशी द्वारा सूफी गायन, जसपाल भट्टी और उनके दल–श्रीमती सविता भट्टी द्वारा हास्य नाटिका तथा श्री सुनील ग्रोवर के साथ श्री रिक्की गोल्ड द्वारा पंजाबी गाने, अज़ीज कुरेशी द्वारा निर्देशित हास्य नाटक डिप्लोमा इन करप्शन और जयपुर के सावरी बंधुओं द्वारा कव्वाली। एनजेडसीसी द्वारा आयोजित इन सांस्कृतिक कार्यक्रमों को बड़ी संख्या में लोगों ने देखा और सुना तथा उनकी प्रशंसा की।

- **पूर्वोत्तर राज्यों का उत्सव :**

  अमृतसर (पंजाब) में ऑक्टेव–2010 अमृतसर

  एनजेडसीसी ने पूर्वोत्तर राज्यों (असम, मेघालय, त्रिपुरा, मणिपुर, मिजोरम, नागालैंड, अरुणाचल प्रदेश और सिक्किम) का महोत्सव ऑक्टेव–2010 अमृतसर का आयोजन 13 से 17 फरवरी, 2010 के बीच एनईजेडसीसी, दीमापुर, साहित्य अकादमी (विद्वानों की राष्ट्रीय अकादमी), राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय और

ट्राइबल को–ऑपरेटिव मार्केटिंग डेवलपमेंट फेडरेशन ऑफ इंडिया लि. (ट्राइफेड) के सहयोग से पूर्वोत्तर की समृद्धि को मनाने हेतु किया। महोत्सव का स्थल खालसा कॉलेज, अमृतसर का विशाल परिसर था। जहां 100 वर्ष से अधिक पुरानी महाविद्यालय की भव्य इमारत की पृष्ठभूमि में एक सुंदर मंच बनाया गया था। पूर्वोत्तर राज्यों के कलाकारों ने पांच दिन तक लोक नृत्यों का सुंदर मंचन किया, पारंपरिक वेशभूषा शो और फ्यूजन संगीत, कोरल गायन, रॉक शो प्रस्तुत किए गए। साहित्य अकादमी द्वारा पुस्तक प्रदर्शनी, ट्राइफेड द्वारा दस्तकारी प्रदर्शनी आयोजित की गई, जिसमें राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय ने महोत्सव के दौरान पूर्वोत्तर राज्यों के कुछ नाटक मंचित किए।

ऑक्टेव–2010, अमृतसर

इस उत्सव का उद्घाटन पंजाब के राज्यपाल श्री शिवराज विश्वनाथ पाटिल ने 13 फरवरी, 2010 को किया, जो एक सफल आयोजन रहा। कलाकारों की प्रस्तुतियां केवल उत्सव के मुख्य स्थल तक सीमित नहीं थीं। अंतरराष्ट्रीय सीमा पर एक सीमावर्ती जिला होने के कारण एनजेडसीसी मुख्य स्थल के अलावा अनेक स्थानों पर कलाकारों के प्रदर्शन आयोजित करने के लिए सेना और सीमा सुरक्षा बल के साथ मिलकर कार्य करता है। एनजेडसीसी द्वारा 14 फरवरी, 2010 को सीमा सुरक्षा बल के सहयोग से प्रसिद्ध रिट्रीट सेरेमनी के समय अंतरराष्ट्रीय वाघा सीमा पर एक प्रभावशाली प्रस्तुतीकरण किया गया, जिसमें दोनों ओर के गेट पर हर शाम कार्यक्रम को देखने हजारों की संख्या में भारत और पाकिस्तान के दर्शक आए। 14 फरवरी, 2010 की शाम यादगार शाम रही जब सीमा के भारतीय पक्ष पर भारत और बाहर से 12,000 से 15,000 पर्यटक आए, जिन्हें पूर्वोत्तर राज्यों के कलाकारों द्वारा आमंत्रित किया गया था। इसी प्रकार महोत्सव के अन्य दिनों में कलाकारों ने स्वर्ण मंदिर, जलियांवाला बाग और इस ऐतिहासिक शहर के अन्य स्थानों पर प्रस्तुतियां की। कलाकारों ने कार्निवल में हिस्सा लिया और विश्व प्रसिद्ध किला रायपुर खेल उत्सव के 75वें संस्करण (जिसे ग्रामीण ओलम्पिक के नाम से जाना जाता है) में 19 फरवरी 2010 को किला रायपुर, लुधियाना में भी भाग लिया।

- **कला ग्राम (संघ राज्य क्षेत्र चंडीगढ़) में राजस्थानी कला और दस्तकारी महोत्सव–2010**

एनजेडसीसी ने एक गैर सरकारी संगठन राजस्थान परिषद, चंडीगढ़ और उद्योग विभाग, राजस्थान सरकार, जयपुर के सहयोग से कलाग्राम, चंडीगढ़ में 18 से 26 फरवरी, 2010 के बीच राजस्थानी कला और दस्तकारी महोत्सव–2010 का आयोजन किया, जिसका उद्घाटन हरियाणा के राज्यपाल श्री जगन्नाथ पहाड़िया ने 18 फरवरी, 2010 को किया। लगभग 140 दस्तकारों ने महोत्सव के दौरान अपने उत्पाद प्रदर्शित किए, जहां एनजेडसीसी ने मन को आंदोलित कर देने वाले राजस्थानी लोक नृत्य, लोक संगीत, लोक वाद्य और गायन के कार्यक्रम प्रस्तुत किए। इस महोत्सव में प्रतिदिन 15,000 से 20,000 दर्शक आए।

3.6.3

दक्षिण क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र

पूरे देश के अलग–अलग कलाकारों द्वारा विभिन्न क्षेत्रों के सांस्कृतिक कार्यक्रम और कलात्मक निष्पादन लोगों को कार्यक्रमों का एक विस्तृत परिदृश्य प्रस्तुत करते हैं। दक्षिण क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र (एसज़ेडसीसी) द्वारा विभिन्न सांस्कृतिक संगठनों और मंदिरों में अनिवार्यता के आधार पर स्वयं कार्यक्रम लिए जाते हैं और कार्यक्रमों का प्रायोजन किया जाता है। सांस्कृतिक एजेंसियों को प्रोत्साहन देने के लिए दक्षिण क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र सहयोगात्मक कार्यक्रमों को आयोजित करने के लिए एक सीमित तरीके से वित्तीय संसाधनों का योगदान देता है। केन्द्र द्वारा आयोजित किए जाने वाले कार्यक्रमों के प्रकार हैं अनुसूची कार्यक्रम, सहयोगात्मक कार्यक्रम, मुख्यालय कार्यक्रम, राज्य राजधानी कार्यक्रम और सांस्कृतिक आदान–प्रदान कार्यक्रम।

सदस्य राज्यों के संस्कृति मंत्रालयों के सचिवों के साथ उस सदस्य राज्य के कला एवं संस्कृति निदेशालयों के परामर्श से संस्तुति के अनुसार वर्ष के आरंभ में अनुसूचित कार्यक्रमों की अनुसूची तैयार की जाती है। लोक कला परंपरा पर उचित बल देते हुए संगीत, नृत्य और ललित कला पर ध्यान दिया जाता है। समान कार्यकलापों वाले संगठनों की सहक्रियाओं का लाभ पाने के लिए केन्द्र द्वारा ललित कला अकादेमी, संगीत नाटक अकादेमी और साहित्य अकादेमी तथा राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय एवं ऐसे ही अन्य संगठनों के साथ सहयोगात्मक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। संगीत और नृत्य तथा मंदिरों के बीच वर्षों पुराने संबंध के प्रतीक के रूप में केन्द्र द्वारा बृहदेश्वर मंदिर, तंजौर में युवा कलाकारों द्वारा कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है और मुख्यालय कार्यक्रम के तहत हर माह अपने परिसर में केन्द्र द्वारा दुर्लभ लोक कलाओं को लोकप्रिय बनाने के लिए लोक कलाओं का प्रदर्शन किया जाता है। वर्ष के दौरान इनका आयोजन जाने–माने सांस्कृतिक संगठनों या व्यक्तियों या अनिवार्यता बनने पर नवाचारी प्रस्ताव प्राप्त होने के बाद किया जाता हैं। शहरी क्षेत्रों में ग्रामीण लोक कला को लोकप्रिय बनाने के उद्देश्य से केन्द्र में भारतीय विद्या भवन, चेन्नई में राज्य राजधानी कार्यक्रम नामक कार्यक्रमों की एक विशेष श्रृखला आरंभ की है। ये कार्यक्रम हर माह के प्रत्येक दूसरे और चौथे शनिवार को आयोजित किए जाते हैं।

एसज़ैडसीसी संगीत, नृत्य और मंदिर के बीच के पुराने संबंधों के प्रतीक के रूप में कार्यकमों का आयोजन करता है।

संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा वित्तपोषित राष्ट्रीय सांस्कृतिक आदान–प्रदान कार्यक्रम के तहत अन्य क्षेत्रों के कलाकारों को दक्षिणी क्षेत्र में कला प्रदर्शन के लिए आमंत्रित किया जाता है। इसी प्रकार दक्षिणी क्षेत्र के कलाकारों को अन्य क्षेत्रों में आयोजित होने वाले कार्यक्रमों में कला प्रदर्शन के लिए भेजा जाता है। यह हमारे बहुभाषी राष्ट्र की भाषाओं में बाधा को दूर करने के लिए सांस्कृतिक प्रतिभा सम्पन्न व्यक्तियों द्वारा किया जाने वाला एक उपाय है। यह कार्यक्रम भावनात्मक रूप से लोगों को भाषा और क्षेत्र की सीमाओं से परे होकर जोड़ता है। उपरोक्त के अलावा केन्द्र द्वारा गुरू शिष्य परंपरा योजना, थिएटर जीर्णोद्धार योजना, युवा प्रतिभावान कलाकार, लोक तरंग, एनई कार्यक्रम और प्रशिक्षण कक्षाओं का आयोजन किया जाता है।

शिक्षा की गुरू शिश्य परंपरा प्रणाली को बनाए रखने का महत्व समझते हुए तंजौर स्थित केन्द्र में पारंपरिक संगीत, शास्त्रीय नृत्य और ललित कला के शिक्षण हेतु नियमित कक्षाओं का आयोजन किया जाता है। प्रशिक्षण कक्षाएं वायलिन, वीणा और कर्नाटिक गायन, संगीत, भरतनाट्यम के लिए भी आयोजित की जाती हैं, इनके साथ ही मृदंगम जैसे वाद्य भी होते हैं। जाने–माने गुरू, जो अपनी उत्कृष्टता सिद्ध कर चुके हैं, सप्ताह में दो बार उपरोक्त कलाओं की सैद्धांतिक और अभ्यास कक्षाओं में पढ़ाते हैं। दृश्य कलाएं जैसे चित्रकला और आरेख बनाना भी केन्द्र में सिखाया जाता है। लगभग 200 छात्र इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेते हैं।

केंद्र में अब तक विभिन्न सदस्य राज्यों के लगभग 3700 कलाकार पंजीकृत किए गए हैं। एसज़ेडसीसी कलाकारों को अवसर प्रदान करने, ग्रामीण कलाकारों को शहरी क्षेत्र में लाने, कलाकारों की प्रतिभा को निखारने और लुप्त तथा लुप्त होते जा रहे कला रूपों के पुनर्जीवन और अधिक आदिवासी कार्यक्रमों को शामिल करने के लिए भिन्न–भिन्न दृष्टिकोण अपनाती है।

कार्यक्रम

त्रिची में नियमित थिएटर एक नवाचारी कार्यक्रम मॉडल है जिसे एसजेडसीसी, तंजावुर ने त्रिची में आरआर सभा के सहयोग से एसजेडसीसी के सदस्य राज्यों के मृत और समाप्त होने वाले कलारूपों को नया जीवन देने पर केन्द्रित किया है और हर माह के पहले और तीसरे शनिवार को नियमित थिएटर नाटक मंचित किए जाते हैं। लगभग 79 थिएटर समूह एसजेडसीसी में पंजीकृत है। इस मॉडल को आरंभ करने के जरिए इन निष्क्रिय थिएटरों को नया जीवन देने और पारंपरिक तथा ऐतिहासिक नाटकों को तैयार करने का आदर्श प्रयास किया गया है। इस मॉडल को प्रेस द्वारा व्यापक कवरेज मिला और हजारों थिएटर प्रेमियों तथा आलोचकों ने इसमें हिस्सा लिया तथा एक पुस्तक ''नानूम इन्नूडाइ नाटकंगल (मैं और मेरा थिएटर)'' श्री के कृष्णामूर्ति द्वारा लिखी गई है जिसमें इस कार्यक्रम में मंचित नाटकों की समीक्षा है।

एसजेडसीसी ने ग्रामीण लोक कला को शहरी क्षेत्र में लाने के उद्देश्य से वर्ष के दौरान नियमित राज्य राजधानी कार्यक्रम का आयोजन किया। इस नवाचार मॉडल ने कला की बेहतर परख के लिए शहरी आबादी को ग्रामीण क्षमता से परिचित कराया है। इस मॉडल का उद्देश्य नियत स्थान पर नियमित अंतराल पर कलाकारों को सपाट रूप प्रदान करना है ताकि कला प्रेमी और आयोजक कलाकारों को अवसर प्रदान कर सकें।

एसजैडसीसी, तंजावुर ने संस्कृति विभाग, तमिलनाडु सरकार के सहयोग से 27 जून, 2009 से 28 जून, 2009 तक थेनी में मेगा मलै महोत्सव आयोजित किया। कर्नाटक के महिला थप्पाटम, आंध्र प्रदेश के मठुरी, से कुल मिलाकर 30 कलाकारों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया।

एसजैडसीसी, तंजावुर द्वारा कला और संस्कृति विभाग, तमिलनाडु सरकार के सहयोग से 13 जून, 09 से 14 जून, 09 तक एलागिरी, जमुना माराथुर में एलागिरी महोत्सव आयोजित किया गया। इस महोत्सव के दौरान तमिलनाडु कडगम, कवाडी, कोकालीकटाई, सेवईटम, देवरत्तम, नकली घोड़ों और थैरुकोठु ने हिस्सा लिया।

एसजैडसीसी, तंजावुर ने तमिलनाडु सरकार, म्यूज़िक कॉलेज, चेन्नई के सहयोग से 06.07.09 से 08.07.09 तक नागापटिनम जिले में ए/एम चटाईनाठर मंदिर, सिरकाज़ी में सिरकाज़ी तमीज़िशाई मुवार महोत्सव आयोजित किया। दुग्ध और डेयरी विकास मंत्री माननीय श्री यू माठीवनन ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। तमिज़िशाई मुवार फोटो राधा यात्रा के दौरान 150 कलाकारों के अलावा 49 भरतनाट्यम कलाकारों, 104 गायकों, 60 नादस्वरम, 8 वायलिन वादकों, 6 वीणा वादकों, 10 विलुपट्टू और 6 देवारा ईसाई कलाकारों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम की प्रमुख विशेषता 500 कलाकारों द्वारा तमिल संगीत वादन थी। इस तीन दिवसीय महोत्सव में 2000 से 3000 श्रोता उपस्थित थे।

एसजैडसीसी, तंजावुर ने ने कलाईवनार अरागम कोट्रालम में जिला प्रशासन, तिरुनेलवैली के सहयोग से 25.07.09 से 1.08.09 के बीच सरल महोत्सव का आयोजन किया। यह एक प्रमुख राष्ट्रीय सांस्कृतिक आदान–प्रदान कार्यक्रम है जिसे तमिलनाडु में आयोजित किया जाता है, जिसमें राजस्थान से घूमर और छारी जैसे नृत्य तथा उड़ीसा से संबलपुरी और ओडीसी नृत्य प्रस्तुत करने के लिए 98 कलाकारों ने कला का प्रदर्शन किया।

15 अगस्त, 2009 को स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर इस केन्द्र ने राजभवन, चेन्नई में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम में भरतनाट्यम, टप्पाटम और बीसू कमसाले कलारूपों का प्रदर्शन किया गया। तमिलनाडु के राज्यपाल और अन्य अतिविशिष्ट व्यक्तियों के साथ आम जनता ने कार्यक्रम में भाग लिया।

एसजैडसीसी, तंजावुर ने जिला प्रशासन, कन्नूर, केरल सरकार के साथ मिलकर पय्यानूर में 27.08.09 से 29.08.09 तक राष्ट्रीय ओणम महोत्सव 2009 का आयोजन किया। कन्नूर जिले के जिला कलेक्टर ने उत्सव का उद्घाटन किया। कलारूप जैसे केरल का ओणम, संगीत गीत, कलरीपयाट्टू, तमिलनाडु के कडगम, कवाडी और टप्पाटम, आंध्र प्रदेश के मठूरी और बोनालू का भव्य प्रदर्शन किया गया।

एसजैडसीसी, तंजावुर ने ''भारत के छवि निर्माताओं का कौशल विकास'' पर राज्य स्तरीय गोष्ठी का दो दिवसीय

आयोजन 11 और 12 सितम्बर, 2009 को पर्यटन विभाग, तमिलनाडु सरकार के सहयोग से शास्त्र विश्वविद्यालय, तंजावुर और कुम्बकोणम के पर्यटन गाइडों और छात्रों के एक अनोखे कार्यक्रम के रूप में किया। कार्यक्रम के दौरान केन्द्र द्वारा उड़ीसा के गोटीपुआ और गुजरात के डांगी नृत्य भी प्रस्तुत किए गए।

एसजैडसीसी, तंजावुर ने नाट्य उत्सव, 2009 की 42वीं वर्षगांठ के अवसर पर तंजाई कावेरी अन्नाई कलामंड्रम के सहयोग से थिएटर जीर्णोद्धार योजना के तहत 15 से 28 अगस्त, 2009 के बीच रामनाथन हॉल, तंजावुर में कार्यक्रम आयोजित किया। इन दिनों के दौरान 25 से अधिक सामाजिक और ऐतिहासिक नाटक मंचित किए गए। एसजैडसीसी के श्री मनोहर टेई द्वारा हिन्दी नाटक ''शंकर रमन'' प्रस्तुत किया गया जो विशेष आकर्षण था।

एसजैडसीसी ने भारतीय तेलुगु एसोसिएशन, चेन्नई के सहयोग से 9 अक्तूबर से 11 अक्तूबर, 2009 के बीच वल्लूवारकोटम, चेन्नई में दक्षिण भारतीय सांस्कृतिक उत्सव आयोजित किया। पूरे दक्षिण भारतीय राज्यों से 400 सांस्कृतिक कलाकारों ने महोत्सव के दौरान लंबाडी नृत्य, गुसाडी, पेरिनी शिवतांडवम, आंध्रनाट्यम प्रस्तुत किया।

तमिलनाडु के राज्यपाल माननीय श्री सुरजीत सिंह बरनाला ने दरबार हॉल, चेन्नई में 21 अक्तूबर, 2009 को एस मुटिया द्वारा एक अंग्रेजी पुस्तक, जिसमें लगभग 300 पृष्ठ है, जारी की जिसका नाम है राजभवन और तमिलनाडु। यह राज्य के राज्यपालों के भवन का एक चित्रात्मक इतिहास है। माननीय श्री माइक नेठावरीनाकिस, डिप्टी हाई कमिशनर, यूके, दक्षिण भारत को इस पुस्तक की पहली प्रति तमिलनाडु के माननीय राज्यपाल ने प्रस्तुत की। तमिलनाडु के पूर्व राज्यपाल डॉ. के एलेक्सेंडर ने भी कार्यक्रम में भाग लिया।

एसजैडसीसी ने लक्षद्वीप कला अकादमी के साथ मिलकर द्वीप महोत्सव (अटोलू इडियू 2009) का आयोजन 12.10.09 से 18.10.09 तक 14 वर्ष बाद किया। महोत्सव के दौरान एक आकर्षक कोरियाग्राफी प्रस्तुतीकरण किया गया जिसमें 119 कलाकारों ने 10 लोक कलारूपों के माध्यम से लक्षद्वीप के 4 द्वीपों में अपनी कला का प्रदर्शन किया।

एसजैडसीसी ने ''द हिन्दू'' नामक राष्ट्रीय समाचार पत्र के साथ 15 नवम्बर, 2009 को त्रिची में हिन्दू युवा विश्व कला चित्र प्रतियोगिता का आयोजन किया। इसमें पूरे तमिलनाडु के 58 विद्यालयों से आए 480 बच्चों ने हिस्सा लिया। दक्षिण क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र के निदेशक ने इस कार्यक्रम में भाग लिया और 20 पुरस्कार विजेताओं को सम्मानित किया।

3.6.4

पूर्व क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द

पूर्व क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र द्वारा सांस्कृतिक आदान–प्रदान कार्यक्रमों के तहत अपने मुख्यालय, सदस्य राज्यों तथा देश के अन्य क्षेत्रों में स्वयं द्वारा एवं दूसरों के साथ मिलकर शुरू किए कार्यक्रमों में अत्यधिक वृद्धि हुई है। संस्कृति मंत्रालय द्वारा थियेटर कायाकल्पन स्कीम, राष्ट्रीय सांस्कृतिक आदान–प्रदान कार्यक्रम, गुरू–शिष्य परम्परा, दस्तावेजीकरण, युवा प्रतिभा खोज एवं पूर्वोत्तर उत्सव के तहत प्रायोजित कार्यकलापों को पूरे जोश–खरोश के साथ आयोजित किया गया। पूर्व क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र (ईजेडसीसी), जिसमें असम, बिहार, झारखंड, मणिपुर, उड़ीसा, सिक्किम, त्रिपुरा, पश्चिम बंगाल राज्य तथा संघ शासित प्रदेश अंडमान व निकोबार द्वीप समूह को शामिल किया गया है, भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय एकीकरण कार्यक्रम के एक भाग के रूप में राज्यों एवं संघ शासित प्रदेशों को सांस्कृतिक रूप से जोड़ने के दृष्टिगत स्थापित किए गए ऐसे सात क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्रों में से एक है।

अप्रैल से दिसम्बर, 2009 की अवधि के दौरान आयोजित महत्वपूर्ण स्पर्धाओं को नीचे दर्शाया गया है:

पूर्व क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र ने गुरू–शिष्य परम्परा स्कीम के तहत श्रीजनी, शिल्पग्राम, शांतिनिकेतन में 26 व 27 मई, 2009 को गुरूओं एवं शिष्यों द्वारा अंतिम मंच कार्यक्रमों का आयोजन किया। डॉ0 रजत कांत राय, कुलपति, विश्व भारती, शांतिनिकेतन ने दिनांक 26 मई, 2009 को इस स्पर्धा का शुभारंभ किया। 13 लुप्त हो रही कलाओं के रूपों को प्रस्तुत किया गया तथा दर्शकों एवं संचार मीडिया ने इस दो दिवसीय कार्यक्रम को हाथो–हाथ लिया श्रीजनी धीरे–धीरे सांस्कृतिक कार्यकलापों के लिए एक लोकप्रिय केन्द्र बनकर उभर रहा है।

ईजेडसीसी ने पश्चिम बंगाल राज्य संगीत अकादमी एवं आई एंड सीए विभाग, पश्चिम बंगाल सरकार के सहयोग से 29 अप्रैल, 2009 को रबिन्द्र सदन में **विश्व नृत्य दिवस 2009** का आयोजन किया, जिसमें स्थानीय कलाकारों ने रंगारंग नृत्य कार्यक्रम प्रस्तुत किए। आईसीटीए विभाग, त्रिपुरा सरकार ने ईजेडसीसी के सहयोग से 6 व 7 जून, 2009 को गुवाहाटी, असम में **मातृभाषा उत्सव 2009** का आयोजन किया जिसमें ईजेडसीसी ने श्रीमती उमादशी बाल द्वारा पुरूलिया चाहू नृत्य, बाल गान, मृगनवी चट्‌टोपाध्याय द्वारा यांत्रिक संगीत तथा श्री सनातन हाजरा द्वारा पत्ते से बनी हुई बांसुरी वादन, सभी पश्चिम बंगाल से, कार्यक्रमों का आयोजन किया।

ईजेडसीसी ने **''प्रथम स्वतंत्रता संग्राम, 1857 की 150वीं वर्षगांठ तथा भारत की स्वतंत्रता की 60वीं वर्षगांठ''** की याद में दिनांक 9 से 13 जून, 2009 को अपने भारतीयम सांस्कृतिक मल्टीप्लेक्स, कोलकाता में संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली के सहयोग से **''नात्यांजली''**, एक पांच दिवसीय थियेटर समारोह का आयोजन किया। इस समारोह का शुभारंभ जाने–माने थियेटर से जुड़े हुए व्यक्तियों श्रीमती ऊषा गांगुली एवं श्री बिवास चक्रवर्ती द्वारा अन्य थियेटर से जुड़े हुए व्यक्तियों एवं विशिष्ट व्यक्तियों की उपस्थिति में दिनांक 9 जून, 2009 को किया गया। इस पांच दिवसीय बहुभाषायी थियेटर समारोह को थियेटर प्रेमियों ने खूब सराहा।

सूक्ष्म एवं लघु उद्योग विभाग, पश्चिम बंगाल सरकार ने ईजेडसीसी के सहयोग से दिनांक 1 से 17 अगस्त, 2009 तक भारतीयम, कोलकाता में **बंगाल टेराकोटा मेले** का आयोजन किया जिसमें 28 शिल्पियों ने अपने उत्पादों का प्रदर्शन किया तथा प्रतिदिन काफी संख्या में दर्शक आए।

ईजेड सीसीस ने सूक्ष्म एवं लघु उद्योग विभाग, पश्चिम बंगाल सरकार के सहयोग से क्रमशः अपने आईकटन कॉम्प्लेक्स तथा भारतीयम सांस्कृतिक परिसर, कोलकाता में दिनांक 5 से 21 सितम्बर, 2009 को एक 17 दिवसीय **बंगाल केन एवं बैम्बू शिल्प मेले** एवं बंगाल बालुचरी, कंथा स्टिच, सिल्क साड़ी मेले–2009 का आयोजन किया गया। 70 शिल्पियों ने इन मेलों में अपने उत्पादों का प्रदर्शन किया जिनमें प्रतिदिन काफी संख्या में लोगों ने भाग लिया। रक्षा मंत्रालय, भारत सरकार ने ईजेडसीसी के साथ मिलकर 12 एवं 13 दिसम्बर, 2009 को फोर्ट विलियम, कोलकाता में **विजय दिवस – 2009** का आयोजन किया जिसमें ईजेडसीसी ने पूर्वोत्तर क्षेत्र से 4 लोक नृत्य समूहों को प्रायोजित किया।

कार्यशाला

पश्चिम बंगाल शिल्प परिषद ने ईजेडसीसी के साथ मिलकर 5 जुलाई से 4 सितम्बर, 2009 को ईजेडसीसी के भारतीयम सांस्कृतिक मल्टीप्लेक्स में प्राकृतिक डाई का प्रयोग करते हुए प्राकृतिक डाई एवं प्रोटोटाइप का विकास विषय पर एक समेकित डिजाइन एवं तकनीकी विकास कार्यशाला का आयोजन किया जिसमें 18 युवाओं को प्रशिक्षण प्रदान किया गया। इसके अतिरिक्त, ईजेडसीसी ने रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान विभिन्न कला रूपों पर कार्यशालाओं का आयोजन भी किया।

संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की वर्तमान में जारी स्कीमें :

ईजेडसीसी युवा प्रतिभा स्कीम (प्रतिभा उत्सव) के तहत अच्छे युवा कलाकारों के साथ कार्यक्रमों का आयोजन करके उन्हें प्रोत्साहित करता है। इस केन्द्र ने संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा सहायता प्रदत्त थियेटर कायाकल्प स्कीम के तहत 23 मासिक थियेटर के प्रदर्शनों का आयोजन किया जिसका उद्देश्य लोगों के बीच थियेटर गतिविधियों को बढ़ावा देना तथा लोक रंग मंच, एमेच्योर थियेटर समूहों, प्रतिभावान कलाकारों, निर्देशकों को सुविधाएं प्रदान करके इसे पुनर्जीवित करना है। दुलर्भ एवं लुप्त हो रहे कला रूपों को संरक्षित करना तथा उन्हें प्रोत्साहित करना एवं युवा पीढ़ी को लब्धप्रतिष्ठित गुरूओं की छत्रछाया में इन रूपों के बारे में ज्ञान ग्रहण करने के लिए प्रशिक्षण प्रदान करना आवश्यक है ताकि इनका संरक्षण किया जा सके तथा इन्हें लुप्त होने से बचाया जा सके। तदनुसार गुरू–शिष्य स्कीम के तहत सदस्य राज्यों के 18 मरणासन्न कला रूपों को बचाने के लिए उन्हें रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान पोषित किया जा रहा है तथा नया रूप दिया जा रहा है।

एसजीएसवाई की वार्षिक रिपोर्ट (विशेष परियोजना)

ईजेडसीसी ने एसजीएसवाई (विशेष परियोजना) स्कीम के तहत ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार तथा संस्कृति एवं ग्रामीण विकास विभाग की सहायता से वहनीय आजीविका के तौर पर मंच लोक कला रूपों को पुनर्जीवित तथा कायाकल्प करने की एक विशिष्ट एवं महत्वाकांक्षी पहल की शुरूआत की है। इसके लिए पश्चिम बंगाल एवं उड़ीसा के 10 अत्यधिक पिछड़े जिलों से 13 कला रूपों का चयन किया गया है। इस परियोजना के माध्यम से 6000 गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले कलाकारों की आय के स्तर को बढ़ाने तथा कला के रूपों को बनाए रखने के लिए कौशल विकास, क्षमता निर्माण तथा व्यापक विपणन संबंधों के विकास का ध्यान रखा जाता है। इस परियोजना की शुरूआती अवधि तीन वर्ष अर्थात 31.3.2008 तक जो मार्च 2009 में समाप्त होनी निर्धारित थी, को एक और वर्ष अर्थात मार्च, 2010 तक विस्तारित कर दिया गया है।

पूर्व क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र का बहुत ही उल्लेखनीय प्रभाव पड़ा है जो कि 407 स्वसहायता समूहों (5819 लाभार्थियों) की बैंकों में की गई 33 लाख रू. की बचत से स्पष्ट है। विभिन्न राष्ट्रीय तथा कुछ अंतर्राष्ट्रीय स्तर के मेलों तथा उत्सवों में 272 कार्यक्रमों (3134 कार्यनिष्पादनों) में 7128 शिल्पकारों को लगाया गया है और लगभग 82129 श्रम दिवस सृजित किए गए हैं।

दृश्य कला रूपों को केवल चित्रकारी के जरिए पुर्नजीवित नहीं किया जा सकता है और अतः उच्च स्तरीय डिजाइन संस्थाओं और प्रतिष्ठित निर्यातकों तथा डिजाइनरों के सहयोग से विभिन्न कार्यशालाएं संचालित की गईं जहां शिल्पकारों द्वारा उत्पादों की व्यापक श्रृंखला विकसित की गई है जिनकी विपणन क्षमता जबरदस्त है।

हमने विभिन्न माध्यमों जैसे चमड़ा/फैब्रिक में चित्रकारी करने के नए तरीके ढूढ़े हैं। शिल्पकारों को प्रारंभ से ही फैब्रिक में डिजाइनों को उतारने, डिजाइनों पर मोम लगाने, रंगाई तथा मोम हटाने आदि जैसे कार्यों में प्रशिक्षण दिया गया है। शिल्पकारों को विभिन्न समकालीन रंगरेज पद्धतियों से परिचय करवाया गया ताकि परम्परागत कलाओं को बरकरार रखते हुए उत्पादों को एक आधुनिक स्वरूप दिया जा सके। उन्हें विभिन्न रंगरेज पद्धतियों जैसे समरूप योजना, अनुपूरक रंग योजना, विखंडित अनुपूरक योजना आदि में प्रशिक्षित किया गया है ताकि रंगों और उनके मनोवैज्ञानिक एवं भौतिक पक्षों के बारे में उनकी समझबूझ परिमार्जित हो सके।

यूके, फ्रांस तथा नॉर्वे की विभिन्न कम्पनियों तथा बुटिक शॉपों से अर्ल्स कोर्ट एक्जिविशन सेंटर, लंदन में 31.5.09 से 2.6.09 के बीच आयोजित 'पल्स 09' में की गई पूछताछ हेतु उड़ीसा तथा पश्चिम बंगाल के पत्ता चित्रकारों, सौराज तथा पोतुआ को शामिल करके 17 जुलाई से 5 अगस्त, 09 के बीच पूर्व क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र तथा गुणपुर, उड़ीसा में कार्यशालाएं आयोजित की गईं।

हमने ''गायछे बाऊल गायछे फकीर'' नामक एक संगीत अल्बम जिसमें प्रसिद्ध बाऊल कलाकार द्वारा गाए गए बाऊल तथा फकीरी गीत शामिल हैं; पुरूलिया तथा बांकुड़ा के झुमुर गायकों को लेकर 'झुमुर यात्रा' नामक वृत्तचित्र और 740 बाऊल तथा फकीरी गीतों का एक अनूठा संग्रह 'सहज गीती' क विमोचन किया गया।

दोनों राज्यों के चुनिंदा जिलों में स्थित क्लस्टरों में स्वसहायता समूहों के साथ आमने–सामने बैठकों पर बल दिया गया जो इस प्रकार है :

क. स्वसहायता समूह के कार्यकलापों के विभिन्न पहलुओं पर पुनर्प्रबोधन कार्यक्रम,

ख. पोषणक्षम आजीविका कार्यनीति तथा कार्य,

ग. फेडरेशन के प्रत्येक स्तर की भूमिका, जिम्मेदारी तथा प्रबंधन,

घ. फेडरेशन द्वारा निभाई जाने वाली संभावित भावी भूमिका और प्रत्येक जिले हेतु कलाकृति की तुलना में विवरण तथा कार्य योजना।

सम्बलपुरी नृत्य, शंखवाद्य नृत्य, पशु मुखौटा नृत्य, प्रह्लाद नाटक, मयूरभंज चाऊ तथा गोटीपुआ नृत्य के स्वसहायता समूहों को शामिल करके उड़ीसा के जिलों में विशेष तकनीकी कार्यशालाओं की श्रृंखलाएं आयोजित की जाती हैं। ये कार्यशालाएं प्रारंभ में तीन दिनों के लिए थीं और क्लस्टर समूह स्तर पर के.आर.पी. के प्रशिक्षण तथा पूर्वाभ्यास के जरिए अगले सात दिनों के लिए बढ़ाया गया।

इस वर्ष दुर्गा पूजा उत्सव के दौरान लोक कलाकारों को उल्लेखनीय संख्या में कार्यक्रम मिले। पूर्व क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र इन कलाकारों को दुर्गा पूजा समितियों, क्लबों, कार्यक्रम आयोजकों से मिलवाने में सक्षम रहा है जिन्होंने लगभग 700 लोक कलाकारों को कोलकाता के 98 पूजा पंडालों तक पहुंचाने में मदद की। दुर्गा पूजा उत्सव के दौरान स्थानीय मीडिया ने कार्यक्रमों को कवर किया।

पूर्व क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र ने पूजा उत्सव से पहले दिल्ली स्थित अलग–अलग क्लबों, लगभग 90 पूजा समितियों, कार्यक्रम आयोजकों को विवरणिकाएं भी बांटीं। इसके परिणामस्वरूप, अलाएंज फ्रैचाइज, दिल्ली में आयोजित 3 दिवसीय कला प्रदर्शनी में नूर आलम, अर्जुन ख्यापा तथा गोपेन देबनाथ ने अपनी कला का प्रदर्शन किया और याकूब चित्रकार को अपनी चित्रकारी को प्रदर्शित करने का मौका मिला और उन्होंने 14000/–रू. की अपनी कलाकृति बेची। जगन्नाथ चौधरी के चाऊ समूह को दिल्ली पूजा समितियों से बुलावा आया और इस समूह ने पूजा के चारो दिन अपनी कला का जलवा दिखाया।

सम्बलपुर में संसाधन केन्द्र के निर्माण की तैयारीमूलक प्रकिया चल रही है और शीघ्र ही गंजाम तथा मयूरभंज में यह कार्य प्रारंभ किया जाएगा। विशिष्ट कलाकार स्वसहायता समूह फेडरेशन का गठन किया गया है और अलग–अलग जिला कलेक्टरों तथा पीडी, डीआरडीए से सहमति प्राप्त होने के पश्चात इसे पंजीकृत किया जाएगा। अन्य दो जिलों रायगढ़ तथा पुरी में मौजूदा भवन को लिया जाएगा।

प्रकाशित पुस्तकें / ग्रंथसूची :

पुस्तक / ग्रंथसूची का नाम	संख्या	विवरण
स्कार्फ्स पुस्तक	1000 प्रति	प्रकृति के विभिन्न रंगों से प्रेरित विशेष जीवन शैली संग्रह, रचनाएं। प्रत्येक हस्त–निर्मित वस्तु को उसी तरह वनस्पति रंगों से रंगा गया है जो पारम्पररिक पत्ताचित्र, बाटिक तथा सौरा मोटिफ को दर्शाता है, पारम्परिक होते हुए भी जिन्हें आधुनिक डिजाइनों के जरिए एक नया स्वरूप दिया गया है।
सृजन (ग्रंथ सूची)	500 प्रति	इन उत्पादों में हैण्डबैग, टाटे बैग तथा फेशन परस्तों के लिए गुलूबन्द तथा अन्य उत्पाद शामिल हैं। उड़ीसा तथा पश्चिम बंगाल के पत्ताचित्र जैसे पारम्परिक चित्रकारी और उड़ीसा की सौरा चित्रकारी का भी प्रयोग किया गया है जिनमें भड़कीले रंगों तथा आधुनिक डिजाइनों का इस्तेमाल हुआ है।
सीडी	30 प्रति	कार्यशालाओं के दौरान तैयार किए गए उत्पादों के चित्र और इन उत्पादों को प्रदर्शनी हेतु पूर्व क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र में 'अरपेरा' शॉप में रखा गया।

अधिकांश कलाकृतियों हेतु डिजीटल प्रलेखन का कार्य पूरा हो चुका है। पुरूलिया चाऊ पर किए गए प्रलेखन 'मॉस्को दृश्य नृशास्त्र महोत्सव' में प्रदर्शित किए गए।

पुरूलिया छाऊ, झामुर, पत्राचित्र, गोटियुस नृत्य, मयूरभंज छाऊ, सरायकेला छाऊ और सिक्किम के लामा नृत्य के लिए आईसीएच की यूनेस्कों की प्रतिनिधि सूची में उत्कीर्णन के दूसरे चरण के लिए नामांकन डोजियर संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार को प्रस्तुत किया गया है।

पश्चिम बंगाल तथा उड़ीसा की सभी कलाकृतियों से संबंधित विवरणिकाएं मुद्रित हो चुकी हैं और सभी दूतावासों, जिलों, गैर–सरकारी संगठनों, सरकारी अधिकारियों, कारपोरेटों, बैंकों, पर्यटन विभागों में इनका संवितरण किया गया है ताकि व्यापक विपणन संपर्क विकसित किया जा सके।

विशेष परियोजना निष्कर्षों तथा अब तक हुई प्रगति के बारे में सभी सूचनाओं हेतु एक वेबसाइट http://www.folkartforlivelihood.org/ प्रारंभ की गई है।

पूर्व क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र परियोजना की विस्तारित अवधि के दौरान अलग–अलग कलाकृतियों के क्षेत्रीय उपायों के जरिए लाभार्थी शिल्पकारों के कौशल उन्नयन पर विशेष ध्यान केन्द्रित कर रहा है और विभिन्न मेलों तथा महोत्सवों में शिल्पकार स्वसहायता समूहों को परिचय, प्रोन्नयन तथा विपणन के जरिए उनके लिए उपलब्ध अवसरों के बारे में उन्हें संवेदनशील बनाता है।

इस कार्य को प्रिंट तथा इलैक्ट्रॉनिक मीडिया ने काफी सराहा है और इसने पूर्व क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र के उद्‌देश्यों तथा कुशल एवं गरीबी रेखा के नीचे रहने वाले शिल्पकारों को मदद करने संबंधी इसके प्रयासों के बारे में लोगों को जागरूक बनाने में मदद की है।

3.6.5

उत्तर पूर्वी क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र

प्रस्तावना

उत्तर पूर्वी क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र की स्थापना, केन्द्र जून, 1986 में की गई थी, जिसका मुख्यालय दीमापुर, नागालैंड में हैं। इसके अंतर्गत उत्तर पूर्व राज्य अरुणाचल प्रदेश, असम, मणिपुर, मेघालय, मिज़ोरम, नागालैंड, सिक्किम और त्रिपुरा राज्य हैं। केन्द्र का औपचारिक उद्घाटन 6 अक्तूबर, 1986 को तत्कालीन प्रधानमंत्री स्वर्गीय श्री राजीव गांधी ने किया था।

केन्द्र के प्रमुख लक्ष्य और उद्देश्य इस प्रकार हैं :–

(i) संगीत नाटक, ललित कला और साहित्य की विस्तृत विधाओं के अधीन इस क्षेत्र की कलाओं के प्रचार और प्रसार का परिरक्षण, प्रवर्तन और संवर्धन करना।

(ii) क्षेत्र की विभिन्न कलाओं की समृद्ध विविधता और अनुपमता को विकसित और प्रोत्साहित करना और उनकी सांस्कृतिक धरोहर के बारे में लोगों की जागरूकता बढ़ाना और उसे समृद्ध करना।

(iii) शैलियों के क्रम विकास के माध्यम से विभिन्न क्षेत्रों के बीच सहलग्नता तथा भारतीय सांस्कृतिक विरासत की वृहत्त मिश्रित पहचान के लिए उनके योगदान के संबंध में इनके कार्यकलापों पर विशेष बल देना।

(iv) लोक और जनजातीय कलाओं को प्रोत्साहित करने के लिए विशेष प्रयास करना और विलुप्त होती कलाओं के प्रलेखन और पुनर्जीवीकरण सहित उनके संरक्षण के लिए विशेष कार्यक्रम तैयार करना।

(v) ऐसे कार्यक्रम तैयार करना जिससे भारतीय सांस्कृतिक विरासत से संबंधित विषयों पर सेमिनारों, आदान–प्रदान और कार्यशालाओं की प्रक्रिया के माध्यम से रचनात्मक सांस्कृतिक संचार व्यवस्था में क्षेत्र के युवाओं के बीच और देश के शेष युवाओं को प्रोत्साहित करना और उन्हें शामिल करना।

2009–10 की प्रमुख गतिविधियाँ

केन्द्र की नियमित गतिविधियों को मोटे तौर पर निम्नानुसार बांटा गया है :

I राष्ट्रीय सांस्कृतिक आदान–प्रदान कार्यक्रम (एनसीईपी)

राष्ट्रीय सांस्कृतिक आदान–प्रदान कार्यक्रम (एनसीईपी) का आयोजन भारत सरकार की वित्तीय सहायता से किया जाता है। इस योजना के तहत एनईजेडसीसी द्वारा नृत्य और संगीत, कवियों/लेखकों की बैठकें, चित्रकला/काष्ठ शिल्प/बेंत और बांस पर कार्यशालाएं, प्रदर्शनी, मेले, गोष्ठी आदि का आयोजन किया जाता है। सभी क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्रों

ने समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं जिसके जरिए प्रत्येक क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र द्वारा विभिन्न कार्यक्रमों में सांस्कृतिक दलों/ कलाकारों का नियमित आदान– प्रदान किया जाता है।

II अनुसंधान और प्रलेखन

इस योजना के तहत पूर्वोत्तर क्षेत्र की लुप्त हो चुकी, लुप्त हो रही और समकालीन कला तथा दस्तकारी के प्रलेखन का कार्य बुनियादी स्तर के अनुसंधान और जानकारी के संग्रह, वीडियो फिल्म तैयार करने, स्टिल फोटोग्राफी, पुस्तकों के प्रकाशन आदि द्वारा किया जाता है तथा इन्हें सांस्कृतिक विरासत के संवर्धन के लिए व्यवस्थित रूप से परिरक्षित और परिचालित किया जाता है।

III थिएटर को नया रूप देना

थिएटर को नया रूप देने की योजना से थिएटर कर्मियों, छात्रों, कलाकारों, अभिनेताओं, निर्देशकों और लेखकों आदि को एक आम मंच पर प्रदर्शन और मेल–जोल का अवसर दिया जाता है। इस योजना के तहत नाट्योत्सव, पारंपरिक रंगमंच उत्सव, प्रायोगिक रंगमंच उत्सव और सघन रंगमंच कार्यशालाओं के आयोजन द्वारा रंगमंच के विभिन्न रूपों और उनके उत्पादन को समझने के एक प्रयास के रूप में जनसमूह के बीच रंग मंच को प्रोत्साहन दिया जाता है।

IV गुरू शिष्य परंपरा

गुरू शिष्य परंपरा की यह योजना गुरूओं के मार्गदर्शन में संगीत और नृत्य, लोक और जनजातीय कला रूपों के क्षेत्र में नई प्रतिभाओं को प्रोत्साहन देने के विचार से वर्ष 2003–04 के दौरान आरंभ की गई है। इस योजना के तहत गुरू शिष्य केन्द्रों को चार/पांच छात्रों को प्रशिक्षण देने के लिए एक सहायक द्वारा समर्थित एक गुरू के साथ एक/दो वर्ष की अवधि के लिए खोला जाता है। गुरू, सहायक और शिष्यों को प्रतिमाह 2000 रु., 900 रु. और 500 रु. की वित्तीय सहायता वज़ीफे के रूप में दी जाती है।

V युवा प्रतिभावान कलाकार

यह योजना क्षेत्र में विभिन्न कलारूपों में युवा प्रतिभाओं को पहचानने और बढ़ावा देने के लिए वर्श 2004–05 के दौरान आरंभ की गई है। इस योजना के तहत चुने गए युवा प्रतिभावान कलाकारों को 10,000 रुपए प्रत्येक का नकद पुरस्कार दिया जाता है।

VI शिल्पग्राम गतिविधियां

क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र इस क्षेत्र के शिल्पकारों को विपणन सुविधाएं प्रदान करने के लिए और कला तथा दस्तकारी के संवर्धन हेतु स्थापित शिल्पग्राम के माध्यम से प्रमुख गतिविधियों में संलग्न हैं। पंजाबाड़ी, गुवाहाटी में स्थापित एनईजेडसीसी द्वारा दस्तकारी मदों की प्रदर्शनी एवं बिक्री के लिए क्षेत्र के शिल्पकारों को 45 (पैंतालीस) स्थायी स्टॉल प्रदान किए गए हैं और संबंधित राज्य की कला और दस्तकारी प्रदर्शित करने के लिए सदस्य राज्यों को 8 (आठ) पवेलियन उपलब्ध कराए गए हैं। केन्द्र द्वारा शिल्प ग्राम परिसर में समय–समय पर दस्तकारी मेले, नृत्य महोत्सव और सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।

VII संग्रहालय

एनईजेडसीसी के पूर्वोत्तर विरासत संग्रहालय में क्षेत्र के दस्तकारी/कलात्मक वस्तुओं का संग्रह और परिरक्षण तथा नमूनों का प्रदर्शन किया जाता है।

VIII पुस्तकालय

कला और दस्तकारी तथा अन्य संबंधित विषयों की पुस्तकों और प्रकाशनों का संग्रह सार्वजनिक पुस्तकालय हेतु किया गया है।

IX परंपरा का पुनर्जीवन

इस योजना के तहत केन्द्र द्वारा क्षेत्र की कला और दस्तकारी की परंपरा को बढ़ावा देने के लिए छोटे कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। यह योजना उन प्रलेखन, उत्पादन गतिविधियों, छोटी गोष्ठियों पर अधिक केन्द्रित होगी जिन्हें संस्कृति मंत्रालय की एनसीईपी, प्रलेखन गतिविधियों में शामिल नहीं किया गया है।

X प्रकाशन/वेबसाइट

एनईजेडसीसी द्वारा इस योजना के तहत समाचार पत्रिका, वार्षिक रिपोर्ट और वेबसाइट का प्रकाशन किया जाता है। एनईजेडसीसी समाचार पत्रिका का प्रकाशन 2003 से हर तिमाही में किया जाता है। एनईजेडसीसी की वेबसाइट http://www.nezccindia.org को 2 जनवरी 2003 में लोकार्पित करने के बाद से नियमित रूप से अद्यतन किया जाता है।

अप्रैल 2009 से जनवरी, 2010 तक उपलब्धियों की पुनरीक्षा

1. सीमा क्षेत्र महोत्सव

एनईजेड सीसी ने 2009 में विशेष रूप से इस क्षेत्र के दूर दराज और अंदरूनी इलाकों की संस्कृति तथा कला रूपों के बारे में जागरूकता लाने के उद्देश्य से

तथा इन महोत्सवों को सीमा क्षेत्रों के समुदायों को पास लाने के एक मंच के रूप में इस्तेमाल करने के लिए सीमा क्षेत्र महोत्सव आरंभ किए। इसकी पहल कला और संस्कृति का उपयोग मित्रता बनाने तथा सीमा क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के बीच एक बेहतर समझ पैदा करने की इच्छा से की गई थी। वर्ष 2009 और 2010 के दौरान अरुणाचल प्रदेश, नागालैंड, सिक्किम और मिजोरम में सीमा क्षेत्र महोत्सवों का आयोजन किया गया था।

2. अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शन

वर्ष 2009–10 के दौरान एनईजेडसीसी ने अनेक अंतरराष्ट्रीय कार्यक्रमों में भाग लिया।

उत्तर पूर्वी क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र ने 25 जून से 6 जुलाई, 2009 के बीच भारत का प्रतिनिधित्व करने वाले मेघालय राज्य के 21 सदस्यों को शिलॉग चेंबर कॉयर के प्रायोजन द्वारा बीजिंग में एक कोरल कंसर्ट कार्यक्रम का आयोजन किया। इस कॉयर समूह का नेतृत्व सुश्री टेमसुनारों, अनुसंधान अधिकारी, एनईजेडसीसी, दीमापुर ने किया। इस कॉयर दल ने 27 जून, 2009 को सिटी कंसर्ट हॉल, बीजिंग में प्रदर्शन किया और इसके बाद चाइना कंर्जेवेटरी ऑफ म्यूजिक, बीजिंग, चाइना में प्रदर्शन किया गया।

कॉयर समूह ने 4 जुलाई, 2009 को म्यूजिम ऑफ कंटेम्परारी आर्ट्स, शंघाई में प्रदर्शन किया। श्रीमती रिवा गांगुली दास, काउंसल जनरल, शंघाई तथा अनेक विशिष्ट अतिथियों ने ''परफेक्ट हारमॉनी–ए म्यूजिकल जर्नी कर्टेन रेज़र प्रोग्राम'' में भाग लिया।

शिलॉग चेम्बर कॉयर ने जुलाई माह में जियोंगनाम, दक्षिणी कोरिया की विश्व कॉयर चेम्पियनशिप प्रतियोगिता में भाग लिया और एशियन कॉयर खेलों की फोक लोर श्रेणी में रजत पदक प्राप्त किया।

एनईजेडसीसी की ओर से दक्षिण कोरिया में डेलफिक खेलों में भागीदारी के लिए भी कलाकारों को भेजा गया और मणिपुर के दल को कांस्य पदक मिला।

इसके अतिरिक्त नागालैंड के सूमी दल ने दिसम्बर 2009 के दौरान कुवैत में भारत महोत्सव में हिस्सा लिया।

3. पाषाण शिल्पकारी कार्यशाला

एनईजेडसीसी द्वारा अप्रैल–मई 2009 के दौरान एनईजेडसीसी परिसर, दीमापुर में पाषाण शिल्पकला की दो कार्यशालाओं का आयोजन किया गया था। इन कार्यशालाओं के दौरान सृजित कलाकार्यों को संग्रह

प्रश्तर मूर्ति कार्यशाला

किया गया और केन्द्र अपने परिसर में इनसे पाषाण शिल्पकला उद्यान बना सका, जो इन कार्यों को सौंदर्यपूर्ण दृष्टि से प्रस्तुत करता है। इस उद्यान का उद्घाटन नागालैंड के राज्यपाल और एनईजेडसीसी के अध्यक्ष महामहिम माननीय श्री निखिल कुमार ने 7 दिसम्बर, 2009 को किया।

4. सांस्कृतिक आकलन अध्ययन

एनईजेडसीसी ने अगस्त–दिसम्बर, 2009 के दौरान सभी पूर्वोत्तर राज्यों में एनईजेडसीसी के सांस्कृतिक प्रभाव आकलन पर बैठकों का आयोजन किया–एनईजेडसीसी की स्थापना के साथ इसके सांस्कृतिक प्रभाव आकलन पर एक अध्ययन तथा सदस्य राज्यों को केंद्र की गतिविधियों का आकलन किया गया है।

प्रतिभागियों को इन बैठकों के दौरान क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्रों के माध्यम से कार्यान्वित भारत सरकार की विभिन्न योजनाओं और अपने संसाधनों से कार्यक्रमों को लेने की जानकारी दी गई। एनईजेडसीसी के सभी सदस्य राज्यों को एनईजेडसीसी द्वारा कार्यान्वित संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की विभिन्न योजनाओं के तहत एनईजेडसीसी के अधिकारियों को सरकारी अधिकारियों, सांस्कृतिक गैर सरकारी संगठनों और लाभार्थियों से मेल–जोल और फीड बैक प्राप्त करने के लिए सभी सदस्य राज्यों को विस्तार से जानकारी दी गई।

5. ऑक्टेव 2010

ऑक्टेव–पूर्वोत्तर महोत्सव का आयोजन संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा पूर्वोत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, दीमापुर, पश्चिमी क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, उदयपुर के साथ सूरत के अन्य भागीदार संगठनों एवं उत्तरी क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, पटियाला के सहयोग से किया गया था।

ऑक्टेव–2010

सूरत के ऑक्टेव 2009 का उद्‌घाटन राजस्थान के राज्यपाल, महामहिम श्री एस के सिंह द्वारा 7 नवम्बर, 2009 को पंडित दीन दयाल उपाध्याय इंडोर स्टेडियम में किया गया और श्री फकीर भाई वाघेला, माननीय खेल, युवा सेवा और सांस्कृतिक कार्यकलाप मंत्री, गुजरात सरकार विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। अमृतसर के ऑक्टेव 2010 का उद्‌घाटन पंजाब के राज्यपाल महामहिम श्री शिव राज विश्वनाथ पाटिल द्वारा 13 फरवरी, 2010 को खालसा महाविद्यालय परिसर में किया गया था।

इस वित्तीय वर्ष में पद्‌म श्री रत्न थियाम द्वारा निर्देशित पूर्वोत्तर के लोक नृत्यों के प्रदर्शन की कोरियोग्राफी की गई। लगभग 504 लोक कलाकारों में लोक नृत्य कोरियोग्राफी प्रस्तुतीकरण में हिस्सा लिया, पूर्वोत्तर पारंपरिक वेशभूषा के शो में 103 जोड़ों, पूर्वोत्तर श्रेणी के लोक और फ्यूज़न संगीत में 26 कलाकारों, 82 कॉयर सदस्यों, शास्त्रीय और रॉक बैंड के 19 कलाकारों को पूर्वोत्तर के पारंपरिक व्यंजनों के लिए 8 कलाकारों ने ऑक्टेव 2009 और 2010 में प्रस्तुतीकरण द्वारा इसे अत्यंत सफल बनाया।

6. पूर्वोत्तर क्षेत्र के स्कूली बच्चों ने गणतंत्र दिवस परेड 2010 में हिस्सा लिया।

पूर्वोत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, दीमापुर ने 26 जनवरी, 2010 को राजपथ, नई दिल्ली में आयोजित गणतंत्र दिवस परेड के दौरान सिक्किम के तमांग सेलो नृत्य का प्रस्तुतीकरण किया। गैंगटोक के विभिन्न विद्यालयों से चुने गए 120 छात्रों, 10 संगीतकारों और 6 अध्यापकों के साथ तमांग सेलो का प्रस्तुतीकरण किया गया। तमांग सेलों नृत्यों को गणतंत्र दिवस परेड, 2010 में स्कूली बच्चों की भागीदारी के लिए रक्षा मंत्रालय, भारत सरकार की विशेषज्ञ समिति द्वारा पूर्वोत्तर क्षेत्र से चुना गया था। इस नृत्य को डामफू भी कहा जाता है और इसे दशहरा उत्सव के दौरान पारंपरिक वेशभूषा में युवा और बुजुर्ग लोक कलाकारों द्वारा मिल–जुल कर किया जाता है।

तमांग सेलो नृत्य

7. थिएटर महोत्सव–युवाओं के लिए थिएटर कार्यशाला

नागालैंड की एक थिएटर संस्था, ड्रीम्स अनलिमिटेड के सहयोग से एनईजेडसीसी द्वारा ''युवाओं के लिए थिएटर कार्यशाला'' विषयवस्तु के तहत थिएटर पर एक कार्यशाला 13 अक्तूबर से 26 अक्तूबर, 2009 के बीच एनईजेडसीसी कॉम्प्लेक्स, दीमापुर में आयोजित की गई थी। इस कार्यशाला की संसाधन व्यक्ति टिश स्कूल ऑफ आर्ट्स, न्यूयॉर्क यूनिवर्सिटी से परफॉरमेन्स स्टडीज़ में स्नातकोत्तर, सुश्री नंदिता दिनीश थीं। उन्होंने ग्वाटेमाला, युगांडा, रवांडा, जिम्बाबे और यूएसए की कार्यशालाओं में निदेशक के रूप में थिएटर के क्षेत्र में कार्य किया है। वर्तमान में वे महात्मा गांधी इंटरनेशनल स्कूल, अहमदाबाद में कार्यरत हैं। एनईजेडसीसी कॉम्प्लेक्स में कार्यशाला के अंतिम दिन नागालैंड के वर्तमान परिदृश्य पर आधारित एक नाटक प्रस्तुत किया गया था। कुल मिलाकर कार्यशाला में 30 कलाकारों ने हिस्सा लिया।

3.6.6

दक्षिण मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र

दक्षिण मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, नागपुर उन सात क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्रों में से एक है जिन्हें क्षेत्रीय संस्कृति की जड़ों को सुदृढ़ करने तथा राष्ट्रीय सामासिक संस्कृति को विकसित और समृद्ध करने के लिए स्थापित किया गया था।

यह केन्द्र जो नागपुर में 1986 में अस्तित्व में आया विशेष रूप से संगीत, नाटक, ललित कला और साहित्य में लोक और जनजातीय कलाओं के संरक्षण, प्रचार और प्रसार के लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में प्रयत्नशील है। इसके अतिरिक्त लुप्त हो रहे कला रूपों को पुनर्जीवित करने, कुछ दुर्लभ लोक और जनजातीय कला रूपों का अनुंसधान और प्रलेखन करना भी इस केन्द्र के उद्देश्य हैं।

इस केन्द्र के अंतर्गत आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और छत्तीसगढ़ क्षेत्र आते हैं।

यह केन्द्र संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन कार्य करता है। केन्द्र के कार्यों का प्रबंध दो शीर्ष निकाय करती हैं। शासी निकाय और कार्यकारी मंडल के साथ दो समितियां अर्थात कार्यक्रम समिति और वित्त समिति, जो कार्यों में उनकी मदद करती हैं। शासी निकाय और कार्यकारी मंडल के अध्यक्ष महाराष्ट्र के माननीय राज्यपाल, हैं। शासी निकाय के सदस्यों में केन्द्र के प्रतिभागी राज्यों के सांस्कृतिक मंत्री, केन्द्र सरकार और राज्य सरकारों के संस्कृति सचिव भी शामिल हैं। केन्द्र और राज्य अकादमियों के अध्यक्ष तथा घटक राज्यों के जाने माने सांस्कृतिक कर्मी भी शीर्ष निकायों के सम्मानित सदस्य होते हैं।

शिल्प ग्राम, खजुराहो :

इस केन्द्र ने मध्य प्रदेश के खजुराहो में शिल्पग्राम स्थापित किया है। मुख्य उद्देश्य, ग्रामीण क्षेत्रों के निचले स्तर के लोक और जनजातीय कलाकारों तथा शिल्पकारों को शामिल करते हुए लोक कला और शिल्पकला को स्थापित करना है। शिल्पग्राम का उद्देश्य थियेटर शो, राष्ट्रीय स्तर के लोक नृत्य उत्सव और शिल्प मेले तथा राज्यवार कार्यशालाएं आयोजित करके उन्हें साथ लाना और पारस्परिक विचार–विमर्श को सुकर बनाना है। प्रतिभागी मध्य प्रदेश, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, छत्तीसगढ़ और महाराष्ट्र के थे। प्रत्येक राज्य के कलाकारों के लिए 10–15 दिनों की चित्रकला/पारंपरिक दस्तकारी की राज्यवार कार्यशालाओं का भी आयोजन किया गया था।

सांस्कृतिक गतिविधियां (एनसीईपी के अंतर्गत) :

एससीजेडसीसी, नागपुर की यह विशिष्ट उपलब्धि है कि केन्द्र में वर्ष में 300 दिन से अधिक के लिए विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। लगभग 115 कार्यक्रम प्रदर्शन, कार्यशालाओं आदि का आयोजन किया गया था। यह अत्यधिक गर्व का विषय है कि इस केन्द्र ने अपनी स्थापना के समय से ही कला के विभिन्न क्षेत्रों में कार्यशालाओं, उत्सवों और मेलों आदि

के जरिए लगभग 14,000 कलाकार प्रस्तुत किए हैं जिनमें बच्चे, उदीयमान कलाकार, प्रमुख पेशेवर तथा संगीतज्ञ शामिल हैं।

राष्ट्रीय सांस्कृतिक आदान–प्रदान कार्यक्रम योजना के तहत क्षेत्र (जोन) के अंतर्गत आने वाले सभी सहभागी राज्यों में, विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। विभिन्न क्षेत्रों के कलाकारों को प्रमुख कार्यक्रमों और उत्सवों के दौरान प्रायोजित भी किया जाता है।

यह एक ऐसा प्रयास है जिससे भारत के विभिन्न भागों के लोगों को एक–दूसरे की परामपराओं और सांस्कृतिक विरासत के बारे में जानने का अवसर मिलता है और इस प्रकार आपसी समझ तथा सांस्कृतिक आदान–प्रदान में सहायता मिलती है।

इसके अतिरिक्त एक क्षेत्र के लोगों को अन्य क्षेत्र की सांस्कृतिक विविधता को देखने का अवसर मिलता हैं।

केन्द्र ने संस्कृति विभाग, महाराष्ट्र सरकार के सहयोग से **सप्तरंग** का आयोजन किया और छत्तीसगढ़ की पंडवानी गायिका पद्म भूषण श्रीमती तीजनबाई को प्रायोजित किया। इस 10 दिवसीय कार्यक्रम में बड़ी संख्या में लोग आए और प्रिंट तथा मीडिया से इसे भारी प्रशंसा मिली।

राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने के लिए केन्द्र ने देश भक्ति के गीतों और नृत्य के विशेष रूप से तैयार किए गए सांस्कृतिक कार्यक्रम **वंदे मातरम** का आयोजन किया।

केन्द्र विभिन्न राज्यों से आए हुए रंगारंग लोक नृत्य समूहों के प्रायोजन द्वारा हर वर्ष छत्तीसगढ़ के सिरपुर में **सिरपुर महोत्सव** और राजिम में **राजिम कुंभ** का आयोजन करता है।

राष्ट्रीय सांस्कृतिक आदान–प्रदान कार्यक्रम योजना के तहत इस क्षेत्र ने लगभग 105 कार्यक्रम/उत्सव/कार्यशालाएं आयोजित कीं। लगभग 3413 कलाकार और दस्तकार लाभान्वित हुए और इस केन्द्र ने, वर्ष 2009–10 के दौरान फरवरी, 2010 तक अन्य क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्रों द्वारा आयोजित 15 विभिन्न कार्यक्रमों में 610 कलाकारों को प्रायोजित किया।

गुरू शिष्य परंपरा स्कीम :

संगीत, नृत्य, लोक और जनजातीय कला के क्षेत्र में लुप्त हो रहे कलारूपों का प्रचार करने, उनका संरक्षण करने और उन्हें बढ़ावा देने के उद्देश्य से गुरू–शिष्य परंपरा योजना आरंभ की गई थी। इस योजना में लुप्त हो रहे कला रूप के रूप में चिन्हित विभिन्न परंपरागत और लोक कलारूपों में प्रतिष्ठित गुरू के चयन और इसके सहभागी राज्य अर्थात मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश और छत्तीसगढ़ से चयनित गुरू के अधीन शिष्य को प्रशिक्षण देने की परिकल्पना की गई है। प्रशिक्षण के दौरान शिष्यों को प्रतिमाह 500/–रु. तथा गुरू को 2,000/– रु. प्रतिमाह वजीफा दिया जाता है। **ब्यौरा इस प्रकार है :**

1.	कर्नाटक	:	18–कलारूप, 72 शिष्य
2.	महाराष्ट्र	:	07 कलारूप, 28 शिष्य
3.	छत्तीसगढ़	:	10 कलारूप, 40 शिष्य
4.	आंध्र प्रदेश	:	06 कलारूप, 24 शिष्य
5.	मध्य प्रदेश	:	08 कलारूप, 34 शिष्य

5 राज्यों में 49 कलारूपों को क्रियान्वित किया जा रहा है जिसमें लगभग 180 शिष्यों को प्रशिक्षण देने के लिए कुल 49 गुरूओं और 49 गुरू–सहायकों का चयन किया गया है। केन्द्र ने विभिन्न स्तरों पर प्रदर्शन के लिए मंच उपलब्ध कराया है। यह उन्हें परांपरागत कला रूपों में युवा पीढ़ी को बढ़ावा देने के लिए अवसर भी उपलब्ध कराता है।

थिएटर नवीकरण स्कीम :

विभिन्न कठिनाइयों के बावजूद, भारत में थिएटर का काफी विकास हुआ है और अपनी अद्वितीयता और अपार सृजनात्मक क्षमता के कारण यह अभी भी जीवित है। भारत में लोक थिएटर परंपरा ने काफी कुछ हासिल किया है, पर आम जनता से इसकी दूरी बनी हुई है। थिएटर उत्सव जहां प्रस्तुतीकरण के लोक परंपरा पैटर्न को प्रकरण बनाने का निर्णय लिया गया था, की राष्ट्रीय सांस्कृतिक आदान–प्रदान कार्यक्रम के अंतर्गत कल्पना की गई है। थिएटर शो के थिएटर महोत्सव, धार्मिक थिएटर महोत्सव पर कार्यशाला रूप में लगभग 15 कार्यक्रम आयोजित किए गए।

अन्य क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्रों से अनुरोध किया गया है कि वे अपने क्षेत्र में लोक थिएटर प्रदर्शन के जरिए भाग लें। भिन्न–भिन्न लोक थिएटर शैलियों के कलाकारों ने एक ही मंच पर अलग–अलग नाटक प्रस्तुत किए।

इस योजना के तहत विभिन्न थिएटर कार्यशाला, मासिक थिएटर शो और राष्ट्रीय स्तर के थिएटर महोत्सव आयोजित किए गए थे।

अनुसंधान और प्रलेखन योजना :

इस योजना का उद्देश्य लोक और जनजातीय लोकसाहित्य का प्रामाणिक अनुसंधान, सर्वेक्षण, प्रलेखन और प्रकाशन करना है तथा जनजातीय और लोक मंचन कलाओं का विकास तैयार किए गए दस्तावेज़ का एक भाग होते हैं। दक्षिण मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, नागपुर ने, भाग लेने वाले 5 राज्यों अर्थात आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और छत्तीसगढ़ के दूरस्थ क्षेत्रों में मौजूद विभिन्न कलारूपों के विशेष सर्वेक्षण और प्रलेखन की योजना बनाई है। निदेशों के अनुसार केन्द्र, भारत सरकार, संस्कृति मंत्रालय से प्राप्त होने वाले सहायता अनुदान से भाग लेने वाले राज्यों के सांस्कृतिक मामलों और विश्वविद्यालयों के सहयोग से ऐसे विशेषज्ञों की पहचान करते हैं जो विस्तृत सर्वेक्षण और अनुसंधान कार्य के बाद विषय के संबंध में मोनोग्राफ तैयार करते हैं और उनके सुविज्ञ मार्गदर्शन में डिजीटल बीटा फॉर्मेट सीडी के दृश्य दस्तावेज के रूप में विषयों को चलचित्र का रूप दिया जाता है। केन्द्र ने मोनोग्राफ (पुस्तकें) प्रकाशित किए हैं तथा श्रृव्य–दृश्य फॉर्मेट में एक दृश्य फॉर्मेट की फिल्म का प्रलेखन किया। इस वर्ष ऐसी 25 पुस्तकें प्रकाशित की गईं तथा 4–5 पुस्तकें मुद्रण के अंतिम चरण में हैं। लगभग 600 कलाकारों को विशेषज्ञों के साथ मिलने का अवसर प्राप्त हुआ।

दृश्य कला योजना :

दक्षिण मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, नागपुर चित्रकला, मूर्तिकला, ग्राफिक्स और आलेखन के क्षेत्र में पेशेवरों और युवाओं के लिए 22 वर्षों से अखिल भारतीय कला प्रतियोगिता आयोजित कर रहा है। इस वर्ष केन्द्र ने 23वीं अखिल भारतीय कला प्रतियोगिता और प्रदर्शनी आयोजित की। इस प्रतियोगिता ने पेशेवर और युवा कालाकारों में काफी रुचि भर दी है। यह तथ्य कि इस वर्ष पूरे भारत से 771 कलाकारों से 1423 से अधिक प्रविष्टियां प्राप्त हुई थीं, इस प्रतियोगिता की बढ़ती लोकप्रियता का प्रमाण है। केन्द्र ने विजेताओं को नकद पुरस्कार दिए। शुरूआती कलाकारों, विशेषज्ञों तथा विद्वानों के साथ–साथ आम जनता के लाभ के लिए पुरस्कार प्राप्त और अन्य चुनिंदा प्रदर्शों को नागपुर में स्थित केन्द्र की कला वीथिका में प्रदर्शित किया गया।

दक्षिण मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र की शास्त्रीय संगीत और नृत्य योजनाएं :

दक्षिण मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, नागपुर अपने स्थापना काल से ही शास्त्रीय संगीत और नृत्य के लिए अनेक योजनाएं चलाता है। यह केन्द्र सुर, वाद्य और नृत्य के छात्रवृत्ति पाने वाले युवा प्रतिभाशाली कलाकारों के लिए साधना महोत्सव आयोजित करता है। केन्द्र ने 5 प्रतिभागी राज्यों अर्थात आंध प्रदेश, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और छत्तीसगढ़ के शास्त्रीय गायन, वाद्य संगीत तथा नृत्य के छात्रवृत्ति प्राप्त युवा प्रतिभाशाली कलाकारों के लिए युवा संगीत नृत्य महोत्सव का आयोजन किया। इन योजनाओं का कलाकारों, कलाप्रेमियों और जन संचार माध्यमों (मीडिया) ने भरपूर स्वागत किया है।

केन्द्र, शास्त्रीय गायन संगीत के महान आचार्य डॉ. बसंत राव देशपांडे को श्रृद्धांजलि देने के लिए पिछले 17 वर्षों से नागपुर में डॉ. बसंत राव देशपांडे स्मृति संगीत समारोह का आयोजन करता आया है। उद्घाटन के दिन इस महोत्सव अर्थात स्वरत्रयी में राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय ख्याति के कलाकारों ने भाग लिया, जो संगीत वाद्यों का एक दल होता है जिसमें तीन कलाकार अपने–अपने वाद्य यंत्रों वायलिन, बासुरी और सितार पर शास्त्रीय राग प्रस्तुत करते हैं और तबला तथा पखावज पर संगत की जाती है। श्री जदतीर्थ मेवुंडी, कल्पना जोकारकर, कविता खरवंडीकर ने शास्त्रीय गायन प्रस्तुत किया। सुगतो भादुड़ी, जयदीप घोष, फारुख़ लतीफ खान और सरवान हुसैन ने शास्त्रीय वाद्य संगीत प्रस्तुत किया और शीला मेहता, पदन्य अगस्ती और नंदिनी घोषाल ने शास्त्रीय नृत्य प्रस्तुत किए।

इस वर्ष भी केन्द्र ने पंडित जितेन्द्र अभिषेकी स्मृति संगीत समारोह के माध्यम से भोपाल, म. प्र. में स्वर्गीय पंडित जितेन्द्र अभिषेकी को शास्त्रीय संगीत द्वारा श्रद्धांजलि अर्पित की। इस महोत्सव की भी संगीत प्रेमियों और मीडिया द्वारा काफी सराहना की गई।

प्रत्येक वर्ष, केन्द्र अपने सहभागी राज्यों में शास्त्रीय संगीत, वाद्य संगीत और नृत्य के क्षेत्र में प्रतिष्ठित कलाकारों के लिए पारंगत महोत्सव का आयोजन कर रहा है। उस्ताद अलाउद्दीन खान संगीत अकादमी, भोपाल के सहयोग से इस केन्द्र द्वारा उदीयमान कलाकारों के लिए कुछ अन्य गतिविधियां भी चलाई जा रही हैं।

स्वर्गीय पंडित बाला साहिब बहिरगांवकर की स्मृति में महाराष्ट्र के औरंगाबाद में **श्रद्धांजलि महोत्सव** आयोजित किया गया था। गायन, वादन और नृत्य विषयों के वरिष्ठ और उभरते हुए कलाकारों ने इसमें हिस्सा लिया।

केन्द्र द्वारा 8 से 15 वर्ष की आयु वर्ग के उदीयमान कलाकारों को प्रोत्साहन देने के लिए **प्रतिभा समारोह** का आयोजन किया गया। यह समारोह हर वर्ष आयोजित किया जाता है।

3.6.7

उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र

क). एनसीजेडसीसी की पृष्ठभूमि

उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, इलाहाबाद की स्थापना सोसाइटी पंजीकरण अधिनियम, 1860 के अन्तर्गत 1986 में हुई थी। इसका पंजीकृत कार्यालय उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद में स्थित है। इस केंद्र की स्थापना का मुख्य उद्देश्य क्षेत्रान्तर्गत राज्यों–उत्तर प्रदेश, हरियाणा, मध्य प्रदेश, बिहार, राजस्थान, दिल्ली एवं उत्तराखण्ड राज्यों की लोक एवं जनजातीय लोक कलारूपों, लोक संगीत, नाटक, दृश्य कलारूपों एवं लोकशिल्प का संरक्षण, सम्वर्द्धन एवं प्रचार करना है। यह केंद्र अपने स्थापना काल से ही अन्य क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्रों के साथ समन्वय स्थापित करके देश के परम्परागत लोक कला रूपों के विकास एवं प्रस्तुतियों के माध्यम से उन्हें विकसित करने हेतु सतत् प्रयत्नशील है। केंद्र के पास अपना स्वयं का समुन्नत प्रेक्षागृह एवं कला–वीथिका तथा लोकशिल्प को प्रोत्साहित करने हेतु सुसज्जित शिल्प हाट है, जो इलाहाबाद हाट के नाम से प्रसिद्ध है। यह हाट सांस्कृतिक गतिविधियों का एक प्रमुख केंद्र बनता जा रहा है, जहाँ शिल्प, मंच कला और परम्परागत व्यंजन शिल्प मेलों के दौरान एक ही स्थान पर उपलब्ध होते हैं जो इस बात की पुष्टि करते हैं कि आम लोग अपनी महान सांस्कृतिक विरासत जिस पर वे गर्व कर सकते हैं, के प्रति कितने सचेत हैं।

इस संस्थान की मुख्य उपलब्धि अपनी अवसंरचना को सुदृढ़ करना है ताकि इस संस्थान की गणना एक मॉडल सांस्कृतिक केंद्र के रूप की जा सके। 'इलाहाबाद हाट' पूरे वर्ष के दौरान विषय आधारित शिल्प मेले आयोजित करने लगा है। इसने राज्य सरकारों, केंद्र सरकार के विभिन्न विभागों तथा निजी संस्थाओं की सहायता से 'उत्तराखंड पर्व', 'आदिशिल्प पर्व', 'राष्ट्रीय शिल्प मेला', 'गांधी शिल्प बाजार' मेलों का आयोजन किया। भारतीय जनजातीय संघ (टीआरआईएफईडी) जनजातीय कार्य मंत्रालय, नई दिल्ली ने एनसीजेडसीसी के परिसर में एक स्थायी बिक्री केंद्र खोला है। एनसीजेडसीसी के प्रकाशनों को प्रोत्साहित करने के लिए 28 अगस्त, 2008 को परिसर में एक पुस्तक विक्रय केंद्र का उद्घाटन किया गया था। वातानुकूलित प्रेक्षागृह में वर्ष भर नाट्य उत्सवों के साथ–साथ नाटकों का मंचन भी किया जाता है। इसी प्रकार दो मंजिला कला दीर्घा दृश्य कलाओं की प्रदर्शनियों को बढ़ावा देती है। इसके अतिरिक्त यह केंद्र शिल्पकारों और कलाकारों को आवासीय सुविधाएं उपलब्ध कराता है।

ख). एनसीजेडसीसी की अवसंरचना

केंद्र का मुख्यालय इलाहाबाद के सिविल लाइन्स के केंद्रीय क्षेत्र में स्थित है तथा 4 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है। इस परिसर के रमणीय वातावरण में एक सुंदर कार्यालय भवन, दो बड़े लान/उद्यान, अन्तर्मन्च, मुक्ताकाशी मंच, शिल्पहाट, संगोष्ठी कक्ष और पुस्तकालय है।

(i) टेराकोटा उद्यानः

एनसीजेडसीसी परिसर के सामने स्थित टेराकोटा उद्यान का उद्घाटन 30 जून, 2001 को किया गया था। एनसीजेडसीसी परिसर के सामने

स्थित इस उद्यान में माह पर्यन्त चले शिविर में तैयार किए गए विभिन्न अंचलों के टेराकोटा शिल्प के सभी रूपों को प्रदर्शित किया गया है।

(ii) मध्योत्तरी कला भवन :

एनसीजेडसीसी परिसर में स्थित सुसज्जित मध्योत्तरी कला भवन की सबसे ऊपरी मंजिल पर एक कार्यशाला हाल है जिसमें समय–समय पर संगोष्ठी, व्याख्यान और कार्यशालाएं आयोजित की जाती हैं। यहाँ दो अलग–अलग बड़ी डॉरमैटरी हैं–एक महिला कलाकारों के लिए और एक पुरुष कलाकारों के लिए जिनमें प्रथम तल पर होने वाले प्रदर्शनों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के दौरान यहाँ आने वाले कलाकार ठहरते हैं। भू–तल पर पुस्तकालय है।

(iii) मूर्ति शिल्प उद्यान :

एनसीजेडसीसी में स्थित मूर्ति शिल्प उद्यान में उदयपुर और गढ़ी, नई दिल्ली में आयोजित ''लोक तथा पारम्परिक मूर्तिकार'' शिविर में तैयार की गई मूर्तियों को स्थायी रूप से प्रदर्शित किया गया हैं।

(iv) पुस्तकालय :

केंद्र का कला भवन में अपना एक समृद्ध संदर्भ पुस्तकालय भी है जिसमें मंच और दृश्य कलाओं के विविध विषयों की लगभग 2207 पुस्तकें, जर्नल एवं पत्रिकाएं हैं। केंद्र में समय–समय पर आयोजित किए गए विभिन्न कला समारोहों के दौरान विविध विषयों पर तैयार किए गए 561 वीडियो, 290 आडियो कैसेट्स और 640 सीडी/वीसीडी भी हैं।

(v) प्रेक्षागृह :

केंद्र के इंडोर वातानुकूलित ऑडीटोरियम में 390 लोगों के बैठने की क्षमता है और इसका उपयोग सांस्कृतिक कार्यक्रमों एवं नाटकों के मंचन के लिए किया जाता है। नाट्य प्रोत्साहन हेतु मंचित होने वाले नाटकों हेतु संस्थाओं/नाट्य दलों को केंद्र द्वारा रियायती दर पर प्रेक्षागृह उपलब्ध कराया जाता है। केंद्र का अपना एक सात सतहों वाला मुक्ताकाशी मंच भी है, जिसका उपयोग बड़े मेलों व वृहद स्तर पर आयोजित होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रमों के लिए किया जाता है।

(vi) कला वीथिका :

महात्मा गाँधी कला वीथिका के नाम से प्रसिद्ध इस वीथिका का निर्माण 1997 में हुआ था। इस वीथिका में दो प्रदर्शनी हाल हैं जहां चित्रकारों के चित्रों को प्रदर्शित किया जाता है। क्षेत्रान्तर्गत राज्यों व अन्य क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्रों के स्थापित एवं उदीयमान चित्रकारों के चित्र इस वीथिका में प्रदर्शित हुए हैं। समय–समय पर इस कला वीथिका में स्थापित एवं उदीयमान प्रतिभाशाली चित्रकारों की चित्र प्रदर्शनियां आयोजित होती रहती हैं। केंद्र की कला दीर्घा के पास लगभग 838 चित्रकलाओं (जनजातीय, लोक, पारम्परिक तथा समसामयिक) का अपना संग्रह है और इसके अलावा उसके पास टेराकोटा, लकड़ी तथा पत्थर से निर्मित मूर्तियां एवं समय–समय पर आयोजित विभिन्न शिविरों में प्रदर्शित फोटोग्राफ हैं।

(vii) इलाहाबाद हाट :

केंद्र में इलाहाबाद हाट को शिल्प तथा सांस्कृतिक उत्सव आयोजित करने का वर्षों से अनुभव है। इसे नई दिल्ली में ''दिल्ली हाट'' के पैटर्न के आधार पर केंद्र के शिल्प हाट परिसर में शुरू किया गया है। इसमें 48 स्थायी दुकानें, एक बहुउद्देशीय हाल, जन सुविधा ब्लॉक, मुक्ताकाश मंच तथा रमणीय भूदृश्य है। नियमित आयोजित होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रमों के दौरान यहॉ दस्तकारी और संस्कृति के प्रदर्शन तथा पारंपरिक पाक कला की भी व्यवस्था है। इस प्रकार के कार्यकलापों से सांस्कृतिक मंडलियों तथा दस्तकारों को एक मंच मिलता है जिससे भारतीय संस्कृति के प्रमुख गुण **''विविधता में एकता''** की धारणा का समूचे परिदृश्य में भारतीय कला एवं संस्कृति के अनुरक्षण, प्रोन्नयन एवं प्रचार–प्रसार किया जा सके और इससे इलाहाबाद में स्वदेशी एवं अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन को बढ़ावा भी मिलता है।

ग). अप्रैल–2009 से दिसम्बर–2009 तक किए गए प्रमुख सांस्कृतिक कार्यकलाप निम्नलिखित हैं :

1. 'स्पर्श–2009' समकालीन चित्रकला प्रदर्शनी :

उदीयमान प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने की योजना के अंतर्गत विजय कुमार त्रिपाठी द्वारा बनाए गए समसामयिक तथा पारम्परिक चित्रों की प्रदर्शनी एमजीएजी, एनसीजेडसीसी, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश में जनता के अवलोकन हेतु 28 अप्रैल से 30 अप्रैल, 2009 तक लगाई गई।

2. ''स्पन्दन''–सामूहिक चित्रकला प्रदर्शनी :

दृश्य कलाओं के क्षेत्र में युवा प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने की योजना के अंतर्गत महात्मा गांधी कला दीर्घा, एनसीजेडसीसी, इलाहाबाद में 4 मई से 6 मई, 2009 तक कला प्रेमियों और जनता के लिए तैल,

एक्रेलिक तथा मिश्रित मीडिया चित्रों की प्रदर्शनी लगाई गई थी। 6 उदीयमान स्थानीय कलाकारों (चित्रकारों) के दल ने विभिन्न विषयों अर्थात् प्रकृति, अभिव्यक्ति, अनुभव और संयोजन आदि पर आधारित अपने 30 चित्रों को प्रदर्शित किया। इस अवसर पर वरिष्ठ कला समीक्षक प्रो. रामचन्द्र शुक्ल, पूर्व विभागाध्यक्ष, दृश्य कला विभाग, बी.एच.यू., वाराणसी ने युवा कलाकारों को प्रोत्साहित करने के लिए अपने विचार व्यक्त किए।

3. ''नाट्यांजलि''—नाट्योत्सव :

प्रथम स्वाधीनता संग्राम, 1857 की 150वीं वर्षगांठ और भारत की स्वाधीनता की 60वीं वर्षगांठ के अवसर पर संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली के सहयोग से एनसीजेडसीसी के ऑडीटोरियम में चार दिवसीय नाट्य महोत्सव का आयोजन किया गया। **अपने वक्त के अलबेले, सोज–ए–वतन, झांसी की रानी तथा धरती आभा** नामक नाटकों का मंचन किया गया।

4. समकालीन चित्रकला प्रदर्शनी :

उदीयमान प्रतिभा प्रोत्साहन स्कीम के अंतर्गत इलाहाबाद के दो उदीयमान कलाकारों द्वारा बनाए गए समसामयिक चित्रों की प्रदर्शनी महात्मा गांधी कला दीर्घा, एनसीजेडसीसी में 20 मई से 22 मई, 2009 तक जनता के लिए लगाई गई। इस अवसर पर इलाहाबाद केंद्रीय विश्वविद्यालय के दृश्य कला विभाग के अध्यक्ष डॉ. अजय जेतली को नगर के कला प्रेमियों, आलाचकों और युवा कलाकारों के साथ कला की बारीकियों के बारे में बातचीत करने के लिए मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया था।

5. बच्चों के लिए रचनात्मकोन्मुख ग्रीष्मकालीन कार्यशालाएं :

एनसीजेडसीसी **बच्चों में सृजनशीलता के संचार हेतु** हर वर्ष मई और जून के महीने में बच्चों के लिए **रचनात्मकोन्मुख ग्रीष्मकालीन कार्यशालाओं का आयोजन** करता आ रहा है। इस वर्ष 20 से 30 मई, 2009 के दौरान बच्चों के लिए (1) मिमे (2) नोटंकी–लोक नाट्य शैली तथा (3) आधुनिक नाट्य विधा पर आधारित 10 दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। 6 से 16 वर्ष की आयु वर्ग के 125 सहभागियों को प्रशिक्षण देने के लिए नाट्य विशेषज्ञों को आमंत्रित किया गया था। कार्यशाला में तैयार नाटकों का मंचन 2 व 3 जून, 2009 को एनसीजेडसीसी के प्रेक्षागृह में किया जाएगा।

6. बच्चों के लिए रंगमंच कार्यशाला :

बच्चों के लिए ओरिएंटेड ग्रीष्म कार्यशाला

बच्चों के लिए नंदीकार, कोलकाता के सहयोग से 3 दिवसीय रंगमंच कार्यशाला का आयोजन 22 से 24 मई, 2009 तक किया गया। इस कार्यशाला के दौरान तैयार नाटकों का मंचन 25 मई, 2009 को कार्यशाला के 27 सहभागियों द्वारा एनसीजेडसीसी, इलाहाबाद के ऑडीटोरियम में किया गया। कोलकाता, पश्चिम बंगाल की स्वाति लेखा सेनगुप्ता के निर्देशन में 23 मई, 2009 को ''तोमार नाम'' तथा ''पाखी'' नामक दो अन्य नाटकों का मंचन किया गया।

7. बच्चों के लिए प्रस्तुतिपरक ग्रीष्मकालीन कार्यशालाएं–''बालोत्सव और अभिव्यक्ति'':

मई–जून 2009 में अवकाश के समय **विविध लोक कलारूपों पर आधारित बाल कार्यशालाओं** का आयोजन केंद्र परिसर में किया गया। उत्तर प्रदेश का प्रसिद्ध लोकनाट्य 'नौटंकी', आधुनिक रंगमंच व मध्य प्रदेश के बुन्देलखण्ड का प्रसिद्ध लोकनृत्य 'बधाई', बिहार के मिथिलांचल की पारम्परिक लोक चित्रकला 'मधुबनी' उत्तर प्रदेश के लोकगीत, ढोलक वादन, आधुनिक चित्रकला की कार्यशालाएं सम्पन्न हुई। कार्यशाला में तैयार इन विविध लोक कलारूपों की प्रस्तुतितँ 2 व 3 जून, 09 को एवं निर्मित चित्रों की प्रदर्शनी 15 जून, 09 को दर्शकों के लिए लगाई गई। इन कार्यशालाओं में तत्सम्बद्ध लोककला रूपों के जिन विशेषज्ञों ने प्रशिक्षण दिया, उनमें बधाई नृत्य के श्री सुधीर तिवारी, मधुबनी चित्रों की श्रीमती उर्मिला देवी पासवान, हस्तशिल्प की सुश्री पूनम कुमारी एवं लोक संगीत के श्री श्याम बिहारी गौड़, ढोल वादन के राम चन्द्र श्रीमाली एवं असित भट्टाचार्य को 6 वर्ष से 16 वर्ष तक की आयु के बच्चों को आधुनिक रंगमंच का प्रशिक्षण देने के लिए आमंत्रित किया गया था।

8. कलियां जो खिल कर महके :

यह स्कीम दृश्य कलाओं के क्षेत्र में युवा प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करती है। तैल, एक्रेलिक तथा मिश्रित मीडिया और रंगोली में निर्मित चित्रों की प्रदर्शनी महात्मा गांधी कला दीर्घा, एनसीजेडसीसी,

इलाहाबाद की एकता संस्था के सहयोग से कला प्रेमियों और जनता के लिए 11–12 जून, 2009 को लगाई गई। ये चित्र ग्रीष्मकालीन कार्यशाला के दौरान प्रशिक्षित स्थानीय स्कूलों के बच्चों द्वारा बनाए गए थे। विभिन्न विषयों अर्थात् प्रकृति, अभिव्यक्ति, अनुभव और संयोजन आदि पर आधारित लगभग 70 कला चित्र प्रदर्शित किए गए थे। इस अवसर पर मुख्य अतिथि ने युवा कलाकारों और प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने के लिए अपने विचार व्यक्त किए।

9. ''रंग धारा''–राष्ट्रीय नाट्य समारोह :

एनसीजेडसीसी हर वर्ष राष्ट्रीय नाट्य महोत्सव का आयोजन करता आ रहा है। इस महोत्सव में देशभर से विभिन्न नाट्य मंडलियों को बुलाया जाता है। उन्हें परस्पर तथा स्थानीय नाट्य कलाकारों और कला प्रेमियों के साथ बातचीत करने हेतु एक मंच उपलब्ध कराया जाता है। इसी कड़ी में जुलाई 2009 के दौरान 18 से 20 जुलाई, 2009 तक संत गाडगे जी महाराज ऑडीटोरियम, लखनऊ में, 19 से 21 जुलाई, 2009 तक एनसीजेडसीसी, इलाहाबाद में और 22 से 24 जुलाई, 2009 तक भारत भवन, भोपाल में तीन दिवसीय नाट्य महोत्सवों का आयोजन किया गया। इस आयोजन के दौरान मनोहर तेली (मुम्बई) द्वारा निर्देशित संक्रमण, आशीष पाठक (जबलपुर) द्वारा निर्देशित एक पॉपकॉर्न एवं लाईक हुसैन (उदयपुर) द्वारा निर्देशित बूढ़ा दिन नामक तीन नाटकों का मंचन किया गया। लखनऊ में संस्कृति विभाग, उत्तर प्रदेश के सहयोग से **रंग–धारा** का आयोजन किया गया और भोपाल में संस्कृति विभाग, मध्य प्रदेश के संनुक्त तत्वावधान में इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

10. बाल नाट्य कार्यशाला :

बच्चों में सृजनशीलता का संचार करने के उद्देश्य से 20 जुलाई, 2009 से 3 अगस्त, 2009 तक त्यागी इंटर कॉलेज, चित्रकूट, उत्तर प्रदेश में 15 दिवसीय **निर्माण उन्मुख बाल नाट्य कार्यशाला** का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला के दौरान प्रेमेन्द्र कुमार सिंह द्वारा निर्देशित **''लापता सिपाही''** नामक नाटक तैयार किया गया और 3 अगस्त, 2009 को इसका मंचन किया गया। इस कार्यशाला में 42 बच्चों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम को लगभग 1500 दर्शकों ने देखा।

11. चित्रकला प्रदर्शनी :

चित्रकला तथा दृश्य कलाओं के क्षेत्र में युवा प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से महात्मा गांधी कला दीर्घा, एनसीजेडसीसी, इलाहाबाद में 6 से 8 अगस्त, 2009 तक आम लोगों के लिए मिश्रित मीडिया में **चित्रकला प्रदर्शनी** लगाई गई। ये चित्र वाराणसी, उत्तर प्रदेश के एक उदीयमान कलाकार–श्री कृष्ण कुमार द्वारा बनाए गए थे।

12. मल्हार महोत्सव :

जिला प्रशासन, जबलपुर, मध्य प्रदेश के सहयोग से जबलपुर, मध्य प्रदेश में 21–22 अगस्त, 2009 को **मल्हार महोत्सव** का आयोजन किया गया था। इस मल्हार उत्सव में इलाहाबाद की सुश्री हेमा सिंह एवं दल को कथक नृत्य, मिर्जापुर की श्रीमती अजिता श्रीवास्तव को कजरी गायन तथा बलिया की श्रीमती रीना पाण्डे एवं दल को लोकगीतों की प्रस्तुतियां देने के लिए आमंत्रित किया गया था।

13. रंग–तरंग, तीन दिवसीय नाट्य समारोह :

नाट्य कार्यकलापों को प्रोत्साहित करने के लिए दर्पण सभागार, शिल्पग्राम, डब्ल्यूजेडसीसी, उदयपुर, राजस्थान में 27–29 अगस्त, 2009 तक तीन दिवसीय नाट्य महोत्सव का आयोजन किया गया। 1. विवेचना रंग–मंडल, जबलपुर से अरूण पांडी द्वारा निर्देशित "निठल्ले की डायरी"; 2. अतुल यदुवंशी द्वारा निर्देशित और स्वर्ग रंग–मंडल, इलाहाबाद द्वारा मंचित नोटंकी शैली में "बंटवारे की आग"; तथा 3. रिजवान जाहिर उस्मान द्वारा निर्देशित डुगडुगी नाट्य संस्था, उदयपुर के "भूखा भूकम्प" "प्यासी सुनामी" नामक नाटकों का मंचन किया गया।

कुरूक्षेत्र में 29–31 अगस्त, 2009 तक **रंग–तरंग** का आयोजन किया गया जिसके दौरान 1. विवेचना रंग–मंडल, जबलपुर के अरूण पांडी द्वारा निर्देशित "निठल्ले की डायरी"; 2. स्वर्ग रंग–मंडल, इलाहाबाद के अतुल यदुवंशी द्वारा निर्देशित नोटंकी शैली में "बंटवारे की आग"; तथा 3. जयपुर, राजस्थान के पिपल्स मीडिया एंड थियेटर के अशोक राही द्वारा निर्देशित "बिच्छू" नामक नाटकों का मंचन किया गया।

14. रंग–तरंग, तीन दिवसीय नाट्य समारोह :

संस्कृति विभाग, पटना, बिहार के सहयोग से तीन दिवसीय नाट्य महोत्सव का आयोजन किया गया। इस नाट्य महोत्सव को रंग–तरंग नाम दिया गया जो 31 अगस्त, 2009 से पटना, बिहार में शुरू होकर 2 सितम्बर, 2009 तक चला। यही नाट्य महोत्सव 1 से 2 सितम्बर, 2009 तक एनसीजेडसीसी, इलाहाबाद के ऑडीटोरियम में भी आयोजित किया गया। 1. विवेचना रंग–मंडल, जबलपुर के अरूण पांडी द्वारा निर्देशित निठल्ले की डायरी; 2. स्वर्ग रंग–मंडल, इलाहाबाद के अतुल यदुवंशी द्वारा

निर्देशित नोटंकी शैली में बंटवारे की आग; तथा 3. जयपुर, राजस्थान के पिपल्स मीडिया एंड थियेटर के अशोक राही द्वारा निर्देशित बिच्छू नामक नाटकों का मंचन किया गया। इलाहाबाद में अनिता गुप्ता निर्देशित लोक शैली में रामलीला का मंचन किया गया।

15. कथा लेखन एवं प्रस्तुति कार्यशाला :

साहित्य कला अकादमी, भोपाल के सहयोग से एनसीजेडसीसी ने 5 दिवसीय कथा लेखन तथा मंचन कार्यशाला का आयोजन किया। इस कार्यशाला में 14 विषय विशेषज्ञों 1. हेमन्त शेष, 2. प्रभाकर श्रोत्रिय, 3. हरीराम भटनागर (भोपाल, मध्य प्रदेश) 4. हरीराम मीना (जयपुर, राजस्थान) 5. अशोक राही (जयपुर, राजस्थान) 6. सूर्या बाली (मुम्बई, महाराष्ट्र) 7. वेद प्रकाश वैदिक (दिल्ली) 8. आलोक चटर्जी (भोपाल) 9. सुश्री उर्मिला शिरीष (भोपाल, मध्य प्रदेश) 10. डॉ. गिरीश रस्तोगी (गोरखपुर, उत्तर प्रदेश) 11. प्रवीण कुमार एवं साथी (बेगूसराय, बिहार) 12. दिनेश (दिल्ली) 13. मुकेश चतुर्वेदी एवं साथी, भवाई, माधोपुर 14. गगन मिश्र (जयपुर, राजस्थान) को आमंत्रित किया गया था।

16. उत्तराखंड पर्व :

कला, दस्तकारी और पारम्परिक व्यंजनों के पारम्परिक मूल्यों को प्रोत्साहन देने और उनका संरक्षण करने के उद्देश्य से उत्तराखंड दस्तकार तथा हथकरघा विकास परिषद, उत्तराखंड सरकार के सहयोग से 20 से 29 सितम्बर, 2009 तक 10 दिवसीय दस्तकारी मेले का आयोजन किया गया। मेले के दौरान प्रतिदिन सायंकाल उत्तराखंड के सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। इस समारोह से उत्तराखंड के सांस्कृतिक समूहों और हस्तशिल्पियों को भारतीय कला और संस्कृति का प्रचार, प्रसार और संरक्षण करने के लिए एक नियमित और सुदृढ़ आधार मिला।

17. नमन सांस्कृतिक संध्या :

इस संध्या का आयोजन लोक गीत, नृत्य तथा शास्त्रीय संगीत को समर्पित था और इसके आयोजन का उद्देश्य एनसीजेडसीसी के नए अध्यक्ष के 9 अक्तूबर, 2009 को पहली बार केंद्र में आने के उपलक्ष्य में उनका स्वागत करना था। उत्तर प्रदेश से लगभग 45 लोक कलाकारों को ढेडिया नृत्य, पाई डंडा नृत्य एवं होली नृत्य प्रस्तुत करने के लिए आमंत्रित किया गया था। पंडित विद्याधर मिश्र ने इस अवसर पर शास्त्रीय गायन प्रस्तुत किया और आरती सिंह ने कथक नृत्य प्रस्तुत किया।

18. राष्ट्रीय नाट्य महोत्सव :

नाट्य महोत्सव **ने** पिछले चार वर्षों में राष्ट्रीय मानक प्राप्त किया है और इसका वार्षिक आयोजन किया जा रहा है। डब्ल्यूजेडसीसी, पटियाला के सहयोग 21 से 25 अक्तूबर, 2009 तक चंडीगढ़ में 5 दिवसीय नाट्य महोत्सव का आयोजन किया गया। इस समारोह में पटना, बिहार की प्रांगण नाट्य संस्था, मुम्बई की मीती कनिष्ठा, इलाहाबाद के प्रवीण शेखर, बीकानेर, राजस्थान के सुदेश व्यास और जबलपुर, मध्य प्रदेश के आशीष पाठक को नाटकों का मंचन करने के लिए आमंत्रित किया गया था।

19. जरा याद करो कुर्बानी :

संस्कृति विभाग, उत्तर प्रदेश सरकार और बलिया जिला प्रशासन के सहयोग से श्हीद मंगल पांडे के बलिदान को याद करने के उपलक्ष्य में ''जरा याद करो कुर्बानी'' का आयोजन 3–4 अक्तूबर, 2009 को बलिया में किया गया।

20. सुरांजलि–उदीयमान कलाकारों को समर्पित संध्या :

इस संध्या का आयोजन प्रत्येक शनिवार को एनसीजेडसीसी ऑडीटोरियम में किया जाता है। इस कार्यक्रम के आयोजन का उद्देश्य उदीयमान कलाकारों को अपनी कला तथा प्रतिभा के प्रदर्शन का अवसर देना है। 7 नवम्बर, 2009 को सुगम संगीत के लिए गोरखपुर से मंजरी श्रीवास्तव एंड पार्टी, लोक गीतों के लिए इलाहाबाद से राजेश कुमार गुप्ता एंड पार्टी, गजलों के लिए इलाहाबाद से भूपेन्द्र कुमार शुक्ला एंड पार्टी तथा इलाहाबाद से कथक के लिए वर्षा दुबे एंड पार्टी को आमंत्रित किया गया था। 14 नवम्बर, 2009 को बाल दिवस के अवसर पर भजन संध्या का आयोजन किया गया और इस अवसर पर शास्त्रीय तथा लोक नृत्य भी प्रस्तुत किए गए थे। 21 नवम्बर, 2009 को सुगम संगीत के लिये वरूण मिश्रा एंड पार्टी (इलाहाबाद), लोक गीतों के लिए प्रिया पांडे एंड पार्टी (इलाहाबाद), तबला वादन के लिए कुहू मालविया एंड पार्टी (इलाहाबाद), राई नृत्य के लिए राजेश यादव एंड पार्टी (इलाहाबाद) को आमंत्रित किया गया। 28 नवम्बर, 2009 को लोक संगीत, सुगम संगीत, शास्त्रीय वादन और शास्त्रीय नृत्य के क्षेत्र में 14 उदीयमान कलाकारों को अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करने के लिए आमंत्रित किया गया।

21. प्रतिभा उत्सव :

उदीयमान प्रतिभाओं को तथा भारत सरकार के विद्वानों को प्रोत्साहित और मंच प्रदान करने के उद्देश्य से एनसीजेडसीसी ''प्रतिभा उत्सव'' का

आयोजन करता आ रहा है। नवम्बर, 2009 के महीने में युवा तथा संस्कृति विभाग, बिहार के सहयोग से पटना, बिहार में 27 और 28 नवम्बर, 2009 को प्रतिभा उत्सव का आयोजन किया गया। इस उत्सव में तबला वादन के लिए चंदन एवं साथियों को, लोक गीतों के लिए निशा कुमारी एवं साथियों को, गिटार वादन के लिए प्रतीश कुमार सिन्हा एवं साथियों को सितार वादन के लिए अनुपम भट्टाचार्य एवं साथियों को, लोक संगीत के लिए अंशुमाला एवं साथियों को आमंत्रित किया गया था। लगभग 400 दर्शक इस कार्यक्रम में उपस्थित थे।

22. मंच संचालन कला कार्यशाला :

संस्कृति निदेशालय, उत्तराखंड के सहयोग से सांस्कृतिक कार्यक्रमों के संचालन की विभिन्न विधाओं के संबंध में एक कार्यशाला देहरादून में 30 नवम्बर से 6 दिसम्बर, 2009 तक आयोजित की गई। इस कार्यशाला में 50 प्रतिभागियों को सांस्कृतिक कार्यक्रमों के संचालन के दौरान विभिन्न तकनीकी पहलुओं का प्रशिक्षण दिया गया। निम्नलिखित विशेषज्ञों को आमंत्रित किया गया था :

1. पंचदेव पाण्डेय (दिल्ली), 2. संजीव उपाध्याय (दिल्ली), 3. महेश चन्द्र (दिल्ली), 4. कुलदीप सिंह कंग (दिल्ली), 5. आशा निवेदी (दिल्ली), 6. नरेन्द्र आचार्य (वाराणसी), 7. लक्ष्मी शंकर बाजपेयी (दिल्ली), 8. जसदेव सिंह (दिल्ली), 9. महेश कुमार सिन्हा (गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश), 10. अज़ीज़ हसन (देहरादून), 11. अमर नाथ अमर (दिल्ली)।

23. कुवैत में भारतीय अंतर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक महोत्सव :

संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली ने भारत–कुवैत सांस्कृतिक आदान–प्रदान कार्यक्रम–2009–2011 के अनुसरण में भारतीय राजदूतावास, कुवैत तथा नेशनल काउंसिल फॉर कल्चर, आर्ट्स एंड लेटर्स, स्टेट ऑफ कुवैत के सहयोग से कुवैत में 8 से 14 नवम्बर, 2009 तक सात दिवसीय **''भारत महोत्सव''** का आयोजन किया गया। एनसीजेडसीसी, इलाहाबाद को कुवैत में इस सांस्कृतिक कार्यक्रम के आयोजन हेतु नोडल एजेंसी नियुक्त किया गया था। **''भारत महोत्सव''** का उद्घाटन विशिष्ट व्यक्तियों और राजनयिकों आदि के लिए **8 नवम्बर, 2009** को किया गया और दूसरे दिन 9 नवम्बर, 2009 को यह कार्यक्रम आम लोगों के लिए किया गया था। यह महोत्सव 14 नवम्बर, 2009 को समाप्त हुआ। कुवैत में भारत उत्सव के लिए चुने गए लोक कलाकारों के दलों को 30 अक्तूबर से 2 नवम्बर तक एनसीजेडसीसी, इलाहाबाद में अभ्यास और नृत्य निर्देशन के लिए बुलाया गया था। लोक कलाकार थे –

1. अब्दुल अज़ीज़ एवं साथी (केरल), संतूर वादन
2. सृष्टिधर महतो एवं साथी (झारखंड), छाउ नृत्य
3. दक्ष महेंद्र जोशी एवं साथी (अहमदाबाद, गुजरात), डांडिया रास, हुडो, गरबा
4. रूपिंदर सिंह एवं साथी (पटियाला), भांगड़ा नृत्य
5. जगोई मरूप एवं साथी (मणिपुर), बसंत रास और मार्शल नृत्य, ढोल चोलोम

कीफान ऑडीटोरियम कुवैत में 8–9, 11–12 और 14 नवम्बर 2009 को मंचीय कलाओं का आयोजन

1. पंडित शिवकुमार शर्मा एवं साथी (मुम्बई), संतूर वादन
2. रंजना गौहर एवं साथी (दिल्ली), ओडिसी नृत्य नाटिका
3. अब्दुल अजीज एवं साथी (केरल), ओपन्ना नृत्य
4. सृष्टिधर महतो एवं साथी (झारखंड), छाऊ नृत्य
5. दक्ष महेन्द्र जोशी एवं साथी (अहमदाबाद, गुजरात), डांडिया रास, हूडो एवं गरबा
6. रिम्पा शिवा एवं साथी (कोलकाता), तबला वादन
7. शिकाटो जी. शोहे एवं साथी (नागालैंड), वारियर नृत्य
8. रूपिन्दर सिंह एवं साथी (पटियाला), भांगड़ा नृत्य
9. जगोई मारूप एवं साथी (मणिपुर), वसंत रास तथा मार्शल नृत्य, तथा ढोल चोलोम
10. राजेन्द्र प्रसन्ना एवं साथी (दिल्ली), बांसुरी वादन
11. पंडित हरि प्रसाद चौरसिया एवं साथी (मुम्बई), बांसुरी वादन
12. कलामंडलम एंन. रमनकुट्टी एवं साथी (केरल), कथकली नृत्य।

अल–सदू हाउस, कुवैत में 9 से 13 नवम्बर, 2009 तक बुने हुए वस्त्र, भारतीय पारम्परिक शालों और मधुबनी लोक कला प्रदर्शनी

डिस्कवरी सेंटर, कुवैत में 9 से 13 नवम्बर, 2009 तक पारम्परिक तथा छाया कठपुतली शो, पारम्परिक भारतीय गुड़िया प्रदर्शनी तथा मेंहदी लगाने की पारम्परिक कला के संबंध में प्रदर्शनी लगाई गई।

अल–फनून हाल, कुवैत में 9 से 13 नवम्बर, 2009 तक ''मुम्बई थ्रू द एजिज–पास्ट एंड प्रिजेंट'' नामक शीर्षक से पुराने चित्रों की प्रदर्शनी

ग्रांड मस्जिद, कुवैत में 10 से 13 नवम्बर, 2009 तक जनता के लिये अरबिक केलिग्राफी एंड इंडियन–मुस्लिम रिलिजियस पोस्टर्स एंड कलैंडर आर्ट प्रदर्शनी

एवेन्यूज मॉल, कुवैत में 10 से 13 नवम्बर, 2009 तक समसामयिक तथा पारम्परिक चित्रकला प्रदर्शनी लगाई गई। इसमें भाग लेने वाले कलाकार थे :

चरण शर्मा (मुम्बई), निधि जैन (जबलपुर), शैल चोयल (उदयपुर) और कल्याण जोशी (भीलवाड़ा, राजस्थान)

कुवैत स्थित भारतीय राजदूतावास में 10 नवम्बर, 2009 को एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया।

सांस्कृतिक कार्यक्रम की यह संध्या कुवैत में रह रहे भारतीयों को समर्पित थी।

1. रंजना गौहर एवं साथी (दिल्ली), से ओडिसी नृत्य नाटिका, रिम्पा शिवा एवं साथी (कोलकाता) से तबला वादन, राजेन्द्र प्रसन्ना एवं साथी (दिल्ली) से बांसुरी वादन प्रस्तुत करने का अनुरोध किया गया।

एवेन्यू मॉल, कुवैत में 11–13 नवम्बर, 2009 को स्थानीय लोगों के लिये संध्या के समय भारत के विभिन्न राज्यों के लोक नृत्य भी प्रस्तुत किए गए थे।

24. मंचन 2009 – नाट्य समारोह :

संस्कृति विभाग, मध्य प्रदेश और जिला प्रशासन, उज्जैन, मध्य प्रदेश के सहयोग से कालिदास अकादमी, उज्जैन, मध्य प्रदेश में 4–6 दिसम्बर, 2009 तक तीन दिवसीय नाट्य समारोह का आयोजन किया गया। जिला प्रशासन बीकानेर, राजस्थान के सहयोग से बीकानेर में 8 से 9 दिसम्बर, 2009 तक इसी समारोह का आयोजन किया गया था। 1. मंच थियेटर के (मुम्बई, महाराष्ट्र) विजय कुमार एवं साथियों ने ''दूसरा अध्याय'' नामक नाटक का मंचन किया, 2. इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश के अभिनव थियेटर ग्रुप के शैलेश श्रीवास्तव एवं साथियों ने ''द ग्रेट राजा मास्टर ड्रामा कम्पनी'' का मंचन किया और 3. दिल्ली के सम्भव आर्ट्स ग्रुप ने देवेन्द्र राज अंकुर (दिल्ली) के निर्देशन में दोनों स्थानों पर ''डांसिंग विद डैड'' का मंचन किया।

25. सुरांजलि सांस्कृतिक कार्यक्रम :

जिला प्रशासन इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश की सहायता से 5 दिसम्बर, 2009 को सुरांजलि सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन एनसीजेडसीसी, इलाहाबाद में किया गया। सप्ताह के प्रत्येक शनिवार को आयोजित किए जाने वाले इस कार्यक्रम में लोक शास्त्रीय तथा वाद्य कलाओं के उदीयमान कलाकारों को अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करने हेतु मंच प्रदान किया जाता है। इस सप्ताह युवा कलाकारों – सुगम संगीत के लिए बेबी रावल और उनके तीन साथियों तथा लोक संगीत के लिए इलाहाबाद की राधा जायसवाल एवं उनके सात साथियों को दो सौ दर्शकों के समक्ष अपनी कला का प्रदर्शन काने के निए आमंत्रित किया गया था।

कठपुतली कार्यशाला

26. कठपुतली निर्माण कला पर कार्यशाला :

एनसीजेडसीसी, इलाहाबाद के परिसर में 8 से 22 दिसम्बर, 2009 तक कठपुतली निर्माण कला के संबंध में 15 दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में 10 स्थानीय कलाकारों ने भाग लिया जिन्होंने कठपुतली निर्माण कला की विभिन्न राजस्थानी पौराणिक शैलियों को सीखने में गहरी रूचि ली। 22 दिसम्बर, 2009 को इलाहाबाद हाट, एनसीजेडसीसी में राष्ट्रीय शिल्प मेले में कठपुतली शो प्रस्तुत किया गया। महात्मा गांधी कला दीर्घा, एनसीजेडसीसी में जनता के लिए 23 दिसम्बर, 2009 को विभिन्न कठपुतली शैलियों का प्रदर्शन किया गया।

27. राष्ट्रीय शिल्प मेला 2009 :

देश की कला, शिल्प एवं सांस्कृतिक विरासत के पारम्परिक मूल्यों का संवर्धन एवं अनुरक्षण करने के उद्देश्य से 13 दिवसीय राष्ट्रीय शिल्प मेले एवं लोक नृत्यों का आयोजन किया गया। इस मेले में दस्तकारी का सामान, देश की संस्कृति और पारम्परिक पाक कला का प्रदर्शन किया गया। इस वर्ष इस शिल्प मेले का आयोजन एनसीजेडसीसी परिसर में इलाहाबाद हाट में 11 से 23 दिसम्बर, 2009 तक किया गया।एनसीजेडसीसी के संघटक राज्यों से **410 लोक कलाकारों** को विभिन्न लोक कलाओं के

प्रदर्शन तथा अपने–अपने क्षेत्रों के जनजातीय नृत्यों के प्रदर्शन हेतु बुलाया गया था। पूरे देश से लगभग **87 दस्तकार** बुलाए गए थे ताकि वे अपनी दस्तकारी और विभिन्न क्षेत्रों की पाक कला का परिचय दे सकें। 19 दिसम्बर, 2009 को कवि संध्या का आयोजन किया गया जिसमें उत्तर प्रदेश, राजस्थान और दिल्ली के **13 लब्धप्रतिष्ठ कवियों** को अपनी कविताओं का पाठ करने के लिए बुलाया गया था।

28. सिरेमिक पॉटरी प्रदर्शनी :

श्री रतन कुमार, प्रोक्टर, लखनऊ विश्वविद्यालय द्वारा महात्मा गांधी कला दीर्घा, एनसीजेडसीसी, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश में 25 से 27 दिसम्बर, 2009 तक सिरेमिक पॉटरी प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस प्रदर्शनी में गमले, कप और प्लेट, संयोजन और प्राचीन शैली के बर्तन आदि सहित लगभग 45 नमूने प्रदर्शित किए गए थे। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन करने के लिए प्रो. रामचन्द्र शुक्ल, पूर्व अध्यक्ष, दृश्य कला, बी.एच.यू., वाराणसी, उत्तर प्रदेश को आमंत्रित किया गया था। इस प्रदर्शनी को देखने के लिए इलाहाबाद, वाराणसी और लखनऊ के बहुत से वरिष्ठ और नवोदय कलाकार आए।

29. गांधी शिल्प बाजार – हस्त**शिल्प मेला 2009 :**

डीसी (एचसी), वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली के सहयोग से प्रत्येक वर्ष 13 दिवसीय राष्ट्रीय शिल्प मेला आयोजित किया जाता है। इस वर्ष गांधी शिल्प बाजार का आयोजन इलाहाबाद हाट, एनसीजेडसीसी में 25 दिसम्बर, 2009 से 6 जनवरी, 2010 तक किया गया। इस मेले में भी सम्पूर्ण भारत के शिल्प, संस्कृति और व्यंजन थे। यह शिल्प बाजार प्रतिदिन प्रातः 11 बजे से प्रारम्भ होता है और सायंकालीन सत्र में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है जिसमें भाग लेने के लिए एनसीजेडसीसी द्वारा 190 लोक कलाकारों को और अन्य क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्रों द्वारा 187 कलाकारों को आमंत्रित किया जाता है।

राई नृत्य, मध्य प्रदेश

4
ज्ञान स्रोत विरासत

4.1
संस्थाएं

4.1.1

भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार

❖ राष्ट्रीय अभिलेखागार, संस्कृति मंत्रालय का एक सम्बद्ध कार्यालय है जिसमें स्थायी महत्व के अभिलेखों का प्रशासकों और विद्वानों के उपयोग के लिए स्थायी तौर पर परिरक्षण किया जाता है। इसके पास भारत के प्रतिष्ठित व्यक्तियों के निजी दस्तावेज मौजूद हैं और साथ ही विदेशों से प्राप्त की गई माइक्रोफिल्म की प्रतियां भी हैं। अपने नियमित कार्यक्रम में राष्ट्रीय अभिलेखागार, भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों/विभागों को उनके अभिलेख प्रबन्धन कार्यक्रमों में सहायता देता है, देश और विदेश से आए विद्वानों को अनुसंधान सुविधाएं उपलब्ध कराता है; इसके अलावा यह विभिन्न स्वैच्छिक संगठनों को उनके अभिरक्षण में पाण्डुलिपियों के परिरक्षण के साथ–साथ राज्य/संघ शासित क्षेत्रों को उनके विकास कार्यक्रमों आदि के लिए वित्तीय सहायता मुहैया कराता है। यह विभिन्न सरकारी विभागों, स्वैच्छिक संगठनों और व्यक्तियों को बहुमूल्य अभिलेखों और दस्तावेजों के परिरक्षण की तकनीकी जानकारी प्रदान करने के लिए उनका मार्गदर्शन भी करता है।

❖ अभिलेखीय अध्ययन स्कूल अपने **एक वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम** के अंतर्गत **अभिलेखीय और अभिलेख प्रबन्धन** और विभिन्न **लघु अवधि प्रमाणपत्र पाठ्यक्रमों** में देश–विदेश के प्रशिक्षार्थियों को प्रशिक्षण प्रदान करता है। यह लोगों में अभिलेखीय जागरूकता सृजित करने के अपने कार्यक्रमों के तहत विभिन्न विषयपरक प्रदर्शनियां भी आयोजित करता है। राष्ट्रीय अभिलेखागार का एक क्षेत्रीय कार्यालय भोपाल में और तीन अभिलेख केन्द्र भुवनेश्वर, जयपुर और पुद्दुचेरी में है।

घटनाक्रम

❖ श्री के.एम. चन्द्रशेखर, मंत्रिमंडल सचिव, भारत सरकार ने दिनांक 31 अक्तूबर, 2009 को इस विभाग का दौरा किया। उन्होंने सचिव, संस्कृति और मंत्रालय के अन्य अधिकारियों तथा महानिदेशक, राष्ट्रीय अभिलेखागार के साथ बैठक की। उन्हें विभिन्न कार्यकलापों और चल रहे कार्यक्रमों तथा विभाग की भावी योजनाओं के बारे में बताया गया। मंत्रिमंडल सचिव को विभाग के विभिन्न प्रभागों में ले जाया गया। उन्होंने राष्ट्रीय अभिलेखागार संग्रहालय का भी दौरा किया।

❖ **अभिलेखीय सलाहकार बोर्ड** की 11वीं बैठक दिनांक 10 नवम्बर, 2009 को श्री जवाहर सरकार, सचिव, संस्कृति मंत्रालय की अध्यक्षता में आयोजित की गई थी।

❖ भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार द्वारा 11 मार्च 2010 को अपना **120वॉं स्थापना दिवस** मनाया गया। दिनांक 12 मार्च 2010 को जानेमाने इतिहासविद् प्रोफेसर सब्यसाची भट्टाचार्य ने 'अभिलेखगार किस काम के लिए होते हैं' विषय पर व्याख्यान दिया। समारोह के मुख्य अतिथि श्री जवाहर सरकार, सचिव (संस्कृति) थे।

❖ राष्ट्रीय पुरालेखाकार समिति (एनसीएं) की 44वीं बैठक के बाद बिहार राज्य अभिलेखागार के तत्वावधान में 19–21 मार्च 2010 के दौरान पटना में राष्ट्रीय निजी अभिलेख रजिस्टर की बैठक आयोजित की गई।

कार्य योजना

❖ भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार के कार्य में बाह्य एजेंसी की जनशक्ति के जरिए तेजी लाने के लिए एक कार्य योजना को संस्कृति मंत्रालय द्वारा अनुमोदित किया गया। इसके अंतर्गत निम्नलिखित 6 परियोजनाएं शामिल हैं (i) 1947 के बाद मंत्रालयों एवं विभागों के गैर–सामयिक रिकार्डों का मूल्यांकन एवं अंतरण, (ii) रिकार्डों का प्रसंस्करण एवं अवाप्ति कमांकंन, (iii) सार्वजनिक रिकार्डों के संदर्भ मीडिया तैयार करना, (iv) सार्वजनिक रिकार्डों का संरक्षण एवं परिरक्षण करना, (v) दुर्लभ एवं महत्वपूर्ण पुस्तकों की मरम्मत एवं जिल्दबंदी तथा प्रकाशन और (vi) सार्वजनिक रिकार्डों की सुरक्षित माइक्रोफिल्मिंग, सकारात्मक निर्माण एवं डिजीटिलीकरण।

प्राप्ति/अधिग्रहण :

❖ भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों/विभागों की 11,069 फाइलें प्राप्त होने से इस विभाग के अभिलेख में और वृद्धि हुई।

❖ भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार के निजी अभिलेखागार अनुभाग में श्री एस.संतोख सिंह, श्री अभिक कुमार डे तथा डॉ. जी.पी. दासगुप्ता से संबंधित तीन निजी संग्रह प्राप्त हुए। इसके अतिरिक्त, राष्ट्रीय अभिलेखागार इंग्लैंड से रिकार्डों की टी–49 श्रृंखला के 17 माइक्रोफिल्म रोल्स प्राप्त हुए जिनमें बंगाल में भू–राजस्व, ईस्ट इंडीज में व्यापार करने वाली इंग्लैंड के व्यापारियों की यूनाइटेड कंपनी के कार्यों, रोहिल्ला युद्ध, बंगाल एवं बिहार में प्रांतीय परिषदों के खजानों एवं ब्रिटिश अधिकारियों के पत्राचार इत्यादि से संबंधित जानकारी है।

❖ विभाग के पुस्तकालय में 1,125 पुस्तकों को शामिल किया गया।

अभिलेख प्रबंधन

❖ अभिलेख सृजित करने वाले विभिन्न अभिकरणों की 22,168 गैर मौजूदा फाइलों का मूल्यांकन किया गया। इसके अतिरिक्त, 30 निदेशालयों और रेलवे बोर्ड के कार्यालयों की रिकार्ड प्रतिधारण अनुसूची के पुनरीक्षण हेतु स्थल अध्ययन के कार्य को भी पूरा किया गया। श्री एस.एम.आर.बाकर, महानिदेशक, अभिलेखागार ने दस मंत्रालयों/विभागों के मुख्य रिकार्ड अधिकारियों के साथ बैठक की तथा रिकार्ड प्रबंधन से संबंधित मुद्दों पर चर्चा की।

❖ सार्वजनिक रिकार्ड अधिनियम, 1993 तथा सार्वजनिक रिकार्ड नियमावली, 1997 के लिए **समीक्षा पैनल** की दो बैठकें की गईं। समीक्षा पैनल की सिफारिश के अनुसार प्रारूप संशोधन तैयार करने के लिए एक उप–समिति का गठन किया गया। समीक्षा पैनल की प्रारूप रिपोर्ट सचिव, संस्कृति जो अभिलेखीय सलाहकार बोर्ड (एनएबी) के अध्यक्ष भी हैं, को प्रस्तुत कर दी गई है। मंत्राालय द्वारा इस पर अंतिम निर्णय लिए जाने से पूर्व इसे अभिलेखीय सलाहकार बोर्ड के सभी सदस्यों, समीक्षा पैनल के सदस्यों तथा कुछ विख्यात विद्वानों और प्रशासकों को टिप्पणियों के लिए परिचालित किया गया है।

❖ **रिकार्ड प्रबंधन** पर सात अभिविन्यास पाठ्यक्रमों का आयोजन किया गया। इनमें से तीन का आयोजन भारत के राष्ट्रीय अभिलेखागार में तथा चार पाठ्यक्रमों का आयोजन भारत के राष्ट्रीय अभिलेखागार केन्द्रों भुवनेश्वर, जयपुर एवं पुद्दुचेरी और भोपाल में किया गया। इन पाठ्यक्रमों में 153 विभागीय अभिलेख अधिकारियों ने भाग लिया।

❖ 1947 के बाद की अवधि की मूल्यांकन की गई तथा राष्ट्रीय अभिलेखागार को अंतरित की गई लगभग 90,000 फाइलों को प्राप्त करने के लिए 7 मंत्रालयों और विभागों में 20 अभिलेखीय सहायकों की तैनाती की गईं।

सार्वजनिक अभिलेख अधिनियम, 1993 का कार्यान्वयन

❖ वर्ष 2007 की **महानिदेशक, अभिलेखागार की 10वीं रिपोर्ट** का प्रकाशन किया गया तथा इसे मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों में वितरित किया गया।

प्रकाशन

निम्नलिखित प्रकाशन निकाले गए :

- **अभिलेख** – खण्ड 3, सं.1 (अप्रैल–जून, 2008)
- **अभिलेख** – खण्ड 3, सं.2 (जुलाई–सितम्बर, 2008)
- **अभिलेख** – खण्ड 3, सं.3 (अक्तूबर–दिसम्बर, 2008)
- **अभिलेख** – खण्ड 3, सं.4 (जनवरी–मार्च, 2009)
- **अभिलेख** – खण्ड 4, सं.1 (अप्रैल–जून, 2009)
- **भारतीय इतिहास रिकार्ड आयोग** : स्रोतः

भारतीय इतिहास – खण्ड 3

- **भारत–पाकिस्तान राजस्व मानचित्र श्रृंखला की सूची (1852–1901)**
- **खुतूत–ए–आजाद (हिन्दी में)**

अनुसंधान और संदर्भ

- अनुसंधान कक्ष में 506 भारतीय तथा 99 विदेशी विद्वानों को नामांकित किया गया।
- 36,662 विद्वानों द्वारा अनुसंधान कक्ष का दौरा किया गया।
- विद्वानों से अभिलेखों/दस्तावेजों/माइक्रोफिल्मों के प्राप्त हुए 26,774 मांग पत्रों पर कार्रवाई की गई।

अभिलेखीय अध्ययन स्कूल

- अभिलेखीय अध्ययन स्कूल ने **अभिलेख और रिकार्ड प्रबंधन में एक वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम** तथा अल्पावधि के विभिन्न पाठ्यक्रम जारी रखे।
- **अभिलेख और रिकार्ड प्रबंधन में एक वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम,** 2008–09, 05 नवम्बर, 2008 से 31 अक्तूबर, 2009 तक आयोजित किया गया। 5 प्रायोजित अम्मीदवारों सहित 24 अम्मीदवारों में से 23 ने सफलतापूर्वक पाठ्यक्रम पूरा किया। 2009–10 का नया सत्र 3 नवम्बर, 2009 से प्रारम्भ हो गया है जिसमें श्री लंका और म्यांमार के एक–एक उम्मीदवार सहित 18 उम्मीदवार हैं।

निम्नलिखित लघु अवधि पाठ्यक्रम संचालित किए गए

- **रेप्रोग्राफी** – 6 अप्रैल से 15 मई, 2009 तथा 7 सितम्बर से 16 अक्तूबर, 2009
- **अभिलेख प्रबंधन** 4–29 मई, 2009 तथा 1–30 सितम्बर, 2009
- **अभिलेखों की देखभाल और मरम्मत** 11 मई से 19 जून, 2009 तथा 7 सितम्बर से 16 अक्तूबर, 2009
- **पुस्तकों, पाण्डुलिपियों और अभिलेखों की देखभाल व संरक्षण** 6 जुलाई से 28 अगस्त, 2009 एवं 26 अक्तूबर से 18 दिसम्बर, 2009

संरक्षण

❖ 73,614 पृष्ठों और 44 मानचित्रों की मरम्मत की गई; 170 खण्डों, 234 पुस्तकों तथा 3,151 विविध मदों की सिलाई की गई; 157 खण्डों, 221 पुस्तकों की जिल्दबंदी की गई। 7,865 पृष्ठों को सीधा किया गया तथा 3,229 पृष्ठों की सुरक्षा भी की गई।

❖ राष्ट्रीय अभिलेखागार द्वारा विश्व भारती, शान्ति निकेतन के संग्रह में दिसम्बर 2009 में अभिलेखीय रिकार्डों (ताड़ पत्र, भोज पत्र, महीन कागज़ आदि) के संरक्षण और परिरक्षण के लिए एक विशेष योजना प्रारम्भ की गई है।

❖ संरक्षण के विभिन्न पहलुओं पर 9 संगठनों अर्थात् बिहार राज्य अभिलेखागार, मिज़ोरम राज्य अभिलेखागार, पंजाब राज्य अभिलेखागार, उत्तर प्रदेश राज्य अभिलेखागार, संसदीय कार्य मंत्रालय, जामनगर हाउस, नई दिल्ली आदि को तकनीकी जानकारी प्रदान की गई।

रिपोग्राफी

❖ चलाए जा रहे सुरक्षा माइक्रोफिल्म कार्यक्रम के तहत राष्ट्रीय अभिलेखागार ने अभिलेखों की महत्वपूर्ण श्रृंखलाओं की माइक्रोफिल्म बनाने का कार्यक्रम जारी रखा तथा 3,44,643 एक्सपोजरों वाली 496 रीलें तैयार की गई। रेप्रोग्राफी प्रकोष्ठ द्वारा राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय की दुर्लभ तथा कीमती पुस्तकों की 15,200 एक्सपोजरों की सुरक्षा माइक्रोफिच तैयार की गई, अध्येताओं आदि को दस्तावेजों की 84,531 प्रतियां उपलब्ध कराई गईं। डिजीटीकरण कार्यक्रम के अंतर्गत, माइक्रोफिल्मों और पाण्डुलिपियों के 44,800 चित्र तैयार किए गए।

❖ रेप्रोग्राफी पर 12 संगठनों/एजेंसियों अर्थात् कर्नाटक राज्य अभिलेखागार, पंजाब राज्य अभिलेखागार, उत्तर प्रदेश राज्य अभिलेखागार, केंद्रीय अपराध विज्ञान प्रयोगशाला, नई दिल्ली, केंद्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी आदि को तकनीकी जानकारी प्रदान की गई।

कम्प्यूटरीकरण

❖ अभिलेखों के संदर्भ–मीडिया के कम्प्यूटरीकरण के कार्यक्रम के तहत डाटा वेलिडेटर द्वारा सार्वजनिक रिकार्ड तथा निजी अभिलेख दस्तावेजों की 2,84,529 प्रविष्टियों की आवश्यक सुधार हेतु जांच की गई।

निजी दस्तावेजों के संदर्भ मीडिया तैयार करने के लिए परियोजना

❖ इस परियोजना के तहत, के.एम. मुंशी दस्तावेजों (माइक्रोफिल्म) की 6,103 प्रविष्टियों, सरदार वल्लभभाई पटेल दस्तावेजों (माइक्रोफिल्म) की 24,069 प्रविष्टियों, फूल चन्द जैन दस्तावेजों की 7,058 प्रविष्टियों को हाथों से तैयार किया गया। इसके अतिरिक्त, कस्तूरभाई लालभाई दस्तावेजों की 36,649 प्रविष्टियों, के.एम. मुंशी दस्तावेजों की 7,282 प्रविष्टियों तथा सरदार वल्लभभाई पटेल दस्तावेजों

की 20,327 प्रविष्टियों को कम्प्यूटरीकृत किया गया।

अनुदान

- ❖ राज्य/संघ शासित प्रदेशों के अभिलेखागार आधानों, सरकारी पुस्तकालयों एवं संग्रहालयों को वित्तीय सहायता प्रदान करने की स्कीम के तहत गुजरात, केरल, पंजाब, राजस्थान, तमिलनाडु एवं पश्चिम बंगाल के 14 संगठनों हेतु कुल 29,17,625 रू. की राशि की सिफारिश की गई।
- ❖ पाण्डुलिपियों/दुर्लभ पुस्तकों को परिरक्षित करने के लिए वित्तीय सहायता स्कीम के अंतर्गत अनुदान समिति ने दिनांक 28 अगस्त, 2009 को आयोजित अपनी बैठक में असम, गुजरात, जम्मू एवं कश्मीर, महाराष्ट्र, उड़ीसा, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड एवं पश्चिम बंगाल के 20 संगठनों/व्यक्तियों के लिए 13,92,750 रू. की राशि की सिफारिश की।

कार्यशाला और सेमिनार

- ❖ रिकार्ड प्रबंधन, संरक्षण एवं माइक्रोफिल्मिंग/डिजीटिलीकरण में मानव संसाधन विकास पर एक सप्ताह की कार्यशाला का आयोजन भारत के राष्ट्रीय अभिलेखागार द्वारा दिनांक 3 से 7 अगस्त, 2009 को अंडमान व निकोबार द्वीप समूह प्रशासन के सहयोग से पोर्ट ब्लेयर में आयोजित की गई। अंडमान व निकोबार प्रशासन के विभिन्न विभागों के 38 कर्मचारियों ने इस कार्यशाला में भाग लिया।

- ❖ भारतीय रिजर्व बैंक के सहयोग से 7 से 8 दिसम्बर, 2009 को पुणे में कारोबार अभिलेखागार पर दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया। सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रमों, बैंकिंग संस्थाओं तथा कारपोरेट अभिलेखागारों के 48 वरिष्ठ एवं मध्यम स्तर के अधिकारियों ने इस सेमिनार में भाग लिया। जापान, फ्रांस, नार्वे एवं इटली के चार प्रतिनिधिमंडलों ने भी सेमिनार में भाग लिया तथा अपने लेख प्रस्तुत किए।

अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन

- ❖ श्री एस.एम.आर. बाकर, महानिदेशक, अभिलेखागार तथा श्रीमती (डॉ.) मीना गौतम, उप–निदेशक; अभिलेखागार को 5–7 मई, 2009 को तेहरान में आयोजित होने वाली अंतर्राष्ट्रीय अभिलेखागार परिषद की दक्षिण–पश्चिम एशियाई क्षेत्रीय शाखा (एसडब्ल्यूएआरबीआईसीए) की बैठक में भाग लेने के लिए प्रतिनियुक्त किया गया।

दौरे

- ❖ सूरीनाम के माननीय गृह मंत्री महामहिम श्री मौरिट्स एस. हसनखान ने 07 जनवरी, 2010 को राष्ट्रीय अभिलेखागार का दौरा किया। भारत में सूरीनामी रूचि के अभिलेखों के साथ–साथ अभिलेखागार के क्षेत्र में भारत–सूरीनाम सहयोग पर विचार–विमर्श किया गया।

अभिलेखागार सप्ताह

- ❖ दिल्ली अंतर्राष्ट्रीय कला उत्सव के सहयोग से दिनांक 5 से 9 अक्तूबर, 2009 को **अभिलेखागार सप्ताह** का आयोजन किया गया। इस सप्ताह के दौरान दिल्ली के स्कूलों के 105 छात्रों और जम्मू तथा कश्मीर के 86 छात्रों के लिए विभिन्न खण्डों का दौरा आयोजित किया गया। दौरे के दौरान छात्रों को भारत की अभिलेखीय विरासत की महत्ता की जानकारी दी गई।

सांस्कृतिक आदान–प्रदान कार्यक्रम

- ❖ राष्ट्रीय अभिलेखागार और ब्रिटिश लाइब्रेरी के बीच हुए आदान–प्रदान समझौता पुनः करने के संबंध में गृह मंत्रालय और विदेश मंत्रालय से प्राप्त हुए मसौदा समझौतों की जॉच की गई और संस्कृति मंत्रालय को अग्रेषित किया गया।

- ❖ भारत–कुवैत शैक्षिक आदान–प्रदान कार्यक्रम (2010–11) और भारत–सउदी अरब समझौता ज्ञापन की जॉच की गई और उन्हें संस्कृति मंत्रालय को अग्रेषित किया गया।

आउटरीच कार्यक्रम

- ❖ स्कूलों में अभिलेखीय जागरूकता उत्पन्न करने के लिए दिल्ली के स्कूलों के प्रधानाचार्यों के साथ 7 अगस्त, 2009 को आपसी विचार–विमर्श सत्र आयोजित किया गया। इसमें रामजस स्कूल, हमदर्द स्कूल, न्यू इरा पब्लिक स्कूल, श्री राम स्कूल, कुलाची हंसराज स्कूल, मदर इंटरनेशनल स्कूल, लोरेटो कॉन्वेंट, दिल्ली पब्लिक स्कूल, केम्ब्रिज फाउण्डेशन स्कूल, सुश्री आर्शिया सेठी फॉरम फॉर आर्ट, मॉडर्न स्कूल ने भाग लिया।

क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल

- ❖ खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्रालय से 29 फाइलें प्राप्त हुईं तथा 23 पुस्तकों को शामिल किया गया, 900 फाइलों/खण्डों का धूम्रीकरण किया गया, 219 पृष्ठों का लेमिनेशन किया गया, 6,544 पृष्ठों की मरम्मत की गई, 3,577 पृष्ठों को सुरक्षित किया गया। दिनांक 18–22 मई, 2009 को ''18वीं एवं 19वीं शताब्दियों के दौरान संचार के साधनों का विकास'' विषय पर एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इसके अतिरिक्त, 86 विद्वानों ने कार्यालय का दौरान किया तथा रिकार्डों से 4,850 मांगों को संसाधित किया गया।

अभिलेख केन्द्र, भुवनेश्वर

- ❖ पेटेंट एवं डिजाइन कार्यालय, कोलकाता से पेटेंट विशिष्टियों (1964–66) से संबंधित 5,617 फाइलों तथा 20 खण्डों को अधिग्रहित किया। इसके अतिरिक्त, गोपीनाथ मोहंती प्रतिष्ठान न्यास से 40 ताड़पत्र पाण्डुलिपियां प्राप्त कीं तथा डी.एन. दास महापात्रा, पछेतगढ़, पूर्वी मिदनापुर, पश्चिम बंगाल से 140 ताड़–पत्र पाण्डुलिपियां अधिग्रहित की गईं। कुल 7,828 फाइलों का मूल्यांकन किया गया तथा 2,827 फाइलों को नष्ट करने हेतु मार्क किया गया। ये फाइलें पेटेंट एवं डिजाइन कार्यालय (1966) एवं स्टेशनरी कार्यालय (1921–84) (दोनों कोलकाता में) से संबंधित थी। दिनांक 14 से 18 दिसम्बर, 2009 को विभागीय रिकार्ड कार्यालयों हेतु रिकार्ड प्रबंधन में एक पुनश्चर्या पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया। भारत सरकार के विभिन्न कार्यालयों/संगठनों से 16 अधिकारियों ने इस पाठ्यक्रम में भाग लिया।

- ❖ भंगुर रिकार्डों के संरक्षण की एक परियोजना का कार्य इनटेक, भुवनेश्वर से आऊटसोर्स के जरिए कराया गया जिसने भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, कोलकाता के रिकार्डों से संबंधित 14,586 पृष्ठों का विभिन्न संरक्षण उपचार किया है।

अभिलेख केन्द्र, जयपुर

- ❖ मध्य रेलवे, मुम्बई से प्राप्त 168 खण्डों (1854–59) का संदर्भ मीडिया तैयार किया। 6,687 पृष्ठों का हाथ से लेमिनेशन किया गया, 4,101 पृष्ठों की टिश्यू मरम्मत की गई, 865 बंडलों की सिलाई की गई, 44 खण्डों एवं 78 विविध मदों की जिल्दसाजी की गई तथा 96 बंडलों को धूमीकृत किया गया।

- ❖ 'ब्रिटिश राज में राजपूताना का नमक उद्योग' शीर्षक के तहत दिनांक 21 से 28 जुलाई, 2009 को एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

- ❖ 8 विद्वानों को अनुसंधान सुविधाएं प्रदान की गईं।

अभिलेख केन्द्र, पुद्दुचेरी

- ❖ 180 राजपत्र, 30 पत्रिकाएं तथा 25 पुस्तकें प्राप्त हुईं। 1954 से पूर्व के 900 फोल्डरों/खण्डों/फाइलों के संदर्भ मीडिया तैयार किए गए। सहायक नमक आयुक्त, तूतीकोरिन कार्यालय की 8,812 फाइलों तथा 440 रजिस्टरों (1867–1976) का मूल्य निर्धारण किया गया। इनमें से, 2,537 फाइलों तथा 273 रजिस्टरों को प्रतिधारण करने के लिए चिन्हित किया गया तथा 5,875 फाइलों एवं 168 रजिस्टरों को नष्ट करने के लिए चिन्हित किया गया। 24 विद्वानों को सुविधाएं प्रदान की गई।

सूचना का अधिकार प्रकोष्ठ

- ❖ आम लोगों और सरकारी प्राधिकारियों से प्राप्त हुए 70 मामलों पर कार्रवाई की गई। इसके अतिरिक्त 9 अपीलों का निपटान किया गया।

मंत्रीमंडल सचिव का दौरा

4.1.2

भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण

वर्ष 1945 में स्थापित भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण संस्कृति मंत्रालय के तहत एक प्रमुख शोध संगठन है। इसने अपने सार्थक अस्तित्व के 65 वर्ष पूरे कर लिए हैं और भारतीय आबादी के सामाजिक–आर्थिक जैविक पहलुओं से संबंधित मानव विज्ञान शोध करने की अपनी प्रतिबद्धता पूरी की है। इसके अलावा, इस सर्वेक्षण के अन्य महत्वपूर्ण कार्यकलाप हैं जिनमें सामाजिक–आर्थिक एवं जैविक क्षेत्र, दोनों में एकत्रण, संरक्षण, अनुरक्षण तथा प्रलेखन जैसे कार्य शामिल हैं। वर्षों से इस सर्वेक्षण ने अपने कोलकाता स्थित मुख्यालय तथा देशभर में स्थित क्षेत्रीय केन्द्रों द्वारा पोषणक्षम शोध के जरिए मूलभूत स्तर से सूचना सृजित की है।

शोध परियोजनाएं / योजनाएं

भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण ने चालू परियोजनाओं / योजनाओं के अलावा, 11वीं पंचवर्षीय योजना (2007–2012) के एक भाग के रूप में दो प्रमुख योजनागत परियोजनाएं नामतः ''भारत के लोग : सांस्कृतिक विविधता'' और भारत के लोग : जैव–सांस्कृतिक अनुकूल'' योजनाएं शुरू की हैं। सांस्कृतिक विविधता विषय के तहत ''अमूर्त एवं मूर्त सांस्कृतिक धरोहर (पारम्परिक ज्ञान)'' नामक परियोजना तैयार की गई है और देशभर में इसे लागू किया गया है। इस योजना के वृहत उद्देश्यों में (क) भारत में पारम्परिक ज्ञान प्रणालियों का प्रलेखन तथा अभिलेखन (ख) पारम्परिक ज्ञान उप–प्रणालियों की गहन संरचना का पता लगाना (ग) पारम्परिक ज्ञान तैयार करने को सुविधाजनक बनाना और (घ) पारम्परिक ज्ञान से संबंधित इलैक्ट्रॉनिक डाटाबेस तैयार करना। 'जैव–सांस्कृतिक अनुकूलन' के व्यापक क्षेत्रों के अंतर्गत ''जेनेटिक्स एवं स्वास्थ्य : अध्ययन किए गए परिवार'' संबंधी एक परियोजना की शुरूआत मैसूर, वॉल्टेयर तथा जोधपुर में की गई है।

कार्यान्वित की गई अन्य परियोजनाएं हैं (1) ''प्राचीन मानव कंकाल अवशेषों तथा समकालीन भारतीय आबादी'' का डीएनए पोलीमॉरफिज्म अध्ययन'' (2) पूर्वोत्तर भारत में बच्चों की शारीरिक वृद्धि तथा विकास : एक जन स्वास्थ्य मुद्दा (3) सामुदायिक जेनेटिक्स तथा स्वास्थ्य (सामुदायिक जेनेटिक्स विस्तार कार्यक्रम) (4) मानव एवं पर्यावरण (बायोस्फेयर अभ्यारण्य) परियोजना के तहत सामाजिक प्रभाव मूल्यांकन अध्ययन।

भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण ने दो प्रमुख परियोजनाएं –''भारत के लोगः सांस्कृतिक विविधता'' और ''भारत के लोगः जैव–सांस्कृतिक रूपांतरण'' प्रारम्भ की हैं।

अवसंरचनात्मक सुविधा विकास

अवसंरचनात्मक विकास के भाग के रूप में सर्वेक्षण के दायरे में निम्नलिखित कार्य पूरे किए गए :

- उत्तर–पश्चिमी क्षेत्रीय केन्द्र, देहरादून और पश्चिमी क्षेत्रीय केन्द्र, उदयपुर में डीएनए प्रयोगशाला का विकास एवं स्तरोन्नयन किया गया है।
- पश्चिमी क्षेत्रीय केन्द्र, उदयपुर में गोलघर (शिल्पग्राम) का कार्य प्रारंभ

किया गया है और यह कार्य चल रहा है।

- सॉल्ट लेक, कोलकाता में स्थित राष्ट्रीय दृश्य मानव विज्ञान केन्द्र की स्थापना के प्रयोजनार्थ अवसंरचनात्मक विकास कार्य किया गया है।

प्रमुख परिणाम

वर्ष 2009–2010 के दौरान, विभिन्न योजनागत परियोजनाओं में तैनात शोध अध्येताओं ने शोध फेलो के साथ मिलकर प्रत्येक परियोजना के प्रधान पर्यवेक्षक तथा इस सर्वेक्षण के वरिष्ठ अधिकारियों के तहत देशभर में अनुसूचित समुदायों के बीच विभिन्न स्थानों में व्यापक फील्ड कार्य किया है। रिपोर्ट लेखन, आंकड़ा विश्लेषण, रक्त एकत्रण और इसकी प्रयोगशाला परीक्षण का कार्य चल रहा है।

हमारी राष्ट्रीय प्रदर्शनी के जरिए लोगों को जो संदेश दिया जाना था वह यह था कि सभी वर्गों के लोगों को मानवीय आणविकी विकास तथा अनुकूलन संबंधी बुनियादी सिद्धांतों के बारे में जागरूक एवं शिक्षित करना। जागरूकता कार्यक्रम के तहत ''मानव उद्भव, जीनोम तथा भारत के लोग'' विषय पर सर्वे द्वारा एक राष्ट्रीय प्रदर्शनी आयोजित की गई जिसका उद्घाटन प्रारंभ में वर्ष 2005–06 में राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली में किया गया और जिसके बाद इसे विभिन्न स्थानों जैसे भुवनेश्वर (उड़ीसा), नागपुर (महाराष्ट्र), मैसूर (कर्नाटक), आईजीआरएमएस भोपाल, ईटानगर (अरूणाचल प्रदेश), इम्फाल (मणिपुर), चेरापूंजी (मेघालय), गुवाहाटी (असम) तथा अब एशियाटिक सोसाइटी, कोलकाता में आयोजित किया गया है।

माननीया संस्कृति राज्य मंत्री श्रीमती कांति सिंह ने 11 फरवरी, 2009 को पटना में भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण द्वारा प्रकाशित ''भारत के लोग : बिहार'' नामक पुस्तक का विमोचन किया। इस संबंध में सर्वेक्षण ने पटना में 11 फरवरी, 2009 से 25 दिनों के लिए ''सांस्कृतिक विविधता : संवाद एवं सशक्तिकरण'' विषय पर एक प्रदर्शनी का आयोजन किया जिस दौरान भारत के लोग पुस्तक के बिहार राज्य खंड का विमोचन भी किया गया।

सर्वेक्षण के वरिष्ठ अधिकारियों ने आंध्र विश्वविद्यालय, विशाखापट्टनम में 5 तथा 6 फरवरी, 2009 को ''जैव–सांस्कृतिक जोखिम कारक : टाइप–।। प्रकार के मधुमेह का आकलन : भारतीय जनसंख्या में टाइप–।। मधुमेह के जेनेटिक्स से संबंधित पारिवारिक अध्ययन हेतु कंसोर्टियम'' विषय पर आयोजित कार्यशाला में भाग लिया।

सर्वेक्षण ने इंडियन इंफोटेनमेंट मीडिया कॉर्पोरेशन (आईआईएमसी), मुम्बई के सहयोग से इन्दौर में 6–9 फरवरी, 2009 के बीच आयोजित जनजातीय कला तथा संस्कृति पर द्वितीय अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव, 2009 में डीवीडी फॉर्मेट में लद्दाख पर फिल्म प्रदर्शनी में हिस्सा लेने के लिए एक अधिकारी को तैनात किया।

सर्वेक्षण ने इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली में 17 से 20 मार्च, 2009 के दौरान कला केन्द्र और इंडियन सोसाइटी ऑफ ह्यूमन जेनेटिक्स के सहयोग से **''नैतिकता, संस्कृति तथा जनसंख्या जीनोमिक्स''** पर एक अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी और **भारतीय मानव जेनेटिक्स पर 34वें वार्षिक समारोह का आयोजन किया।** लगभग 450 भारतीय और 20 विदेशी प्रतिनिधिमंडलों ने इस सम्मेलन में भाग लिया।

सर्वेक्षण द्वारा 12–24 मार्च, 2009 को अंतर्राष्ट्रीय मानव विज्ञान कार्यक्रम स्कूल के अंतर्गत ''विविधता से अनुसंधान की ओर'' विषय पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया जहां विद्यार्थियों तथा शोधकर्ताओं को डीएनए प्रौद्योगिकी में प्रशिक्षण दिया गया।

सुश्री एन्नेक एच.वॅन हेटेरेन, सेंटर फॉर रीसर्च इन इवोलुशनरी एंथ्रोपोलॉजी, स्कूल ऑफ ह्यूमन एंड लाइफ साइंसेस, रोहमटन यूनिवर्सिटी, व्हाइटलैंण्ड्स कॉलेज, लंदन, जो पुरा मानव विज्ञान, कर्नीवोर इकोलॉजी एंड होमीनिन ऍडप्टेशन की शोध अध्येता हैं, ने हॉब्बिट्स, कार्नीवोर्स तथ्ज्ञा होमिनिन इंटरएक्शंस एंड ऍडप्टेशंस विषय पर इस सर्वेक्षण के कोलकाता स्थित मुख्यालय में 15 मई, 2009 को विचार–विमर्श किया।

डा0 वी. आर. राव, पूर्व प्रभारी निदेशक ने इस सर्वेक्षण के 4 वरिष्ठ अधिकारियों के साथ मिलकर कुनमिंग, चीन में 27 से 31 जुलाई, 2009 के बीच आयोजित 16वें वर्ल्ड कांग्रेस ऑफ इंटरनेशनल यूनियन ऑफ एंथ्रॉपोलोजिकल एंड एथनोलॉजिकल साइंसेस (आईयूएईएस) में भाग लेकर भारत सरकार के अनुमोदन से शैक्षिक सत्रों में शोध पत्र प्रस्तुत किया तथा अध्यक्षता की।

इस सर्वेक्षण के वरिष्ठ अधिकारियों ने इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली में 20–22 जुलाई, 2009 के दौरान आईसीएच डोजियर सहित 10 मिनट की एक वीडियो डॉक्यूमेंटरी फिल्म प्रस्तुत की। निर्माण की गई फिल्मों में बस्तर में ''घोटुल ऑफ मुरिया'', ''पुरी जगन्नाथ मंदिर परिसर में वंशविषयक रिकार्ड रखा जाना'', उड़ीसा और अरुणाचल प्रदेश में अपाटनी की ''मत्स्य तथा धान उत्पादन विधियां''।

सर्वेक्षण ने बारासात, कोलकाता में केन्द्रीय कोलकाता विज्ञान एवं सांस्कृतिक संगठन द्वारा आयोजित 13वीं राष्ट्रीय प्रदर्शनी में 2–6 सितम्बर, 2009 को ''अंडमान तथा निकोबार द्वीप समूह'' विषय पर एक प्रदर्शनी आयोजित की।

सर्वेक्षण द्वारा मुख्यालय, कोलकाता में 10–11 सितम्बर, 2009 के दौरान ''मुनष्य एवं पर्यावरण : अचंकमार–

अमरकंटक बायोस्फेयर अभ्यारण्य, छत्तीसगढ़ के मुख्य गांव के प्रस्तावित पुनर्वास का सामाजिक प्रभाव मूल्यांकन'' विषय पर एक दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। छत्तीसगढ़ राज्य के वन अधिकारियों और टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंस के समाज वैज्ञानिकों ने, इस सर्वेक्षण के अध्येताओं के अलावा, भाग लिया।

सर्वेक्षण ने मुख्यालय, कोलकाता में 28 अक्तूबर, 2009 को इंस्टीट्यूशनल एथिक्स समिति की बैठक का आयोजन किया जिसमें डीएनए बैंकिंग–ह्यूमन जीनोम एंड ऑरिजिन के तहत चालू योजना पर चर्चा करने हेतु सर्वेक्षण के कई वैज्ञानिक अधिकारियों तथा बाहरी सदस्यों ने भाग लिया।

सर्वेक्षण ने सॉल्ट लेक, कोलकाता में 20–30 नवम्बर, 2009 के दौरान **'विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मेला, 2009'** में भाग लिया और भारतीय जनसंख्या की सांस्कृतिक धरोहर के प्रचार–प्रसार से संबंधित प्रदर्शनी का आयोजन किया।

सर्वेक्षण ने श्री जवाहर सरकार, माननीय सचिव, भारत सरकार, संस्कृति मंत्रालय की अध्यक्षता में 15 जनवरी, 2010 को मुख्यालय, कोलकाता में अपनी नवगठित राष्ट्रीय सलाहकार समिति की बैठक आयोजित की।

रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान सर्वेक्षण के सभी क्षेत्रीय केन्द्रों तथा मुख्यालय में हिन्दी कार्यशालाओं तथा हिन्दी पखवाड़ा/सप्ताह का आयोजन किया गया।

प्रकाशन

वर्ष 2009–10 के दौरान निम्नलिखित प्रकाशन निकाले गए:

1. संस्मरण सं. 116. शकुंतला डे तथा ए.आर. दास द्वारा संपादित गुणार्थक शब्दकोष सहित स्थानों तथा व्यक्तियों के नाम।
2. बी.जी. हालबर तथा गोपाल सरना द्वारा – संस्कृति विषयवस्तु तथा कर्नाटक में सांस्कृतिक जोन।
3. एम.बी. शर्मा द्वारा संपादित – बच्चों की वृद्धि एवं विकास: एक जैव–सांस्कृतिक दृष्टिकोण।

मुरिया घोटुल नृत्य

4.1.3

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति (जीएसडीएस) की स्थापना सितंबर, 1984 में गांधी दर्शन, राजघाट एवं गांधी स्मृति 5, तीस जनवरी मार्ग को मिलाकर एक स्वायत्त निकाय के रूप में की गई थी। गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के रचनात्मक परामर्श एवं वित्तीय सहायता के अंतर्गत कार्य कर रहा है। भारत के प्रधानमंत्री इसके अध्यक्ष हैं और वरिष्ठ गांधीवादियों और सरकार के विभिन्न विभागों के प्रतिनिधियों का इसका एक नामित संगठन है जो इसके कार्यकलापों का मार्गदर्शन करता है। इस समिति का प्राथमिक उदेश्य विभिन्न सामाजिक—शैक्षिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से महात्मा गांधी के जीवन, मिशन तथा विचारों का प्रचार—प्रसार करना है। इसके दो परिसर हैं :

गांधी स्मृति पुराने बिरला हाउस, नई दिल्ली में स्थित है जहां दिनांक 30 जनवरी, 1948 को महात्मा गांधी शहीद हुए थे। अतः इस पवित्र स्थल पर महात्मा गांधी के अंतिम 144 दिनों से जुड़ी अनेक स्मृतियों का संग्रह है। पुराने बिरला हाउस को भारत सरकार ने 1971 में अधिग्रहित किया था और इसे राष्ट्रपिता के राष्ट्रीय स्मारक में परिवर्तित करके दिनांक 15 अगस्त, 1973 को आम जनता के लिए खोला गया था। इसके संरक्षण में वह कमरा जहां गांधी जी रहे थे, वह प्रार्थना स्थल जिसका उपयोग प्रार्थना सभा आयोजित करने के लिए किया जाता था और वह स्थल शामिल है जहां गांधीजी हत्यारे की गोलियों से घायल होकर गिरे थे। इस भवन और इसके आस—पास के स्थल को उन्हीं दिनों की तरह संरक्षित रखा गया है।

जिन वर्षों में गांधीजी यहां रहे थे उनसे सम्बंधित फोटोग्राफ, मूर्तियों, पेंटिंग, भित्तिचित्रों, शिला लेख और स्मृति चिन्हों को यहां प्रदर्शित किया गया है। गांधी जी के व्यक्तित्व के संक्षिप्त प्रभावों को भी सावधानीपूर्वक संरक्षित रखा गया है। जहां गांधी जी शहीद हुए थे, उस स्थल पर शहीदी कॉलम लिखा गया है।

गांधी स्मृति की फोटो प्रदर्शनी का नवीकरण किया गया है। दक्षिण स्कंध में श्वेत—श्याम 35 फोटोग्राफ के माध्यम से मोहनदास करमचंद गांधी के महात्मा गांधी में परिवर्तित होने का चित्रण किया गया है जिसमें संक्षिप्त विवरण भी दिया गया है। इस दक्षिण स्कंध में एक सभागार और समिति कक्ष भी है।

इसके अतिरिक्त, इस प्रदर्शनी को इस प्रकार निर्धारित किया जाता है कि दक्षिण स्कंध मोहनदास करमचंद गांधी नाम के बालक की जीवन गाथा तथा विकास और किस प्रकार उन्होंने 'सत्य के प्रयोग' के माध्यम से भारत और मानवता के उद्धार के लिए नेतृत्व किया, का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करे।

इस संग्रहालय में एटरनल गांधी नामक अद्यतन विशेषज्ञता से युक्त मल्टीमीडिया प्रदर्शनी है। गांधी स्मृति में इंडोनेशिया की विश्व शांति गोंग समिति द्वारा प्रदान की गई शांति गोंग को भी गौरवपूर्ण स्थान प्रदान किया गया है।

दूसरा परिसर **गांधी दर्शन** राजघाट स्थित महात्मा गांधी समाधि से जुड़ा हुआ है। यह विशाल परिसर वर्ष 1969 में महात्मा गांधी की शताब्दी की स्मृति में अस्तित्व में आया था। इस समारोह को मनाने के लिए इसमें एक अंतर्राष्ट्रीय गांधी दर्शन प्रदर्शनी का आयोजन किया गया था। महात्मा के अमर संदेश ''मेरा जीवन ही मेरा संदेश है'' को चिरंतर रखने के लिए इस पूरे परिसर में एक अंतर्राष्ट्रीय गांधी दर्शन प्रदर्शनी लगाई गई थी। वर्ष 1994 में गांधी जी की 125वीं जयंती के दौरान यह सपना तब साकार हुआ जब इस परिसर को अंतर्राष्ट्रीय गांधीवादी अध्ययन और शांति अनुसंधान केन्द्र (आईसीजीएसपीआर) के रूप में परिवर्तित कर दिया गया। यह केन्द्र भारत और विदेश के विद्वानों को अनुसंधान और मार्गदर्शन सुविधाएं, विभिन्न शांति पहल के प्रलेखन की सुविधाएं और गांधी जी तथा उनसे सम्बद्ध विषयों के बारे में एक ही स्थान पर विभिन्न प्रकार की सुविधाएं प्रदान करने की व्यवस्था करता है। यह केन्द्र एक जर्नल और न्यूजलेटर का भी प्रकाशन करता है।

मुख्य पहलें

❖ **रैगिंग रोधी गांधी स्मृति पहल अभियान**

रैगिंग जो पूरे देश की शिक्षा संस्थाओं में फैल गई है, के खतरे का सामना करने के लिए गांधी स्मृति ने न केवल दिल्ली में अपितु देश के अन्य भागों में भी श्रृंखलाबद्ध अभियान शुरू किए हैं।

गांधी शताब्दी के प्रारंभिक कार्य ''हिन्द स्वराज'' – जो गांधीजी द्वारा दिनांक 11 सितम्बर, 1906 के सत्याग्रह के माध्यम से विश्व के लिए किए गए अभूतपूर्व योगदान से प्राप्त किया गया था, के भाग के रूप में शिक्षा संस्थाओं में रैगिंग रोधी अभियान आयोजित किया गया था। अमन सत्य काचरू न्यास के साथ मिलकर दिनांक 11 सितम्बर, 2009 को गांधी दर्शन में सामूहिक विचार–विमर्श किया गया।

समिति ने केजीआईडी के सहयोग से पूर्वोत्तर का पहला बाल समाचार पत्र नवाखोल निकाला।

❖ **राष्ट्र निर्माण तथा युवा पर राष्ट्रीय युवा सम्मेलन**

असम, मेघालय, नागालैंड, मणिपुर, आंध्र प्रदेश, अमेठी, हिमाचल प्रदेश, किन्नौर के सीमावर्ती क्षेत्रों, कर्नाटक, पश्चिम बंगाल और महाराष्ट्र का प्रतिनिधित्व करने वाले 200 युवाओं ने दिनांक 18–20 दिसम्बर, 2009 तक नई दिल्ली में ''राष्ट्र–निर्माण और युवा'' पर आयोजित किए गए तीन दिवसीय राष्ट्रीय युवा सम्मेलन में भाग लिया। यह सम्मेलन गांधी स्मृति और गांधी दर्शन ने महात्मा गांधी के प्रारंभिक कार्य हिन्द स्वराज के प्रकाशन के शताब्दी समारोह को मनाने के लिए आयोजित किया था, इस राष्ट्रीय सम्मेलन में युवाओं से समाज की मुख्यधारा में सहभागिता करने का आह्वान किया गया था। इस युवा प्रतियोगिता में निम्नलिखित मुद्दों पर विचार–विमर्श किया गया :–

- भारत के समक्ष चुनौतियां : वैश्विक परिदृश्य में युवाओं की भूमिका
- ग्रामीण–शहरी एकीकरण की ओर : युवाओं की आवाज
- महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी स्कीमें : मुद्दे और चुनौतियां
- गरीब और लाभावंचित व्यक्तियों के लिए सूचना के अधिकार को सार्थक बनाना
- सुदृढ़ भारत का निर्माण : पूर्वोत्तर पर विशेष ध्यान

❖ **द्वितीय बुनियादी विद्यालय का पुनः समर्पण**

द्वितीय बुनियादी विद्यालय को महात्मा गांधी ने 1939 में शुरू किया था जिसे दिनांक 23 दिसम्बर, 2009 को सिरसा, चम्पारण (बिहार) में राष्ट्र को पुनः समर्पित किया गया।

❖ **पूर्वोत्तर में बाल समाचार–पत्र की शुरूआत**

मणिपुर में गांधी मीडिया साक्षरता कार्यक्रम को आगे बढ़ाने के लिए समिति ने कस्तूरबा गांधी विकास संस्थान (केजीआईडी) के सहयोग से राज्य का पहला बाल समाचार–पत्र **नवाखोल** शुरू किया। मणिपुर में **नवाखोल** का अर्थ 'बच्चों की आवाज' है। राज्य सूचना अधिकारी श्री ए. बालकृष्ण शर्मा ने दिनांक 14 नवम्बर को इसका प्रथम अंक जारी किया।

जीएसडीएस, कस्तूरबा गांधी राष्ट्रीय मैमोरियल न्यास और यूनीसेफ ने संयुक्त रूप से डिब्रूगढ़ के युवा संवाददाताओं द्वारा प्रथम समाचार पत्र **मुक्त आकाश** प्रकाशित किया जिसमें बच्चों से संबंधित मुद्दों और बच्चे कैसे गांधीवादी मूल्यों को अपने मन में बैठा सकते हैं, के बारे में विशेष ध्यान दिया गया और जिसका औपचारिक उद्घाटन डिब्रूगढ़ के जिला पुस्तकालय में दिनांक 14 दिसम्बर, 2009 को किया गया।

❖ **दांडी मार्च रोलिंग ट्राफी**

गांधी स्मृति और दर्शन समिति ने दिनांक 22 अप्रैल, 2009 को गांधी स्मृति में अपनी वार्षिक दांडी मार्च रोलिंग ट्राफी का आयोजन किया। इस अवसर पर समिति ने समुदाय की आवाज और लोकतंत्र विषय पर वक्तृता प्रतियोगिता का आयोजन किया।

❖ **गांधी ग्रीष्म स्कूल**

गांधी स्मृति तथा दर्शन समिति ने ग्रीष्म अवकाश के दौरान विद्यार्थी और गैर–विद्यार्थी युवाओं को सार्थक सामूहिक कार्यकलापों में शामिल करने के उद्देश्य से दिल्ली के ग्रीष्म स्कूलों और भारत के विभिन्न भागों में एक श्रृंखला आयोजित की जो उनके कौशलों और

ज्ञान में वृद्धि करेगी। ये ग्रीष्म शिविर जो पिछले चौदह वर्षों से आयोजित किए जा रहे हैं, महात्मा गांधी के जीवन, संदेश और दर्शन का प्रचार–प्रसार करने के लिए एक आदर्श मंच हैं।

वर्ष 2009 में गांधी स्मृति और दर्शन समिति ने ग्रीष्म स्कूल कार्यक्रम को हिन्द स्वराज को समर्पित किया है जिसमें न केवल वैश्विक अहिंसा जागरूकता के आधार दिए गए हैं अपितु इसमें गांधी जी के सपनों के भारत की रूपरेखा भी निर्धारित की गई है। 'आओ बनाएं गांधीजी के सपनों का भारत' कार्यक्रम 19 मई से 25 जून, 2009 तक आयोजित की गई कार्यशाला श्रृंखला में प्रदर्शित हुआ था। विभिन्न संस्थाओं के लगभग 200 विद्यार्थियों ने गांधी ग्रीष्म स्कूल में सक्रिय रूप से भाग लिया था। दिल्ली के अलावा ये ग्रीष्म शिविर देश के विभिन्न राज्यों में भी आयोजित किए गए थे।

❖ गांधीजी पर नाटक : बापू–महात्मा : व्यक्तित्व और इनका संदेश

महात्मा : व्यक्तित्व एवं उनका संदेश

समिति ने गांधी स्मृति में दिनांक 18 अगस्त, 2009 को बापू–महात्मा : व्यक्तित्व और इनका संदेश पर एक नाटक का आयोजन किया। इस नाटक का आयोजन लाभवंचित बच्चों के लिए कार्य कर रहे संगठन प्रस्तुति के सहयोग से किया गया था। इस नाटक के सिद्धांत में महात्मा गांधीजी के जीवन से संबंधित विभिन्न पहलुओं का उल्लेख किया गया था जिनमें दक्षिण अफ्रिका में सत्य के साथ उनके प्रयोग, साफ–सफाई और वैयक्तिक स्वास्थ्य दशाओं पर लोगों को उनके सम्बोधन, हरिजनों के प्रति उनकी चिंताओं, अस्पृश्यता, जाति–व्यवस्था, राजनीति में हिंसा, गरीबी और अन्याय के विरूद्ध उनके संघर्ष को शामिल किया गया था।

❖ विश्व खाद्य दिवस

एक अभूतपूर्व कथा–वाचन प्रतियोगिता जो दिनांक 16 अक्तूबर, 2009 को विश्व खाद्य दिवस, 2009 के अवसर पर गांधी स्मृति में संकट के समय खाद्य सुरक्षा हासिल करने की आवश्कता के महत्व को प्रस्तुत करने के लिए आयोजित की गई थी, जिसमें दिल्ली और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के विभिन्न विद्यालयों के विद्यार्थियों ने भाग लिया। विद्यार्थियों ने खाद्य और कृषि संगठन (एफएओ) संयुक्त राष्ट्र संघ और गांधी स्मृति तथा दर्शन समिति (जीएसडीएस) द्वारा निर्धारित की गई भूख के विरूद्ध संघर्ष ट्रॉफी प्रतियोगिता में भाग लिया था। इस प्रतियोगिता को खाद्य और कृषि संगठन तथा जीएसडीएस ने विश्व खाद्य दिवस, 2009 के अवसर पर **''संकट के समय खाद्य सुरक्षा हासिल करने''** के सिद्धांत पर संयुक्त रूप से आयोजित किया था और इसका उद्देश्य खाद्य, भूख और गरीबी से संबंधित चुनौतीपूर्ण मुद्दों में न केवल भारत के युवाओं अपितु विश्व के युवाओं को भी शामिल करना था। खाद्य और कृषि संगठन तथा गांधी स्मृति और दर्शन समिति ने इसी सिद्धांत पर एक पोस्टर प्रतियोगिता का भी आयोजन किया। इस कार्यक्रम के दौरान मुख्य अतिथि, प्रोफेसर शिवाजी सरकार, पाठ्यक्रम निदेशक, पत्राचार विभाग, भारतीय जन संचार संस्थान (आईआईएमसी) ने बाल समाचार–पत्र **द यमुना** का विशेष अंक जारी किया।

❖ अंतर–विद्यालय चित्रकला प्रतियोगिता

गांधी समिति ने हैप्पी स्कूल दरियागंज और मोक्षदा ग्रीन क्लब के सहयोग से दिनांक 18 नवम्बर, 2009 को गांधी स्मृति में वार्षिक 13वां अंतर–विद्यालय पद्म चंद मैमोरियल ऑन दी स्पॉट पेंटिंग कम्पीटिशन आयोजित किया। कुछ मुद्दों पर आयोजित की गई इस प्रतियोगिता में दिल्ली और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के 47 विद्यालयों के लगभग 3500 विद्यार्थियों ने भाग लिया जिससे उनकी सृजनात्मकता और विलक्षण दृष्टिकोण का पता चला। इसकी मुख्य विशेषता विभिन्न प्रकार की विकलांगता से प्रभावित बच्चों का इसमें भाग लेना था।

बाल चित्रकारी प्रतियोगिता

❖ देशभक्ति गीत प्रतियोगिता

जीएसडीएस ने दिनांक 27 नवम्बर, 2009 को गांधी स्मृति में महात्मा गांधी के शहीदी स्थल पर देशभक्ति

देश भक्ति गीत प्रतियोगिता

गीतों की अंतर–विद्यालय संगीत प्रतियोगिता आयोजित की। इस प्रतियोगिता का आयोजन हिन्द स्वराज की शताब्दी के स्मरणोत्सव के रूप में किया गया था। दिल्ली और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के सत्रह विद्यालयों के 500 विद्यार्थियों ने इस प्रतियोगिता में वंदे मातरम रोलिंग ट्राफी जिसे समिति ने राष्ट्रीय गीत वंदे मातरम की शताब्दी मनाने के लिए निर्धारित किया था, के लिए भाग लिया था।

- **दि यमुना के सम्पादक को कर्मवीर पुरस्कार**

समिति के बाल समाचार–पत्र दि यमुना की सम्पादक रिजुता लाम्बा ने दी यमुना के संबंध में किए गए अपने योगदान के लिए दिनांक 26 नवम्बर, 2009 को आई–कांगो महोत्सव में यंग अचीवर पुरस्कार प्राप्त किया था।

- **दि यमुना के बाल संवाददाताओं ने जलवायु परिवर्तन मंच, कोपनहेगन में भाग लिया**

समिति के बाल समाचार–पत्र दि यमुना के संपादक और कक्षा 11 के विद्यार्थी बिप्रा विश्वम्भर ने कोपनहेगन, डेनमार्क में 28 नवम्बर से 4 दिसम्बर, 2009 तक आयोजित किए गए बाल जलवायु मंच (सीसीएफ) में भारत का प्रतिनिधित्व किया। इस बाल जलवायु मंच में विश्व के 44 देशों के बच्चों और युवाओं ने भाग लिया था। इस मंच का उद्देश्य बच्चों से संबंधित मुद्दों तथा जलवायु परिवर्तन के वर्तमान परिदृश्य में विश्व के नेता कैसे कार्य कर सकते हैं, संबंधी विचारों के बारे में घोषणा करना था।

- **बाल–सामाजिक सभा, 2009**

दिल्ली और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीआर) के 20 से भी अधिक विद्यालयों तथा आर्डिनेंस फैक्टरी इंटर–कॉलेज कानपुर के विद्यार्थियों ने दिनांक 3 दिसम्बर, 2009 को गांधी स्मृति तथा दर्शन समिति द्वारा गांधी स्मृति में आयोजित की गई बाल सामाजिक सभा (सीएससी) में भाग लिया। स्वैच्छिक संगठनों ने भी स्वयं द्वारा की गई सामाजिक परियोजनाओं के संबंध में विवरण प्रस्तुत करके इस बाल सामाजिक सभा में भाग लिया।

- **वैश्विक युवा सेवा दिवस का आयोजन**

गांधी स्मृति और दर्शन समिति (जीएसडीएस) द्वारा जन विकास और प्रशिक्षण संस्थान (पीआईडीटी) के सहयोग से दिनांक 27 अप्रैल, 2009 को वैश्विक युवा सेवा के भाग के रूप में एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम के भाग के रूप में पीआईडीटी और गांधी स्मृति और दर्शन समिति ने विभिन्न विद्यालयों में ''आई शेप दी वर्ल्ड'' पहल शुरू की। इस समारोह का इस वर्ष का विषय **जलवायु परिवर्तन** था। इस पहल के भाग के रूप में एक अखिल भारतीय चित्रकला, पोस्टर, फोटोग्राफी, फिल्म निर्माण प्रतियोगिता आयोजित की गई। तिहाड़ के कैदियों के लिए भी प्रतियोगिता आयोजित की गई।

- **नशे की बुराई के विरूद्ध दौड़**

3000 से भी अधिक धावकों ने नशे की बुराई के विरूद्ध दौड़ जो विभिन्न कार्यकलापों के साथ एक जागरूकता कार्यकलाप था और जो गांधी दर्शन, राजघाट में दिनांक 26 जून, 2009 को अंतर्राष्ट्रीय नशा विरोधी दिवस पर आयोजित की गई थी, में बड़े उत्साह से भाग लिया था। गांधी स्मृति और दर्शन समिति ने इस नशा विरोधी दौड़ का आयोजन किया था। पिछले छः वर्षों से विभिन्न सरकारी स्टेकहोल्डरों, संयुक्त राष्ट्र अभिकरणों तथा कारपोरेट जगत के सहयोग से आयोजित की गई इस पहल में एशियाई मैराथन चैम्पियन सुनीता गोदारा ने भी भाग लिया था।

- **मीडिया और सक्रिय नागरिकता पर संगोष्ठी**

हिन्द स्वराज के शताब्दी समारोह के भाग के रूप में विवेकानंद व्यावसायिक अध्ययन संस्थान ने गांधी स्मृति और दर्शन समिति के सहयोग से दिनांक 13 से 15 नवम्बर, 2009 तक गांधी दर्शन में 'स्पंदन' कार्यक्रम आयोजित किया। इस संबंध में ''मीडिया और सक्रिय नागरिकता'' सम्मेलन में विभिन्न मतों तथा विचारों वाले व्यक्तियों को एक–दूसरे के सम्पर्क में लाने का प्रयास किया गया ताकि युवा पत्रकारों तथा विस्तृत रूप से आम जनता को इस ओर प्रेरित किया जा सके।

- **निदेशक, जीएसडीएस ने अमेठी में हिन्द स्वराज शताब्दी समारोह का उद्घाटन किया**

समिति की निदेशक डा0 सविता सिंह ने दिनांक 28 नवम्बर, 2009 को रणवीर रणविजय स्नातकोत्तर कॉलेज, अमेठी में पांच दिवसीय हिन्द स्वराज शताब्दी समारोह का उद्घाटन किया। इस कार्यक्रम का आयोजन शिक्षा संस्था ने जल बिरादरी के सहयोग से

किया था। गांधी स्मृति और दर्शन समिति ने इस समारोह के भाग के रूप में आम जनता के लिए महात्मा गांधी और उनके सपनों का भारत पर एक प्रदर्शनी ''अमर गांधी'' का आयोजन किया।

❖ नुक्कड़ नाटक समारोह

गांधी स्मृति और दर्शन समिति (जीएसडीएस) और भारतीय जन संचार संस्थान (आईआईएमसी) ने अंतर्राष्ट्रीय स्वयंसेवक दिवस पर दिनांक 4 दिसम्बर, 2009 को गांधी स्मृति में सामाजिक मुद्दों के संबंध में नुक्कड़ नाटकों का संयुक्त रूप से आयोजन किया। प्रथम बार गांधी स्मृति और दर्शन समिति तथा भारतीय जन संचार संस्थान ने संयुक्त रूप से कॉलेज और विद्यालयों के विद्यार्थियों की प्रतियोगिता आयोजित की और इन विद्यार्थियों ने इस अभूतपूर्व नुक्कड़ थियेटर महोत्सव में मंचन किया।

❖ अंतर्राष्ट्रीय स्वयंसेवी दिवस मनाया गया

अंतर्राष्ट्रीय स्वयंसेवी दिवस, 2009 के भाग के रूप में गांधी स्मृति और दर्शन समिति ने जन विकास और प्रशिक्षण संस्थान, राष्ट्रीय सेवा योजना, संयुक्त राष्ट्र स्वयंसेवकों, स्वयंसेवी प्रयास और वैश्विक युवा सेवा (अमेरिका) के अंतर्राष्ट्रीय संघ के सहयोग से गांधी स्मृति में दिनांक 5 दिसम्बर, 2009 को अंतर्राष्ट्रीय स्वयंसेवी दिवस, 2009 मनाने के लिए एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया। यह कार्यक्रम महात्मा गांधीजी के प्रारंभिक हिन्द स्वराज कार्य के प्रकाशन के 100 वर्ष को समर्पित किया गया था।

❖ कल्याण, महाराष्ट्र में पांच–दिवसीय युवा शिविर आयोजित किया गया

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से प्रायोजित गांधीवादी अध्ययन केन्द्र ने गांधी स्मृति तथा दर्शन समिति, नई दिल्ली के सहयोग से दिनांक 12 से 16 दिसम्बर, 2009 तक कल्याण, महाराष्ट्र में बेहतर कल के लिए गांधीजी को समझने पर पांच दिवसीय ''राष्ट्रीय युवा शिविर'' का आयोजन किया। मणिपुर, अरूणाचल प्रदेश, असम, नागालैंड, मिजोरम, जम्मू और कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र के 100 विद्यार्थी शिष्टमंडलों ने इस शिविर में भाग लिया। यह कार्यक्रम गांधीजी के हिन्द स्वराज के सौ वर्ष को समर्पित किया गया था।

❖ महिलाओं और मणिपुर के भविष्य पर संगोष्ठी

कस्तूरबा गांधी विकास संस्थान, मणिपुर और समाज विज्ञान अनुसंधान संघ, मणिपुर (एसएसआरएएम) तथा गांधी स्मृति और दर्शन समिति ने दिनांक 27 जून, 2009 को राजनीति विज्ञान सम्मेलन कक्ष, मणिपुर विश्वविद्यालय, कांचीपुर में ''महिलाएं और मणिपुर का भविष्य'' विषय पर संयुक्त रूप से एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया।

❖ सृजन के सिलाई और कढ़ाई अनुभाग के स्वयंसेवकों के लिए कार्यशाला

सृजन के स्वयंसेवकों विशेषकर महिला स्वयंसेवकां को विशिष्ट सिलाई–कढ़ाई प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए एक सप्ताह की कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह कार्यशाला दिनांक 5 अगस्त 2009 से शुरू की गई थी और इसमें 20 स्वयंसेवकों ने भाग लिया था। इस कार्यशाला का उद्देश्य स्वयंसेवकों के कौशलों को स्तरोन्नत करना था।

❖ महिला अधिकारिता और पंचायती राज में महिलाओं की स्थिति

गांधी स्मृति और दर्शन समिति ने कस्तूरबा गांधी ृकेन्द्र, तिरूपति, आंध्र प्रदेश के सहयोग से दिनांक 29 अगस्त, 2009 को महिला अधिकारिता पर विचार–विमर्श किया। इस विचार–विमर्श का आयोजन हाल ही में किए गए संशोधनों जिनसे पंचायती राज संस्थाओं में अब महिलाओं के लिए 50 प्रतिशत आरक्षण सुनिश्चित किया गया है, के मद्देनजर किया गया था। महिलाओं ने इसमें यह सुझाव दिया कि केन्द्र को महिलाओं के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यशालाओं का आयोजन करना चाहिए ताकि वे नए परिदृश्य में अपना योगदान कर सकें।

❖ स्वच्छ गुवाहाटी अभियान शुरू किया गया

पूर्वोत्तर बालिका विद्यार्थी संघ (एनईजीएसए) के सदस्यों ने गांधी जयंती के अवसर पर गुवाहाटी में साफ–सफाई अभियान शुरू करने में समिति के साथ कार्य करने की सहमति व्यक्त की है और इन्होंने 'स्वच्छ गुवाहाटी' अभियान शुरू किया है।

क्र किशोरी क्लब के सदस्यों के लिए कार्यशाला

समिति ने भारतीय चाय संघ की असम शाखा (एबीआईटीए), कस्तूरबा गांधी राष्ट्रीय मैमोरियल न्यास (असम शाखा) और यूनिसेफ के सहयोग से दिनांक 8–9 सितम्बर, 2009 को डिब्रूगढ़ जिले के विभिन्न किशोर बालिका क्लबों की बालिकाओं के लिए दो–दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया। इस कार्यशाला में जिले के विभिन्न ग्रामों तथा चाय बागानों के 16 किशोर बालिका क्लबों की लगभग 30 बालिकाओं ने भाग लिया और इसमें उन्हें अपने तथा आस–पास के समाज से संबंधित विभिन्न मुद्दों की समझबूझ पैदा करने का अवसर प्रदान किया गया।

गांधी स्मृति और दर्शन समिति की विभिन्न कार्यक्रमों में युवाओं को शामिल करने संबंधी पहल के रूप में समिति तिहाड़ जेल के कैदियों के लिए कार्य करती रही है। समिति ने विकलांग कैदियों को व्हील चेयर प्रदान करके भी सहायता प्रदान की है। समिति कैदियों को महात्मा गांधी के जीवन संदेश से प्रेरणा देने के लिए विभिन्न कार्यकलापों में सहभागिता करती रही है और कैदियों से संबंधित अपने कार्यक्रमों के भाग के रूप में गांधी प्रश्नोत्तरी, चित्रकला इत्यादि प्रतियोगिताएं आयोजित करती रही है।

इसके अतिरिक्त समिति ने केन्द्रीय जेल संख्या 4 जहां कैदियों के लिए सिलाई यूनिट खोली गई है, के लिए 12 सिलाई मशीनें प्रदान कीं। इसके साथ–साथ रोहिणी जेल के लिए ''जलवायु परिवर्तन'' पर अंतर–जेल चित्रकला प्रतियोगिता सहित सभी जेलों को पुस्तकें, ड्राइंग पेपर, स्केच पेन तथा अन्य स्टेशनरी वितरित की जाती रही है।

❖ **तिहाड़ जेल सं. 2 में जूट कार्यशाला**

तिहाड़ आश्रम में रचनात्मक कार्यक्रमों को आयोजित करने की जीएसडीएस की जारी पहल के भाग के रूप में जूट उत्पाद तैयार करने के लिए आवश्यक कौशल विकसित करने के उद्देश्य से समिति ने केन्द्रीय जेल सं. 4 के कैदियों के लिए एक जूट कार्यशाला आयोजित की। इस पहल के भाग के रूप में कैदियों ने जूट बैग बनाए।

विकासात्मक कार्यकलाप

पूर्वोत्तर क्षेत्र के साथ घनिष्ठ संबंध बनाने के उद्देश्य से भारत सरकार द्वारा आरंभ की गई विशेष पहल से प्रेरित होकर गांधी स्मृति तथा दर्शन समिति पिछले कुछ वर्षों से इस क्षेत्र के चहुंमुखी विकास के लिए बड़े पैमाने पर महिलाओं, बच्चों तथा युवाओं को शामिल करके मूल्य आधारित कार्यक्रम आयोजित करती रही है। समिति की पूर्वोत्तर क्षेत्र के राज्यों की कुछ नियमित पहल में बच्चों के रचनात्मक कार्य को प्रोत्साहित करने के लिए गांधी प्रश्नोत्तरी; गांधीवादी मूल्यों पर कार्यशालाएं; गांधी मीडिया साक्षरता कार्यक्रम; शिशु पंचायत; समाज के लाभवंचित वर्गों के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम; और संगोष्ठियां शामिल हैं।

❖ **व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम**

समिति ने मणिपुर, असम और अरूणाचल प्रदेश सहित पूर्वोत्तर के विभिन्न भागों में समाज के लाभवंचित वर्गों के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों को सुदृढ़ किया है। इनमें कोना क्राफ्ट, कताई–बुनाई, सिलाई और कढ़ाई के संबंध में प्रशिक्षण दिया गया।

❖ **पूर्वोत्तर में शिशु पंचायत**

'घटक और सार्थक नागरिक निकाय' जो न केवल सुव्यवस्थित सूचना रखेगा अपितु सामाजिक मुद्दों को संभालने में अग्रणी भूमिका निभाएगा, को सुदृढ़ करने के अपने प्रयास में गांधी स्मृति और दर्शन समिति ने पूर्वोत्तर क्षेत्र में बाल सहभागिता को प्रोत्साहित करने के लिए कार्यक्रम शुरू किया है। इस पहल का आधार बच्चों में गांधीवादी मूल्यों को प्रोत्साहित करना और कैसे वे सामुदायिक कार्य में योगदान कर सकते हैं, के संबंध में है। इस कार्यक्रम को असम, मणिपुर, अरूणाचल प्रदेश में शुरू किया गया है। इसे असम में कस्तूरबा गांधी राष्ट्रीय मैमोरियल न्यास और यूनिसेफ के सहयोग से, अरूणाचज प्रदेश में हार्नबिल विकास केन्द्र के सहयोग से और मणिपुर में कस्तूरबा गांधी विकास संस्थान के सहयोग से आयोजित किया जा रहा है। इन राज्यों में शिशु पंचायतों के सदस्यों के लिए नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रम, संगोष्ठी तथा सामाजिक अभियान आयोजित किए जा रहे थे। कुछ मुख्य पहल में हाथों को साफ रखने का अभियान, पर्यावरण से संबंधित जागरूकता पैदा करना, बाल विवाह का विरोध करना, शिक्षा का महत्व और शारीरिक दण्ड शामिल हैं। शिुश पंचायत के 30 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने यह जानकारी प्राप्त करने के लिए कर्नाटक का दौरा किया कि मकाला पंचायत और ग्राम सभा किस प्रकार कार्य कर रही थी।

❖ **गांधी संसाधन केन्द्र शुरू करना**

केजीआईडी, मणिपुर ने गांधी संसाधन केन्द्र शुरू किया जिसका उद्घाटन इस अवसर के मुख्य अतिथि श्री ए. जितेश्वर शर्मा, एक गांधीवादी और मणिपुर शांति केन्द्र, इम्फाल के अध्यक्ष ने किया था। श्री जितेश्वर ने यह सूचित किया कि ऐसा (गांधीवादी) केन्द्र ऐसे व्यक्तियों जो गांधीवादी और सम्बद्ध विषयों पर अनुसंधान कार्य करने के इच्छुक हैं, को यथा–आवश्यक अनुसंधान सामग्री, साहित्य, पुस्तकें और दस्तावेज प्रदान कर सकता है।

❖ **हिमाचल प्रदेश में शिशु पंचायत शुरू की गई**

समिति की पहल शिशु पंचायत का उद्देश्य समुदाय निर्माण और गांधीवादी मूल्यों का प्रचार–प्रसार करने के कार्य में बच्चों को शामिल करना है और दिनांक 9 जुलाई, 2009 को हिमाचल प्रदेश के दो ग्रामीण विद्यालयों में इन्हें शुरू किया गया था।

❖ **चम्पारण के ग्रामों में साफ–सफाई अभियान**

समिति ने कस्तूरबा गांधी सामाजिक पुनरूत्थान केन्द्र, प्रजापति शैक्षिक विकास एवं समाज उन्नयन संस्था

और राष्ट्रीय बुनियादी विद्यालय, बेतिया, चम्पारण के सहयोग से स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर इस क्षेत्र के कुछ ग्रामों में साफ–सफाई अभियान चलाया। यह अभियान दिनांक 12 अगस्त, 2009 को शुरू किया गया। इस क्षेत्र के 200 विद्यार्थियों तथा युवाओं ने 'श्रमदान' में भाग लिया। स्वयंसेवकों ने स्वास्थ्य और साफ–सफाई के विभिन्न पहलुओं के संबंध में लोगों को शिक्षित करने के लिए लघु बैठकें भी आयोजित की।

❖ चम्पारण के बच्चों ने अपने ग्रामों की समस्या पर ध्यान दिया

सितम्बर माह के दौरान राष्ट्रीय बुनियादी विद्यालय, बेतिया, चम्पारण के दस बच्चों ने गांधी स्मृति के स्वयंसेवकों के साथ अपने ग्रामों की मुख्य समस्याओं के संबंध में दूसरा वास्तविक जांच अध्ययन किया। इस वास्तविक जांच के दौरान बिहार में ग्रामीण जीवन विशेषकर चम्पारण (बेतिया जिला) के ग्रामीण जीवन से अभिन्न रूप से जुड़े विभिन्न मुद्दों का पता चला। विद्यार्थियों को यह पता चला कि इनमें से अधिकांश समस्याएं विद्युत, सिंचाई, स्वास्थ्य और साफ–सफाई, दहेज प्रथा, बाल विवाह, संचार, बालिकाओं, शिक्षा बाढ़ और सूखे से संबंधित थीं। इन विद्यार्थियों ने बड़ी संख्या में प्रौढ़ों, महिलाओं तथा बच्चों का साक्षात्कार लिया।

❖ मोतिहारी में हिन्द स्वराज पर संगोष्ठी

हिन्द स्वराज के शताब्दी समारोह के भाग के रूप में मोतिहारी के गांधी ग्रामीण विकास सेवा संस्थान ने दिनांक 2 नवम्बर, 2009 को मोतिहारी में हिन्द स्वराज पर एक संगोष्ठी आयोजित की।

❖ किन्नौर में पहल

समिति ने एम.एस. पंवार संचार और प्रबंधन संस्थान, सोलन के सहयोग से किन्नौर में निम्नलिखित कार्यक्रम आयोजित किए :

- **गांधी महोत्सव**
- **गांधी ग्रीष्म स्कूल**
- **गांधी प्रश्नोत्तरी**
- **हिन्दी स्वराज पर संगोष्ठी**
- **गांधी मीडिया साक्षरता कार्यक्रम पर कार्यशालाएं**

❖ बीकानेर में गांधी जयंती समारोह

समिति ने महात्मा गांधी की 140वीं जयंती मनाने के लिए सवेरा संस्थान के सहयोग से बीकानेर में भारत–पाक सीमा पर विद्यालयों के विद्यार्थियों के लिए कार्यक्रम आयोजित किए। इस संबंध में दिनांक 2 अक्तूबर, 2009 को राजकीय बालिका वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, कोल्यात, बीकानेर और राजस्थान में एक वक्तृता प्रतियोगिता आयोजित की गई। गांधी जयंती पर आयोजित की गई एक निबंध–लेखन प्रतियोगिता में बीकानेर के 50 विद्यालयों के लगभग 5000 विद्यार्थियों ने भाग लिया था। इन दोनों प्रतियोगिताओं का शीर्षक ''गांधीजी जैसा मैंने उन्हें देखा'' था।

❖ उरी, जम्मू और कश्मीर में कार्यक्रम

समिति ने स्वैच्छिक अभिकरण परिसंघ, हैदराबाद के सहयोग से अप्रैल माह में जम्मू और कश्मीर के उरी जिले की बोनियार तहसील में युवा और महिलाओं के लिए दोस्ती ज्ञान केन्द्र शुरू किया था। यह केन्द्र प्रत्येक माह शांति बनाए रखने, व्यावसायिक प्रशिक्षण और कैरियर परामर्श पर कार्यक्रम आयोजित करता है। यह केन्द्र इस क्षेत्र के विद्यालयों और कॉलेजों को सुविधाएं प्रदान कर रहा है।

❖ गांधी स्मृति और दर्शन समिति के कर्मचारियों के लिए हिन्दी कार्यशाला

गांधी स्मृति और दर्शन समिति ने जीएसडीएस के कर्मचारी सदस्यों के लिए दिन–प्रतिदिन के कार्यालयी कार्य में हिन्दी के प्रयोग के संबंध में विशेष कार्यशाला आयोजित की। इस कार्यशाला का आयोजन श्री पी. गोरखनाथ, सेवानिवृत्त, निदेशक, राजभाषा, भारत सरकार ने किया था। इस कार्यशाला में युवा स्वयंसेवकों तथा जीएसडीएस के अन्य सदस्यों ने महात्मा गांधी के जीवन और दर्शन से संबंधित निबंध–लेखन प्रतियोगिताओं, वक्तृता प्रतियोगिताओं जैसे विभिन्न कार्यकलापों में भाग लिया।

❖ हिन्दी निबंध लेखन प्रतियोगिता

समिति के स्वयंसेवकों के लिए दिनांक 26 अगस्त, 2009 को एक निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। यह प्रतियोगिता गांधीजी के हिन्द स्वराज पर आधारित थी। इस प्रतियोगिता में लगभग 20 स्वयंसेवकों ने भाग लिया था।

❖ हिन्दी पखवाड़े का आयोजन

समिति ने सितम्बर, 2009 में हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया जिसमें जीएसडीएस के कर्मचारी सदस्यों और चन्द्र आर्य विद्या मंदिर तथा आर्य बालगृह के बच्चों के लिए निबंध, श्रुतलेखन और काव्य पाठ जैसी विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई थीं।

❖ शिक्षा और समाज पर संगोष्ठी

समिति ने एम.एस. पंवार संचार और प्रबंधन संस्थान

तथा जिला शिक्षा और प्रशिक्षण संस्थान (डीआईईटी), सोलन, हिमाचल प्रदेश के सहयोग से दिनांक 8 जुलाई, 2009 को शिक्षा और समाज पर एक संगोष्ठी आयोजित की।

❖ गांधीजी की कृतियों पर कार्यशाला

गांधी केन्द्र पूर्वोत्तर क्षेत्र भाषाओं, बंगाली, संथाली और हिन्दी जो जीएसडीएस और प्रेजीडेंसी कॉलेज, कोलकाता के साथ संयुक्त रूप से कार्य करता रहा है, ने गांधीजी की कृतियों विशेषकर पिछली शताब्दी के प्रथम और द्वितीय दशक की कृतियों के संबंध में एक कार्यशाला का आयोजन किया। यह कार्यशाला दिनांक 10 अगस्त, 2009 को आयोजित की गई।

❖ विकास, युवा और मीडिया के संबंध में पारस्परिक विचार–विमर्श

समिति ने जन संचार विभाग, गुवाहाटी विश्वविद्यालय के सहयोग से दिनांक 17 अगस्त, 2009 को विकास, युवा और मीडिया पर एक दिवसीय पारस्परिक विचार–विमर्श का आयोजन किया। इसके मुख्य अतिथि कुलपति ओ. के. मेधी थे।

❖ ऊपरी असम की शिशु पंचायत के लिए क्षमता निर्माण कार्यशाला

ऊपरी असम की शिशु पंचायत के पुराने तथा नए सदस्यों के लिए दिनांक 21 से 27 अगस्त, 2009 तक डिब्रूगढ़ में सात दिवसीय क्षमता निर्माण कार्यशाला का आयोजन किया गया था। यह कार्यशाला जीएसडीएस, कस्तूरबा गांधी राष्ट्रीय मैमोरियल न्यास तथा यूनिसेफ के सहयोग से आयोजित की गई थी।

❖ महात्मा गांधी मैमोरियल व्याख्यान और हिन्दी पखवाड़ा

समिति ने प्रेजीडेंसी कॉलेज के गांधी केन्द्र पूर्वोत्तर क्षेत्र भाषा, बंगाली, संथाली और हिन्दी के सहयोग से प्रेजीडेंसी कॉलेज में दिनांक 4 से 16 सितम्बर, 2009 तक हिन्दी दिवस के अवसर पर हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया। इस पखवाड़े के मुख्य कार्यकलाप का उद्घाटन दिनांक 4 सितम्बर, 2009 को महात्मा गांधी मैमोरियल व्याख्यान श्रृंखला में किया गया था।

गांधी केन्द्र ने दिनांक 11 और 12 सितम्बर, 2009 को प्रेजीडेंसी कॉलेज के बंकिम सभागार में महात्मा गांधी मैमोरियल व्याख्यान मामला के भाग के रूप में एक व्याख्यान का भी आयोजन किया था। इस व्याख्यान माला का प्रथम व्याख्यान 'निराला का साहित्य : राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पहलू' पर था। प्रोफेसर प्रेमशंकर त्रिपाठी, विख्यात हिन्दी लेखक और अध्यक्ष हिन्दी विभाग, सुरेन्द्र नाथ (सांध्य) कॉलेज, कोलकाता को व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया गया था।

भारत, अमरीका, अफगानिस्तान, पाकिस्तान और अन्य देशों के छात्र शांति, प्रेम और खुशहाली के बारे में पक्तव्य देने के लिए एकत्र हुए।

❖ संचार कौशलों में सुधार के लिए कार्यशाला आयोजित की गई

केजीआईडी मणिपुर ने स्वयंसेवकों और पंचायत सदस्यों को कार्रवाई–उन्मुख कार्यों में सक्रिय बनाने और उनकी प्रवृत्ति, व्यवहार इत्यादि विकसित करने के उद्देश्य से गांधी महोत्सव के भाग के रूप में दिनांक 7 अक्तूबर, 2009 को स्वयंसेवकों के लिए संचार नेटवर्क में सुधार करने के लिए एक कार्यशाला आयोजित की। इस कार्यशाला का उद्देश्य व्यक्ति–दर–व्यक्ति के मध्य सहयोग और आपसी समझबूझ के महत्व पर प्रकाश डालना भी था।

❖ चंडीगढ़ में अंतर्राष्ट्रीय शांति महोत्सव मनाया गया

संगीत के माध्यम से शांति और प्रेम के सार्वभौमिक संदेश का प्रचार–प्रसार करने के लिए 500 विद्यार्थियों ने दिनांक 2 अक्तूबर, 2009 को गांधी स्मृति और दर्शन समिति के सहयोग से युवा सत्ता द्वारा आयोजित किए गए चौथे अंतर्राष्ट्रीय शांति महोत्सव में भाग लिया। इस कार्यक्रम को महात्मा गांधी की 140वीं जयंती मनाने के लिए आयोजित किया गया था। इस अवसर पर विश्व के विभिन्न भागों के विद्यार्थियों ने एक स्थान पर एकत्र होकर शांति, प्रेम और खुशी के संदेश के बारे में विचार–विमर्श किया। भारत, अमेरिका, अफगानिस्तान, पाकिस्तान और अन्य देशों के विद्यार्थियों ने विश्व के विभिन्न भागों के संगीत का आनंद उठाया।

❖ प्रो0 एलिस वाकर के साथ बातचीत

अपने ''दी कलर पर्पल'' उपन्यास जिसके लिए उन्होंने वर्ष 1983 में पुलित्जर पुरस्कार जीता था, के लिए विख्यात प्रोफेसर एलिस वाकर ने दिनांक 19 दिसम्बर, 2009 को गांधी स्मृति में बातचीत की। इस कार्यक्रम को गांधी स्मृति और दर्शन समिति तथा भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद के सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के भाग के रूप में आयोजित किया गया था।

❖ गांधी जयंती – महात्मा गांधी की 140वीं जयंती

महात्मा गांधीजी की 140वीं जयंती दिनांक 2 अक्तूबर, 2009 को गांधी स्मृति में मनायी गई थी। भारत के उप–राष्ट्रपति, डॉ. मोहम्मद हामिद अंसारी, प्रधानमंत्री

डॉ. मनमोहन सिंह, मंत्रिमंडल के सदस्यों, मुख्यमंत्री श्रीमती शीला दीक्षित; पूर्व राज्यपालों, संसद सदस्यों, कूटनीतिक कोर के सदस्यों ने इस संस्मारक कार्यक्रम में भाग लिया।

प्रदर्शनियां

विभिन्न सामाजिक–शैक्षिक कार्यक्रमों के माध्यम से महात्मा गांधीजी के संदेश का प्रचार–प्रसार करने के गांधी स्मृति और दर्शन समिति के लक्ष्यों और उद्देश्यों के भाग के रूप में समिति ने देश के विभिन्न भागों में महात्मा गांधी जी से संबंधित प्रदर्शनियां भेजी। भेजी गई प्रदर्शनियों में से कुछ इस प्रकार हैं :

- मेरे सपनों का भारत पर प्रदर्शनी हिमाचल प्रदेश के सोलन और किन्नौर में।
- प्रेजीडेंसी कॉलेज, कोलकाता
- सूरजकुंड में प्रदर्शनी
- जयपुर में प्रदर्शनी
- दिल्ली के विभिन्न कॉलेजों में प्रदर्शनी
- गांधी संग्रहालय पटना
- जीएसडीएस और आईसीसीआर के सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के भाग के रूप में मास्को को गांधी और टालस्टाय पर प्रदर्शनी भेजी गई

पुस्तकालय तथा प्रलेखन

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति के पुस्तकालय में संदर्भ पुस्तकों नामतः विश्व मानचित्र, ज्ञानकोश तथा शब्दकोश सहित गांधी जी के जीवन एवं विचार, कला, संस्कृति, इतिहास, अर्थशास्त्र, राजनीति, धर्म, पुरातत्व पर लगभग 12,000 पुस्तकों का संकलन है। यहां पर बच्चों के लिए अलग खंड है। यह नियमित आधार पर लगभग 50 जर्नल तथा पत्रिकाएं भी लेती है तथा विद्वानों, शोध फेलो तथा छात्रों की जरूरतों को पूरी करती है। इस वर्ष इसमें लगभग 500 नई पुस्तकें शामिल की गई।

प्रलेखन केंद्र में विभिन्न विषयों जैसे गांधी, महिला, बच्चे, युवा, महिलाओं के विरूद्ध अपराध, पर्यावरण, भारत–पाक संबंध, साम्प्रदायिकता, अंतर्राष्ट्रीय मामलों पर प्रेस–कतरन फाइलों का अनुरक्षण किया जा रहा है। प्रलेखन केन्द्र को मजबूत करने के प्रयास में इस वर्ष अनेक अन्य विषयों को जोड़ा गया है।

प्रकाशन

अनंतिम विचारों तथा समकालीन वास्तविकताओं के आलोक में गांधी के सिद्धांतों तथा पद्धतियों का आलोचनात्मक मूल्यांकन करने के लिए **'रीडिस्कवरिंग गांधी'** नामक बीस–खंड सीरीज का काम संतोषजनक रूप से चल रहा है।

अनासक्ति दर्शन कार्य में अहिंसा का द्विवार्षिक अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, खण्ड 3, अंक 1 और 2, 2008 (अंग्रेजी और हिन्दी भाषा) का विमोचन किया गया। अन्य पुस्तकें थीं **वार्षिक रिपोर्ट–2007–2008** और भोजपुरी पुस्तक।

ग्रीष्म शिविर

4.1.4

नेहरू स्मारक संग्रहालय एवं पुस्तकालय

नेहरू स्मारक संग्रहालय एवं पुस्तकालय (एनएमएमएल) भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू के विचारों, परंपरा एवं मूल्यों को प्रचारित करने की दिशा में जुटी एक समर्पित संस्था है।

नेहरू स्मारक संग्रहालय एवं पुस्तकालय को बदलती अपेक्षाओं के अनुरूप आधुनिकीकरण और उन्नयन का कार्य सौंपा गया है। इस परियोजना के मुख्य अंगों में एनएमएमएल अर्जनों का डिजिटलीकरण, संग्रहालय को पुनः डिज़ाइन कर विकसित करना, पुस्तकालय में और स्थान का प्रावधान करना, मल्टी मीडिया पुस्तकालय, बाल संसाधन केन्द्र की स्थापना, उद्यान एवं अन्य निर्माण कार्य शामिल हैं। एनएमएमएल दिल्ली में आयोजित किए जाने वाले राष्ट्रमंडल खेल–2010 से पूर्व नेहरू तारामंडल का आधुनिकीकरण और उन्नयन करने का भी प्रयास कर रहा है।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की पृष्ठभूमि में नेहरू के जीवन एवं कार्यों के दृश्य माध्यमों से प्रदर्शित करने वाला यह संग्रहालय जनता के बीच काफी लोकप्रिय है और यह भारी संख्या में दर्शकों को आकृष्ट करता रहा है। रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान इस संग्रहालय की विभिन्न दीर्घाओं को देखने के लिए देश–विदेश से लगभग 17,82,061 लोग आए।

पं. नेहरू एवं इंदिरा गांधी के बीच हुए पत्राचार पर आधारित **लैटर्स दैट बाइंड पापू ऐण्ड इंदू** नामक प्रदर्शनी सीबीआई पुस्तकालय, सीबीआई मुख्यालय, नई दिल्ली में 20 एवं 21 अप्रैल, 2009 को, कमला नेहरू कॉलेज, नई दिल्ली में 13 से 18 अगस्त, 2009 तथा डीएवी कालेज फॉर गर्ल्स, यमुना नगर हरियाणा में 6 व 7 नवम्बर, 2009 को लगाई गई।

- हमारी आगामी प्रदर्शनी इन ईच अदर्स आईज़–गांधी ऐण्ड नेहरू का कार्य चल रहा है।
- पं. जवाहरलाल नेहरू के 120वें जन्म दिवस के अवसर पर दिल्ली इकेबाना इंटरनेशनल द्वारा संग्रहालय को 14 नवम्बर 2009 को फूलों से सजाया गया।
- पुस्तकालय के अर्जनों में 3,337 नए प्रकाशन जोड़े गए जो मुख्यतः आधुनिक भारतीय इतिहास व समाज विज्ञान विषयों से संबंधित थे। पुस्तकालय के वर्तमान अर्जनों की कुल संख्या 2,50,102 है। पुस्तकालय ने 15 सीडी और 116 डीवीडी भी अर्जित कीं।
- श्रीमती इंदिरा गांधी, मोहम्मद यूनुस, श्री के. आर. नारायणन व अन्य भारतीय नेताओं के 6,477 फोटोग्राफ्स को जोड़कर पुस्तकालय में कुल फोटोग्राफो की संख्या 1,71,543 हो गई है।
- एलबमों के संग्रह में 81 नए फोटो एलबम जोड़े गए जिससे यह संख्या बढ़कर 2,670 हो गई है।
- इस अवधि के दौरान 505 पत्रिकाएं प्राप्त हुईं और 24 अखबारों की सदस्यता ली गई।
- पुस्तकालय द्वारा 3,113 पुस्तकों का वर्गीकरण व सूचीकरण किया गया।

संगोष्ठियां, व्याख्यान एवं अन्य कार्यक्रम

- एनएमएमएल द्वारा 1 अप्रैल 2009 को पहली बार संस्था का स्थापना दिवस समारोह मनाया गया।
- इस अवसर को स्मरणोत्सव बनाने के लिए कार्यकारिणी समिति ने प्रत्येक वर्ष 1 अप्रैल को **जवाहरलाल नेहरू स्मारक स्थापना दिवस व्याख्यान** का आयोजन करने का निर्णय लिया। अतः जवाहरलाल नेहरू स्मारक व्याख्यान माला की श्रृंखला में पहला व्याख्यान 6 अप्रैल 2009 को यू.के. के लंकेस्टर विश्वविद्यालय के इंस्टिट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज़ के संस्थापक निदेशक एवं समाज विज्ञान के प्रोफेसर, प्रो. रॉबर्ट डग्लस जैसॉप ने **दि रिटर्न ऑफ दि नेशनल स्टेट इन ग्लोबल क्राइसिस** विषय पर दिया।
- एनएमएमएल द्वारा 2 अप्रैल 2009 को **डेवलपिंग ए कल्चरल् पॉलिटिकल इकॉनॉमी : कनेक्टिंग डिस्कोर्सिज़ एण्ड मैटीरीएलिटीज़** विषय पर डॉ. नगाई–लिंग सुम, वरिष्ठ व्याख्याता, राजनीति एवं अंतर्राष्ट्रीय संबंध विभाग, लंकेस्टर यूनिवर्सिटी (यू.के.) के व्याख्यान का आयोजन किया गया।
- एनएमएमएल ने इंस्टिट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज़, जे.एन.यू. के सहयोग से 16 अप्रैल 2009 को **ट्रबलिंग दि फैमिली : एन इंटरडिसिप्लिनेरी वर्कशाप ऑन इनवेस्टमेंट्स एण्ड कॉन्सिक्वेंसिस ऑफ दि फैमिली एज़ ए साइट ऑफ कल्चरल् प्रोडक्शन** विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया।
- एनएमएमएल द्वारा 2 जून 2009 को **हिन्दी कार्यशाला** का आयोजन किया गया, जिसमें **राजभाषा हिन्दी का प्रयोग एवं तत्संबंधी नियम** विषय पर क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, नई दिल्ली के सहायक निदेशक (कार्यान्वयन), श्री एस. डी. पाण्डेय को व्याख्यान के लिए बुलाया गया।
- एनएमएमएल ने आलम खुन्दमीरी फाउंडेशन तथा समाज वैज्ञानिक ट्रस्ट के सहयोग से 24 से 26 जून 2009 को **थिंकिंग डेमोक्रेसी** विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन किया। मुख्य वक्ता थे–अकील बिलग्रामी, उत्सा पट्नायक, अनिकेत आलम, जावेद आलम, गीता कपूर व अन्य। अंतिम दिन एक पैनल परिचर्चा का भी आयोजन किया गया।
- एनएमएमएल द्वारा सैंचुरी एशिया, वाइल्ड लाइफ कनज़र्वेशन (कार्यान्वयन), दि बंगाल टाइगर्स कन्सल्टेशन, दिल्ली ग्रीनस् तथा श्रीराम स्कूल के सहयोग से **इकोसिस्टम्स, क्लाइमेट चेंज एण्ड नेशनल डेवलपमेंट** विषय पर 28 व 29 जुलाई 2009 को वार्ताओं का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी में देशभर के प्रतिष्ठित पर्यावरणविदों, संरक्षणकर्ताओं, अधिकारीगण, राजनैतिक नेतागण, कारपोरेट्स, पत्रकारों तथा वन अधिकारियों को एक मंच पर विचार विमर्श का अवसर मिला।
- एनएमएमएल द्वारा 30 जुलाई 2009 को **हिन्दी कार्यशाला** का आयोजन किया गया, जिसमें वित्त मंत्रालय के पूर्व निदेशक, श्री शिव कुमार मदान ने **संघ सरकार की राजभाषा नीति एवं सामान्य जिम्मेदारी** विषय पर अपना व्याख्यान दिया।
- एनएमएमएल द्वारा 24 अगस्त 2009 को **डिड यूरोपिअन इंटलैक्चुअल्स बिल्ड ए कॉमन कल्चरल स्पेस इन अर्ली मॉडर्न यूरोप**? विषय पर प्रो. जीन बोटिअर, निदेशक, डी' इट्यूड्स एट दि इकोल डेस हॉट्स इट्यूडस एन साइंसिस सोशेल्स (मारसेल) तथा निदेशक, नाबर्ट एलियास सेंटर, सोशल साइंसिज के व्याख्यान का आयोजन किया गया।
- एनएमएमएल द्वारा 27 अगस्त 2009 को यूनिवर्सिटी ऑफ हेडलबर्ग, जर्मनी के राजनीतिक विभाग के प्रमुख तथा सेंटर फॉर दि स्ट्डी ऑफ डिवेलपिंग सोसाइटीज़, नई दिल्ली के विजिटिंग फेलो, प्रो. सुब्रता कुमार मित्रा का **लेवल प्लेइंग फीलड्स : दि स्टेट ऐण्ड सिटिज़नशिप इन इंडिया** विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया।
- एनएमएमएल द्वारा 5 व 6 सितम्बर 2009 को जवाहरलाल नेहरू प्रोन्नत अध्ययन संस्थान, जे.एन.यू. के सहयोग से **साउथ एशियन इकॉनामी ऐण्ड इनवॉयरमेंट** विषय पर दो दिवसीय इंडो–जापानी कार्यशाला का आयोजन किया गया। अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के प्रो. इरफान हबीब, एमरिट्स प्रोफेसर ने **इकॉलाजी ऐण्ड इकानॉमिक् चेंज इन इंडियन हिस्ट्री** विषय पर उद्घाटन व्याख्यान दिया।
- एनएमएमएल द्वारा 7 सितम्बर 2009 को आक्सफोर्ड ब्रूक्स यूनिवर्सिटी के सेंटर फॉर हेल्थ, मेडिसिन ऐण्ड सोसाइटी, आक्सफोर्ड ब्रूक्स यूनिवर्सिटी, ऑक्सफोर्ड, यू0 के0 के प्रो0 वॉलट्रॉड अरनेस्ट का **'फ्रॉम 'क्लोनियल मेडिसिन' टू 'यूनिवर्सल साइंस' ऐण्ड 'मेडिकलाइजेशन' : रिफ्लेक्शंस ऑन दि डिवेलपमेंट ऑफ वेस्टर्न साइकैट्री इन कलोनियल इंडिया, सन् 1870–1940** विषय पर व्याख्यान आयोजित किया गया।
- एनएमएमएल ने 9 सितम्बर 2009 को एक अन्य पुस्तक का लोकार्पण किया जिसमें, प्रो. बिमल प्रसाद की पुस्तक **पाथवे टू इंडिया'ज पार्टिशन, खण्ड ш : दि मार्च टू पाकिस्तान (1939–1947)** का लोकार्पण पूर्व वित्त मंत्री श्री मुबाशीर हसन ने किया।
- एनएमएमएल द्वारा 8 सितम्बर 2009 को प्रेक्षागृह में पुस्तक लोकार्पण समारोह का आयोजन किया गया। माननीय डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम ने संस्था के पूर्व निदेशक, डॉ. ओ. पी. केजरीवाल की पुस्तक ''बनारस इलस्ट्रेटेड बाई जेम्स प्रिंसेप विद जेम्स प्रिंसेप एण्ड बनारस'' का लोकार्पण किया।

जेम्स प्रिंसेज द्वारा वनारस इलस्ट्रेटेड पुस्तक का विमोचन

- एनएमएमएल में 15 सितम्बर, 2009 से हिन्दी पखवाड़ा की शुरूआत की गई जिसमें कर्मचारियों के लिए कई कार्यक्रम जैसे निबंध लेखन, टिप्पण/प्रारूप लेखन, प्रश्नोत्तरी, कविता पाठ, स्काई शो इत्यादि का आयोजन किया गया।
- एनएमएमएल द्वारा 23 सितम्बर, 2009 को ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस के सहयोग से **बहुधा ऐण्ड पोस्ट 9/11 वर्ल्ड ऐण्ड इंडिया'ज कल्चर : दि स्टेट, दि आर्ट्स ऐण्ड बियान्ड बाक्स सेट का लोकार्पण समारोह आयोजित किया गया।**
- एनएमएमएल द्वारा ऑस्ट्रिया–इंडिया राजनयिक संबंधों की 60वीं वर्षगांठ पर 24 सितम्बर, 2009 को ऑस्ट्रियन कल्चरल फोरॅम, नई दिल्ली के सहयोग से **हेडन ऑन टूर** पर एक प्रदर्शनी एवं हेडन ट्रायो इसिनस्टेडट की प्रस्तुति का आयोजन किया गया।
- एनएमएमएल द्वारा 30 सितम्बर, 2009 को **इकॉनॉमिक डिमोक्रेसी थ्रू प्रो पूअर ग्रोथ** के अध्ययन पर एक साउथ एशियन वार्ता का आयोजन किया गया। सार्क के महासचिव डॉ. शील कांत शर्मा ने मूविंग फारवर्ड विद सार्क विषय पर भाषण दिया।
- एनएमएमएल द्वारा 13 अक्टूबर, 2009 को पूर्व विदेश मंत्री श्री नटवर सिंह की पुस्तक परिचर्चा **माई चाईना यीअर्स : 1956–88** का आयोजन किया गया।
- एनएमएमएल द्वारा 28 अक्टूबर, 2009 को **इन दि मेकिंग ऑफ ए नेशन : लॉइअलिटी पीटिशन्स, इकानॉमिक नैशनलिज़्म ऐण्ड ब्रिटिश पॉलिसी, 1870–1900** विषय पर प्रो. माजिद सिद्दिकी, पूर्व प्रोफेसर (इतिहास), ऐतिहासिक अध्ययन केन्द्र (जे. एन.यू.) एवं संस्था के एक पूर्व वरिष्ठ फेलो के व्याख्यान का आयोजन किया गया। संगोष्ठी की अध्यक्षता प्रो0 अपर्णा बसु, इतिहास की पूर्व प्रोफेसर, दिल्ली विश्वविद्यालय ने की।
- एनएमएमएल द्वारा 7 नवम्बर, 2009 को ''सहमत'' के सहयोग से राम रहमान के व्याख्यान का आयोजन किया गया जिसमें उन्होंने **सुनील ज़ानाह फोटोग्राफिंग हिस्ट्री : इंडिया इन दि 1940' ऐण्ड 1950' : दि स्ट्रगल फॉर इंडिपेंडस पर** वक्तव्य दिया।
- एनएमएमएल द्वारा 7 नवम्बर, 2009 को सेंटर फॉर स्टडी ऑफ डिवेलपिंग सोसाइटीज़ के सहयोग से **मल्टी पार्टी डॉयलॉग ऑन दि पॉलिटिकल फ्यूचर ऑफ जम्मू एण्ड काश्मीर** विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन की विशेषता यह थी कि इसने भारत के नेताओं, काश्मीर के प्रमुख नेताओं और काश्मीर के अलगाववादियों को एक मंच पर इकट्ठा किया गया।
- एनएमएमएल द्वारा 9 नवम्बर, 2009 को संस्था द्वारा **मेकिंग सेंस ऑफ हिस्ट्री : ए मेंटल हैल्थ पर्सपेक्टिव** विषय पर कार्यशाला आयोजित की गई। बहुत से मनोवैज्ञानिकों, समाज वैज्ञानिको, इतिहासकारों, सहित्यकारों व इस विषय में रुचि रखने वाले अन्य लोगों ने इसमें भाग लिया।
- एनएमएमएल द्वारा नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ एड्यूकेशनल प्लैनिंग ऐण्ड एड्मिनिस्ट्रेशन (नूपा) के सहयोग से **मौलाना आज़ाद की जन्मशती** जो 11 नवम्बर, 2009 को था, मनाने के उपलक्ष्य में मौलाना आज़ाद एण्ड दि नेशनल एजूकेशन सिस्टम विषय पर 11 व 12 नवम्बर, 2009 को दो दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसे सरकार द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा दिवस घोषित किया गया है।
- **नेशनल फोरॅम फॉर पॉलिसी डॉयलाग** के तहत एनएमएमएल ने मिलेट नेटवर्क ऑफ इंडिया के साथ मिलकर 16 व 17 नवम्बर, 2009 को दो दिवसीय **नेशनल कंसल्टेशन ऑन मिलेट्स** का आयोजन किया।
- एनएमएमएल ने 23 व 24 नवम्बर, 2009 को **पॉपुलर सिनेमाज़ ऑफ नेहरू ईरा** पर दो दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया। इस अवसर पर नेहरूयुगीन फिल्मों के विषय व अन्य कल्पित विषयों पर विशेष रूप से गौर किया गया।
- एनएमएमएल द्वारा भारत स्थित पोलैंड दूतावास के सहयोग से 25 व 26 नवम्बर, 2009 को **इंडिया एण्ड पोलैंड : दि डिमोक्रेटिक एक्सपीरिएंस** विषय पर दो दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। यह संगोष्ठी प्रत्येक देश के लोकतांत्रिक अनुभवों पर और उसका राजनीति, समाज व अर्थव्यवस्था से टकराव पर आधारित थी।
- एनएमएमएल ने 30 नवम्बर, 2009 को पंडित नेहरू के 120वीं जन्म दिवस समारोह के समापन अवसर पर **क्रीएटिव एक्सप्रेशंनस : दि नेहरू इंप्रिन्ट नामक संगोष्ठी** का आयोजन किया। जिसका उद्देश्य नेहरू के नेतृत्व में कला, साहित्य, संस्कृति आदि के क्षेत्र में आज़ाद भारत की अद्वितीय अस्मिता को जानना व पहचानना था।
- एनएमएमएल द्वारा 2 दिसम्बर, 2009 को सेज के सहयोग से सुबीर भौमिक की पुस्तक **ट्रब्लड पेरिफेरी : क्राइसिस ऑफ इंडिया'ज़ नार्थ इस्ट**

के लोकार्पण व परिचर्चा का आयोजन किया गया।

- एनएमएमएल ने 4 दिसम्बर, 2009 को संस्था द्वारा श्री हर्ष मंदर की पुस्तक **फीअर ऐण्ड फॉरगिवनेस : डॉयलॉग ऑन कम्यूनल वायलेंस, स्टेट अकाउंटेबिलिटी ऐण्ड रीकंसिलिएशन** पर संगोष्ठी आयोजित की।
- एनएमएमएल ने 9 दिसम्बर, 2009 को मार्क लिंडले की पुस्तक **दि लाइफ ऐण्ड टाइम्स ऑफ गोरा** की पुस्तक चर्चा का आयोजन किया। गोरा भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की एक महत्वपूर्ण इकाई थे जिनके कार्यो का बहुत ज्यादा उल्लेख इतिहासकारों ने नहीं किया है।
- एनएमएमएल ने पेंग्विन बुक्स के सहयोग से 17 दिसम्बर, 2009 को मेघनाद देसाई की पुस्तक **दि रीडिस्कवरी ऑफ इंडिया** के लोकार्पण का आयोजन किया।
- समसामयिक अध्ययन केन्द्र एनएमएमएल की चालू शोध परियोजनाओं का संचालन करता है। "इसकी तीन प्रमुख परियोजनाओं–आधुनिक भारतीय इतिहास व समसामयिक अध्ययन" के शोध में प्रोत्साहन, "भारत के विकास के परिप्रेक्ष्य (सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक)" एवं "भारतीय और विश्व अर्थव्यवस्था और राज्य व्यवस्था की बदलती विचारधाराएं" के तहत् विविध योगदान किए गए।
- समीक्षाधीन अवधि के दौरान 18 अकादमिक विद्वानों को दो वर्ष के लिए संस्था की फेलोशिप योजना प्रदान की गई है। 27 अगस्त 2009 को इन सभी फेलोज़ को निदेशक द्वारा दोपहर भोज पर आमंत्रित किया गया और फेलोशिप से संबंधित मुद्दों की चर्चा के साथ इस पर भी बात हुई कि एनएमएमएल की अकाद्मिक गतिविधियों में फेलोज़ का योगदान कैसे हो सकता है।

1. डॉ. अलोक सरीन ने 16 सितम्बर 2009 को ''मेकिंग सेंस ऑफ हिस्ट्री : ए मेन्टल हेल्थ पर्सपेक्टिव'' पर प्रस्तुति दी।
2. श्री अलोक बाजपेयी ने 29 सितम्बर, 2009 को ''ए होलिस्टिक व्यूं ऑफ महात्मा गांधी'ज पॉलिट्कल इन थीअॅराटिकल रिअल्मस'' पर प्रस्तुति दी।
3. डॉ0 अनिता घई ने 14 अक्टूबर 2009 को ''वीमेन ऐण्ड डिसबिलइटी : कॉन्सेप्टुलाइजिंग ए पॉलिसी ऑफ केअर'' पर प्रस्तुति दी।
4. डॉ0 भूपेन्द्र यादव ने 04 नवम्बर 2009 को ''अंडरस्टैण्डिंग चेंज अमंग पंजाबी दलित, 1880–1980'' विषय पर प्रस्तुति दी।
5. श्री कृष्ण ने 18 नवम्बर 2009 को ''सावरकर अगेंस्ट गांधी : ए कम्पैरिजन ऑफ टू वर्ल्डव्यूज'' विषय पर प्रस्तुति दी।
6. डॉ0 वी0 कृष्णा अनंथ ने 09 दिसम्बर 2009 को ''दि रिट्रीट ऑफ दि नेहरूवियन सोशलिस्ट प्रोजेक्ट : एन एनालीसिस इनटू दि पालिट्कल, लेजिस्लेटिव ऐण्ड दि जुडिशल इन्टरवेन्शॅन्स–1952 से 2008'' विषय पर अपनी प्रस्तुति दी।

एनएमएमएल, संग्रहालय के स्थापना दिवस के अवसर पर प्रत्येक वर्ष 01 अप्रैल को वार्षिक व्याख्यान का आयोजन करेगा।

एनएमएमएल अभिलेखागार

एनएमएमएल का पांडुलिपि प्रभाग प्रतिष्ठित व्यक्तियों एवं संस्थाओं के निजी कागजातों को अर्जित कर उन्हें शोधार्थियों के लिए परिरक्षित करता है।

- मदलसा नारायण के कागजातों की दूसरी किश्त उनके पुत्र श्री रजत कुमार नारायण से अर्जित की गई। इस संग्रह में 189 डायरियां एवं कापियां तथा 13 फाइलें है जो 1940 से 1948 तक की अवधि के है।
- सुश्री घ्रुबा सरकार ने डॉ. फुलरेणु गुहा के कागजातों का एक लघु संग्रह भेंट किया है जिसमें इंदिरा गांधी, राजीव गांधी के साथ पत्राचार, लेख, प्रेस कतरने आदि शामिल हैं। ये सभी 1974 से 2006 तक की अवधि के है।
- श्री करथात बालाचन्द्र मेनन ने स्वयं अपने कागजातों का एक संग्रह प्रदान किया है जिसमें 1930 से 2009 तक के लेख, प्रेस कतरने व इसी अवधि की मुद्रित सामग्री है।
- श्री इमरोज़ द्वारा अमृता प्रीतम की लिखी कहानियों की दूसरी किस्त भेंट की गई है।
- श्री एस. आर. बोम्मई के पुत्र वासबराज बोम्मई ने उनके कागजातों का लघु संग्रह दिया है जो 1985–86, 96–97 तक की अवधि का है।
- श्री सी. हनुमंत राव के कागजातों का एक लघु संग्रह उनके पुत्र श्री सी. वी. राजा गोपाल राव ने भेंट किया है, जिसमें साबरमती आश्रम में श्री सी. हनुमंत राव के ठहरने के दौरान की उनकी डायरी, किताबों की समीक्षा, टिप्पणी आदि से संबंधित कागजात हैं। ये वर्ष 1930, 1959 और 2000 तक की अवधि के हैं।
- पांडुलिपि प्रभाग द्वारा अर्जित अन्य दस्तावेजों में – पं. नेहरू का 02 दिसम्बर 1954 का लिखा पत्र, प्रभा चन्द परियोजना रिपोर्ट–नेहरू एज़ ए जर्नलिस्ट, बी. सी. गुहा के लिखे लेख तथा 2 रूपए का नोट जिस पर एक लेख लिखा है, जो दिल्ली जिमखाना क्लब के न्यूजलेटर में प्रकाशित हुआ था, शामिल है। ये श्रीमती सरला मदान द्वारा भेंट किए गए।
- इस अवधि के दौरान बहुत से संग्रहों की जॉचसूची का कार्य पूरा किया गया।
- भारत व विदेश के विश्वविद्यालयों/संस्थाओं से

सिफारिश किए गए 180 शोधार्थी जो आधुनिक भारतीय इतिहास व समाज के विभिन्न पक्षों पर शोध कर रहे हैं, ने पाण्डुलिपि प्रभाग की 3,450 फाइलों का अध्ययन किया। इन शोधार्थियों के लिए तथा कार्यालयीन उपयोग के लिए 38,890 कागजों की जिरॉक्स प्रतियां तैयार की गईं।

मौखिक इतिहास

संस्था का मौखिक इतिहास प्रभाग उन जाने माने व्यक्तियों से साक्षात्कार करता है जिन्होंने सार्वजनिक जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इन साक्षात्कारों के प्रतिलेख देश के सामाजिक और राजनैतिक विकास से संबंधित अध्ययनों में प्रथम स्रोत सामग्री के रूप में अत्यन्त उपयोगी है।

- समीक्षाधीन अवधि के दौरान मौखिक इतिहास परियोजना के लिए मल्लापुरम, केरल में श्री के. बालाचन्द्रन मेनन का साक्षात्कार लिया गया। इसके साथ ही अब तक रिकार्ड किए गए व्यक्तियों की संख्या 1,329 और रिकॉर्डिंग किए गए सत्रों की संख्या कुल 5,342 हो गई है।
- मनोहर लाल कम्पानी व एस. एम. कृष्णात्रे के प्रतिलेख उनके अनुमोदन के लिए तैयार किए जा चुके है।
- के. बालाचन्द्रन, के. सी. जौहरी, श्री हर्ष मिश्रा, श्री बिमल प्रसाद जैन, बांगेश्वर रॉय, सत्यवती, विष्णु गाड्गिल, डी. वी. पंग्राकर, सुरेन्द्र नाथ पांडे, सरदार हरलाल सिंह, मदन मोहन हरदात और मदन लाल विरमानी के प्रतिलेखों को अंतिम रूप दिया जा रहा है।
- मल्टी मीडिया पुस्तकालय द्वारा **मौखिक इतिहास रिकार्डिंग को वीडियो** पर रिकॉर्ड करना प्रारम्भ किया गया। इसके तहत् मौखिक इतिहास के 100 घंटे 125 सत्रों से अधिक रिकॉर्ड किए गए, जिसमें एल. सी. जैन, नयनतारा सहगल, शांति घोष, मार्टिन लूथर किंग–III , देवी प्रसाद, बिपिन चन्द्रा, शन्नो खुराना आदि जैसे कुछ विख्यात व्यक्तियों के संस्मरण शामिल हैं।
- इस प्रभाग ने कार्यक्रमो के प्रलेखीकरण द्वारा संसाधन जुटाना तथा विभिन्न संगोष्ठियों, कार्यक्रमों आदि के **300 घंटे का वीडियो डाक्यूमेंटेशन** भी किया।

रिप्रोग्राफी प्रभाग एवं परिरक्षण सेवाएं

- वर्ष के दौरान रिप्रोग्राफी प्रभाग ने हिन्दुस्तान टाइम्स, बिजनेस स्टैंडर्ड, लाहौर कॉन्सपिरेसी केस इन दि कोर्ट ऑफ स्पेशल ट्रीब्यूनल गवर्नमेंट वीएस सुखदेव (उर्दू) जैसे अखबारों के 35 नेगेटिव माइक्रोफिल्म के लगभग 27,314 फ्रेम्स तैयार किए। इसके द्वारा पुस्तकालय हेतु 4,032 मीटर के पॉजिटिव माइक्रोफिल्म का निर्माण भी किया गया। इसके अतिरिक्त प्रभाग ने 72 नेगेटिवस की प्रतियां, 445 फोटोग्राफ्स, 8,139 माइक्रोफॉर्म प्रिंट आउट तथा 65,541 जिरॉक्स प्रतियां भी तैयार की। व्याख्यान, संगोष्ठियों एवं अन्य कार्यक्रमों के फोटो भी लिए गए।
- परिरक्षण प्रभाग ने 2,819 अभिलेखागारीय दस्तावेजो का लेमिनेशन किया तथा 11,213 दस्तावेजों व 13,059 पृष्ठों की रक्षियां बनाई। बहुत सी पुस्तकों एवं फाइलों को धूर्मीकृत भी किया गया। एकक द्वारा पार्सलों की सिलाई, पुस्तकों का रखरखाव, सूचियों की जिल्दबंदी, खण्डो पर स्वर्णाक्षर अंकन आदि का कार्य भी किया गया तथा फोटो अनुभाग द्वारा संग्रहालय की प्रदशर्नियों की फोटो को मढ़ने–चिपकाने का कार्य भी किया गया।

तारामण्डल

- अंतर्राष्ट्रीय खगोलवर्ष के उपलक्ष में तारामण्डल ने साइंस पापुलराइज़ेशन असोसिएशन ऑफ कम्यूनिकेटर्स ऐण्ड एड्यूकेटर्स (गैर सरकारी संस्था) को पूरा सहयोग देते हुए जंतर–मंतर ऑबजरवेट्री मे 2 से 5 अप्रैल, 2009 तक खगोल के 100 घंटो के पूरा होने की घटना को मनाया।
- तारामण्डल द्वारा 22 जुलाई, 2009 के पूर्ण सूर्य ग्रहण की पूर्व तैयारी पर ''प्रीपेरिंग फॉर दि अपकमिंग टोटल सोलर एक्लिप्स'' विषय पर दो दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। 18 एवं 19 अप्रैल, 2009 को आयोजित इस कार्यशाला में लगभग 100 लोगों (38 दिल्ली से बाहर) ने भाग लिया।
- तारामण्डल द्वारा 17, 24 एवं 31 मई, 2009 को **प्रीपेरिंग फॉर दि अपकमिंग टोटल सोलर एक्लिप्स ऑन 22 जुलाई, 2009** विषय पर जनसाधारण के लिए कार्यशाला का आयोजन किया गया। 21 जून 2009 को तारामण्डल द्वारा जंतर–मंतर, उज्जैन से समर ऑबजरवेशन कार्यशाला का तथा एक्लिप्स ऐण्ड आर्ट पर जनता एवं विद्यार्थियों के लिए 27 जून, 2009 को कार्यशाला आयोजित की गई। तारामण्डल देखने आने वाली जनता को भी ग्रहण से कुछ दिन पहले इसके बारे में सूचित किया गया।
- तारामण्डल द्वारा 22 जुलाई, 2009 के ग्रहण संबंधित बहुत सी कार्यशालाएं जगह–जगह आयोजित की गई।
- तारामण्डल द्वारा बच्चों के लिए खगोल पर वार्षिक प्रश्नोत्तरी का आयोजन किया गया जिसमें 30 स्कूलों के लगभग 150 बच्चों ने भाग लिया।
- अंतर्राष्ट्रीय एस्ट्रॉनॉमी वर्ष के उपलक्ष्य में इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ एसट्रोफिजिक्स (बैंगलोर), के प्रो0 तुषार प्रभु ने 22 सितम्बर, 2009 को वेरिएबल स्टार ऐण्ड एपिलॉन ऑरिगा विषय पर व्याख्यान दिया।
- वेरिएबल स्टार एपिलॉन ऑरीगा के अध्ययन के लिए तारामण्डल ने 'स्पेस' नामक गैर सरकारी संस्था के सहयोग से तारामण्डल में से आधे दिन की कार्यशाला का आयोजन किया। इस कार्यशाला में लगभग 50

स्कूली व कॉलेज छात्रों ने भाग लिया।

- तारामण्डल द्वारा 1 नवम्बर, 2009 को दिल्ली आई0आई0टी0 के सिविल इंजिनीयरिंग विद्यार्थियों के लिए स्काई थिएटर में ''एस्ट्रॉनॉमिकल सर्वेइंग'' विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया।
- तारामण्डल ने 11 से 19 नवम्बर, 2009 को विज्ञान प्रसार, डी0एस0टी0, में ''गैलीलियोस्कोप'' पर आयोजित वीडियो कॉनफ्रेंस में भाग लिया। इस कार्यशाला की परिकल्पना जिसमें वृहस्पति व चांद को छोटे दूरबीनों को एकत्रित कर देखने की योजना थी, तारामण्डल द्वारा प्रयोग में लाई गई थी।
- अंतर्राष्ट्रीय खगोल वर्ष की श्रृंखला में 16 नवम्बर से 1 दिसम्बर 2009 तक तारामण्डल ने इटली दूतावास तथा इटालियन सांस्कृतिक केन्द्र के सहयोग से इंडो–इटालियन खगोल पखवाड़े **''फ्रॉम गेलीलियो टू माडर्न फ्रंटीयर्स''** का आयोजन किया।
- 27 से 29 नवम्बर, 2009 तक संस्था में आयोजित बाल मेले के दौरान भी तारामण्डल द्वारा विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।
- 15 दिसम्बर 2009 को प्रकाश प्रदूषण पर आधारित कार्यक्रम ''यह तारा वो तारा – ए हैंडफुल स्टार्स'' दिखाया गया।
- 20 दिसम्बर 2009 को प्रिंसटन यूनिवर्सिटी के नोबल लॉरीइट, प्रो0 जोसॅफ हूटन टेयलर तारामण्डल पधारे और उन्होंने विद्यार्थियों एवं एमेटअॅर एसट्रॉनमर्स के साथ बातचीत की।
- 21 दिसम्बर, 2009 को तारामण्डल, गैर सरकारी संस्था स्पेस एवं ए0 ए0 ए0 नामक संगठन ने मिलकर स्कूली बच्चों व दर्शकों के लिए जंतर मंतर में उपकरणों के इस्तेमाल के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने के लिए एक कार्यक्रम का आयोजन किया।

इसके अतिरिक्त, इस अवधि के दौरान तारामण्डल द्वारा बच्चों, स्कूली एवं कॉलेज के विद्यार्थियों एवं जनसाधारण के लिए कई स्काई वॉच कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

परियोजनाएं

एनएमएमएल अभिलेखागार के "टर्न की परियोजना और आई0 डी0 एम0 के कार्यान्वयन" का ठेका मेसर्स एच0 सी0 एल0 इनफो सिस्टम लिमिटेड को दिया गया । 21 अक्टूबर 2009 को सॉल्यूशन प्रोवाइडर के साथ टर्नकी परियोजना की संविदा संस्था प्रतिनिधि द्वारा हस्ताक्षरित किए गए। डिजिटाइज़ेशन के लिए पांडुलिपि, फोटोग्राफों एवं प्रतिलेखों के आकड़ो का सूचीबद्ध चार्ट तैयार किए जाने का फैसला किया गया है। स्कैनिंग का कार्य शीघ्र शुरू हो जाएगा।

आधुनिकीकरण परियोजना के तहत् नियुक्त वास्तुकारों (आर्किटेक्ट्स) की टीम, योजना को अंतिम रूप देने के लिए केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग के साथ सहयोग कर कार्य कर रही है। इस परियोजना में मुख्यतः जगह बढ़ाने, नमीरहित बनाने तथा अग्निरोधक जैसे कार्य शामिल हैं। समीक्षाधीन अवधि के दौरान बैरेक्स में बाल केन्द्र की स्थापना तथा शौचालय को नवीकृत करने की योजना की मंजूरी दी गई। अनैक्सी भवन के बेसमेंट मे बन रहा डिजिटाइज़ेशन कक्ष का कार्य भी लगभग पूरा किया जा चुका है। मार्च 2010 तक इस सम्पदा का मास्टर प्लान तैयार तैयार कर लिया जाएगा।

संस्था के कार्यक्रमो के प्रलेखीकरण द्वारा संसाधन जुटाना–विभिन्न संगोष्ठियों, कार्यक्रमों आदि के 300 घंटे का वीडियो डाक्यूमेंटेशन किया गया। 2009 में मल्टीमीडिया पुस्तकालय द्वारा मौखिक इतिहास रिकार्डिंग को वीडियो पर रिकॉर्ड करना प्रारम्भ किया गया। इसके तहत् मौखिक इतिहास के 100 घंटे रिकॉर्ड किए गए।

इस अवधि के दौरान लगभग दो दशकों से एनएमएमएल में पड़े ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण 3500 फिल्म रील्स को परिरक्षित व डिज़िटाइज करने का एक महत्वपूर्ण कार्य पूरा कर लिया गया है। लगभग 300 दुर्लभ वीडियो रिसोर्सिस की भी पहचान की गई है। एनएमएमएल में श्रृव्य–दृश्य प्रदर्शन के लिए एक लोकप्रिय और परस्पर सम्पर्क मंच के लिए एनएमएमएल में मल्टीमीडिया पुस्तकालय एक अन्य महत्वपूर्ण घटक है।

- एनएमएमएल में 20 अगस्त से 5 सितम्बर, 2009 तक "साम्प्रदायिक सद्भावना पखवाड़े" का आयोजन किया गया।
- इस मल्टी–मीडिया पुस्तकालय के नेहरू बाइस्कोप्स ने सभागार में **धर्म** फिल्म का प्रदर्शन किया।
- **हिन्दी पखवाड़े** के उद्घाटन के अवसर पर मल्टी–मीडिया लाईब्रेरी द्वारा संजय जोशी निर्मित लघु फिल्म ''कहानीकार अमरकांत'' का प्रदर्शन किया गया।
- एनएमएमएल ने **साम्प्रदायिक सद्भावना पखवाड़े** के समापन समारोह पर गायकी की ऐतिहासिक फनकारा इकबाल बानो पर एक विचार संगोष्ठी का आयोजन किया जिसमें विद्वानों द्वारा लेख पढ़े गए और कुछ नामी गायकों ने गायन किया। कलाकार ट्रस्ट के बच्चों सहित 250 बच्चों ने इसमें भाग लिया।
- एनएमएमएल ने वयोवृद्ध कलाकार, श्री देवी प्रसाद के साक्षात्कार की ऑडियो–वीडियो रिकार्डिंग उनके निवास पर की।
- नेहरू इंप्रिन्ट कार्यक्रम के तहत् 1 नवम्बर 2009 को मल्टी–मीडिया लाइब्रेरी ने नेहरू इंप्रिंट कार्यक्रम का उद्घाटन श्याम बेनेगल (फिल्म प्रभाग) की नेहरू पर बनी फिल्म के प्रदर्शन से की।
- नेहरू बाइस्कोप्स फिल्म क्लब द्वारा 3 नवम्बर 2009 को **पॉपुलर बॉम्बे सिनेमा ऑफ दि नेहरू** ईरा नामक फिल्म समारोह का आयोजन किया गया।

इसमें नेहरू युग की प्रधान फिल्मों को दिखाया गया।

- एनएमएमएल ने प्रसिद्ध उर्दू कवि फैज़ अहमद फैज़ की 25वीं पुण्यतिथि पर सहमत के सहयोग से प्रेक्षागृह में फैज़ अहमद फैज़ द्वारा लिखित प्रसिद्ध नज़्मों एवं गज़लों को प्रतिष्ठित गायिका शुभा मुद्गल ने गाया।

बाल संसाधन केन्द्र ने इन तीन तिमाहियों में बहुत से नए कार्यक्रम तैयार और शामिल किए। इस अवधि के दौरान केन्द्र द्वारा निम्न कार्यक्रम आयोजित किए गए :–

- एनएमएमएल ने 9 अप्रैल 2009 को प्रकृति और कृषि के संबंधो को रेखांकित करते हुए एक कार्यक्रम का आयोजन किया।
- एनएमएमएल ने 22 अप्रैल, 2009 को डिवेलपमेंट्स ऑलटरनेटिव्स के सहयोग से पृथ्वी दिवस मनाया। इसमें विभिन्न स्कूलों के लगभग 350 बच्चों ने भाग लिया।
- एनएमएमएल के बाल केन्द्र द्वारा बच्चों के लिए 25 अप्रैल, 2009 को **''हिस्ट्री, हेरिटेज ऐण्ड मी''** विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई।
- 21 मई, 2009 को आतंकवादी विरोधी दिवस के अवसर पर **अमन के हम रखवाले, सब एक हैं** नामक कार्यशाला का आयोजन किया गया।
- नाट्यमंच से जुड़े वरिष्ठ कलाकार अमित सिन्हा ने तीन मूर्ति भवन के असपास के बच्चों के लिए 5 दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया।
- आउटरीच कार्यक्रम के तहत 'अमन बिरादरी' के 58 बच्चों ने **गर्मी शेक रेसिडेन्टियल कैम्प** में भाग लिया जो 18 से 22 मई 2009 तक सेंट मारिया स्कूल, वसंत कुंज में लगाया गया था।
- **रंगतरंग – नेहरू समर स्कूल** का आयोजन मल्टीमीडिया लाइब्रेरी के सहयोग से बाल केन्द्र ने 01 से 30 जून 2009 तक किया।
- 28 जून 2009 को इसी कार्यक्रम का भव्य समापन समारोह आयोजित किया गया जिसमें रंग तरंग समर स्कूल के भाग लेने वाले बच्चों ने जो सीखा उसकी प्रस्तुतियां की।
- 3 जुलाई 2009 को बच्चों द्वारा टेलिसीरियल भारत एक खोज की तर्ज पर निर्मित भारत इस रोज़ नामक धारावाहिक का प्रदर्शन श्याम बेनेगल एवं अन्य की उपस्थिति में किया गया।
- एनएमएमएल ने ए0एन0टी0 के सहयोग से चिराग डिस्ट्रिक्ट के 4 गांवो मे बोंगाई गांव के समीप में रंग तरंग–नेहरू समर स्कूल का आयोजन किया। इसमें लगभग 500 बच्चों ने भाग लिया।
- रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान बाल केन्द्र द्वारा पूरे महीने मेकिंग फ्रेंडशिप विद चाचा नेहरू विषय पर बच्चों के लिए विशेष संग्रहालय दर्शन के दौरों का आयोजन किया गया। यह प्रत्येक मंगल और शुक्रवार को आयोजित किया गया।
- बाल केन्द्र ने **5वें राष्ट्रीय बंगाल टाइगर कंसलटेशन** से सहयोग कर मौसम परिवर्तन संबंधित विचार विमर्श का बच्चों को हिस्सा बनाया। 28 जुलाई, 2009 को आयोजित इस कार्यक्रम मे 19 विद्यालयों के लगभग 2000 से अधिक बच्चों ने भाग लिया। इनमे से आधे '350' को बनाने मे व्यस्त रहे और उन्होंने परिसर के उद्यान में वाघ की तस्वीर बनाई। शेष आधे फेस पेंटिंग, अंब्रेला पेंटिंग, पोस्टर पेंटिंग दालों से बाघों की आकृति बनाने आदि मे जुड़े रहे। इन बच्चों द्वारा प्रधानमंत्री को बाघों की सुरक्षा के लिए पत्र भी लिखे गए।
- 9 से 16 अगस्त 2009 तक बाल केन्द्र ने पाजहरा नामक गैर सरकारी संस्था के सहयोग से संस्था में असम के बच्चों के लिए 8 दिवसीय आवासीय कैम्प लगाया जिसमें 21 बच्चें और 5 अध्यापक भी थे।
- 14 अगस्त, 2009 को युवाओं के लिए स्वतंत्रता और परस्पर निर्भरता विषय पर फकरा सिद्दिकी द्वारा संचालित **ट्रिस्ट विद डिस्टनी** पर एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया।
- बाल केन्द्र ने कट–कथा के सहयोग से 15 बच्चों के लिए कठपुतली बनाने की कार्यशाला का आयोजन किया। फिलहाल इसमें 15 बच्चों को कठपुतली बनाने एवं थिएटर, कथावाचान आदि में प्रयोग करने का प्रशिक्षण दिया जा रहा है।
- **जश्न–ने–अमन–शांति पर्व** :– बाल केन्द्र द्वारा स्टेप नामक गैर सरकारी संस्था के सहयोग से 19 सितम्बर से 02 अक्टूबर 2009 तक 14 दिवसीय शांति पर्व मनाया गया।
- 27 सितम्बर, 2009 को संस्था में चेन्नई की **"वाई थिएटर ग्रुप"** ने जीवन की वास्तविकताओं – भूख, हिंसा, आस्तित्व, शांति, आदि पर आधारित नाटक प्रस्तुत किया।
- ''प्रवाह'' नामक संस्था के सहयोग से जयमाला अय्यर ने बच्चों के लिए थिएटर पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया जिसमे 11 बच्चों ने भाग लिया। 24 अक्टूबर को इन्होंने मौसम परिवर्तन विषय पर संग्रहालय के सामने उद्यान में स्ट्रीट प्ले प्रस्तुत किया।
- 1 नवम्बर 2009 को चाचा नेहरू की 120वें जन्मदिवस के अवसर पर बच्चों के लिए कल आज कल नामक कार्यक्रम का आयोजन बच्चों एवं युवाओं के लिए किया गया जो पूरे महीने चला इसमे शांति, अमन, अहिंसा, प्रेम जैसे मूल्यों को प्रचारित किया गया। यह सभी सामुदयिक, प्रकृति के प्रति हिंसा एवं पृथ्वी की वर्तमान स्थिति की प्रतिक्रिया में आयोजित किए गए और इसने बच्चों और युवाओं में जीवन के प्रति एक दृष्टिकोण विकसित किया। बच्चों के लिए बाल केन्द्र

द्वारा आयोजित कार्यक्रम थे :–

1. **चल चला चल** – इसमें पूरे महीने संस्था में आने वाले बच्चों के लिए कला, संगीत, थिएटर, दौरे व प्रदर्शन कलाओं का आयोजन किया गया।
2. **लघु मेला** – 13 नवम्बर को आदि और ब्लूबेल्स स्कूल मे आयोजित किया गया।
3. **बाल दिवस** – आई0 जी0 एन0 सी0 ए0 के परिसर में दस्तकार नेचर बाजार में आयोजित किया गया जिसमें लगभग 2000 बच्चों ने भाग लिया।
4. **भारती का भारत** – सुब्रमणियम भारती की कविता पर आधारित लघु नृत्य नाटिका 18 नवम्बर 2009 को नाट्य सुधा द्वारा प्रस्तुत की गई।
5. **दोस्ती कैम्प** – संस्था मे दामपरा विकास समिति, झारखण्ड के 40 बच्चों व 5 अध्यापकों के लिए आवासीय कैम्प का आयोजन किया गया। इनके लिए बाल केन्द्र द्वारा **27 नवम्बर को राष्ट्रपति भवन के दौरे का आयोजन किया गया। इन बच्चों ने महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा पाटिल से मुलाकात की** और वहाँ पर भोजन किया।

बच्चों ने राष्ट्रपति भवन देखा

6. **कारवां** – शहर के अन्य बच्चों तक पहुँचने के लिए बाल केन्द्र ने कई स्कूलों/कॉलेजो में आउटरीच एक्टीवीटिज़ के तहत् फिल्म, नाट्य मंचन, सृजनात्मक लेखन, प्रदशर्नियां आदि जैसे गतिविधियों का आयोजन किया।
7. **धनक–दिन** – 27 से 29 नवम्बर 2009 को संस्था ने बच्चों व युवाओं के लिए नेहरू बाल मेले व पुस्तक मेले का आयोजन किया। जहां बच्चों ने टी–शर्ट पेंटिंग, पॉटरी, पोस्टर बनाना, कथा वाचन, सृजनात्मक लेखन, चरखा कताई, पद्यात्राएं, खजाना खोजने, कार्यशालाओं आदि में भाग लिया।

- 5 दिसम्बर 2009 को दिल्ली प्रेस ट्रस्ट व चम्पक नामक बच्चों की पत्रिका के सहयोग से बच्चों के लिए कथावाचन, ड्राइंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।
- 9 व 10 दिसम्बर 2009 को नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा द्वारा शिक्षण थिएटर के तहत्, समाजसेविका तथा महिलाओं की शिक्षा पर कार्य करने वाली **पंडिता रामाबाई** पर एक नाट्य प्रस्तुति की गई।
- 15 से 20 दिसम्बर 2009 को संस्था मे आवासीय **दोस्ती कैम्प** का आयोजन किया गया जिसमें पुष्प निकेतन स्कूल, धामपुर, उत्तर–प्रदेश के 27 बच्चों, 3 अध्यापिकाओं ने भाग लिया।
- 17 दिसम्बर 2009 को बाल केन्द्र द्वारा कमला नेहरू कॉलेज मे आयोजित एक दिवसीय एन0एस0एस0 एन0जी0ओ0 मेले में भाग लिया जिसमे उन्होंने अपने अनुभव बताए और भविष्य में बाल केन्द्र से सहयोग पर बातचीत हुई।
- बज़्म–ख्वाबीन, रिवर बैंक कॉलोनी, लखनऊ में बाल केन्द्र द्वारा आत्म–विश्वास पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया।
- दिसम्बर, 2009 में आयोजित इस सत्र में इस बात पर बल दिया गया कि समूह/समाज मे स्वयं को कैसे अभिव्यक्त करें। आंतरिक विकास/अंतर्मन की धारा से जुड़े थिएटर जागरूकता कार्यक्रम भी आयोजित किए गए।

4.1.5

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय (आईजीआरएमएस) (नैशनल म्यूज़ियम ऑफ मैनकाइण्ड) स्थान और काल में मानव की गाथा के प्रस्तुतिकरण हेतु समर्पित संस्कृति विभाग का एक स्वायत्त संगठन है। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय मानव की एकता के लिये संस्कृतियों की समकालिक प्रामाणिकता तथा विकल्पों की बहुलता को प्रदर्शित करने के लिये भारत में एक नवीन संग्रहालय आंदोलन के सूत्रपात में संलग्न है। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय का मुख्यालय भोपाल में स्थित है जबकि एक क्षेत्रीय केंद्र मैसूर (कर्नाटक) में कार्यरत है।

संग्रहालयीन गतिविधियाँ

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय का विकास तीन रचनात्मक उपयोजनाओं (1) अधोसंरचनात्मक विकास (2) शैक्षणिक और आउटरीच गतिविधियाँ, तथा (3) ऑपरेशन साल्वेज सहित एक सतत् जारी बोधगम्य योजना के रूप में किया जा रहा है। दूसरे शब्दों में इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय अपनी अधोसंरचना का विकास भारतीय सांस्कृतिक जीवन की विभिन्नता और एकता की रक्षा, संरक्षण तथा नष्ट होने से बचाने हेतु शैक्षणिक व आउटरीच गतिविधियों के माध्यम से करता है।

सात मील लम्बी बड़ी झील के किनारे भोपाल में 200 एकड़ के असमतल भूमि पर फैले इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय का परिदृश्य असाधारण है। संग्रहालय प्रदर्शित प्रादर्शों के संवर्धन के लिए विशिष्ट समुदायों से संकलन करने के लिए प्रयास करता है। दर्शकों को जानकारी प्रदान करने के लिए दर्शक सूचना केंद्र की स्थापना की गई है। असम में माजुली के एक सत्र में संस्कृति व्याख्या केंद्र प्रारंभ किया गया है। मुक्ताकाश प्रदर्शनियों में ब्रेल में लेबल की सुविधा उपलब्ध कराई गई है। लघु प्रकाशनों के माध्यम से सूचनाएं उपलब्ध कराई गई हैं। सूचनाओं को संग्रहालय की नई वेबसाईट www.igrms.com पर भी उपलब्ध कराया गया है।

शारीरिक रूप से बाधित व्यक्तियों की आवश्यकताएं पूर्ण करने के लिए उनसे विचार विमर्श कर नये रेम्प्स का निर्माण किया गया है। रास्तों में प्रकाश की व्यवस्था में सुधार/उन्नयन किया गया है। परिसर के अंदर तांगा तथा शहर के महत्वपूर्ण क्षेत्रों से संग्रहालय को जोडने के लिए एक मोटर गाडी की व्यवस्था की गई है। प्रादर्श प्रदर्शित करने के लिए उचित स्थलों पर कियोस्क लगाए गए हैं। प्रत्येक माह लगभग दो नयी चल प्रदर्शनियां भोपाल में तथा मैसूर स्थित दक्षिण क्षेत्रीय केंद्र समेत अन्य शहरों में भेजी गई है।

संग्रहालय के कर्मचारियों को आई.सी.सी.आर.ओ.एम. जैसे विशेषज्ञ संस्थानों द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भेजा गया। पूरे संग्रहालय परिसर को वाई–फाई एनेबल किया गया है। संग्रहालय विश्व भारती और इन्का जैसी विभिन्न संस्थाओं के साथ सहयोगात्मक कार्यक्रम आयोजित कर रहा है। बर्लिन के राष्ट्रीय संग्रहालय में इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय पर एक विशेष प्रदर्शनी संयोजित की गई तथा बर्लिन के फ्री विश्वविद्यालय द्वारा संग्रहालय की संकलन नीति, प्रदर्शन की अवधारणाओं तथा लोक, जनजातीय एवं सीमान्त

समुदायों की सहभागिता पर एक चार दिवसीय सिम्पोज़ियम का आयोजन किया गया।

प्रदर्शनियॉ

क्यूरेटोरियल विंग के सदस्य जनजातीय आवास, हिमालय ग्राम, तटीय गॉव, मरू ग्राम, विश्वबोध एवं कथापथ, शैलकला धरोहर, एथ्नो–बॉटनिकल ट्रेल तथा पुनीत वन नामक विभिन्न मुक्ताकाश प्रदर्शनियों के उन्नयन एवं संधारण में संलग्न रहे तथा अंतरंग संग्रहालय भवन वीथि संकुल में नवीन प्रदर्शन स्थल तथा स्थाई दीर्धाओं के विकास में व्यस्त रहे।

इस अवधि के दौरान संग्रहालय ने निम्नलिखित सामयिक प्रदर्शनियॉ विकसित कर लगायीः

क. मुम्बई के ताज होटल पर आतंकवादी हमले की घटना पर आधारित 'मन जाथय डराय' नामक परधान कलाकार की चित्र प्रदर्शनी । (अप्रैल, 2009)

ख. 'नर्मदाः मूर्त, अमूर्त सौंदर्य एवं भूविज्ञान' अंतर्राष्ट्रीय संग्रहालय दिवस के अवसर पर छाया प्रदर्शनी। (मई, 2009)

ग. प्रसिद्ध परधान कलाकार स्व. श्री जनगढ़ सिंह श्याम तथा उनकी शैली से प्रभावित अन्य कलाकारों के चित्रों की प्रदर्शनी। (जुलाई,2009)

घ. भारत के छायाचित्रों विशेषकर किन्नौर, राजस्थान और पश्चिम बंगाल के सुंदरवन पर आधारित 'इनडेलीबत इमेजेस' नामक छायाचित्र प्रदर्शनी। (अगस्त, 2009)

ड. प्रख्यात कलाकार स्वर्गीय श्री जैमिनी रॉय के कृतित्व को दर्शाती 'रिदम ऑफ लाइन्स एंड कलर्स' नामक विशेष प्रदर्शनी। (सितम्बर, 2009)

च. सतपुड़ा के वनवासियों के स्वाधीनता संघर्ष की अनकही गाथा को दर्शाती 'बेनाम शहीदों के निशॉ' नामक छाया प्रदर्शनी। (सितम्बर, 2009)

छ. जनजातीय स्त्रियों द्वारा इंगारामास में आयोजित एक कार्यशाला में सृजित कलाकृतियों पर आधारित 'धिंगना' नामक विशेष चल प्रदर्शनी ई. हनुमंथ राव आर्ट गैलरी, भारतीय विद्या भवन, बंगलौर में प्रदर्शित की गई। (अक्टूबर, 2009)

ज. विरासत झरोखाः भारत के विशेष संदर्भ में मानव विकास के विषय पर सूचना पट्टों तथा छायाचित्रों को समाहित किए 'मानव विकास' नामक एक धरोहर झरोखा दिल्ली पब्लिक स्कूल, जबलपुर में संयोजित की गई। (अक्टूबर, 2009)

झ. छठ पूजा पर आधारित 'अरघ' नामक छाया प्रदर्शनी। (नवम्बर, 2009)

ञ. 'हिमालय से तस्वीरें' नामक छाया प्रदर्शनी।(नवम्बर, 2009)

ट. प्रख्यात थियेटर व्यक्तित्व श्री हबीब तनवीर के कृतित्व को दर्शाती 'यादें' नामक छाया प्रदर्शनी। (नवम्बर, 2009)

ठ. परधान समुदाय से सम्बंधित कलाकारों के कृतित्व पर आधारित 'ए चेंजिंग फेस ऑफ परधान पेंटिंग्स' नामक विशेष चित्र प्रदर्शनी (नवम्बर, 2009)

ड. बच्चों की पत्रिका बाल भास्कर के सहयोग से आयोजित एक राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता में चयनित पुरस्कृत चित्रों पर आधारित 'संस्कृति' नामक प्रदर्शनी बालरंग के अवसर पर। (दिसम्बर, 2009)

समीक्षाधीन अवधि में संग्रहालय ने अपने संकलन में 353 मानवशास्त्रीय प्रादर्श, 4230 स्लाइड/फोटो प्रिंट, 500 से भी अधिक घंटो की आडियो–वीडियो रिकॉर्डिंग, भारतीय/विदेशी शोध पत्रिकाओं के 529 अंक, 26 ग्रंथालयीन पुस्तकें जोड़ी।

कर्मचारियों में हिंदी भाषा के प्रयोग को कार्यकरण के माध्यम के रूप में लोकप्रिय बनाने के लिए राजभाषा इकाई ने इस अवधि के दौरान दो हिंदी कार्यशालाओं, राजभाषा कार्यान्वयन समीति की एक अर्धवार्षिक बैठक, एक विशेष कार्यक्रम 'हिन्दी मास', हिंदी की पुस्तकों की एक विशेष प्रदर्शनी तथा संस्कृति और पर्यटन के विकास के देशज दृष्टिकोण से संबंधित विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया।

इस अवधि के दौरान संग्रहालय द्वारा निम्नलिखित शैक्षणिक एवं आउटरीच गतिविधियॉ संचालित की गईः

संग्रहालय ने देश के विभिन्न दूरस्थ इलाकों से कलाकारों को आमंत्रित कर पंजीकृत प्रतिभागियों के लिए प्रदर्शन सह प्रशिक्षण गतिविधियों का आयोजन किया।

क. 'राजस्थान की पारम्परिक मीनाकारी' पर दस दिवसीय कार्यक्रम 2 से 11 मई, 2009 तक आयोजित किया गया।

ख. 'आप्टीकल/डिज़िटल फोटोग्राफी' पर दस दिवसीय कार्यक्रम 2 से 11 मई, 2009 तक आयोजित किया गया।

ग. 'पोखरण, राजस्थान की पॉटरी' पर दस दिवसीय कार्यक्रम 8 से 17 मई, 2009 तक आयोजित किया गया।

घ. 'पारम्परिक लघु चित्रण और मार्बल लघु चित्रण' पर दस दिवसीय कार्यक्रम 12 से 26 मई, 2009 तक आयोजित किया गया।

ड. 'मोलेला, राजस्थान के पारम्परिक मृदभांड' पर दस दिवसीय कार्यक्रम 27 मई से 5 जून, 2009 तक आयोजित किया गया।

च. 'सिंधी कशीदाकारी परम्परा–हरमुचो' पर चौदह

दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन 21 सितम्बर से 4 अक्टूबर तक किया गया।

छ. "फाड़ चित्रकला और राजस्थान की कंयोडा और बाटिक कला" पर 10 दिवसीय कार्यशाला 10 से 28 दिसम्बर, 2009 तक आयोजित की गई

आईजीआरएमएस अखंडता और सांस्कृतिक जीवन संरक्षित और सुरक्षित रखने के लिए अपनी भौतिक आधारभूत संरचना का विकास करता है।

कार्यशालाएँ:

क. धातु कला और परम्पराऐं तथा धातुशिल्प प्रशिक्षण शिविर पर केंद्रित 'शिल्पायन–2' नामक एक कलाकार कार्यशाला का आयोजन आईजीआरएमएस परिसर में किया गया। इस कार्यशाला में मध्यप्रदेश, छततीसगढ़, केरल तथा तमिलनाडु से कलाकारों ने भाग लिया तथा पारम्परिक कलारूपों पर अपने विचारों का आदान प्रदान किया। (अप्रैल, 2009)

ख. मध्यप्रदेश के गोंड समुदाय की महिला कलाकारों की एक कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें 10 महिला कलाकारों ने नर्मदा नदी घाटी संस्कृति पर चित्र बनाये।(मई, 2009)

ग. नारायणपुर, बस्तर, छत्तीसगढ़ की घोटुल मुरिया जनजाति में मृत्यु अनुष्ठान से सम्बंधित गीतों के लिखित, दृश्य एवं श्रव्य प्रलेखन हेतु एक कार्यशाला का आयोजन संग्रहालय परिसर में किया गया। (मई, 2009)

घ. पूर्वोत्तर राज्यों से वस्त्र परम्पराए तथा तकनीक पर 'शिल्पायन–3' नामक एक दस दिवसीय कार्यशाला का आयोजन भोपाल में संग्रहालय परिसर में किया गया जिसमें भारत के पूर्वोत्तर राज्यों मणीपुर, नागालैंड, मेघालय, त्रिपुरा, असम और अरूणाचल प्रदेश से 52 कलाकारों ने प्रतिभागिता की। (अगस्त, 2009)

ड. छठपूजा में उपयोग की जाने वाली पारम्परिक वस्तुओं पर एक सप्ताह की कार्यशाला का आयोजन भोजपुरी एकता मंच, भोपाल के सहयोग से किया गया। इस कार्यशाला में बिहार के 14 कलाकारों ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। (अक्टूबर–नवम्बर, 2009)

च. पारधी समुदाय की एक कार्यशाला का भोपाल में आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में लगभग 75 व्यक्तियों ने हिस्सा लिया तथा वर्षो पुरानी आखेट–संकलक व्यवहारों से संबंधित देशज ज्ञान परम्परा का प्रदर्शन किया तथा अपने ऊपर लगे लांछन से संबंधित समस्याओं पर परिचर्चा की। (नवम्बर, 2009)

छ. ऐजेंडा हिमालय से कार्यक्रम के दौरान एक नौ दिवसीय कार्यशाला का आयोजन भी किया गया। इस कार्यशाला में जम्मू एवं कश्मीर, हिमाचल प्रदेश तथा उत्तराखंड के कलाकारों ने अपनी पारंपरिक वस्तुऐं जिनमें पश्मीना शाल, चम्बा रूमाल, काष्ठ मूर्तियां तथा चम्बा के जूते आदि शामिल थे, बनाये एवं प्रदर्शित किए। (नवम्बर, 2009)

संगोष्ठियाँ एवं परिसंवाद :

क. अंतर्राष्ट्रीय संग्रहालय दिवस के अवसर पर 'संग्रहालय एवं पर्यटन' नामक एक परिसंवाद का आयोजन किया गया।(मई, 2009)

ख. 'एजेंडा हिमालय से' कार्यक्रम के अवसर पर हिमालय क्षेत्र से कलाकारों की सहभागिता सहित एक संवाद का आयोजन इस क्षेत्र की संस्कृति के संरक्षण एवं विकास पर चर्चा करने के लिये किया गया। (नवम्बर, 2009)

इस अवधि के दौरान संग्रहालय में निम्नलिखित संग्रहालय लोकरुचि व्याख्यानों का आयोजन किया गयाः

क. श्री देबतोष सेनगुप्ता, निदेशक, फोटो प्रभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार ने 'डिजीटल मेनेजमेंट ऑफ इमेजेस एंड हाऊ टू एप्रिशियेट ए फोटोग्राफ?' विषय पर एक व्याख्यान दिया।(अप्रैल, 2009)

ख. श्रीमति सविता राजे, अध्यक्ष, लिविंग हेरीटेज एलायंस, भोपाल ने विश्व धरोहर दिवस के अवसर पर 'भोपाल की जीवन्त स्थापत्य धरोहर' पर एक व्याख्यान दिया। (अप्रैल, 2009)

ग. प्रख्यात लेखक, यात्री और कलाकार श्री अमृत लाल बेगड़ ने अंतर्राष्ट्रीय संग्रहालय दिवस के अवसर पर 'नर्मदा का सौंदर्य एवं सांस्कृतिक पर्यटन/इको पर्यटन की संभावनाऐं' पर एक व्याख्यान दिया। (मई, 2009)

घ. सुश्री बारबरा विंटर्स, असिस्टेंट सेक्रेटरी जनरल, कॉमनवेल्थ एसोशियेसन ऑफ म्यूज़ियम्स ने 'ग्लोबल रोल ऑफ म्यूज़ियम्स इन द डेवलपमेंट ऑफ सिविल सोसायटी' विषय पर एक व्याख्यान दिया। (मई, 2009)

ड. प्रो. जी. श्रीनिवासन, भूगर्भ विज्ञान विभाग, टोरंटो विश्वविद्यालय, कनाडा ने 'क्लूज टू फॉर्मेशन एंड इवाल्यूशन ऑफ सोलर सिस्टम' पर एक व्याख्यान दिया। (अगस्त, 2009)

च. वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं भारतीय भूगर्भ सर्वेक्षण के पूर्व उपमहानिदेशक श्री राम कुमार चतुर्वेदी ने 'द अर्थ सिस्टम' पर एक व्याख्यान दिया। इसके साथ ही एलायंस फ्रांसिस डी भोपाल के सहयोग से यान अरथास बारतंग द्वारा निर्देशित 'होम' नामक फिल्म

का प्रदर्शन भी किया गया। (अक्टूबर, 2009)

छ. ब्रिटिश कोलम्बिया विश्वविद्यालय में कला इतिहास, दृश्यकला और सिद्धांत विभाग में प्रोफेसर श्रीमती कैथरीन हैकर ने 'रीविज़िटिंग बेंगाली कांथाः एन एक्ज़ीबिशन ऑफ वीमेन्स एम्ब्रॉयडर्ड क्विल्ट्स ऐट दी फिलोडेल्फिया म्यूज़ियम ऑफ आर्ट' पर एक व्याख्यान दिया। (दिसम्बर, 2009)

ज. कनाडा के म्यूज़ियम ऑफ सिविलायजेशन के पूर्व निदेशक तथा वर्तमान में क्यूरेटर एमेरिटस प्रोफेसर स्टीफन इंग्लिस ने 'दर्शन एंड डिस्ट्रीब्यूशनः पापुलर आर्ट ऑफ साउथ इंडिया' पर एक व्याख्यान दिया। (दिसम्बर, 2009)

प्रख्यात मानव विज्ञानी एवं राष्ट्रीय मानव संग्रहालय समिति के सदस्य प्रो. अजीत कुमार डांडा ने 9 जून, 2009 को 'संस्कृति के अध्ययन के मानवशास्त्रीय दृष्टिकोण' पर पांचवां वार्षिक आईजीआरएमएस व्याख्यान दिया।

अन्य कार्यक्रम :

क. जैसलमेर, राजस्थान के प्रसिद्ध मांगणियार लोक गायक श्री मम्मे खान तथा उनके समूह द्वारा प्रस्तुतिकारी कलाओं के प्रदर्शन हेतु एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन 17 अप्रैल, 2009 को मरूग्राम प्रदर्शनी के मुक्ताकाश मंच पर किया गया।

मंगनियार लोक गीत

ख. 18 मई, 2009 को सुश्री कलापिनी कोमकली द्वारा शास्त्रीय शैली में तथा श्री कालूराम बामनिया द्वारा लोक शैली में कबीर गायन के कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

ग. 24 मई, 2009 को मध्य प्रदेश पर्यटन दिवस के अवसर पर 24 मई, 2009 को अमरकंटक, मध्यप्रदेश के गोंड समुदाय द्वारा सैला एवं अन्य पारम्परिक नृत्यों के एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

घ. असम से श्रीमती सबिता सैकिया द्वारा सत्रीय नृत्य एवं भोपाल से श्रीमती बिंदु जुनेजा द्वारा ओडिसी नृत्य की प्रस्तुति के एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन 7 जून, 2009 को किया गया।

ड. 'लोक प्रसंग–1' नामक लोक/जनजातीय प्रस्तुतिकारी कला स्वरूपों के एक बहुरंगी कार्यक्रम का आयोजन 11 से 13 जुलाई, 2009 को किया गया जिसमें जम्मू कश्मीर, असम और बुंदेलखंड से कलाकारों द्वारा अपनी समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर की एक झलक प्रस्तुत की गई।

च. जनजातीय, लोक एवं शास्त्रीय उद्भव के फ्यूज़न संगीत पर आधारित 'फ्यूज़न–1' नामक एक त्रि दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन 21 से 23 जुलाई, 2009 तक किया गया। इस कार्यक्रम में मणिपुर से रिद्म ऑफ मणीपुर, असम से के.सी.एस.जी.एस. तथा नागालैंड से एबायोजेनेसिस नामक समूहों ने अपनी प्रस्तुतियॉं दी।

छ. 'शांति निकेतन से' नामक तीन दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन 1 से 4 अगस्त, 2009 तक संग्रहालय के अंतरंग सभागार में किया गया जिसमें बोलपुर के कलाकारों द्वारा बाउल संगीत, डॉ. सब्यसाची सरखेल द्वारा सितार वादन, श्री मनोजीत मल्लिक द्वारा शास्त्रीय गायन एवं रवीन्द्र संगीत की प्रस्तुतियॉं दी गई। इस कार्यक्रम में भोपाल से एक प्रस्तुति के रूप में सुश्री स्मिता नागदेव ने सितार वादन प्रस्तुत किया।

ज. गुजरात के कच्छ क्षेत्र के दुर्लभ वाद्य यंत्रों के वादन, लोकगीत तथा नृत्य पर आधारित 'कच्छ से' नामक तीन दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन भोपाल में 11 से 13 अगस्त, 2009 तक किया गया।

झ. 'तमिलनाडु की मंदिर परम्पराऐं' नामक शास्त्रीय नृत्य और गायन के एक कार्यक्रम का आयोजन 21 और 22 अगस्त, 2009 को किया गया जिसमें दक्षिण तमिलनाडु के कलाकारों ने भरतनाट्यम, पराईअट्टम, कावडीअट्टम तथा ओइलाट्टम और प्रख्यात गायिका श्रीमती आर. वेदवल्ली ने कर्नाटक शैली में शास्त्रीय गायन प्रस्तुत किया।

ञ. जनजातीय एवं लोक नृत्यों, नाटक तथा पारम्परिक खाद्य के 'लोक प्रसंग–2' नामक एक चार दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन 1 से 4 सितम्बर, 2009 तक किया गया। इस कार्यक्रम में प्रख्यात गायिका सुश्री कलापिनी कोमकली ने वर्षा से सम्बंधित उपशास्त्रीय एवं शास्त्रीय गायन प्रस्तुत किया। पूर्वोत्तर क्षेत्र के तिवा, करबी, राभा, देवरी, मिशिंग तथा अन्य असमिया समुदायों के कलाकारों द्वारा पारम्परिक लाक एवं जनजातीय नृत्य प्रस्तुत किए गए। इसके अतिरिक्त 'मिरी ज़ियोरी' तथा 'श्यामंत हरण' नामक दो नाटकों की प्रस्तुति भी दी गई।

ट. एक विशेष कार्यक्रम में निमाड़ क्षेत्र की श्रीमती आलोचना मांगरोले और मालवा क्षेत्र की श्रीमती स्वाति उखले ने 9 और 10 सितम्बर, 2009 को संजा

परम्परा से संबंधित लोक गीतों की प्रस्तुतियॉं दी।

ठ. 'मालवा से' नामक एक तीन दिवसीय संगीत कार्यक्रम का आयोजन 11 से 13 सितम्बर, 2009 तक किया गया। इस कार्यक्रम में पदमश्री डॉ. गोकुलोत्सव जी महाराज, प्रख्यात कथक नृत्यांगना सुश्री वी. अनुराधा सिंह, सुश्री शोभा चौधरी तथा श्री दयाराम सारोलिया ने क्रमशः शास्त्रीय गायन, कथक/घुंघरू वादन, उपशास्त्रीय गायन तथा कबीर गायन की प्रस्तुति दी।

ड. सिंध संस्कृति क्षेत्र से सम्बंधित परम्पराओं और संस्कृति पर केंद्रित 'पहचान' नामक एक तीन दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन 21 से 23 सितम्बर, 2009 तक किया गया। इस कार्यक्रम में सुश्री अनिला सुंदर ने नृत्य और गीत, श्री पवन चावला और श्री घनश्याम वासवानी ने सूफी कलाम तथा गज़लें, श्री प्रकाश भगत और श्री मोहनलाल भगत ने सिंधी गायन प्रस्तुत किया।

ढ. शास्त्रीय संगीत परम्परा में गुरू शिष्य परम्परा पर आधारित दो दिवसीय संगीत कार्यक्रम का आयोजन 1 और 2 अक्टूबर, 2009 को किया गया। इस कार्यक्रम में सुश्री श्रुति अधिकारी और श्री चेतन जोशी ने संतूर और बांसुरी वादन की जुगलबंदी तथा श्री रमाकांत और उमाकांत गुंदेचा द्वारा ध्रुपद गायन की प्रस्तुति दी गई।

ण. पूनमः इस महत्वपूर्ण श्रंखला के अंतर्गत 3 अक्टूबर, 2009 को पखावज, तबला और घुंघरू की तीगलबंदी प्रस्तुत की गई। इस कार्यक्रम में प्रसिद्ध कलाकार पं. रविशंकर उपाध्याय ने पखावज, सुश्री वी. अनुराधा सिंह ने घुंघरू और पं. शुभ महाराज ने तबला वादन प्रस्तुत किया।

त. 'परम्परायें, बाडमेर, जैसलमेर, जोधपुर और जयपुर से' नामक तीन दिवसीय कार्यक्रम के अंतर्गत 11 से 13 अक्टूबर, 2009 को लोक कलाओं की प्रस्तुतियॉं दी गई। इस कार्यक्रम में राजस्थान के मांगनियार कलाकारों द्वारा क्षेत्र के बहुमूल्य संस्कृति की झलक पेश की गई। इसी कार्यक्रम में आगे उस्ताद जिया फरिदुद्दीन डागर और बहाउद्दीन डागर द्वारा घ्रुपद गायन और रूद्र वीणा वादन की जुगलबंदी प्रस्तुत की गई।

थ. शास्त्रीय संगीत पर केंद्रित दो दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन 21 और 22 अक्टूबर, 2009 को किया गया जिसके अंतर्गत भोपाल के मशहूर सितार वादक श्री असित कुमार बैनर्जी द्वारा सितार वादन तथा विश्व विख्यात नृत्य गुरू रीतेश बाबू और उनके साथी कलाकारों द्वारा कुचीपुडी, भरतनाट्यम और मोहिनीअट्टम की प्रस्तुति दी गई।

द. छठ पजा से संबंधित परम्पराओं पर केंद्रित एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन 28 सितम्बर से 3 अक्टूबर, 2009 तक किया गया। इस कार्यक्रम में प्रसिद्ध भोजपुरी कलाकारों श्री मनोज तिवारी, श्री सत्येंद्र कुमार, श्रीमती मालिनी अवस्थी और पदमश्री श्रीमती शारदा सिन्हा द्वारा छठ पूजा पर आधारित लोक गीत प्रस्तुत किए गए।

ध. प्रस्तुतिकारी कलाओं के प्रदर्शन के एक कार्यक्रम का आयोजन दिल्ली विश्वविद्यालय के सहयोग से दिल्ली में किया गया जिसमें 6 अक्टूबर, 2009 को प्रसिद्ध शास्त्रीय नृत्यांगना सुश्री वी. अनुराधा सिंह द्वारा कथक नृत्य की प्रस्तुति दी गई।

न. एक नौ दिवसीय कार्यक्रम 'एजेन्डा हिमालय से' का आयोजन 11 से 19 नवम्बर, 2009 तक किया गया। इस कार्यक्रम के अंतर्गत हिमालय क्षेत्र के जम्मू और कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और उत्तराखण्ड से आये लगभग 250 कलाकारों द्वारा क्षेत्र की समृद्ध पारम्परिक संस्कृति की प्रस्तुति दी गई। इस कार्यक्रम में प्रसिद्ध संगीतज्ञ श्री अभय रूस्तम सोपोरी और पं. भजन सोपोरी द्वारा संतूर वादन भी प्रस्तुत किया।

प. प्रख्यात थियेटर व्यक्तित्व स्व. श्री हबीब तनवीर पर केंद्रित 'हबीब उत्सव' नामक एक सप्ताह के कार्यक्रम का आयोजन 21 से 27 नवम्बर, 2009 तक किया गया। इस कार्यक्रम में हबीब तनवीर के नया थियेटर ग्रुप द्वारा छः और असम के बा–दी क्रियेटिव ब्रिज थियेटर द्वारा एक नाटक की प्रस्तुति दी गई।

फ. भोपाल गैस त्रासदी के 25वें सालाना के अवसर पर 2 और 3 दिसम्बर, 2009 को 'स्वरांजली' नामक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के अंतर्गत चुनिंदा कलाकारों जैसे सारंगी वादक उस्ताद फारूख खान, संतूर वादक श्रीमती श्रुति अधिकारी, ध्रुपद गायक सुश्री अमिता सिन्हा महापात्रा, सितार वादक श्री अरूण मोरोने तथा अन्य द्वारा अपनी प्रस्तुतियों के माध्यम से गैस पीढ़ितों को संगीतमय श्रद्धांजलि दी। भोपाल के लगभग 20 चुनिन्दा कलाकारों द्वारा इस कार्यक्रम हेतु विशेष रूप से तैयार की गई रचना भी प्रस्तुत की।

ब. सांस्कृतिक मामलों के निदेशालय, असम शासन के सहयोग से 12 से 14 दिसम्बर, 2009 तक 'असम प्रसंग' नामक एक तीन दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम मे असम के बोडो, देवरी, करबी, मिशिंग, मोरान आदि समुदायों के लगभग 150 कलाकारों ने अपने पारम्परिक द्वारा लोक नृत्यों की प्रस्तुतियॉं दी गई।

भ. पारम्परिक लोक नृत्यों के एक विशेष कार्यक्रम 'थाउगल जागोई' का आयोजन 22 दिसम्बर, 2009

पारम्परिक लोक नृत्य 'थाउगल जागोई'

को किया गया जिसमें मणीपुर, असम एवं नागालैंड के कलाकारो द्वारा अपने क्षेत्रों के लोक नृत्यों की प्रस्तुति दी गई।।

म. श्री सत्य साई अंतर्राष्ट्रीय केन्द्र, नई दिल्ली में 22 से 24 दिसम्बर, 2009 तक 'जर्नी फ्रॉम फोक टू द क्लासिकल' नामक तीन दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का आयोजन भारतीय कलाविश्व, नई दिल्ली के सहयोग से किया गया।

प्रकाशन:

इस अवधि के दौरान संग्रहालय ने ए.के. डांडा, आर. के. मुतातकर, विकास भट्ट द्वारा संपादित स्टडीस् ऑन बायोमेडिकल एंथ्रोपोलॉजी, और डॉ. इ. काशी तथा रमेश मलिक द्वारा संपादित थ्योरी एण्ड प्रैक्टिस ऑफ एथनोग्राफी का प्रकाशन किया। इसी अवधि के दौरान संग्रहालय द्वारा वार्षिक प्रतिवेदन 2007–08 तथा समय समय पर आयोजित किए गए कार्यक्रमों और गतिविधियों पर आधारित फोल्डरों, पोस्टरों, हैंड आउट्स और बुकलेट्स आदि का प्रकाशन किया गया।

इस अवधि के दौरान दक्षिण क्षेत्रीय केंद्र, मैसूर द्वारा निम्नलिखित गतिविधियॉं आयोजित की गईं :

(i) 'करो और सीखो' संग्रहालयीन शैक्षणिक कार्यक्रम :

क. 'पारम्परिक गंजीफा कला' पर अप्रैल, 2009 में 15 दिवसीय संग्रहालय शैक्षणिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

ख. 'पारम्परिक मैसूर चित्रकला' पर मई, 2009 में 15 दिवसीय शैक्षणिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

ग. 'गुजरात के रिलीफ कार्य' पर जून, 2009 में 15 दिवसीय शैक्षणिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

घ. 'तंजोर चित्रकला' पर जुलाई, 2009 में 15 दिवसीय शैक्षणिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

ड. 'पारम्परिक मैसूर चित्रकला' पर सितम्बर, 2009 में 15 दिवसीय शैक्षणिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

च. 'महाराष्ट्र की वारली चित्रकला' पर अक्टूबर, 2009 में 10 दिवसीय शैक्षणिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

छ. 'आंध्र प्रदेश की स्कॅाल चित्रकला' पर अक्टूबर, 2009 में 10 दिवसीय शैक्षणिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

ज. 'केरल की भित्ति चित्रकला' पर नवम्बर, 2009 में 15 दिवसीय शैक्षणिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

झ. 'कर्नाटक की चितारा चित्रकला' पर दिसम्बर, 2009 में 15 दिवसीय शैक्षणिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

(ii) प्रदर्शनियॉं :

क. मध्य प्रदेश से एक परधान कलाकार श्री वेंकट श्याम द्वारा 'मन जाथय डराय' नामक चित्र प्रदर्शनी। (मई, 2009)

ख. छाया प्रभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार के सहयोग से 'जॉयफुल ट्राइब्स' नामक एक विशेष छायाचित्र प्रदर्शनी। (जून, 2009)

ग. श्री राम कुमार चतुर्वेदी द्वारा 'नर्मदा–मूर्त और अमूर्त सौदर्य एवं भूविज्ञान' नामक एक छायाचित्र प्रदर्शनी। (सितम्बर, 2009)

घ. सेवानृत्त कर्नल के.जे. चुघ द्वारा भारत के विविध दूरस्थ क्षेत्रों विशेष रूप से किन्नौर, राजस्थान और पश्चिम बंगाल के सुंदरवन में लिये गए छायाचित्रों पर आधारित 'इंडेलिबल इमेजेस्' नामक एक छायाचित्र प्रदर्शनी। (अक्टूबर, 2009)

ड. श्री भज्जू सिंह श्याम, श्रीमती सतरूपा उर्वेती और श्रीमती शकुंतला द्वारा 'ढिंगना' नामक चित्रकला प्रदर्शनी। (अक्टूबर, 2009)

(iii) अंतर्राष्ट्रीय संग्रहालय दिवस 18 मई, 2009 के अवसर पर स्कूल के विद्याथियों के लिए कर्नाटक की सांस्कृतिक पिरासत विषय पर एक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

अन्य गतिविधियॉं:

क. विश्व धरोहर दिवसः संग्रहालय द्वारा विश्व धरोहर

दिवस के अवसर पर 18 अप्रैल, 2009 को विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए।

ख. फोरम ऑफ म्यूज़ियम्स ऑफ भोपाल के सहयोग से 18 और 19 मई, 2009 को अंतर्राष्ट्रीय संग्रहालय दिवस के अवसर पर विभिन्न कार्यक्रमों और गतिविधियों का आयोजन किया गया।

ग. संग्रहालय द्वारा जुलाई, 2009 में 'सूर्य ग्रहण और संस्कृति' नामक छायाचित्र प्रतियोगिता का आयोजन कर सूर्य ग्रहण तथा लोगों के विश्व बोध तथा संस्कृति से सम्बंध दर्शाते छायाचित्र आमंत्रित किए गए।

घ. सेन्टम लरनिंग सेन्टर, भोपाल के सहयोग से 20 सितम्बर, 2009 को बच्चों के लिये 'मानव संग्रहालय' विषय पर एक चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

ड. इंगारामसं के सहयोग से एनएचडीसी द्वारा 14 नवम्बर, 2009 को 'ऊर्जा संरक्षण' विषय पर एक राज्य स्तरीय चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

च. नेहरू युवा केंद्र, भोपाल के सहयोग से 5 से 11 जुलाई, 2009 तक संग्रहालय परिसर में एक राष्ट्रीय एकता शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में भारत के विभिन्न राज्यों से लोक और जनजातीय समुदायों से लगभग 175 युवाओं ने प्रतिभागिता की तथा अपने राज्य, क्षेत्र और समुदाय से सम्बंधित प्रस्तुतियॉ दी। प्रतिभागियों ने विविध सामयिक विषयों पर सूचनाओं और विचारों को साझा किया तथा कार्यशालाओं, रैली, धरोहर यात्रा, क्षेत्र भ्रमण, संस्कृति विशेष के रोमांचक खेलों तथा वृक्षारोपण आदि में भी हिस्सा लिया। शिविर में कई जानी मानी हस्तियों ने भी विविध सामयिक मुद्दों तथा समस्याओं पर युवाओं को सम्बोधित किया।

छ. 27 अगस्त, 2009 से एक 12 दिवसीय 'नव–संग्रहालय विज्ञान पर संवाद' पर उन्नमुख प्रशिक्षण कार्यक्रम (संग्रहालय कर्मियों के लिए) का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का नियोजन इंगारामासं के नेतृत्व में तथा उसके मॉडल पर संग्रहालय आंदोलन की अवधारणा और साथ ही कौशल स्तर का उन्नयन करने के लिये किया गया था। इस कार्यक्रम में जनजातीय शोध संस्थान, मध्यप्रदेश, भाषा शोध और प्रकाशन केंद्र, बडौदा, गुजरात, हिमाचल प्रदेश में बन रहे एक संग्रहालय और इंगारामासं के स्टाफ कर्मियों ने प्रतिभागिता की। बुनकर कार्यशाला के प्रतिभागियों को पूर्वोत्तर भारत से सांस्कृतिक मॉडलो पर संवाद के लिये आमंत्रित किया गया।

ज. विशेष फिल्म प्रदर्शनः चिन्ह इंडिया ट्रस्ट के सहयोग से 22 दिसम्बर, 2009 को बच्चों के लिये फिल्म प्रदर्शन का आयोजन किया गया। इसके अंतर्गत लगभग 10 लघु एनिमेशन फिल्मों का प्रदर्शन किया गया।

झ. बालरंग–2009ः बच्चों के दो दिवसीय बहुरंगी राष्ट्रीय कार्यक्रम का आयोजन 19 और 20 दिसम्बर, 2009 को किया गया। कार्यक्रम का आयोजन संयुक्त रूप से स्कूली शिक्षा विभाग, मध्यप्रदेश शासन द्वारा मानव संग्रहालय में किया गया। इस कार्यक्रम में देश के 11 राज्यों असम, नागालैण्ड, मिजोरम, मणीपुर, जम्मू और कश्मीर, गोवा, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखण्ड, छत्तीसगढ़, पंजाब, नई दिल्ली से लगभग 1000 स्कूली बच्चों द्वारा विभिन्न प्रतियोगिताओं जैसे भाषण, निबंध लेखन, प्रश्नोत्तरी, गजल गायन, चित्रकला, लोक नृत्य आदि में हिस्सा लिया गया।

ञ. महेश्वर धरोहर यात्राः महेश्वर संस्कृति सहयोग (एक पंजीकृत गैरलाभकारी एनजीओ) द्वारा इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय, भोपाल, यूनेस्को, इंडियन हेरिटेज सिटीज नेटवर्क (आईएचसीएन–यूनेस्को) और लिविंग हेरीटेज एलायंस के सहयोग से स्कूली बच्चों के लिए 6 दिसम्बर, 2009 को महेश्वर, मध्यप्रदेश में एक धरोहर यात्रा का आयोजन किया गया। यात्रा का उद्देश्य बच्चों को नगर की अद्वितीय धरोहर के महत्व को जानना और समझना था।

ट. विश्व धरोहर सप्ताह के अवसर पर आयोजित कार्यक्रमों के एक भाग के रूप में 'परधान चित्रकला का एक बदलता चेहरा' नामक प्रदर्शनी वीथि संकुल भवन में आयोजित की गई। इसके अतिरिक्त 20 नवम्बर, 2009 को 'एजेन्डा हिमालय से' कार्यक्रम के प्रतिभागियों को देश की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर के बारे में जागरूकता के उद्देश्य से राज्य के ऐतिहासिक स्थलों सांची, भोजपुर और भीमबैटका का भ्रमण कराया गया।

ठ. इक्रॉम (इटली) द्वारा आयोजित एक महीने की अवधि के लिए संग्रहालय के एक अधिकारी को 16 नवम्बर, 2009 से 'सोयमा–2009': सेफगार्डिंग साउन्ड एंड इमेज कलेक्शन पर अंतर्राष्ट्रीय पाठ्यक्रम के लिए नई दिल्ली और पुणे भेजा गया।

ड. 15 से 20 दिसम्बर, 2009 तक संग्रहालय के क्यूरेटर स्टॉफ के कौशल तथा ज्ञान उन्नयन के लिए अंतःसेवा प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

ढ. जनजातीय एवं लोक नृत्यों, नाटकों तथा देशज खाद्यों पर लोक प्रसंग 2 नामक एक चार दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन 1 से 4 सितम्बर 2009 तक भोपाल में किया गया।

ण. एक स्थानीय सांस्कृतिक संस्था, भोजपुरी एकता मंच, भोपाल के सहयोग से छठ पूजा से संबंधित परम्पराओं पर 28 अक्तूबर, 2009 से सात दिवसीय

कार्यक्रम "छठ बाद" का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में एक कलाकार कार्यशाला, लोकगीतों की प्रस्तुतियां, पारंपरिक खाद्‌य तथा एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

त. "एजेंण्डा हिमालय से" नामक एक नौ दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन 11 से 19 नवंबर तक किया गया। इस कार्यक्रम में हिमालय क्षेत्र के कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड से लगभग 250 कलाकारों ने प्रस्तुतिकारी कलाओं के प्रदर्शन, देशज खाद्‌य तथा प्रदर्शनी के रूप में अपने अपने क्षेत्र की पारंपरिक संस्कृति की एक झलक प्रस्तुत की।

'ऑपरेशन साल्वेज' उपयोजना संस्कृति के विलुप्त प्राय मूर्त एवं अमूर्त पक्षों के साल्वेज हेतु उद्‌देशित है। पिछले कई वर्षों से संग्रहालय संग्रहण तथा प्रलेखन द्वारा जीवन संवृद्धिकारक परम्पराओं के विभिन्न पक्षों के साल्वेज हेतु व्यवस्थित प्रयास कर रहा है। अवधि के दौरान निम्नलिखित कार्यक्रम लागू किए गए :

क. भीमबेटका : इंगारामास विश्व धरोहर स्थल भीमबैटका के चारों ओर अस्पर्शनीय सांस्कृतिक धरोहर पर एक परियोजना संचालित कर रहा है। प्रतिवेदन लेखन का कार्य जारी है।

ख. माजुली के कमलाबाड़ी सत्र तथा गारामूर सत्र के सहयोग से 'कमलाबाड़ी सत्र और गारामूर सत्र में उपलब्ध प्राचीन पांडुलिपियों के अनुवाद (एक लघु टीका सहित) नामक दो परियोजनाऐं संचालित की जा रही हैं।

इस अवधि के दौरान नागालैंड, राजस्थान, असम, मध्य प्रदेश, उड़ीसा, आंध्र प्रदेश, गुजरात, बिहार, महाराष्ट्र, त्रिपुरा, मणीपुर, तमिलनाडु, पंजाब, अरुणाचल प्रदेश, हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड राज्यों के विविध समुदायों से संबंधित 353 मानवशास्त्रीय प्रादर्श संकलित किए गए।

संग्रहालय अधिकारियों के एक दल द्वारा असम में मानवशास्त्रीय वस्तुऐं संकलित करने के लिए क्षेत्र कार्य किया गया। मानवशास्त्रीय वस्तुओं के संकलन तथा नदी घाटी संस्कृति पर एक प्रदर्शनी विकसित करने हेतु प्रभारी निदेशक द्वारा मध्य प्रदेश के नरसिंहपुर, जबलपुर और अमरकंटक क्षेत्रों का दौरा किया गया। संग्रहालय के एक दल द्वारा वीणा वादन के वीडियों प्रलेखन के लिए चेन्नई का दौरा किया गया। इस कार्यक्रम का आयोजन आईजीएनसीए और वीणा फाउंडेशन के सहयोग से किया गया। संजा पर्व से सम्बंधित विभिन्न अनुष्ठानों तथा आकृतियों के प्रलेखन के लिये संग्रहालय के अधिकारियों के एक दल द्वारा मध्य प्रदेश के उज्जैन और खंडवा जिलों का दौरा किया गया।

संग्रहालय भारत के पूर्वोत्तर राज्यों पर विशेष बल दे रहा है। वर्ष के दौरान संग्रहालय ने पूर्वोत्तर राज्यों में तथा भोपाल स्थित अपने मुख्यालय में पूर्वोत्तर राज्यों से विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन कर इन राज्यों में अपनी गतिविधियों का सशक्तिकरण किया है।

कार्यक्रम :

क. संग्रहालय आने वाले दर्शकों के लिए ग्रामीण परिवेश के अनुभव के लिए माजुली, असम से मिशिंग समुदाय के तीन पारंपरिक आवास संग्रहालय के अतिथि गृह के समीप असम के मिशिंग समुदाय द्वारा निर्मित किए गए।

ख. पूर्वोत्तर राज्यों से वस्त्र परम्पराए तथा बुनकरों की तकनीक पर अगस्त, 2009 में 'शिल्पायन–3' नामक एक दस दिवसीय कार्यशाला का आयोजन भोपाल में संग्रहालय परिसर में किया गया।

ग. असम की श्रीमती सबिता सैकिया द्वारा सत्रीय नृत्य की प्रस्तुति के एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन 7 जून, 2009 को किया गया।

घ. लोक प्रसंग 1 नामक लोक/जनजातीय प्रस्तुतिकारी कला स्वरूपों के एक तीन दिवसीय बहुविध कार्यक्रम का आयोजन 11 से 13 जुलाई 2009 तक किया गया।

ड. जनजातीय, लोक एवं शास्त्रीय उद्‌भव के फ्यूज़न संगीत पर आधारित 'फ्यूज़न–1' नामक एक त्रि दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन 21 से 23 जुलाई, 2009 तक किया गया।

च. जनजातीय एवं लोक नृत्यों, नाटक तथा पारम्परिक खाद्य के 'लोक प्रसंग–2' नामक एक चार दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन 1 से 4 सितम्बर, 2009 तक किया गया।

छ. प्रख्यात थियेटर व्यक्तित्व स्व. श्री हबीब तनवीर पर केंद्रित 'हबीब उत्सव' नामक एक सप्ताह के कार्यक्रम का आयोजन 21 से 27 नवम्बर, 2009 तक किया गया। इस कार्यक्रम में असम के बा–दी क्रियेटिव ब्रीज थियेटर द्वारा भी चरणदास चोर नामक एक नाटक की प्रस्तुति दी गई।

ज. सांस्कृतिक मामलों के निदेशालय, असम शासन के सहयोग से 12 से 14 दिसम्बर, 2009 तक असम के लोकनृत्यों को दर्शाते 'असम प्रसंग' नामक तीन दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

झ. स्कूली बच्चों के एक राष्ट्रीय कार्यक्रम बालरंग 2009 का आयोजन स्कूल शिक्षा विभाग, मध्यप्रदेश सरकार के सहयोग से 19 एवं 20 दिसम्बर 2009 को किया गया। इस कार्यक्रम में लगभग 1000 स्कूली बच्चों ने वाद–विवाद, निबंध लेखन, प्रश्नोत्तरी, गजल गायन, चित्रकला तथा लोकनृत्य आदि विभिन्न प्रतियोगिताओं में हिस्सा लिया।

ञ. पारम्परिक लोक नृत्यों के एक विशेष कार्यक्रम 'थाउगल जागोई' का आयोजन 22 दिसम्बर, 2009

को किया गया जिसमें मणीपुर, असम एवं नागालैंड के कलाकारो द्वारा अपने क्षेत्रों के लोक नृत्यों की प्रस्तुति दी गई।

27 अगस्त 2009 से संग्रहालय कर्मियों के लिए बारह दिवसीय कार्यक्रम नव संग्रहालय विज्ञान पर संवाद समाहित प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

माजुली, असम के कमलाबाडी तथा गारामूर सत्र के सहयोग से माजुली के कमलाबाडी सत्र और गारामूर सत्र में उपलब्ध प्राचीन पांडुलिपियों के अनुवाद (एक टीका सहित) पर दो परियोजनाऐं संचालित की जा रही है।

इस अवधि के दौरान संग्रहालय के अधिकारियों ने पूर्वोत्तर के राज्यों नागालैंड, असम, त्रिपुरा और मणीपुर के विविध समुदायों जैसे पोउमाई नागा, नागा, कोन्यक नागा, रेंगमा नागा, बोडो, मिशिंग, छीपा, चकमा, मैतेई, तांगखुल, माओ, कोम, नियशी, मिशिंग, किन्नोरा और भोटिया आदि समुदायों से संबंधित मानवशास्त्रीय प्रादर्श संकलित किए।

बालरंग

4.1.6

एशियाटिक सोसायटी

महान अध्येता एवं कलकत्ता उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश सर विलियम जॉन्स द्वारा 1784 में एशियाटिक सोसाइटी की स्थापना की गई थी। 1984 में भारत सरकार ने संसद के अधिनियम द्वारा राष्ट्रीय महत्व की संस्था के रूप में एशियाटिक सोसाइटी को मान्यता प्रदान की है।

सांविधिक उपबंधों का अनुसरण करते हुए, एशियाटिक सोसाइटी प्रतिमाह पांच बैठकों का आयोजन करती है। ये एशियाटिक सोसाइटी के सदस्यों, पुस्तकालय समिति, प्रकाशन समिति, बिब्लियोथेका इंडिका समिति तथा परिषद की मासिक बैठकें हैं जिनमें से प्रत्येक में विद्वान किसी विनिर्दिष्ट विषय पर पेपर पढ़ते हैं तथा जिनमें तीन सांविधिक समितियों तथा गैर–सांविधिक अकादमिक समिति के संकल्प, विचार–विमर्श एवं निर्णय के लिए प्रस्तुत किए जाते हैं।

एशियाटिक सोसायटी के कार्यकलापों का सार नीचे दिया गया है:–

- **संग्रहालय** : एशियाटिक सोसायटी के संग्रहालय में 27 लिपियों और 18 भाषाओं में लिखित 49,575 पाण्डुलिपियों का विपुल भण्डार है। पाण्डुलिपियों के संग्रह में अधिकांश पाण्डुलिपियाँ भारतीय लिपियों में और कुछ एशियाई लिपियों में हैं। रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान इस संग्रहालय में उपलब्ध सम्पूर्ण सेग्रह का भौतिक सत्यापन किया गया। पाण्डुलिपियों, लिथोग्राफ, मानचित्र तथा दुर्लभ पुस्तकों का डिजिटीकरण करके बाह्य हार्ड डिस्क में स्टोर किया गया। पाण्डुलिपियों के 300 पृष्ठों को स्कैन करने के अतिरिक्त इनकी माइक्रोफिल्म बनाने और नेगेटिव का परिरक्षण करने का कार्य किया गया।

- **पुस्तकालय** : एशियाटिक सोसायटी के पुस्तकालय में 1,22,200 पुस्तकें और 1,06,000 जिल्दबंद पत्र–पत्रिकाएं हैं जिनमें से अधिकांश बहुत ही दुर्लभ हैं। पत्र–पत्रिकाओं के पुराने संस्करणों के वृहत संग्रह को मैटकॉफ हाल 12, स्ट्रैण्ड रोड, कोलकाता में संरक्षित किया गया है। पाठक माइक्रोफिल्म और माइक्रोफिच सुविधाओं का उपयोग करते हैं। पुस्तकालय ने हाल ही में रेट्रो–संरक्षण के लिए एक परियोजना और दुर्लभ पुस्तकों के डिजिटीकरण की एक अन्य परियोजना शुरू की है। पुस्तकालय ने वर्तमान पत्रिका, 2009 प्रकाशित की है जो अभिदत्त तथा आदान–प्रदान और दान के आधार पर प्राप्त हुई मुद्रित तथा आनलाइन पत्रिकाओं की सूची है।

- **प्रकाशन** : प्रकाशन अनुभाग ने सात पुस्तकें, **एशियाटिक सोसायटी की पत्रिका के चार अंक मासिक बुलेटिन के नौ अंक**, प्रकाशन तथा वार्षिक आम बैठक की कार्यवाही के तीन प्रकाशन निकाले। इस अवधि के दौरान 6 अन्य पुस्तकें भी प्रकाशित की गईं।

  (क) विख्यात कार्टोग्राफर जॉन ऑगिबाय द्वारा लिखित पर्शिया एण्ड इंडिया पहली बार 1673 में प्रकाशित जिसकी प्रस्तावना प्रोफेसर अनिरुद्ध रे ने लिखी है।

  (ख) 19वीं सदी के विख्यात वनस्पति विज्ञानी तथा एशियाटिक सोसायटी के सदस्य जोसफ बैंक्स के अप्रकाशित पत्र।

  (ग) एशियाटिक सोसायटी में संरक्षित किए गए सिक्कों का टिप्पणी सहित सूची–पत्र।

- **अकादमिक कार्यकलाप** : नौ राष्ट्रीय और एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किए गए। डार्विन के 200 वर्ष तथा **ओरिजिन ऑफ स्पीसीज** के प्रकाशन के 150 वर्ष के अवसर पर चार्ल्स डार्विन और मानव विकास के संबंध में अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया जिसमें अग्रणी भारतीय वैज्ञानिकों के अतिरिक्त अमरीका, फ्रांस, चीन और अन्य देशों के जीव–विज्ञानियों तथा वैज्ञानिकों ने भाग लिया। दिनांक 18 और 19 फरवरी, 2010 को महायान के बौद्ध दर्शन पर एक सम्मेलन आयोजित किया गया। बारह सार्वजनिक व्याख्यान आयोजित किए गए। इनमें भाग लेने वाले कुछ विख्यात वक्ता थे प्रोफेसर वरुण डे, प्रोफेसर रामकृष्ण मुखर्जी, प्रोफेसर इनामुल हक, प्रोफेसर टोनी के स्टीवर्ट, माननीय न्यायधीश श्री चित्ततोष मुखोपाध्याय, डाफ0 ओलिवर जर्मेइन थॉमस और प्रोफेसर एस.एन. मुखर्जी ।

सक्षम पर्यवेक्षकों के मार्गदर्शन में अब सैंतालीस विद्वान विभिन्न विषयों पर अनुसंधान कार्य कर रहे हैं। अनुसंधान अध्येताओं के अनुसंधान का नियमित रूप से अनुवीक्षण किया जाता है। प्रोफेसर प्रताप बंधोपाध्याय के पर्यवेक्षण में **विष्णुधर्मोत्तरपुराण** के सम्पादन तथा संग्रह की परियोजना का कार्य चार संस्कृत विद्वानों द्वारा शुरू किया गया है। इस कार्य को अगले तीन वर्ष के भीतर बिब्लियोथिका इंडिका में प्रकाशित किए जाने की आशा है।

रिप्रोग्राफी अनुभाग ने 4037 एक्सपोजर का कार्य प्रारम्भ किया है जिनमें बावन पाण्डुलिपियों के 3805 पृष्ठ, संसाधित माइक्रोफिल्म रोल्स शामिल हैं। कार्यालयी उपयोग के लिए जीरॉक्स प्रतियां तथा विद्वानों और आम पाठकों के लिए जीरॉक्स प्रतियां की गईं।

डिजिटलिकृत रूप से कॉपी की गई पाण्डुलिपियों तथा पुस्तकों की कुल संख्या 5309 थी।

संरक्षण प्रयोगशाला प्रभाग

- संरक्षण प्रयोगशाला विद्वानों के उपयोग के लिए दुर्लभ पुस्तकों, कागज तथा ताड़ पत्रों की पाण्डुलिपियों के परिरक्षण और संरक्षण का कार्य कर रही है।
- सोसायटी की दुर्लभ ऐतिहासिक स्रोत सामग्री, पुस्तकों तथा पेंटिंग के संग्रह को सुरक्षित रखने के लिए एशियाटिक सोसायटी ने प्रवेश द्वार पर बैगेज स्कैनर लगाकर सुरक्षा को सुदृढ़ बनाया है।

विशेष कार्यक्रम

- एशियाटिक सोसायटी ने परिषद के सदस्यों की बैठक में 08 फरवरी 2010 को श्री प्रणव मुखर्जी, माननीय वित्त मंत्री को इंदिरा गांधी स्वर्ण फलक प्रदान किया।
- प्रोफेसर सव्यसाची भट्टाचार्य, अध्यक्ष, आईसीएचआर द्वारा 15 जनवरी 2010 को **''भारत में उन्नीसवीं शताब्दी के दौरान ऐतिहासिक अनुभूति''** पर स्थापना दिवस व्याख्यान दिया।
- सोसायटी की 225वीं वर्षगॉठ के अवसर पर एशियाटिक सोसायटी का इतिहास विषय पर एक **वृत्तचित्र** तैयार किया गया।

4.1.7

मौलाना अबुल कलाम आज़ाद एशियाई अध्ययन संस्थान

मौलाना अबुल कलाम आजाद एशियाई अध्ययन संस्थान (एमएकेएआईएएस), कोलकाता, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के अंतर्गत एक स्वायत्त निकाय है। यह संस्थान एक अनुसंधान एवं अध्ययन केन्द्र है, जिसमें भारत के साथ एशिया के संबंधों पर विशेष बल देने सहित 19वीं शताब्दी के मध्य से अब तक एशिया में हुए सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं राजनीतिक/प्रशासनिक विकास और मौलाना अबुल कलाम आज़ाद के जीवन तथा कार्यों पर मुख्य ध्यान केन्द्रित किया जाता है। अब तक एशियाई अध्ययन का विशेष जोर दक्षिण एशिया, मध्य एशिया तथा पश्चिम एशिया के आधुनिक एवं समसामयिक मामलों के विशिष्टीकरण तथा पूर्व सोवियत संघ के पांच मध्य एशियाई गणराज्यों (उजबेकिस्तान, तुर्कमेनिस्तान, तजाकिस्तान, किरगिस्तान तथा कजाकिस्तान) तुर्की, ईरान, अफगानिस्तान एवं बांग्लादेश के अध्ययन कार्यों पर रहा है।

वर्ष 2009–10 संस्थान के इतिहास में एक महत्वपूर्ण बदलाव वाला वर्ष रहा है। इसी वर्ष साल्ट लेक के नए परिसर में बड़े पैमाने पर कार्य शुरू हुआ तथा संस्थान के अशरफ मिस्त्री लेन, कोलकाता वाले विरासत भवन में नए कार्यकलापों का एक कार्यक्रम शुरू किया गया। इस संस्थान ने भारत के उत्तरी क्षेत्र, दक्षिण–पूर्वी एशिया तथा चीन तक अपने अध्ययन क्षेत्रों को और अधिक व्यापक भी किया है। भारत सरकार के उत्तर–पूर्व कार्यक्रम के तहत, संस्थान ने वर्ष 2000 से देश के उत्तर–पूर्वी भाग में उत्तर–पूर्व क्षेत्र के जनजातीय लोगों की संस्कृति एवं समाज के अध्ययन, अराजकता की समस्या, मादक पदार्थों एवं नारकोटिक्स का व्यापार, अवैध हथियारों के कारोबार इत्यादि सहित विभिन्न विषयों पर 30 से भी अधिक अनुसंधान परियोजनाओं के लिए लोगों को प्रेरित किया है तथा सुविधाएं प्रदान की हैं।

पूर्वोत्तर क्षेत्र कार्यक्रम के अंतर्गत संस्थान ने वर्ष 2009 में अनेक अनुसंधान परियोजनाओं को निधियां प्रदान की हैं जैसे कि : ''अरुणाचल प्रदेश के जनजातीय समाज में महिलाओं की भूमिका तथा स्थिति : बदलाव एवं इसका समुदाय'' विषय पर सुश्री पुतोली लंगकाम, सहायक प्रोफेसर, रंग–फराह राजकीय महाविद्यालय, चांगलांग, अरुणाचल प्रदेश द्वारा किया गया अनुसंधान, ''सीमांत क्षेत्रों का नृवंशविद्या–संबंधी अन्वेषण : पूर्वोत्तर भारत में 20वीं सदी के पूर्वार्द्ध का पुनः परीक्षण'' विषय पर प्रो. एच. सुधीर कुमार सिंह, सहायक प्रोफेसर, इतिहास विभाग, मणिपुर विश्वविद्यालय द्वारा किया गया अनुसंधान, ''संस्कृति, विरासत एवं पहचान : सिक्किम एवं दार्जिलिंग में लेपचा एवं मंगार समुदाय'' विषय पर डॉ. नंदिनी भट्टाचार्य पाण्डा द्वारा किया गया अनुसंधान, ''औपनिवेशिक शासन के दौरान पूर्वोत्तर भारत में पहचान को परिभाषित करना'' विषय पर सुश्री नंदिता बागची द्वारा किया गया अनुसंधान, ''पूर्वोत्तर भारत एवं दक्षिण–पश्चिम चीन : उनके समुदायों में महिलाओं की स्थिति के विशेष संदर्भ के साथ एक तुलनात्मक अध्ययन'' विषय पर सुश्री जयंती अलाम द्वारा किया गया अनुसंधान।, ''मणिपुर की जनजातियों पर आधुनिकीकरण का प्रभाव'' विषय पर डॉ. सलाम आयरेन, एसोसिएट प्रोफेसर, मणिपुर विश्वविद्यालय द्वारा किया गया अनुसंधान, ''वहनीयता एवं मानव संसाधन विकास : मुद्दे एवं उपाय – असम में एक अध्ययन'' विषय पर डॉ. सुजाता दत्ता हजारिका द्वारा किया गया अनुसंधान।

पूर्वोत्तर क्षेत्र कार्यक्रम में अनुसंधान को बढ़ावा देने के अतिरिक्त, संस्थान ने अपने पूर्वोत्तर क्षेत्र कार्यक्रम के अंतर्गत भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र में विभिन्न मुद्दों पर राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सेमिनारों, सम्मेलनों, संगोष्ठियों के लिए भी सहायता प्रदान की है।एस.के. हजारिका कॉलेज, गुवाहाटी, असम में 18–19 नवम्बर, 2009 को ''अपतनीज : अरूणाचल प्रदेश की जनजाति के रूप में उनका स्थान'' विषय पर राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया, 28 मार्च, 2009 को गुवाहाटी में ''असम में सुरक्षा एवं विकास के मुद्दों का समाधान'' विषय पर एक सेमिनार आयोजन किया गया, संस्थान के सेमिनार हाल में 22 अप्रैल, 2009 को ''क्या पोस्टकोलोनियल की शुरूआत हो सकती है?: असम का गैर–प्रांतीयकरण'' विषय पर एक सेमिनार का आयोजन किया गया तथा इसमें डा0 बोधिसत्तव कर, अध्येता, सामाजिक विज्ञान अध्ययन केन्द्र, कोलकाता ने भाषण दिया।

पूर्वोत्तर कार्यक्रम के तहत बाह्य अनुसंधान परियोजनाओं के अतिरिक्त, संस्थान के स्वयं के अध्येता भी भिन्न क्षेत्रों में अनुसंधान कार्य कर रहे हैं। डा0 राखी भट्टाचार्य की परियोजना आर्थिक स्थिति बनाम सुरक्षा : भारत के पूर्व एवं पूर्वोत्तर क्षेत्रों की पडोसियों के साथ उभरती हुई चिंताएं। श्री सौम्या कांति मित्रा की ''इस बात की जांच करना कि भारत के पूर्वोत्तर राज्य निकट पडोसियों जैसे बंगलादेश, म्यांमार, दक्षिण–पश्चिम चीन तथा इसके अतिरिक्त पूर्व जैसे आसियान एवं ओसियान की अर्थव्यवस्थाओं के साथ घनिष्ठ सहयोग से लाभ प्राप्त कैसे कर सकते हैं'' डा0 मृणाल कांति चकमा की ''शासन एवं विकास उपाय : वैश्वीकरण के जुड़ाव के दौर में पूर्वोत्तर भारत में भविष्य एवं बाधाएं'' श्री मैनक सेन की ''पूर्वोत्तर भारत में वहनीय सामाजिक–आर्थिक विकास : वास्तविकता, चुनौतियां तथा भविष्य के लिए आशा'' ऐसे ही कुछ उदाहरण हैं।

संस्थान का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य आधुनिक एवं समसामयिक एशिया के अध्ययन को सामाजिक एवं सांस्कृतिक आंदोलनों एवं भारत के पडोसी एशियाई देशों से संबंधों पर मुख्य फोकस के साथ बढ़ावा देना है। वर्तमान में इस क्षेत्र में किए जा रहे अनुसंधान कार्य हैं–डा0 अर्पिता बसु राय का क्षेत्रीय सहयोग के माध्यम से अफगानिस्तान में मानव सुरक्षा की चुनौतियों का समाधान, डा0 मोनिका मंडल का समसामयिक नेपाल में जातीय समुदायों का सामाजिक समावेश, डा0 बिनोदा के. मिश्रा का दक्षिण एवं दक्षिण–पूर्व एशिया में सामरिक स्थल के लिए भारत–चीन प्रतिस्पर्धा, श्री संजय पुलियक का लोकतंत्र को प्रोत्साहन – म्यांमार में चुनौतियां, डा0 अमिया के. चौधरी का ''1947 के विभाजन के बाद पश्चिम बंगाल'' सुश्री प्रिया सिंह का जिओनिज्म एवं इजराइल राज्य : एक समालोचनात्मक अध्ययन, डा0 स्वरूपा गुप्ता का बंगाली यात्रा वृतांतों (सी. 1850–1947) में दक्षिण–पूर्व एशिया की बदलती हुई तस्वीर एवं छवि, एम्बेसडर कृष्णन श्रीनिवासन का 21वीं सदी में बहुआयामी विकास की सीमाएं।

कार्यक्रम

एमएकेआईएएस ने 18 दिसम्बर, 2009 को पाकिस्तान एवं पश्चिम एशिया अध्ययन केन्द्र, कलकत्ता विश्वविद्यालय के साथ सहयोग से ''इजराइल/फिलिस्तीन प्रश्न को समझना : पश्चिम एशिया की राजनीति में इसकी प्रतिध्वनि'' विषय पर एक अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया।

एमएकेआईएएस द्वारा 15–16 अक्तूबर, 2009 को सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी केन्द्र, कलकत्ता विश्वविद्यालय के सहयोग से ''एशिया में सुरक्षा के वैकल्पिक मॉडल'' विषय पर एक राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया।

21 अगस्त, 2009 को चीन केन्द्र, कलकत्ता विश्वविद्यालय एवं एमएकेआईएएस ने ''21वीं सदी के शुरू में चीन की एक एकता को चुनौतियां'' विषय पर प्रो0 मनोरंजन मोहंती, चीन अध्ययन केन्द्र, नई दिल्ली के एक व्याख्यान का आयोजन किया।

मौलाना अबुल कलाम आजाद एशियाई अध्ययन संस्थान के विद्वानों के एक प्रतिनिधिमंडल ने 15–16 मई, 2009 को वियतनाम के हो चाई मिन्ह शहर में ''भारत दक्षिण–पूर्व एशिया संबंध : सामरिक भागीदारी एवं क्षेत्रीय अखंडता'' विषय पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया।

डा0 अर्पिता बसु, अध्येता, एमएकेआईएएस ने 25 जून, 2009 को दिल्ली नीति समूह द्वारा नई दिल्ली में ''अफगानिस्तान–भारत–पाकिस्तान त्रिवार्ता : शांति हेतु साझा आधार की तलाश'' विषय पर आयोजित सम्मेलन में भाग लिया।

डा0 बिनोद कुमार मिश्रा, अध्येता, एमएकेआईएएस ने हुल विश्वविद्यालय, यू.के. में 26–28 अगस्त, 2009 को ''दक्षिण एशिया के परमाणु हथियार'' विषय पर आयोजित सम्मेलन में भाग लिया।

एमएकेआईएएस ने जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय के सहयोग से 18–19 मार्च, 2009 को ''अफगानिस्तान पुनर्निर्माण का भारतीयकरण : चुनौतियां एवं अवसर'' विषय पर एक अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया।

संस्थान सामाजिक और सांस्कृतिक अभियानों पर केंद्रित आधुनिक और समकालीन एशिया तथा एशियाई देशों के साथ भारत के संबंध पर किए जाने वाले अध्ययन कार्य को बढ़ावा देता है।

संस्थान ने मध्य एशिया पर एक प्राथमिक अनुसंधान क्षेत्र के रूप में भी ध्यान केन्द्रित किया है। संस्थान के अनेक

अध्येत्ता इस क्षेत्र में अनुसंधान कर रहे हैं। डा0 सुचंदाना चटर्जी ''साइबेरिया से कजाक घास के मैदान : यूरेशिया के क्षेत्रीय इतिहासों का पुनः अन्वेषण'' पर डा0 अनीता सेनगुप्ता ''तर्किश मॉडल एवं तुर्किक दुनिया : 1990 से तुर्की की राजनीतिक संस्कृति का एक अध्ययन तथा पोस्ट तुर्किक क्षेत्रों के साथ संबंधों पर इसका प्रभाव'' डा0 श्रीमती गांगुली ''पोस्ट–शीत युद्ध युग में यूरेशिया में सिल्क रोड की अवधारणा : पुनरूद्धार या पुनः प्रस्तुतीकरण'' पर अनुसंधान कार्य कर रहे हैं।

इसके अतिरिक्त, वर्ष 2009 के दौरान, एमएकेएआईएएस ने 19 नवम्बर, 2009 को ''भारत–मध्य एशिया संबंध : व्यापार, आबादी एवं समुदाय'' विषय पर एक संभाषण का आयोजन किया। इसमें भाग लेने वालों में डा0 मस्तूरा कालन्दरोवा, भारतीय अध्ययन केन्द्र, ओरियंटल अध्ययन संस्थान, मास्को; डा0 स्वेतलाना सिदोरोवा, भारतीय अध्ययन केन्द्र, ओरियंटल अध्ययन संस्थान, मास्को; तथा डा0 अरूप बनर्जी, एसोसिएट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय शामिल थे। दिनांक 13 नवम्बर, 2009 को संस्थान के सेमिनार हाल में एमएकेएआईएएस द्वारा ''रूस की बदलती हुई अर्थव्यवस्था में अकाडेमगोरोडक विज्ञान एवं नवाचार विकास हेतु एक केन्द्र के रूप में'' विषय पर एक सेमिनार का आयोजन किया गया इसमें डा0 एवेग्ने वोडीचेव, अध्यक्ष, कार्यक्रम विशेषज्ञता एवं अनुवीक्षण इकाई, रसियन विज्ञान अकादमी, साइबेरियन शाखा, नोवोसाइबिरिस्क, रूस ने अपना भाषण दिया। ''रूस एवं चीन के बीच मध्य एशिया : नए 'बड़े खेल' पर स्थानीय परिप्रेक्ष्य'' विषय पर एक सेमिनार का आयोजन किया गया तथा डा0 मरलेन लारेल एवं डा0 सेबसटियन पीरॉज, मध्य एशिया एवं काकेशस संस्थान तथा सिल्क रोड अध्ययन, जॉन हॉपकिन्स विश्वविद्यालय ने इसमें अपना भाषण दिया।

एमएकेएआईएएस, कोलकाता के एक प्रतिनिधिमंडल ने भारत सरकार के रसिसा कार्यक्रम में भारत वर्ष में भाग लिया। 18–25 जुलाई, 2009 को रूसी संघ के उलान उड़े में संस्थान ने तिब्बत एवं बौद्ध अध्ययन संस्थान, उलान उड़े के साथ मिलकर आयोजन किया तथा भाग लिया, ''तिब्बत एवं भारत में रिन्चेन जांगपो के बौद्ध मठों'' पर एक प्रदर्शनी, ''भारत एवं रूस में बौद्ध धर्म की समसामयिक स्थिति'' पर एक अंतर्राष्ट्रीय गोलमेज; और ''एशियाटिक रूस, मध्य एशिया एवं भारतः प्रवजन, क्षेत्र, ऐतिहासिक आयामों में क्षेत्रवाद'' विषय पर अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार,

1 मार्च, 2009 को ग्रामीण एवं औद्योगिक विकास अनुसंधान केन्द्र (सीआरआरआईडी), चंडीगढ़ तथा ग्लोबल इंडिया प्रतिष्ठान, कोलकाता के साथ सहयोग से रसायन इंजीनियर्स संस्थान, जादवपुर विश्वविद्यालय के ऑडिटोरियम में एमएकेएआईएएस द्वारा ''दक्षिण एवं मध्य एशिया में सहकारी विकास, शांति एवं सुरक्षा'' विषय पर एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन का उद्घाटन भाषण श्री प्रणब मुखर्जी, विदेश मंत्री, भारत सरकार द्वारा किया गया।

एमएकेएआईएएस, कोलकाता मौलाना आजाद के कोलकाता स्थित पुराने आवास में उनके व्यक्तिगत संग्राहलय की भी देखरेख करता है। इस संग्राहलय में मौलाना अबुल कलाम आजाद के जीवन एवं कार्यों को एक विशिष्ट राष्ट्रीय नेता एवं विचारक के रूप में दर्शाया गया है। 5 अशरफ मिस्त्री लेन, कोलकाता में स्थित आजाद संग्राहलय में मौलाना आजाद के जीवन एवं समय पर 700019 दृश्य डिस्पले हैं। श्री विजय सिंह नाहर के संग्रह से संग्राहलय हेतु कई दुर्लभ पुस्ताकें एवं पत्रों को प्राप्त किया गया। फिल्म प्रभाग, भारत सरकार से डीवीडी रूप में संग्राहलय हेतु डाक्यूमेंट्री फिल्में भी प्राप्त की गईं। एमएकेएआईएएस के साल्ट लेक परिसर के खुल जाने से संग्राहलय के और अधिक विकास के अवसर प्राप्त होंगे तथा दस्तावेजीकरण केन्द्र सहित संबंधित कार्यकलापों को भी विकसित करने में मदद मिलेगी जिससे भारत में 1947 में ब्रिटिश साम्राज्य के पूर्वी क्षेत्रों के विभाजन तथा 19947 के बाद भारत के समसामयिक इतिहास से संबंधित सामग्री पर अधिक ध्यान दिया जा सकेगा।

वर्ष 2009 के दौरान धर्मनिरपेक्षता तथा वैश्विक भाईचारे एवं मौलाना आजाद के जीवन एवं कार्यों से संबंधित क्षेत्रों में भी अनुसंधान एवं अध्ययन को बढ़ावा देने के लिए संस्थान ने एक अध्येत्ता सुश्री सफोरा राजेक की नियुक्ति ''मौलाना आजाद : धर्म एवं राजनीति के बीच'' विषय पर कार्य करने तथा उनके उर्दू कार्यों को अनुदित करने के लिए की। संस्थान ने 11 नवम्बर, 2009 को मौलाना अबुल कलाम आजाद का 121वां जन्म दिवस मनाया। इस अवसर पर प्रो0 कृष्ण कुमार, निदेशक, भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी) ने मौलाना आजाद व्याख्यान, 2009 दिया। प्रो0 कृष्ण कुमार ने मौलाना आजाद को एक दूरदर्शी नेता तथा स्वतंत्र भारत के प्रथम शिक्षा मंत्री के रूप में प्रस्तुत किया। उन्होंने वर्तमान शिक्षा प्रणाली की भी चर्चा की तथा मौलाना अबुल कलाम आजाद द्वारा अभिकल्पित तथा बताए गए लक्ष्यों को प्राप्त कर पाने में इसे सफल बताया। प्रो0 एच.एस. वासुदेवन, निदेशक एमएकेएआईएएस ने मौलाना अबुल कलाम आजाद के 121वें जन्म दिवस पर 25 नवम्बर, 2009 को विद्यासागर विश्वविद्यालय, मिदनापुर, पश्चिम बंगाल में आयोजित सेमिनार में मुख्य अभिभाषण दिया। सुश्री अबीदा रजाक द्वारा ''तजकीरा–मौलाना आजाद की उर्दू कृति'' का अंग्रेजी में अनुवाद किया जा रहा है। डा0 किंगशुक चटर्जी, लेक्चरर, इतिहास विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय ने संस्थान के सेमिनार हाल में 20 मई, 2009 को ''अरब दुनिया में इस्लामिक आतंकवाद की गैर–इस्लामिक जड़ें'' विषय पर एक भाषण दिया। डा0 नजमा हेपतुल्ला, संसद सदस्य, राज्य सभा एवं अध्यक्ष, भारत सरकार ने मौलाना आजाद संग्राहलय का दौरा किया तथा मौलाना आजाद के साथ अपनी यादों को बांटते हुए संस्थान के अध्येत्ताओं के साथ बातचीत की एवं न केवल भारत अपितु बाहर भी विशेषकर पश्चिम एशिया एवं मध्य एशियाई देशों में मौलाना आजाद के जीवन को प्रतिबिम्बित करते हुए संग्राहलय को

और अधिक प्रभावी ढंग से विकसित करने में अनेकों स्रोत प्रदान करके संस्थान की सहायता की। इस संस्थान ने 15 अगस्त, 2009 को धूमधाम से भारत का 63वां स्वतंत्रता दिवस मनाया। 14–21 सितम्बर, 2009 के दौरान संस्थान में हिन्दी सप्ताह मनाया गया। 14 सितम्बर, 2009 को हिन्दी दिवस के अवसर पर डा0 राजश्री शुक्ला, हिन्दी विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय ने संस्थान के सेमिनार हाल में ''भाषा के रूप में हिन्दी की वैश्विक प्रासंगिकता'' विषय पर एक भाषण दिया।

संस्थान ने 3–7 नवम्बर, 2009 के दौरान सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया।

यह संस्थान पुस्तकों, पुस्तिकाओं, समाचार–पत्रों, आवधिक पत्रों, स्थिर चित्रों, चलित चित्रों, साउंड रिकार्डिंग तथा अन्य ऐसी सामग्रियों जिनका आधुनिक भारत की धर्मनिरपेक्ष परम्पराओं पर प्रभाव हो, वाले एक पुस्तकालय का भी रखरखाव करता है। वर्ष के दौरान पुस्तकालय में 900 पुस्तकें प्राप्त की गईं। 65 राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय पत्रों तथा जे–स्टार पुरातत्व सामग्री की खरीददारी जारी रखी गई।

प्रकाशन :

संस्थान द्वारा प्रकाशित की गई पुस्तकें हैं : डी. नाथ द्वारा **''माजुली द्वीप : समाज, अर्थ व्यवस्था एवं संस्कृति''**, अशांश प्रकाशन हाऊस, नई दिल्ली, 2009. प्रो0 जयंत कुमार रे, डा0 राखी भट्टाचार्य एवं कौशिक बंदोपाध्याय द्वारा **''सिक्किम ट्राइस्ट विद नाथुला : व्हाट अवेट्स इंडियाज ईस्ट एंड नार्थईस्ट?''** संपादित अशांश प्रकाशन हाऊस, नई दिल्ली, 2009. डा0 सुचदांना चटर्जी, डा0 अनीता सेनगुप्ता तथा डा0 सुष्मिता भट्टाचार्य द्वारा **''एशियाटिक रसिया : पार्टनरशिप्स एंड कम्युनिटीज इन यूरेशिया''**, संपादित शिप्रा, नई दिल्ली, 2009. ए. शोगा द्वारा **''परम्परागत नागा गांव प्रणाली एवं इसके परिवर्तन''**, अशांश प्रकाशन हाऊस, नई दिल्ली, 2009. कृष्णन श्रीनिवासन एवं जेम्स बी.एल. मेयाल द्वारा **''नए क्षितिज की ओर : 21वीं सदी में विश्व कम''**, स्टैण्डर्ड प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009.

संस्थान के अध्येताओं द्वारा प्रकाशित अन्य पुस्तकें हैं: डा0 अनीता सेनगुप्ता द्वारा **''हर्टलैंड ऑफ यूरेशिया : द जिओपालिटिकल ऑफ पॉलिटिकल स्पेस''**, लनहम, बाउल्डर, न्यूयार्क, टोरंटो, ऑक्सफोर्ड : लैक्सिगंटन बुक्स, 2009. डा0 स्मृति गांगुली द्वारा **''भारत–रूस संबंध : 1992–2002 के दौरान संबंधों का रूप''**, डा0 अर्पिता बसु रे द्वारा **''समसामयिक अफगानिस्तान : विवाद एवं शांति निर्माण''**, संस्थान ने एक पत्रिका भी प्रकाशित की है : डा0 कौशिक बंदोपाध्याय द्वारा **''लोकप्रिय संस्कृति को समझना''** शीर्षक से एशिया वार्षिक 2008, संपादन।

4.1.8

केन्द्रीय बौद्ध अध्ययन संस्थान

केन्द्रीय बौद्ध अध्ययन संस्थान, लेह–लद्दाख एक अनुसंधान संस्थान है, जिसे पहले बौद्ध दर्शनशास्त्र विद्यालय के नाम से जाना जाता था तथा इसकी स्थापना परम पावन कुशोक बाकुला रिन्पोचे के सक्रिय सहयोग से स्वर्गीय पंडित जवाहर लाल नेहरू के आदेश से 1959 में की गई थी। वर्ष 1962 में संस्कृति विभाग, भारत सरकार ने संस्थान को वित्तपोषित करना आरंभ किया। बाद में इस संस्थान का उन्नयन कर स्नातक और स्नातकोत्तर उपाधि संस्थान के स्तर का करके सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी (उ0प्र0) से संबद्ध कर दिया गया। इस संस्थान का प्रबंधन एक प्रबंध मंडल के माध्यम से किया जाता है जिसके अध्यक्ष भारत सरकार, संस्कृति मंत्रालय के संयुक्त सचिव हैं।

इस संस्थान का मुख्य उद्देश्य बौद्ध चिंतन एवं साहित्य का ज्ञान प्रदान कर छात्रों के बहुआयामी व्यक्तित्व का विकास करना और साथ ही उन्हें आधुनिक विषयों, संकलनों, अनुवाद, दुर्लभ पांडुलिपियों के प्रकाशन तथा बौद्ध अध्ययन से जुड़ी अनुसंधान कृतियों से परिचित कराना है।

अपने लक्ष्यों एवं उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए संस्थान, युवा लामाओं एवं अन्य इच्छुक छात्रों को बौद्ध अध्ययन के सभी क्षेत्रों में सक्रिय रूप से शिक्षा प्रदान कर रहा है। यहां मूलतः भोटी भाषा के माध्यम से पढ़ाए जाने वाले बौद्ध दर्शन पर बल दिया जाता है। तथापि विद्यार्थियों के ज्ञान के दायरे में वृद्धि करने के लिए सामान्य विषय भी पढ़ाए जा रहे हैं। इसके अतिरिक्त आमची (भोट चिकित्सा), तिब्बती पट्टचित्र, मूर्तिकला और काष्ठ उत्कीर्णन में रुचि रखने वाले छात्रों को 6 वर्षीय पाठ्यक्रम प्रदान किया जाता है जिससे इस क्षेत्र की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को परिरक्षित किया जा सके। इस समय संस्थान के पुराने परिसर में कक्षा VI से VIII तक तथा नए परिसर में पूर्व माध्यम से आचार्य तक 642 छात्र अध्ययन कर रहे हैं। संस्थान द्वारा बौद्ध धर्म के क्षेत्र में डाक्टरेट की उपाधि के लिए कार्य कर रहे चार शोध छात्रों को अध्येतावृत्तियां भी प्रदान की जाती हैं।

फीडर और शाखा विद्यालय :

युवा भिक्षुओं को मठीय शिक्षा के अलावा बुनियादी प्रारंभिक शिक्षा प्रदान करने के लिए संस्थान द्वारा लद्दाख के विभिन्न मठों में 50 फीडर स्कूल (जिन्हें गोनपा/ननरी स्कूलों के नाम से जाना जाता है) चलाए जा रहे हैं। इस समय इन स्कूलों में छात्रों की कुल संख्या 1204 है। संस्थान का कारगिल जिले के जांस्कर में एक शाखा विद्यालय भी है, जहां कक्षा I से IX में पढ़ने वाले छात्रों की संख्या 219 है। उक्त विद्यालय में एक प्रधानाध्यापक संविदा आधार पर कार्य कर रहे हैं। पांच टी.जी.टी. सहित 7 टी.जी.टी. तथा पांच प्राथमिक शिक्षक तैनात हैं।

पुस्तकालय और संग्रहालय :

संस्थान का पुस्तकालय समस्त बौद्ध हिमालय क्षेत्र के सबसे अच्छे पुस्तकालयों में से एक है जिसमें भिन्न–भिन्न भाषाओं की 27,613 पुस्तकें हैं। इसके अतिरिक्त संस्थान द्वारा एक साधारण–सा पुरातात्विक संग्रहालय भी स्थापित किया गया है, जहां पुरावस्तुओं और कलाकृतियों का अच्छा संकलन है।

सेमिनार :

- संस्थान ने 15.6.2009 से 18.6.2009 तक ''पांच महाविद्या'' विषय पर चार दिवसीय अखिल भारतीय संगोष्ठी आयोजित की। संपूर्ण भारत के विभिन्न विश्वविद्यालयों/मठों से बड़ी संख्या में विद्वानों ने संगोष्ठी में भाग लिया और अपने आलेख प्रस्तुत किए। प्रो0 सुखदेव थोराट, माननीय अध्यक्ष, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, भारत, नई दिल्ली ने इस संगोष्ठी का उद्घाटन किया।

- संस्थान ने कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर के सहयोग से ''बौद्ध विचारों और धर्म के संबंध में कश्मीर का योगदान'' विषय पर दिनांक 14.9.2009 से 16.9.2009 तक तीन दिवसीय संगोष्ठी आयोजित की। इस संगोष्ठी में बड़ी संख्या में विद्वानों और विद्यार्थियों ने भाग लिया।

प्रकाशन :

संस्थान ने अब तक 54 दुर्लभ तथा बहुमूल्य पुस्तकें प्रकाशित की हैं जो 'न लाभ न हानि' आधार पर बेची जा रही हैं।

विश्वकोश :

संस्थान के प्रबंधन बोर्ड ने प्रो0 रमेश चन्द्र तिवारी के पर्यवेक्षण में हिमालयी बौद्ध संस्कृति विश्वकोश में संकलन संबंधी परियोजना को अनुमोदन प्रदान किया है। यह परियोजना पंचवर्षीय है और प्रस्ताव है कि इस विश्वकोश को 15 खंडों में संकलित किया जाए। विद्वानों को संविदा आधार पर काम पर लगा कर परियोजना आरंभ की गई है और 2 संपादकों तथा 3 अनुसंधान सहायकों की सहायता से मुख्य संपादक के निरीक्षण में इसे संचालित किया जा रहा है।

पांडुलिपि स्रोत और संरक्षण केन्द्र :

राष्ट्रीय पांडुलिपि मिशन, भारत सरकार ने केन्द्रीय बौद्ध अध्ययन संस्थान, लेह को लद्दाख क्षेत्र के लिए पांडुलिपि स्रोत केन्द्र और पांडुलिपि संरक्षण केन्द्र का दर्जा प्रदान किया है। तदनुसार, संस्थान, विद्वानों को संविदा आधार पर काम पर लगाकर सौंपे हुए कार्य को पूर्ण कर रहा है। इस संस्थान द्वारा लद्दाख क्षेत्र में उपलब्ध सभी पांडुलिपियों के प्रलेखन का प्रयास किया जा रहा है। रिपोर्टाधीन वर्ष के दौरान पांडुलिपियों के संरक्षण के लिए एक प्रयोगशाला स्थापित की गई और जागरूकता अभियान के भाग के रूप में निवारणात्मक और संरक्षात्मक संरक्षण के लिए लद्दाख के भिन्न–भिन्न बौद्ध विहारों में अनेक कार्यशालाओं का आयोजन किया गया।

व्याख्यान माला :

संस्थान में प्रबंध मंडल के अनुमोदन से गत वर्ष 2004 से कुशोक बाकुला रिंपौचे के नाम पर व्याख्यानमाला आरंभ की गई। छठी व्याख्यान माला के व्याख्यान जाने–माने बौद्ध विद्वान श्री वेन. लोकोस रिंपौचे द्वारा दिनांक 10 मई, 2009 से संस्थान के सभागार में दिए गए। अनेक विद्वानों, वरिष्ठ विद्यार्थियों और रूचि रखने वाले व्यक्तियों ने इस व्याख्यान माला में भाग लिया।

सेवाकालीन प्रशिक्षण :

रिपोर्टाधीन वर्ष के दौरान संस्थान ने लद्दाख स्वायत्त पर्वतीय विकास परिषद, लेह के साथ सहयोग से भोटी भाषा के जम्मू एवं कश्मीर सरकार और लेह स्थित प्राईवेट स्कूलों के शिक्षकों हेतु 21 दिन का भोटी उन्मुख पाठ्यक्रम आयोजित किया। जम्मू एवं कश्मीर के विभिन्न स्कूलों, गोपना/नुन्नरी स्कूलों तथा प्राईवेट स्कूलों के 120 शिक्षकों ने इन पाठ्यक्रमों में सक्रिय रूप से भाग लिया।

संस्थान ने अपनी स्थापना के 50 वर्ष पूरे करने पर वर्ष 2009 में अपना स्वर्ण जयंती वर्ष मनाया। इस अवसर पर संस्थान ने निम्नलिखित मुख्य कार्यक्रमों सहित विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये :

क) राष्ट्रीय संग्रहालय नई दिल्ली में दिनांक 5 जनवरी, 2009 से 11वीं शताब्दी की फ्रिस्को पेंटिंग के अलची बौद्ध मठ की भित्ति चित्रकारी की डेढ़ माह की प्रदर्शनी आयोजित की गई जिसका उद्घाटन श्री जवाहर सरकर, सचिव, भारत सरकार, संस्कृति मंत्रालय ने किया था। इस अवसर पर ''अलची–लद्दाख की सजीव विरासत'' नामक पुस्तक भी जारी की गई।

ख) संस्थान ने सरकारी और प्राइवेट स्कूलों के विद्यार्थियों को शामिल करके लद्दाख क्षेत्र के विभिन्न उच्च/उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में भोटी भाषा जागरूकता अभियान आयोजित किया।

ग) संस्थान ने 15 सरकारी और प्राइवेट उच्च तथा उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों को शामिल करके साहित्यिक अभियान अर्थात् पेंटिंग, निबंध लेखन, कविता पाठ और व्याख्यान प्रतियोगिता आदि कार्यक्रम आयोजित किये।

घ) संस्थान ने लद्दाख क्षेत्र के 2500 बौद्ध सन्यासियों को आमंत्रित करके दिनांक 22 अगस्त, 2009 को महामना दलाई लामा के पर्यवेक्षण में विश्व शांति और समृद्धि के लिये एक दिवसीय प्रार्थना सभा का आयोजन किया।

पूरे वर्ष चलने वाले इस कार्यक्रम के समापन समारोह की अध्यक्षता महामहिम राज्यपाल, जम्मू और कश्मीर, श्री एन.एन.वोहरा ने दिनांक 23 अक्तूबर, 2009 को की। इस अवसर पर श्री वोहरा ने केन्द्रीय बौद्ध अध्ययन संस्थान के कार्यकलापों के संबंध में स्मारिका के रूप में एक संदर्भ पुस्तक और डेढ़ घण्टे की डॉक्यूमेंटरी फिल्म जारी की। उन्होंने दो विद्वानों को इस क्षेत्र की सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण और विकास में किये गये उनके योगदान के लिये प्रत्येक को 10,000 रू. का नकद पुरस्कार भी दिया।

4.1.9

केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय

15 जनवरी, 2009 का वह दिन ''केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान'' के इतिहास में एक अत्यन्त महत्वपूर्ण दिन था, जब श्री दलाई लामा जी ने इस संस्थान के नूतन नामकरण का अनावरण किया– ''केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय''। इस महान् अवसर पर राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय बहुत सारे विद्वान् उपस्थित थे जो कि ''बौद्ध धर्म तथा विज्ञान'' पर आयोजित सम्मेलन के लिए यहाँ पर पधारे थे। यह नूतन नामकरण तकाजा करता है– नये कार्यों का, नये लक्ष्यों का तथा नयी आकांक्षाओं का, जिन्हें भविष्य में प्राप्त करने की उम्मीद सारी विश्वविद्यालय बिरादरी को है, तथा जिसके लिए वह प्रयासरत है।

ऐतिहासिक दृष्टि से देखा जाए, तो यह संस्थान लम्बे समय पहले 1967 में भारत सरकार ने स्थापित किया था, जो कि जवाहर लाल नेहरू तथा परम पावन दलाई लामा जी का संयुक्त उपक्रम तथा स्वप्न था। इस उपक्रम का मक्सद था– तिब्बती संस्कृति, भाषा, तथा चिन्तन को सुरक्षित रखना। शुरू–शुरू में यह संस्थान वाराणसी के सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय के एक अंग के रूप में कार्यरत रहा, और आगे चलकर, 1977 में एक स्वायत्त संस्थान के रूप में उभरा। और फिर, 1988 में उसे मान्य विश्वविद्यालय का दर्जा प्राप्त हुआ। यह संस्थान भारत सरकार के संस्कृति मन्त्रालय की आर्थिक सहायता से चलता आया है।

यह विश्वविद्यालय तिब्बती संस्कृति तथा छात्रवृत्ति की परम्परा को सुरक्षित रखने, विज्ञान तथा साहित्य के क्षेत्रों में मूल रूप में विलुप्त लेकिन तिब्बती अनुवादों में प्राप्य प्राचीन भारत की उपलब्धियों का पुनरुद्धार करना, भारत के हिमालयीन सीमा क्षेत्रों के छात्रों के लिये वैकल्पिक शिक्षा सुविधा प्रदान करना, आधुनिक विश्वविद्यालय व्यवस्था की परिसीमाओं के अंतर्गत तिब्बती विचारधारा तथा संस्कृति के क्षेत्रों में शिक्षा प्रदान कर अनुसंधान के आयाम उपलब्ध कराना और तिब्बती विद्याओं में उपाधियाँ प्रदान करना।

नवीन नाम का यह विश्वविद्यालय पिछले चालीस वर्षों से छात्रों को विद्वत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करता आ रही है। इसने पूर्वस्नातक तथा उत्तरस्नातक पाठ्यक्रमों के लिए निष्पादन मूल्यांकन की अपनी स्वंय की पद्यति विकसित की है। पारंपरिक तिब्बती शिक्षा–विधा के अनुसार शिक्षा प्रदान करने की ओर ध्यान दिया जाता है।

यह विश्वविद्यालय एम. फिल., पी–एच.डी. तथा पोस्ट–डॉक्टोरल अनुसंधान को भी प्रोत्साहित करता है तथा उसके लिए सुविधाएं प्रदान करता है। किसी समय नालंदा में प्रचलित पंच महाविद्या (''पॉच महान विज्ञान'') के आदर्श पर विश्वविद्यालय के विद्या–संकाय बनाए गए हैं।

विस्तार के लिए कार्यक्रम

विश्वविद्यालय पुणे में अपनी एक शाखा खोलने के बारे में विचार कर रहा है। यह दूरस्थ–शिक्षा का एक अलग पाठ्यक्रम कार्यान्वित करने, कनिष्ठ/वरिष्ठ

छात्रवृत्ति प्रदान करने और पहले से ही प्रचलित अंतर्राष्ट्रीय आदान–प्रदानों के अलावा विदेशी विश्वविद्यालयों के साथ और अधिक आदान–प्रदान कार्यक्रमों को बढ़ावा देने पर कार्य कर रहा है। विश्वविद्यालय जनसाधारण तक पहुँचने के उद्देश्य से एक चलती–फिरती शिक्षा–इकाई की योजना तैयार कर रह है। चिकित्सा (सोवारिगप्पा) और ललित कला आदि के नए पाठ्यक्रम शुरू किए गए हैं।

पुस्लकालय

शांतरक्षित ग्रंथालय बौद्ध दर्शन तिब्बती और हिमालयी अध्ययन तथा अनुसंधान की सुविधाओं के लिए अनुपम है। तिब्बती मूलपाठों के दुष्प्राप्य काष्ठलेखों का बृहत् संग्रह ग्रन्थालय में है। ग्रंथालय–व्यवस्था कम्प्यूटरीकृत है और उसमें इंटरनेट सुविधा उपलब्ध कराई गयी है। यह ग्रंथालय विश्वविद्यालय की शैक्षिक गतिविधियों का एक महत्त्वपूर्ण केंद्र है तथा उनके उद्देश्य के लिए यहाँ एक सभागृह भी है। समीक्षित वर्ष के दौरान 813 पुस्तकें ख़रीदी गयी तथा उपहार में प्राप्त हुईं। डिजिटल एम.पी. 3 फॉर्मेट सी.डी. तथा कैसेट्स का संग्रह भी यहाँ है। विश्वविद्यालय में आयोजित गोष्ठियों/सम्मेलनों, व्याख्यानों, अध्यापनों के रेकार्डिंग की डिजिटल एम.पी 3 फॉर्मेट सी.डी. तथा कैसेट्स का संग्रह भी यहाँ है। राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय शैक्षिक पत्रिकाएँ बड़ी संख्या में ग्रंथालय में मंगवाई जाती हैं। धर्मशाला के लाइब्रेरी ऑफ तिब्बतन वर्क्स एंड आर्काइब्ज में 150 खंडों में सुरक्षित तिब्बती त्रिपिटक के पेकिंग संस्करण के डिजिटाइजेशन की परियोजना अब पूरी हो चुकी है, तथा सी.डी. में सुरक्षित रखी गयी है।

अलग–अलग स्रोतों से प्राप्त की गयी बौद्ध संस्कृत पांडुलिपियों के एक बृहत् संग्रह का डिजिटाइजेशन किया जा रहा है। दार्शनिक तथा विवरणात्मक महान् बौद्ध ग्रंथों के समृद्ध संग्रह के अलावा, भारतीय कला, जेन, पुराण, विश्व के सभी धर्मों के महान् ग्रंथ, संस्कृत साहित्य–कृतियाँ, आयुर्वेद, तिब्बती चिकित्साशास्त्र, पाश्चात्य दर्शन, हिंदी तथा अंग्रेजी साहित्य–कृतियाँ, हिंदू दर्शन–प्रणालियाँ, हिमालयीन एवं हिमालयातीत देशों के यात्रा–विवरण आदि ग्रंथों का उल्लेखनीय संग्रह इस ग्रंथालय में समाविष्ट है। पालि रचनाओं का मौलिक तथा अनूदित संग्रह भी उल्लेखनीय है।

केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय तिब्बती संस्कृति को संरक्षित रखने और तिब्बती अनुवाद में संरंक्षित विज्ञान और साहित्य की प्राचीन भारतीय उपलब्धियों का पुनरुद्धार करने के लिए समर्पित है।

महत्त्वपूर्ण गतिविधियाँ तथा प्रमुख उपलब्धियाँ

हरिभद्र के "अशोकावदान" तथा "जातकमाला" के हिंदी अनुवाद का कार्य चल रहा है। "कुनसांग लामाई शालुंग" का हिंदी अनुवाद मुद्रित हो रहा है। "मध्यमकावतार" के अध्याय 6 का हिंदी अनुवाद पूरा हो चुका है। "महायान संग्रह" के प्रथम दो अध्याय का तिब्बती अनुवाद से संस्कृत में पुनरुद्धार तथा इन अध्यायों का हिंदी अनुवाद कार्य भी पूरा हो गया है। साथ ही साथ, दस अध्यायों का हिंदी अनुवाद पूरा हो चुका है। "मृत्युवंचना" का संस्कृत तथा तिब्बती दोनों संस्करणों का हिंदी तथा अंग्रेजी अनुवाद सहित आलोचनात्मक संपादन किया गया। ''द ट्री ट्रिट्राइज़ एण्ड वाटर ट्रिट्राइज़'' के संशोधित संस्करण को हिंदी अनुवाद सहित प्रकाशित किया गया है। "हरिभट्ट जातक" का हिंदी अनुवाद किया जा रहा है।

आचार्य अतिश के "बोधिपथप्रदीप पंजिका" के पाठ–पुनरुद्धार सहित आलोचनात्मक संस्करण का हिंदी अनुवाद का कार्य जारी है। तैयारी के तहत अन्य कृतियां इस प्रकार हैं:

- "महाव्युत्पत्ति" (आलोचनात्मक संस्करण)
- "स्ग्रा–स्ब्योर–बम–पो–ग्निस–पा" का आलोचनात्मक संस्करण
- "न्यायबिन्दु" (आलोचनात्मक संस्करण)
- आचार्य नागार्जुन की "युक्तिषष्टिका" का आचार्य चन्द्रकीर्ति की टीकासहित पुनरुद्धार तथा हिंदी अनुवाद
- आचार्य नागार्जुन के "धर्मधातुस्तव" का पुनरुद्धार तथा हिंदी अनुवाद
- आचार्य चोखापा के "बृहद्बोधिपथक्रम" का आलोचनात्मक संस्करण तथा हिंदी अनुवाद
- नागार्जुन के "पिंडीक्रम एवं पंचकर्म" का आलोचनात्मक संस्करण

विश्वविद्यालय ने "धीः" (अर्द्धवार्षिक पत्रिका) का 47 वॉं और 48वाँ अंक प्रकाशित किया। "संपुटतन्त्र", "गुह्यसमाजमंडलविधि" तथा "गुह्यसमाजतन्त्रटीकाप्रदीपोद्योतन" के संपादन का कार्य चल रहा है।

तिब्बती–संस्कृत शब्दकोश के 6वें खंड के लिए सामग्री जुटाने का कार्य चल रहा है। सोवारीगप्पा (तिब्बती चिकित्सा पद्धति) शब्दकोश के संकलन का कार्य पूरा हो गया है।

प्रकाशन

(i) पी. रॉय द्वारा संपादित ''बौद्ध धर्म, विश्व संस्कृति और मानव मूल्य'' (राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय पिछली तीन गोष्ठियों के चुनिंदा लेख) का प्रकाशन हो गया है। ।

(ii) "बौद्ध दर्शन तथा विज्ञान" पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन की कार्रवाई प्रकाशन के लिए तैयार की जा रही है।

(iii) निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशनार्थ तैयार हैं–

(1) दुर्लभ ग्रंथों की आधार सामग्री (भाग–4)

(2) महायान में अध्ययन

(3) सद्धर्मचिंतामणिमोक्षरत्नालंकार

(4) प्रमाणवार्तिक

(5) तीन बौद्ध विद्यालयों के अनुसार धर्मचक्रप्रवर्तन सूत्र

(6) गुरुसमन्तभद्रमुखागम (हिंदी अनुवाद सहित)

(7) आचार्य नागार्जुन का "सूत्रसमुच्चय"

(8) बौद्ध धर्म का परिचय

(9) अफगाानिस्तान में बौद्धधर्म का इतिहास

आयोजन

विश्वविद्यालय ने समीक्षाधीन अवधि के दौरान अनेक गोष्ठियाँ/सम्मेलन/कार्यशालाएँ/प्रदर्शनियाँ आयोजित कीं।

(i) 2009 के जनवरी में "बौद्ध दर्शन तथा विज्ञान" पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का परम पावन दलाई लामा जी ने उद्घाटन किया।

(ii) बहुविध चिकित्सा प्रणालियों पर दो दिन की कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में तिब्बती चिकित्सा प्रणाली, आयुर्वेद, ऐलोपैथी, ऐक्यूपंक्चर आदि प्रणालियों के चिकित्सकों ने हिस्सा लिया।

(iii) 22 सितंबर से 28 सितंबर, 2009 तक, ''कैलकुलस विदाउट लिमिट'' विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन ज्योतिष विभाग की ओर से किया गया। इस विभाग ने 1 नवंबर से 20 नवंबर, 2009 तक, प्रो. एडवर्ड हेनिंग्ज की व्याख्यान–शृंखला का आयोजन किया। विभाग के छात्रों को, भारतीय खगोल विज्ञान परिचय के अंशस्वरूप संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय की वेधशाला ले जाया गया।

(iv) 19 नवंबर से 21 नवंबर तक, दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रांगण में केंद्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय तथा दिल्ली विश्वविद्यालय संयुक्त रूप से "तिब्बत तथा उसकी संस्कृति" इस विषय पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया।

(v) जुलाई, 2009 में केंद्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय तथा गुजरात विश्वविद्यालय ने संयुक्त रूप से "हिंद स्वराज" पर एक कार्यशाला आयोजित की।

(vi) केंद्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय तथा पुणे विश्वविद्यालय के पालि एवं बौद्ध विद्या विभाग दोनों ने मिलकर ''बुद्धिस्ट टेक्सचुअल ट्रेडीशन'' पर एक अंतर्राष्ट्रीय विचार–गोष्ठी का आयोजन किया।

(vii) 21 नवंबर से 28 नवंबर, 2009 तक संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय के भूतपूर्व उपकुलपति प्रो. रामकरण शर्मा की "काव्यशास्त्र तथा चरक संहिता" पर सप्ताह भर की व्याख्यान–शृंखला का आयोजन किया गया।

(viii) महायान संस्कृत संहिताओं पर एक विचार–गोष्ठी का आयोजन जनवरी 2010 में किया गया।

4.1.10

नव नालन्दा महाविहार

नव नालन्दा महाविहार, जो प्राचीन नालन्दा विश्वविद्यालय स्थल के समीप इन्द्रपुष्करणी के किनारे पर अवस्थित है, वर्ष 1951 में बिहार सरकार द्वारा स्थापित किया गया था। यह संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन एक स्वायत संस्थान है। इसे नवम्बर, 2006 में मानित विश्वविद्यालय की मान्यता प्रदान की गई थी। महाविहार पालि एवं बौद्ध–दर्शन अध्ययन के आधार पर उच्च कोटि की नवीन शिक्षा पद्धति एवं शोध के लिये समर्पित है। महाविहार का उद्देश्य प्राचीन बौद्ध महाविहार की प्रणाली पर अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति का एक आवासीय शिक्षण केन्द्र विकसित करना और पालि भाषा तथा बौद्ध दर्शन का संस्कृत, तिब्बती, चीनी, मंगोलियाई, जापानी तथा अन्य एशियाई एवं यूरोपीय भाषाओं के माध्यम से उच्च शिक्षा एवं शोध के लिये शिक्षण तथा प्रशिक्षण प्रदान करना है। अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए महाविहार में पालि, प्रचीन इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व, दर्शनशास्त्र, तिब्बती, अंग्रेजी, हिन्दी, संस्कृत, चीनी एवं जापानी, बौद्ध शिक्षा तथा भाषा विभाग हैं।

नव नालन्दा का अपना परिसर है, जिसमें आकर्षक आधुनिक रूप में डिजाइन किया गया प्रशासनिक भवन, वाचनालय सहित एक पुस्तकालय भवन, जिसमें 52,000 मुद्रित पुस्तकें एवं अनेक दुर्लभ पांडुलिपियां हैं, दो छात्रावास, जिनमें से एक विदेशी छात्रों के लिए और दूसरा भारत के दूरस्थ स्थानों के बौद्ध–भिक्षु छात्रों के लिए, कैन्टीन, चिकित्सा केन्द्र हैं और एक नए संकाय भवन का निर्माण कार्य चल रहा है, जिसके मई, 2010 तक बनकर तैयार हो जाने की सम्भावना है। इस विश्वविद्यालय से सटा हुआ विश्वविख्यात **जुवानजंग स्मारक संग्रहालय भी** है। इस स्मारक के पास एक सांस्कृतिक–ग्राम भी है जिसमें एक शिल्पकार भवन, एक खुली नाट्यशाला तथा एक हाट भी है।

घटनाक्रम

नव नालन्दा महाविहार, भारतीय दर्शनशास्त्र, शोध परिषद्, नई दिल्ली तथा बहुजन हिताय शिक्षा न्यास, मनुबंकुल, सारभुम, दक्षिणी त्रिपुरा के संयुक्त तत्वाधान में दिनांक 10–12 अक्टूबर, 2009 को अगरतल्ला, त्रिपुरा में 'लिविंग बौद्धिज्म इन नार्थ–ईस्ट इंडिया' विषय पर एक राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित की गई। इस सेमिनार का उद्घाटन एवं अध्यक्षता महामहिम राज्यपाल, बिहार तथा महामहिम राज्यपाल, त्रिपुरा द्वारा किया गया। इस संस्थान और पुणे विश्वविद्यालय के बीच हुए समझौता ज्ञापन के अन्तर्गत दिनांक 21–23 दिसम्बर, 2009 तक पुणे में 'बुद्धिस्ट टैक्स्ट एण्ड ट्रेडीशन' विषय पर एक अंतरराष्ट्रीय सेमीनार का आयाजिन किया गया। यह एक संयोग ही था कि सेमीनार का आयोजन ऐसे समय पर किया जा रहा था जब पुणे विश्वविद्यालय अपना हीरक जयन्ती वर्ष मना रहा था।

डॉ. अमरेन्द्र नाथ, पूर्व निदेशक, पुरातत्व संस्थान द्वारा राजगीर में 'कल्चरल सीक्वेंस ऑफ एक्स्केवेटिड साइट घोराकटोरा' विषय पर दिनांक 2 अप्रैल, 2009 को एक विशेष व्याख्यान दिया गया। श्री सुजीत नयन, सहायक पुराविद्, पटना अंचल, द्वारा दिनांक 5 अप्रैल, 2009 को 'टेक्नीक्स ऑफ आरक्योलसॅजीकल एक्सप्लोरेशन एण्ड एक्सकेवेशन' विषय पर एक व्याख्या दिया गया। श्री जलज तिवारी, सहायक पुराविद्, पटना अंचल, द्वारा दिनांक 7 अप्रैल, 2009 को 'पॉटरीज़ फाउंड एट घोराकटोरा फ्रॉम नियोलिथिक पीरियड टू पास पीरियड' एक विषय पर व्याख्या दिया गया। 'हैरिटेज ऑफ नालन्दा एण्ड

इट्स कंटिन्युटी' विषय पर दिनांक 15–16 जून, 2009 तक दो–दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसका उद्घाटन महानिदेशक, भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण, द्वारा किया गया। इस कार्यशाला का आयोजन ए.एस.आई., पटना मण्डल के कार्यालस द्वारा संयुक्त रूप से किया गया था।

नव नालन्दा महाविहार के पाण्डुलिपि स्रोत केंद्र द्वारा नव नालन्दा महाविहार के सम्मेलन कक्ष में 'सूचना स्रोत के रूप में पाण्डुलिपि' विषय पर दिनांक 10 अगस्त, 2009 को प्रो. एस. के. पाठक, विश्व भारती, शान्तिनिकेतन, पश्चिम बंगाल के एक व्याख्यान का आयोजन किया गया।

संयुक्त राज्य अमरीका में उच्च शिक्षा के विभिन्न पहलू' विषय पर दिनांक 26 अगस्त, 2009 को श्री मौलिक डी. बरकाना, उप निदेशक, कन्सुलेट जनरल, संयुक्त राज्य अमेरिका, कोलकाता, द्वारा एक व्याख्यान दिया गया।

'नालन्दा एण्ड ओल्ड बागान' तथा 'फुट प्रिंट ऑफ बुद्धा' विषयों पर दिनांक 11–12 सितम्बर, 2009 को डा. वाल्डेमर क्रिस्टियन सेलर, क्रॉस कल्चरल एजूकेटर ऑफ अमेरिका द्वारा विशेष व्याख्यान दिये गये।

नव नालन्दा महाविहार द्वारा दिनांक 14 सितम्बर, 2009 को आयोजित किए गए 'हिन्दी दिवस' के अवसर पर हिन्दी भाषा के प्रख्यात लेखक श्री प्रेम कुमार मणि द्वारा 'हिंदी और वैश्वीकरण' विषय पर एक व्याख्यान दिया गया।

'नव नालन्दा सांस्कृतिक ग्राम का उन्नयन और विकास' विषय पर दिनांक 1–6 अक्टूबर, 2009 तक नव नालन्दा महाविहार द्वारा एक कार्यशाला का आयोजन किया गया।

'बौद्ध धर्म और विज्ञान में समय तथा वास्तविकता की अवधारणा' विषय पर नव नालन्दा महाविहार द्वारा दिनांक 22–25 अक्टूबर, 2009 तक आयोजित किए गए एक परिसंवाद में भारत के विभिन्न भागों के विज्ञान एवं दर्शनशास्त्र के प्रख्यात विद्वानों ने भाग लिया।

'अमरीका में बौद्ध धर्म' विषय पर सुश्री पेन, कन्सुलेट जनरल, वाणिज्य दूतावास कार्यालय, कोलकाता द्वारा दिनांक 16 दिसम्बर, 2009 को एक व्याख्यान दिया गया।

नव नालन्दा महाविहार का 58वां स्थापना दिवस, दिनांक 20 नवम्बर, 2009 को मनाया गया। इस अवसर पर श्री देवानन्द कुंवर, महामहिम राज्यपाल, बिहार, मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुए।

प्रकाशन

नव नालन्दा महाविहार द्वारा संकलित एवं प्रकाशित पालि–हिन्दी शब्दकोश (भाग दो) का विमोचन श्री देवानन्द कुंवर, महामहिम राज्यपाल, बिहार द्वारा दिनांक 13 नवम्बर, 2009 को राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली के प्रेक्षागृह में किया गया। इस अवसर पर श्री जवाहर सरकार, सचिव, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार, अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

पाली–हिन्दी कोश का विमोचन

4.2

संस्कृति मंत्रालय पुस्तकालय अनुभाग

पुस्तकालय देश के शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में सदैव एक अहम भूमिका निभाते हैं। पुस्तकालय सिर्फ पुस्तकों के संग्रह से युक्त एक भवन ही नहीं है बल्कि यह सूचनाओं एवं अवधारणाओं का स्रोत एवं भण्डार, अध्ययन एवं जांच स्थल, नए ज्ञान के सृजन एवं चिन्तन करने का स्थान भी है। सार्वजनिक पुस्तकालय खासकर, गरीब एवं अमीर के बीच सूचना के अंतर को कम करने में अहम् भूमिका निभाता है। इसके माध्यम से यह सुनिश्चित किया जाता है कि समाज के सभी वर्गों को आसानी से वह ज्ञान प्राप्त हो सके जिसे वे प्राप्त करना चाहते हैं।

पुस्तकालय एवं सूचना सेवा ज्ञान के अर्जन करने, इसका प्रचार–प्रसार करने, इसका इष्टतम उपयोग करने और अनुरक्षण के लिए मूलभूत आवश्यकता है। ये असमान समाज को एक समतावादी, प्रगतिशील, ज्ञानवान समाज के रूप में ढालने के यंत्र मात्र हैं। एक पुस्तकालय की गुणवत्ता की पहचान इसके संग्रह के आकार, प्रलेखन, संरक्षण, पुस्तक के परिरक्षण एवं प्रचार–प्रसार, धर्मग्रन्थों, पांडुलिपियों, दुर्लभ सामग्री आदि के ऊपर निर्भर करती है। भारत में पुस्तकालय का स्थान करीब–करीब सभी शैक्षिक संस्थानों, सरकारी तथा निजी क्षेत्रों के अभिन्न भाग के रूप में हो गया है। किसी संस्थान विशेष के पुस्तकालय के अतिरिक्त अनेक सार्वजनिक पुस्तकालयों ने आम जनों जैसे विद्वानों, प्रख्यात शिक्षाविदों, पाठकों, विद्यार्थियों, वरिष्ठ नागरिकों आदि की आवश्यकताओं को भी पूरा किया है। अतः पुस्तकालय ज्ञान का मुख्य द्वार है जहां इसके सदस्यों के प्रयोग हेतु सूचना एकत्र की जाती है।

भारत के संविधान के अनुसार पुस्तकालय राज्य सूची का मामला है। तथापि, सात ऐसे पुस्तकालय हैं जिन्हें भारत सरकार द्वारा प्रशासित एवं पूर्णतः वित्तपोषित किया जाता है। इनमें दो ऐसे पुस्तकालय शामिल हैं जो मंत्रालय के अधीनस्थ कार्यालय के रूप में कार्य करते हैं। इनके साथ–साथ तीन अन्य पुस्तकालय हैं जो स्वायत्त निकायों के रूप में कार्य कर रहे हैं तथा एक पुस्तकालय सरकार और इसके कर्मचारियों की आवश्यकताओं को पूरा कर रहा है। इस मंत्रालय द्वारा आंशिक रूप से वित्तपोषित तीन राज्य पुस्तकालय है। ये तीन राज्य पुस्तकालय निम्न हैं :

- राज्य केन्द्रीय पुस्तकालय, मुम्बई
- कोन्नेमारा सार्वजनिक पुस्तकालय, चेन्नई
- तंजावुर महाराजा सरफोजी सरस्वती महल पुस्तकालय, तंजावुर (तमिलनाडु)

संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा पूर्णतः वित्तपोषित पांच पुस्तकालय निम्न हैं :–

- राष्ट्रीय पुस्तकालय, कोलकाता
- केन्द्रीय संदर्भ पुस्तकालय, कोलकाता
- दिल्ली पब्लिक लाईब्रेरी, नई दिल्ली
- खुदा बख़्श ओरियंटल पब्लिक लाईब्रेरी, पटना
- रामपुर रज़ा पुस्तकालय, रामपुर (उत्तर प्रदेश)

इस मंत्रालय ने देश में सार्वजनिक पुस्तकालयों को विकसित करने के लिए राजा राममोहन राय पुस्तकालय प्रतिष्ठान, कोलकाता की स्थापना की है। यह पूरे देश के सार्वजनिक पुस्तकालयों को वित्तीय सहायता प्रदान करता है और पुस्तकालय विकास के लिए प्रोत्साहन कार्यकलाप भी करता है।

उक्त के अतिरिक्त, एक पुस्तकालय, नामतः केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार, शास्त्री भवन, नई दिल्ली में है जो संस्कृति मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण में है।

4.2.1

राष्ट्रीय पुस्तकालय

प्रस्तावना

राष्ट्रीय पुस्तकालय की स्थापना वर्ष 1948 में की गई थी और भारत के संविधान की संघ सूची की 7वीं अनुसूची के अनुच्छेद 62 में राष्ट्रीय महत्व की संस्था के रूप में विशेष दर्जा प्रदान किया गया है।

राष्ट्रीय पुस्तकालय वर्तमान में बेलवेडियर में स्थित है। अंतरित किया गया था। हालांकि यहाँ का वातावरण अध्ययन के अनुकूल है लेकिन इसके भौतिक विस्तार की संभावना इसका एक सकारात्मक पहलू है। पुस्तक संग्रह में तेजी से हो रही वृद्धि का समाधान करने के लिए 'भाषा भवन' नामक एक नए भवन का निर्माण किया गया है और अक्तूबर, 2004 से कार्य प्रारम्भ कर दिया गया है। इस वृहद् भवन का क्षे.फल 40,000 वर्ग मीटर है। भारतीय भाषा प्रभाग संग्रहण और अन्य प्रमुख संग्रहों को बेलवेडियर विरासत भवन से इस नए भवन में अंतरित कर दिया गया है।

कार्य

राष्ट्रीय पुस्तकालय के कार्य इस प्रकार हैं:–

- क्षणभंगुर सामग्री को छोड़कर सभी महत्वपूर्ण मुद्रित सामग्रियों को अधिप्राप्त करना तथा उनका सरंक्षण करना।
- कहीं से भी प्रकाशित भारत से संबंधित मुद्रित सामग्रियों का संग्रह करना तथा देश में उपलब्ध सिद्धांततः सामग्रियों के फोटो–रिकॉर्ड अधिप्राप्त करना।
- राष्ट्रीय महत्व की पांडुलिपियों का अधिग्रहण और संरक्षण करना।
- राष्ट्र के लिए अपेक्षित विदेशी सामग्रियों का योजनाबद्ध ढंग से अधिग्रहण करना।
- सामान्य एवं विशिष्ट दोनों तरह की वर्तमान एवं पूर्वव्यापी सामग्रियों की ग्रंथ–सूची तथा दस्तावेजी सेवा प्रदान करना। (इसमें देश के विभिन्न पहलुओं पर प्रचलित राष्ट्रीय ग्रंथ–सूचियों को तैयार करने का दायित्व अभिप्रेत है)
- ग्रंथ–सूची संबंधी सूचना के सभी स्रोतों की पूर्ण एवं सटीक जानकारी का प्रबंधन करने वाले संदर्श केन्द्र के रूप में कार्य करना तथा अंतर्राष्ट्रीय ग्रंथ–सूची गतिविधियों में भाग लेना।
- फोटोकॉपी तथा रिप्रोग्राफी सेवाओं का प्रावधान।
- अंतर्राष्ट्रीय पुस्तक विनिमय और अंतर्राष्ट्रीय धारक के केन्द्र के रूप में कार्य करना।

कार्यकलाप :

चल रही स्कीमें

पुस्तकालय के मूल कार्यकलापों के निष्पादन के लिए सतत स्कीमों के रूप में निम्नलिखित कार्यक्रम तय किए गए हैं:–

संग्रह निर्माण कार्यक्रम :

इस योजना का लक्ष्य पुस्तक परिदान (सार्वजनिक पुस्तकालय) अधिनियम, 1954 के व्यापक कार्यान्वयन द्वारा पठन सामग्रियों का संग्रह एवं प्रसार करना है; विदेशी प्रकाशनों की खरीद; विनिमय कार्यक्रम के अंतर्गत प्रकाशनों की अधिप्राप्ति तथा विविध स्रोतों से उपहार की प्राप्ति करना है।

पुस्तक परिदान (सार्वजनिक पुस्तकालय) अधिनियम को कारगार बनाने एवं

भारतीय प्रकाशकों से बड़ी संख्या में प्रकाशनों की प्राप्ति के लिए एक विशिष्ट अभियान चलाया गया है। भारत से बाहर की पुस्तकों तथा पत्र–पत्रिकाओं की खरीद द्वारा इस पुस्तकालय को समृद्ध बनाया गया है। यह विदेशी सरकारी प्रलेखों के एक निधान के रूप में कार्य करता है तथा इसे संयुक्त राष्ट्र की विभिन्न एजेंसियों के प्रकाशनों सहित अनेक भाषाओं के प्रकाशन भी प्राप्त होते हैं। यह पुस्तकालय विश्वभर के 95 देशों के 227 पुस्तकालयों एवं संगठनों/संस्थाओं के साथ विनिमय संबंध कायम किए हुए है। संग्रह निर्माण कार्यक्रम के संबंध में कुछ मुख्य मदें निम्नानुसार हैं :–

(क) नई पुस्तकों की खरीद पर व्यय की गई राशि : 98,66,975 रु.

(ख) विदेशी पत्रिकाओं के शुल्क पर व्यय की राशिः 4,18,88,547 रु.(ग) नई खरीदी गई पुस्तकों की संख्या : 2036 रू.

(घ) उपहार एवं विनिमय कार्यक्रम के अंतर्गत प्राप्त प्रकाशनों की संख्या : 1452 रू.

(ड) पु.परि. अधिनियम के अंतर्गत प्राप्त प्रकाशनों की संख्या : 29875 रू.

(च) प्राप्त हुए विदेशी सरकारी प्रलेखों की संख्या : 2680 रू.

(छ) प्राप्त हुईं पत्रिकाओं की संख्या : 15286 रू.

प्राप्त किये दस्तावेजों का पुस्तकों, आवधिक पत्रिकाओं और गैर–पुस्तक सामग्रियों को परिग्रहीत/अभिलेखित करके सुव्यवस्थित रूप से अनुरक्षण किया जाता है और इस प्रकार इन मदों की प्रोसेसिंग की जाती है तथा इन्हें संग्रह करने के लिये और पाठकों तथा शोधकर्ताओं की सेवा के लिये स्टोर किया जाता है। 570 माइक्रोफिल्म और माइक्रोफिचे परिग्रहित किये गये थे और 570 माइक्रोफिल्म और माइक्रोफिच को प्रोसेस किया गया था।

पाठक सेवा कार्यक्रम

कार्यक्रम का उद्देश्य वाचनालय सेवाओं को सुदृढ़ करना है। इस स्कीम में संदर्भ तथा ग्रंथसूची सूचना, वक्तावेज़ जारी करना, सीानिय, राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर दस्तावेज़ उधार देना, पाठकों को वैयक्तिक सहायता, प्रचलित पुस्तकों तथा पत्रिकाओं का प्रदर्शन तथा फोटोग्राफी की व्यवस्था तथा ऐसी अन्य सेवाएं उपलब्ध कराना शामिल हैं। इंटरनेट तथा डिजिटल सुविधाएं पुस्तकालय में शामिल की गई हैं। लगभग 327 पाठकों को डिजिटल सेवाएं उपलब्ध कराई गईं हैं।

इस पुस्तकालय में मुख्य रूप से तीन वाचनालय नामतः मुख्य वाचनालय, उपभवन वाचनालय तथा एस्प्लानेड वाचनालय हैं। ये वाचनालय दिनांक 26 जनवरी (गणतंत्र दिवस), 15 अगस्त (स्वतंत्रता दिवस) तथा 2 अक्तूबर (गांधी जयंती) को के अलावा वर्ष भर सप्ताह के सातों दिन खुले रहते हैं। दुर्लभ पुस्तक पंभाग, विज्ञान और प्रौद्योगिकी प्रभाग, तथा कुछ भाषा प्रभाग सभी कार्यदिवसों को कार्यालय समय में अपने प्रभागों में वाचन सुविधाएं उपलब्ध कराते हैं।

शोधार्थियों तथा विद्यार्थियों द्वारा वाचनालय सेवा का उपयोग किया जाता है। विदेशी तथा कोलकाता के बाहर के शोधार्थी अपने शोध के क्रम में इस पुस्तकालय के मूल्यवान संग्रह से लाभ उठाने के लिए निरंतर आते रहते हैं। पाठकों को उपलब्ध कराई गई सेवा का संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है :–

प्रदान वाचनालय सदस्यता की संख्या : 7133

पाठकों की उपस्थिति संख्या : 58556

पाठकों/शोधार्थियों को जारी किए गए खंडों की संख्या : 110999

पाठकों/शोधार्थियों को निर्गत किए गए खंडों की संख्या : 6784

उपलब्ध कराई गई जिरॉक्स प्रतियों की संख्या : 123534

पाठकों को उपलब्ध कराई गई माइक्रोफिल्म निगेटिव और पाठक मुद्रित प्रति की संख्या (पृष्ठ) : 5200

संरक्षण कार्यक्रम :

यह पुस्तकालय गत एक सौ सत्तर वर्षो के दौरान वृहद् संख्या में पुराने तथा भंगुरित प्रकाशनों का संग्रह कर चुका है। इस पुस्तकालय के तीन एकक हैं अर्थात– रिप्रोग्राफी, प्रयोगशाला तथा जिल्दसाजी, बहुमूल्य प्रलेखों व उनकी सूचना सामग्री के भौतिक संरक्षण से सीधे जुड़े हैं।

प्रयोगशाला एकक दीमक तथा अन्य कीटों से काफी पुराने तथा भंगुरित प्रलेखों का बचाव करने के लिए उनका रासायनिक उपचार करता है। यह पांडुलिपियों सहित दुर्लभ, भंगुर तथा विकृत प्रलेखों की मरम्मत व जीर्णोद्धार करता है जो विभिन्न प्रक्रियाओं जैसे गैर–अम्लीकरण, गैर–लेमिनेशन, धूम्रीकरण, इन्कैप्सुलेशन आदि पर आधारित होता है। इस संबंध में 14677 दस्तावेज गैर–अम्लीकृत किये गये थे, 26663 शीटों को लैमिनेट किया गया था जबकि 248 शीटों को इन्कैप्सुलेट किया गया था।

रिप्रोग्राफी एकक पुराने विनिबंधों, प्रलेखों, समाचार–पत्रों या दुर्लभ प्रलेखों की माइक्रोफिल्म व माइक्रोफिश तैयार करता है जबकि परिरक्षण प्रभाग प्रलेखों तथा आवधिक पत्र–पत्रिकाओं की मरम्मत तथा जिल्दसाजी का कार्य करता है। इस प्रकार 2707 खण्डों की मरम्मत की गई और 1468 खण्डों की जिल्दसाजी की गई थी।

यह पुस्तकालय अनुरोध करने पर पुस्तकालय व्यावसायिकों को संरक्षण व परिरक्षण में प्रशिक्षण तथा अन्य पुस्तकालयों को परामर्शदायी सेवाएं भी मुहैया कराता है।

आधुनिकीकरणः

यह पुस्तकालय अपनी गतिविधियों का चरणवार स्वचालन

करने की प्रक्रिया में है। आधुनिकीकरण और कम्प्यूटरीकरण के लिए आधारभूत अवसंरचना प्राप्त कर ली गई है। प्रोसेसिंग इकाईयों के कार्यकलापों का कम्प्यूटरीकरण कर दिया गया है। मौजूद दस्तावेजों को मशीन रीडेबल फॉर्मेट में संसाधित किया जा रहा है। चल रहे आधुनिकीकरण की दो अन्य परियोजनाओं में ग्रंथसूची रिकॉर्ड का रेट्रो–कनवर्जन और पुराने तथा दुर्लभ दस्तावेजों का डिजिटाइजेशन शामिल है।

क) **रेट्रो–कंवर्जन** – रेट्रो–कनवर्जन परियोजना के अंतर्गत पॉच एजेंसियॉ जिन्होंने मार्क–21 में ग्रंथसूचीकरण रिकॉर्ड के लिए मार्क फॉर्मेट में डाटा तैयार किया था पुस्तकों की बार कोडिंग का कार्य पूरा कर लिया है और डाटा को सर्वर पर अपलोड कर दिया गया है। यह एक चलती रहने वाली परियोजना है।

ख) **डिजिटाइजेशन** –_पुस्तकालय ने 9 हजार दस्तावेजों (3,20,000 पृष्ठों) का डिजिटीकरण पहले ही कर दिया है।_यह भी एक चलती रहने वाली परियोजना है। पुराने तथा दुर्लभ दस्तावेजों के 10 लाख पृष्ठों के डिजिटीकरण और माइक्रोफिल्मिंग के लिए निविदाएं जारी की गई हैं।

पुस्तकालय प्रयोक्ताओं को गतिज वैबसाइट के जरिए निम्नलिखित सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए अब तैयार है:

- अपने संग्रह के किसी हिस्से की ग्रंथसूची की जानकारी
- स्कैन की गई पुस्तकों की ग्रंथसूची की जानकारी
- माह की पुस्तकें
- सदस्यों का ऑनलाइन पंजीकरण
- पुस्तकों का ऑनलाइन आरक्षण
- ई–मेल के जरिए प्रतिक्रियाएं
- भुगतान सुविधा

विस्तार कार्य

हिन्दी कार्यशाला :

राष्ट्रीय पुस्तकालय के कर्मचारियों के लिए 7 से 9 जनवरी, 2009 को राष्ट्रीय पुस्तकालय में एक हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। श्री हिंमाशु कुमार, प्रोफेसर, प्रेसीडेंसी कॉलेज, कोलकाता, हिन्दी विभाग माननीय अतिथि के रूप में उपस्थित थे। एक अन्य हिन्दी कार्यशाला का आयोजन 27 मई, 2009 को केवल वरिष्ठ अधिकारियों के लिए किया गया। श्री सतीश पाण्डे, प्रशिक्षण अधिकारी, केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो, कोलकाता इस अवसर पर मुख्य अतिथि थे। 1 सितम्बर से 15 सितम्बर, 2009 तक हिन्दी पखवाड़े का भी आयोजन किया गया। मुख्य कार्यक्रम हिन्दी दिवस अर्थात 14 सितम्बर, 2009 को आयोजित किया गया था। डा0 अरूण होता, प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, पश्चिम बंगाल राज्य विश्वविद्यालय, बारासात माननीय अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

गणतंत्र दिवस का आयोजन :

26 जनवरी को 60वें गणतंत्र दिवस का आयोजन किया गया। पुस्तकालय के मुख्य गेट पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया। पुस्तकालय के सुरक्षा कर्मियों द्वारा बहुत ही बढ़िया ढंग से गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया।

बैठकें और व्याख्यान :

ब्रिटिश पुस्तकालय, लन्दन के सहयोग से 2 फरवरी, 2009 को भाषा भवन के सम्मेलन कक्ष में एक व्याख्यान का आयोजन किया गया। स्कॉटलैंड के राष्ट्रीय पुस्तकालय के जन उशर द्वारा ''ब्रिटिश इंडिया का चिकित्सा इतिहास ऑनलाइन परियोजना'' विषय पर एक व्याख्यान दिया गया। श्री मार्टिन वाडे, निदेशक, राष्ट्रीय पुस्तकालय, स्कॉटलैंड भी इस अवसर पर उपस्थित थे। राष्ट्रीय पुस्तकालय अधिकारियों तथा स्कॉटलैंड के राष्ट्रीय पुस्तकालय के प्रतिनिधिमंडल के बीच एक बैठक का आयोजन किया गया, जिसमें दोनों संस्थाओं के निदेशक तथा ब्रिटिश परिषद के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे। विचार–विमर्श के दौरान, आपसी सहयोग, संसाधन शेयरिंग तथा साझा हित के कई अन्य मुद्दों पर विस्तार से चर्चा हुई।

कार्य योजना, लक्ष्य और उपलब्धियॉ, विरासत भवन का जीर्णोद्धार और भविष्य में उसका उपयोग आदि जैसे मुद्दों पर विचार–विमर्श करने के लिए नवम्बर, 2009 में दो बैठकें (i) राष्ट्रीय पुस्तकालय के सलाहकार बोर्ड और (ii) विरासत भवन समिति आयोजित की गईं।

विश्व भारती, शांतिनिकेतन में पुनरूद्धार/संरक्षण :

राष्ट्रीय पुस्तकालय, कोलकाता को विश्व भारती के रविन्द्र भवन, कला भवन और संगीत भवन के कला कार्यों (चित्रकारी, भित्तिचित्रों, मूर्तियों इत्यादि) पाण्डुलिपियों, पुस्तकों एवं अन्य दस्तावेजों के पुनरूद्धार एवं सरंक्षण की जिम्मेवारी सौंपी गई है। सचिव (संस्कृति) की अध्यक्षता में एक उच्चाधिकार प्राप्त समिति ने विश्वविद्यालय के अधिकारियों के साथ विचार–विमर्श करने के लिए अप्रैल, 2009 में विश्व भारती का दौरा किया।

प्रदर्शनी :

आशुतोष के संग्रह की स्थापना के 60वें वर्ष के अवसर पर, नवम्बर, 2009 में भाषा भवन की आर्ट गैलरी में पुस्तकों, तस्वीरों तथा अन्य दुर्लभ एवं मूल्यवान दस्तावेजों की एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

लेखक गैलरी

लेखकों और विद्वानों के लिए उपयुक्त स्थान उपलब्ध कराने के लिए भाषा भवन की बालकनी में भारतीय लेखक गैलरी का उद्घाटन किया गया। सचिव (संस्कृति) द्वारा कवि रविन्द्रनाथ टैगोर की 9 फुट उॅची कॉस्य प्रतिमा का अनावरण किया गया।

4.2.2

राजा राममोहन राय पुस्तकालय प्रतिष्ठान

संस्कृति मंत्रालय के अधीन एक पूर्णतः वित्तपोषित स्वायत्त संगठन, राजा राममोहन राय पुस्तकालय प्रतिष्ठान की स्थापना मई, 1972 में महान राजा, जिन्होंने नवजागरण और आधुनिकता की घोषणा की तथा देश में शिक्षा के प्रसार के लिए अत्यधिक कार्य किया, की द्विशतवार्षिक वर्षगांठ के शुभ अवसर पर की गई थी। प्रतिष्ठान का मुख्य उद्देश्य, पुस्तकालय सेवा के क्षेत्र में कार्यरत राज्य पुस्तकालय प्राधिकारियों, संघ क्षेत्रों और स्वैच्छिक संगठनों के सक्रिय सहयोग से उपयुक्त पुस्तकालय सेवाएं प्रदान करके तथा विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में पढ़ने की आदत को लोकप्रिय बनाकर देश में सार्वजनिक पुस्तकालय आंदोलन का संवर्धन और सहायता करना है।

प्रतिष्ठान अपने सीमित संसाधनों के साथ, पुस्तकालय आंदोलन को बढ़ावा देने का प्रयास कर रहा है तथा दो प्रकार की स्कीमों – मैचिंग और गैर–मैचिंग के कार्यान्वयन के साथ पूरे देश में पुस्तकालय सेवाओं का विकास करता है इन स्कीमों का ब्यौरा नीचे दिया गया है :–

क) मैचिंग स्कीम :

- पुस्तकों का पर्याप्त स्टॉक बढ़ाने के लिए सहायता;
- चुस्तकालय के लिए स्टेक तथा वाचनालय फर्नीचर खरीदने के लिए सहायता;
- सेमिनार, कार्यशाला, पुस्तक प्रदर्शनियों तथा जागरूकता कार्यक्रम के आयोजन के लिए सहायता;
- शैक्षणिक उद्देश्यों के लिए टी.वी.–सह–वी सी आर सेट और कैसेट/पुस्तकालय अनुप्रयोग के लिए कम्प्यूटर प्राप्त करने के लिए सार्वजनिक पुस्तकालयों को सहायता;
- स्थान बढ़ाने के लिए सार्वजनिक पुस्तकालयों को सहायता;
- मोबाइल पुस्तकालय सेवा के विकास हेतु सहायता।

ख) गैर–मैचिंग स्कीम :

- केन्द्रीय चयन के माध्यम से पुस्तकें प्रदान करने के लिए राज्य, केन्द्र और जिला पुस्तकालयों को सहायता;
- सार्वजनिक पुस्तकालय के क्षेत्र में कार्यरत स्वैच्छिक संगठनों/गैर–सरकारी संगठनों को सहायता;
- केन्द्रीय प्रायोजित पुस्तकालयों को सहायता;
- बाल पुस्तकालयों और सामान्य सार्वजनिक पुस्तकालयों के बाल–अनुभाग/वरिष्ठ नागरिक अनुभाग/महिला अनुभाग आदि के लिए सहायता;
- 50 वर्ष/75 वर्ष/शताब्दी वर्ष/125 वर्ष/150 वर्ष/175 वर्ष इत्यादि समारोह मनाने के लिए सार्वजनिक पुस्तकालयों को सहायता;
- सार्वजनिक पुस्तकालय विकास/पुस्तकालय आंदोलन में कार्यरत व्यावसायिक संगठनों, स्थानीय निकायों, गैर–सरकारी संगठनों तथा

विश्वविद्यालय पुस्तकालय विज्ञान विभागों द्वारा सेमिनार, सम्मेलन के आयोजन के लिए सहायता;

- सरकारी और गैर–सरकारी एजेंसियों के माध्यम से पुस्तकालय सांख्यिकीय के संग्रह और संकलन के लिए सहायता;
- बाल–कार्नर की स्थापना के लिए सहायता।

मैचिंग स्कीमें, राज्य सरकार और संघ क्षेत्र तथा प्रतिष्ठान के बराबर मैचिंग शेयर द्वारा दिए गए अंशदान से तैयार की गई मैचिंग निधि से कार्यान्वित की जा रही हैं। मैचिंग शेयर विकसित राज्यों के लिए पहले जैसा अर्थात् 50:50 ही है, पूर्वोत्तर क्षेत्र के राज्यों को छोड़कर विकासशील और पिछड़े राज्यों के लिये मैचिंग शेयर 40:60 है, जिसमें 40 प्रतिशत राज्य का अंशदान है तथा शेष 60 प्रतिशत प्रतिष्ठान का मैचिंग शेयर होता है और पूर्वोत्तर राज्यों के लिए यह अनुपात 10:90 है जिसमें 10 प्रतिशत राज्य का अंशदान है एवं 90 प्रतिशत मैचिंग शेयर है। आकार, जनसंख्या, साक्षरता दर, विद्यमान बुनियादी सुविधाएं और पिछले उपयोग के आधार पर अंशदान 1 लाख रु. से 150 लाख रु. के बीच हो सकता है, जबकि गैर–मैचिंग स्कीमें पूर्णतया प्रतिष्ठान के अपने संसाधनों द्वारा संचालित होती हैं।

उपलब्धियां :

रिपोर्टाधीन वर्ष के दौरान प्रतिष्ठान द्वारा चालू वित्तीय वर्ष 2009–10 की समाप्ति तक, मैचिंग और गैर–मैचिंग, दोनों स्कीमों के अन्तर्गत पूरे देश में फैले 12,000 पुस्तकालयों के लिए 4000 लाख रु. (लगभग) की सहायता प्रदान किए जाने की संभावना है।

वित्त पोषण निकाय होने के अलावा, प्रतिष्ठान, पूरे देश में स्थित सार्वजनिक पुस्तकालयों के समन्वय, मानीटरिंग और विकास के लिए भारत सरकार की एक नोडल एजेंसी के रूप में कार्य कर रहा है। वर्ष के दौरान यह प्रतिष्ठान त्रैमासिक न्यूजलेटर प्रकाशित करता है जिसमें न केवल प्रतिष्ठान के कार्यकलापों का उल्लेख किया जाता है अपितु इसमें देश के विभिन्न भागों और विदेश में आयोजित की जाने वाली पुस्तकालय सेवाओं के संबंध में महत्वपूर्ण समाचारों का प्रचार–प्रसार भी किया जाता है। यह प्रतिष्ठान एक त्रैमासिक जर्नल **'ग्रंथन'** भी प्रकाशित करता है जो पुस्तकालय अध्ययनों और अन्य विषयों से संबंधित मूल लेखों, सर्वेक्षण रिपोर्टों आदि के प्रकाशन का एक माध्यम है। यह प्रतिष्ठान, पुस्तकालय और सूचना विज्ञान व सम्बद्ध विषयों पर पुस्तकों और जर्नलों के लिए विशेष पुस्तकालय भी चलाता है तथा इसके स्टाक को बढ़ाने के लिए 1.50 लाख रु. की पुस्तकें और 3.0 लाख रु. के जर्नल खरीदता है।

प्रतिष्ठान ने पढ़ने वाले लोगों को बेहतर सेवाएं प्रदान करने के लिए देश के सार्वजनिक पुस्तकालयों को प्रेरित करने हेतु 2001–02 से देश में सर्वश्रेष्ठ राज्य केन्द्रीय विद्यालय तथा 6 अंचलों में से प्रत्येक में सर्वश्रेष्ठ जिला पुस्तकालय के लिए आर. आर. आर. एल. एफ. पुरस्कार शुरू करने का निर्णय लिया। प्रतिष्ठान ने पिछले वर्ष से प्रत्येक राज्य और संघ राज्य क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ ग्रामीण पुस्तकालय पुरस्कार शुरू किया है। पुरस्कार की नकद राशि सर्वश्रेष्ठ राज्य केन्द्रीय पुस्तकालय के लिए 1,00,000 रु., प्रत्येक अंचल में, प्रत्येक सर्वश्रेष्ठ जिला पुस्तकालय के लिए 50,000 रु. और प्रत्येक राज्य व संघ राज्य क्षेत्र में प्रत्येक सर्वश्रेष्ठ ग्रामीण पुस्तकालय के लिए 25,000 रु. है।

यह प्रतिष्ठान सार्वजनिक पुस्तकालय सेवाओं और पद्धतियों/पुस्तकालय सूचना विज्ञान के विकास पर व्यावसायिक लेख के संबंध में योगदान करने के लिये राजा राममोहन राय पुस्तकालय प्रतिष्ठान पुरस्कार भी प्रदान करता है।

प्रतिष्ठान ने वर्ष 2001–2002 से पुस्तकालय सेवा के क्षेत्र में लब्ध–प्रतिष्ठित पुरूषों एवं महिलाओं जिन्होंने देश में पुस्तकालय आंदोलन में इससे संबंधित अभियान, संगठनात्मक पहल अथवा बौद्धिक नेतृत्व में सक्रिय भागीदारी से योगदान किया है, को राजा राममोहन राय पुस्तकालय प्रतिष्ठान अध्येतावृत्ति भी शुरू की है। इस अध्येतावृत्ति के अंतर्गत संबंधित क्षेत्र में अध्येता द्वारा दी गई सेवाओं का ब्यौरा देने वाले प्रशस्ति–पत्र और स्मृति चिन्ह के अलावा 50,000/– रु. का नकद पुरस्कार दिया जाता है।

महत्वपूर्ण कार्यक्रम :

हिन्दी के राजभाषा के रूप में प्रयोग को बढ़ावा देने और इसके प्रति चेतना और जागरूकता पैदा करने के लिये प्रतिष्ठान ने दिनांक 17 सितम्बर, 2009 को हिन्दी दिवस मनाया। श्री रीता भट्टाचार्य, पूर्व–मुख्य प्रबंधक (राजभाषा), यूनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया, मुख्यालय, कोलकाता और सचिव, केलटोलिक (बैंक) तथा श्रीमती पूनम दीक्षित, सहायक निदेशक (राजभाषा), हिन्दी शिक्षण स्कीम, कोलकाता इस अवसर पर क्रमशः मुख्य अतिथि और विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित थी जबकि श्री के.के. बनर्जी, निदेशक राजा राममोहन राय पुस्तकालय प्रतिष्ठान ने इस समारोह की अध्यक्षता की थी। इस कार्यक्रम को अत्यधिक आकर्षक बनाने और दिन–प्रतिदिन के कार्य में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिये अधिकारियों को प्रोत्साहन देने के लिये निम्नलिखित प्रतियोगिताएं आयोजित की गई थीं:–

i) हिन्दी वाद–विवाद प्रतियोगिता (हिन्दी न जानने वाले कर्मचारियों के लिये)

ii) हिन्दी पैराग्राफ पठन प्रतियोगिता (हिन्दी न जानने वाले कर्मचारियों के लिये)

iii) हिन्दी कविता लेखन प्रतियोगिता (हिन्दी भाषी

कर्मचारियों के लिये)

iv) हिन्दी पैराग्राफ पठन प्रतियोगिता (समूह 'घ' के कर्मचारियों के लिये)

v) हिन्दी कविता पाठ प्रतियोगिता (संविदा और सुरक्षा कर्मचारियों के लिये)

हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले कर्मचारियों की हिन्दी में कार्य करने की हिचकिचाहट को दूर करने के लिये दिनांक 17 सितम्बर, 2009 को इस प्रतिष्ठान के कार्यालय में एक हिन्दी कार्यशाला आयोजित की गई थी। श्रीमती गीता भट्टाचार्य क्रमशः राजभाषा नीति, नियमावली, अधिनियम और वार्षिक कार्यक्रम तथा कार्यात्मक हिन्दी पर व्याख्यान दिए।

राजभाषा नियमों के प्रावधान के अनुसार भारत सरकार के 3 अधिकारियों को रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान हिन्दी में कार्य करने के लिये प्रोत्साहन स्कीम के तहत पुरस्कार प्रदान किये गये हैं।

अपने अन्य प्रोत्साहन कार्यकलापों के भाग के रूप में इस प्रतिष्ठान ने अपनी वित्तीय सहायता का विस्तार विभिन्न व्यावसायिक संगठनों जैसे पुस्तकालय और सूचना विज्ञान के लिये प्रोफेसर कोला अक्षयनिधि, आंध्र प्रदेश, केन्द्र सरकार पुस्तकालय संघ, देहरादून, पश्चिम बंगाल सार्वजनिक पुस्तकालय संघ, कोलकाता, दिल्ली विश्वविद्यालय, इजलिक, आईसीडीएल 2010 इत्यादि को अनेक संगोष्ठियां आयोजित करने के लिये किया है।

पूर्वोत्तर क्षेत्र में कार्यकलाप :

इस प्रतिष्ठान की मैचिंग और गैर–मैचिंग स्कीमें पूर्वोत्तर राज्यों सहित पूरे देश में कार्यान्वित की जा रही हैं। ये मैचिंग स्कीमें 10:90 के अनुपात, जिसमें 10 राज्य हिस्सेदारी है और 90 प्रतिष्ठान की हिस्सेदारी है, में राज्य सरकार के अंशदान और केन्द्र सरकार के अनुदान से बनाई गई संयुक्त निधि से संचालित की जाती हैं जबकि गैर–मैचिंग स्कीमें पूर्णतः केन्द्रीय निधि से कार्यान्वित की जाती हैं। इस प्रतिष्ठान की सहायता से बनाए गए राज्य केन्द्रीय पुस्तकालय, मिजोरम का शीघ्र ही उद्घाटन किया जाने वाला है। राज्य केन्द्रीय पुस्तकालय, त्रिपुरा जिसे पुराना सचिवालय विरासत भवन में अंतरित किया गया है, का नवीकरण और आधुनिकीकरण इस प्रतिष्ठान की सहायता से किया जा रहा है।

अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति :

इस प्रतिष्ठान से सहायता प्राप्त और प्रोत्साहित सार्वजनिक पुस्तकालयों ने जाति, मत, धर्म, लिंग, भाषा, आर्थिक स्थिति और शैक्षिक योग्यता के भेदभाव के बिना लोगों की सेवा की। स्वाभाविक रूप से इसकी सभी स्कीमों से अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों से संबंधित व्यक्ति लाभांवित होते हैं। इस प्रतिष्ठान की नीतियों में से एक नीति ग्रामीण, सुदूरवर्ती और जनजातीय क्षेत्रों में रहने वाले व्यक्तियों पर विशेष ध्यान देने की रही है। संक्षेप में, प्रतिष्ठान की नीतियां और कार्यक्रमों का उद्देश्य आम जनता की सेवा करना है, जिसमें अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति से संबंधित लोगों सहित समुदाय में कमजोर और सुविधाविहीन वर्गों पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

महिला लाभार्थी :

देश के चारों कोनों में फैले सार्वजनिक पुस्तकालय नेटवर्क जाति, मत, धर्म और लिंग का भेदभाव किए बिना सभी वर्ग के नागरिकों को अपनी सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। महिला लाभार्थियों की संख्या स्थान–दर–स्थान के आधार पर भिन्न–भिन्न होती है। यह संबंधित स्थान की साक्षरता प्रतिशतता और सामाजिक प्रथाओं पर निर्भर होती है। प्रतिष्ठान के प्रभाव पर प्रतिष्ठान द्वारा किए गए सर्वेक्षण से यह पता चला है कि आने वाले कुल सदस्यों में लगभग 30 प्रतिशत महिला सदस्य हैं। तथापि, प्रतिष्ठान ने महिला ग्राहकों की सदस्यता बढ़ाने के विचार से 'महिला अनुभाग' खोलने के इच्छुक पुस्तकालयों को सहायता देने के लिए एक नई स्कीम शुरू की है।

हिन्दी कार्यशाला

4.2.3

दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी

दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी की स्थापना वर्ष 1951 में यूनेस्को के वित्तीय और तकनीकी सहयोग से एक मार्गदर्शी परियोजना के रूप में की गई थी। इस पुस्तकालय का उद्‌घाटन शरत के तत्कालीन प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू द्वारा 27 अक्तूबर, 1951 को किया गया था। पुरानी दिल्ली स्थित एक छोटे से पुस्तकालय से दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी आधुनिक शरत की एक प्रमुख सार्वजनिक पुस्तकालय प्रणाली के रूप में विकसित हो गई है। दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी का उद्‌देश्य आयु, जाति, लिंग, धर्म, शषा तथा सामाजिक श्रेद–शव के बिना दिल्ली के नागरिकों को निःशुल्क पुस्तकालय एवं सूचना सेवाएं प्रदान करना है। दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी दक्षिण पूर्व एशिया की व्यस्ततम पब्लिक लाइब्रेरियों में से एक है। यह वर्तमान में संस्कृति मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण में कार्य कर रही है।

संध शासित क्षेत्र दिल्ली में स्थित दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी के नेटवर्क में केंद्रीय पुस्तकालय, एक क्षेत्रीय पुस्तकालय, तीन शाखा पुस्तकालय, 26 उप–शाखा पुस्तकालय, 6 समुदाय पुस्तकालय, 14 पुनर्वास बस्ती पुस्तकालय, दृष्टिहीन पाठकों के लिए एक ब्रेल पुस्तकालय, 59 चल पुस्तकालय सेवा केंद्र तथा 26 निक्षेप केंद्र शामिल हैं।

दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी लोगों को निशुल्क पुस्तकालय सेवाएं प्रदान करने के अलावा सामाजिक शिक्षा के लिए मंच प्रदान करके सदस्यों की प्रतिभा और संभावना को उभारने के लिए उनकी मनोरंजनात्मक आवश्यकताओं को भी पूरा करती है। लाइब्रेरी पाठकों में ज्ञान एवं संस्कृति के प्रचार–प्रसार के लिए एक केन्द्र के रूप में अपनी सेवाओं का निरंतर विस्तार कर रही है। पुस्तकों के अतिरिक्त सदस्यों को ऑडियो/विडियो कैसेट तथा डी.वी.डी. निःशुल्क परिचालित कर रही है।

सशी सेवा केंद्रों में वाचनालय सेवाएं उपलब्ध हैं। दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी पुस्तक परिचालन के अतिरिक्त अपने पाठकों को संदर्श एवं फोटो कॉपी जैसी सेवाएं शी प्रदान कर रही है।

दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी में दिसम्बर 2009 तक 59,376 सदस्यों के लिए कुल 18,29,452 पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तकालय की सभी शाखाओं में कुल 10,44,030 पुस्तकें जारी की गईं और एक दिन में 3,283 पुस्तकें जारी की जाती हैं। पुस्तकालय ने विभिन्न भाषाओं की 66,456 पुस्तकें खरीदीं। दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी को डी.बी. अधिनियम, 1954 के अंतर्गत सभी भारतीय भाषाओं की 28,000 से अधिक पुस्तकें प्राप्त हुईं। कुल 323456 पाठकों ने वाचनालय का उपयोग किया और संदर्भ खण्ड में कुल 1,25,576 पुस्तकें पढ़ी गईं। इसके अतिरिक्त पुस्तकालय में 9,441 ग्रामोफोन रिकॉर्ड, 10,054 ऑडियो कैसेट और 2,105 डीवीडी उपलब्ध हैं। लगभग 82,712 पाठकों ने दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी की वैबसाइट का उपयोग किया।

दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी ने पुस्तकालय के कार्यकलापों के तीव्र आटोमेशन हेतु कोहा ओपन सोर्स लाइब्रेरी मैनेजमेंट साफ्टवेयर (आईएलएमएस) को अपनाया। क्रियान्वयन के प्रथम चरण में केंद्रीय पुस्तकालय में एक सर्वर लगाया

गया, जिससे पुस्तक प्रदान अधिनियम प्रशग एवं पुस्तक क्रय प्रक्रिया विशग पूरी तरह से कंप्यूटरीकृत हो गया। कोहा साफ्टवेटर के उपयोग से पुस्तक प्रदान अधिनियम के अंतर्गत अंग्रेजी तथा अन्य शरतीय शषाओं की प्राप्त नवीन पुस्तकें पाठकों के लिए इंटरनेट पर उपलब्ध हो गई हैं। साथ ही दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी के 57,000 सदस्यों सहित समूचे विश्व के प्रयोक्ताओं के लिए दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी की वेबसाइट http://www.dpl.gov.in या http://delhipubliclibrary.in पर नवीन पुस्तकों का कैटलॉग (ओपैक) शी उपलब्ध हैं। मार्क–21 (एमएआरसी–21) फार्मेट में उपलब्ध ग्रंथ सूची संबंधी डाटा निःशुल्क डाउनलोड शी किया जा सकता है।

उपलब्धियॉं

दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी सातों दिन पाठकों की सेवा में

- दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी पाठकों के लिए सप्ताह के सातों (रविवार सहित लेकिन राजपत्रित अवकाश को छोड़कर) दिन खुली रहती है।
- दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी (डीपीएल) सरोजनी नगर, केंद्रीय पुस्तकालय (एस.पी.मुखर्जी मार्ग) तथा पटेल नगर स्थित अपने शाखा पुस्तकालयों में पाठकों को हाई स्पीड इंटरनेट सेवा निःशुल्क प्रदान करती है। सदस्यों के उपयोग के लिए सरोजनी नगर तथा केंद्रीय पुस्तकालय में प्रत्येक में 20 तथा पटेल नगर पुस्तकालय में 15 कंप्यूटरों पर इंटरनेट की व्यवस्था की गई है।
- दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी ने केंद्रीय पुस्तकालय (एस. पी.मुखर्जी मार्ग, पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन के सामने), सरोजनी नगर स्थित पुस्तकालय तथा पटेल नगर पुस्तकालय में पाठकों के लिए निःशुल्क सी.डी/डीवीडी (जिनमें अंग्रेजी/हिंदी फिल्मों की सीडी/मनोरंजंक एंव शिक्षाप्रद सीडी तथा बच्चों की सीडी/डीवीडी शामिल हैं) परिचालन की सेवा आरंश की है।
- दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी ने सरोजनी नगर, पटेल नगर तथा केंद्रीय पुस्तकालय स्थित अपनी तीनों शाखाओं में नया सुसज्जित बाल अनुशग तैयार किया है जिसमें बाल पाठकों के लिए नई पुस्तकें, नई सीडी/डीवीडी संग्रह/नए–नए गेम के साथ–साथ नए फर्नीचर की व्यवस्था की गई।
- कोहा ओपन सोर्स लाइब्रेरी आटोमेशन साफ्टवेयर से दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी का कैटलॉग (ओपेक) इंटरनेट पर आनलाइन उपलब्ध हो गया है। अब दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी के 59,000 पाठकों सहित समूचे विश्व के प्रयोक्ता इंटरनेट के माध्यम से हमारी वेबसाइट पर क्लिक कर दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी के वर्तमान कैटलॉग (शीर्षक, विषय, लेखक आदि) तक आसानी से पहुंच सकते हैं।
- दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी द्वारा जनकपुरी में पूर्णतः कंप्यूटरीकृत पुस्तकालय सेवाओं का आरम्श दिनांक 2.10.2009 को किया गया, जिसका उद्घाटन श्रीमती शैलजा चन्द्रा, अध्यक्षा, दिल्ली लाइब्रेरी बोर्ड द्वारा किया गया।
- केंन्द्र सरकार के अंतर्गत संचालित सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों/बोर्ड/स्वायत्त निकायों आदि के लिए इंदिरा गांधी राजशषा पुरस्कार योजना के अंतर्गत दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी ने द्वितीय पुरस्कार प्राप्त किया। श्रीमती प्रतिश देवीसिंह पाटिल, माननीया राष्ट्रपति शरत सरकार ने 14 सितंबर, 2009 को हिंदी दिवस पर आयोजित समारोह में डॉ0 बनवारी लाल, निदेशक, दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी को द्वितीय पुरस्कार के रूप में इंदिरा गांधी राजशषा शील्ड प्रदान की।

4.2.4

रामपुर रजा पुस्तकालय

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विख्यात रामपुर रज़ा पुस्तकालय की स्थापना 1774 में रामपुर रियासत के नवाब फैजुल्लाह खान द्वारा की गई थी। भारत सरकार ने 1975 में इस पुस्तकालय का अधिग्रहण कर लिया। यह संस्कृति मंत्रालय के अंतर्गत काम करता है और रामपुर रजा पुस्तकालय बोर्ड द्वारा प्रशासित होता है जिसके अध्यक्ष उत्तर प्रदेश के महामहिम राज्यपाल हैं। इसके समृद्ध संग्रह में 20,000 पांडुलिपियां जिनमें 175 सुसज्जित है, 205 ताड़पत्र की पांडुलिपियां, 5000 लघु चित्रकारी, 3000 इस्लामी सुलेखन के नमूने तथा 80,000 दुर्लभ मुद्रित पुस्तकें शामिल हैं। पुस्तकालय के संग्रह में अरबी, फारसी, संस्कृत, हिन्दी, उर्दू, तुर्की और पश्तो आदि जैसी अभिलेखीय भाषाओं और लिपियों का प्रतिनिधित्व है। इसमें इतिहास, दर्शन, खगोल विज्ञान, ज्योतिष शास्त्र, गणित, चिकित्सा, भौतिक विज्ञान, धर्म, सूफी धर्म, साहित्य, कला और वास्तुकला जैसे अनेक विषय शामिल हैं। लघु चित्रकारी, तुर्की–मंगोल, मुगल, फारसी, राजपूत पहाड़ी, अवध, दक्कन और भारत–यूरोप शैली का प्रतिनिधित्व करती हैं जिनके नमूने अभी तक प्रकाशित नहीं किए गए हैं। रामपुर रजा पुस्तकालय ने विभिन्न भाषाओं में 120 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित की हैं। अध्येताओं के लिए इसने अपना वेबसाइट www.razalibrary.gov.in को भी शुरू किया है।

पुस्तकालय विरासत महल अर्थात हामिद मंजिल में स्थित है। यह 100 वर्ष से भी अधिक पुराना है तथा इसकी भारत–यूरोप शैली का प्रभावशाली वास्तु–शिल्पीय नमूना उत्तर भारत में अद्वितीय है, जिसे 17वीं व 18वीं शताब्दी के समृद्ध आकर्षक इटली के संगमरमरों से सजाया गया है। इसकी दीवारों, अंदर की छतें और कॉरनिस पर प्लास्टर ऑफ पेरिस से स्वर्ण पट्टित है।

अधिग्रहण और प्राप्ति, तकनीकी कार्य, जिल्दसाजी, रंगीन फोटो, प्रलेखन, कम्प्यूटरीकरण और डिजिटीकल

पुस्तकालय के संग्रह को खरीदारी, आदान–प्रदान तथा भेंट स्वरूप प्राप्त हुई पुस्तकों से समृद्ध बनाया जाता है। पुस्तकालय ने 484 पुस्तकें, 1728 आवधिक पत्रिकाएं और 7946 समाचार पत्रों का अधिग्रहण किया और उन्हें प्राप्त किया। अवधि के दौरान 535 से अधिक पुस्तकें वर्गीकृत की गई और 575 सूचीपत्र कार्ड तैयार किए गए। पुस्तकों पर लेबल लगाने और इनकी धूल हटाने का कार्य नियमित रूप से किया जाता है। शेल्फ में लगी लगभग 10,175 पुस्तकों की सफाई की गई तथा पुस्तकों पर पुराने लेबलों के स्थान पर 1200 नए लेबल लगाए गए। पुस्तकालय अपना सूचीपत्र कार्ड भी अद्यतन रखता है और इस अवधि के दौरान लगभग 2000 कार्डों की जांच की गई। 1512 पुस्तकों की नई जिल्दसाज़ी और मरम्मत की गई। इसके

अतिरिक्त रजिस्टरों, नोट बुकों, फोटो एलबमों की भी जिल्दसाज़ी की गई। संस्कृति और पुस्तकालय से जुड़ी महत्वपूर्ण सूचनाओं से संबंधित समाचार पत्रों की 975 कतरने भी एकत्र की गई। लगभग 2,225 रंगीन फोटोग्राफ, 22 सीडी और 4 डीवीडी तैयार किए गए हैं। इस अवधि के दौरान, लगभग 815 उर्दू, अरबी, फारसी, अंग्रेजी और हिन्दी पुस्तकों का कम्प्यूटरीकरण किया गया। लगभग 437 पांडुलिपियों का डिजिटिकरण किया गया।

रामपुर रज़ा पुस्तकालय के लिए कलाकृतियों, दुर्लभ पुरावस्तुओं का नया अधिग्रहण निम्नवत है :

1. एक सजावटी प्लेट
2. पाषाण शिला
3. एक सुन्दर गुलदान

अध्येताओं को सेवाएं तथा पुस्तकालय अनुसंधान अध्येतावृत्तियां :

पुस्तकालय अपने प्रयोगकर्ताओं की जरूरतों के प्रति पूरी तरह संवेदनशील है। इस अवधि के दौरान 29 शोध छात्रों ने 163 पांडुलिपियों का अनुशीलन किया, 1146 पाठकों को 3691 मुद्रित पुस्तकें जारी की गई तथा 11,800 सामान्य पाठक समाचार पत्रों और पत्रिकाओं के लिए वाचनालय में आए तथा बड़ी संख्या में लोगों ने दरबार हाल के पुस्तकालय संग्रहालय का दौरा किया।

पुस्तकालय भुगतान के आधार पर विद्वानों को मुद्रित पुस्तकों की जेरॉक्स प्रतियां और पांडुलिपियों के फोटोग्राफ भी उपलब्ध कराता है। इस अवधि के दौरान विद्वानों को मुद्रित पुस्तकों की 28564 जिरॉक्स प्रतियां प्रदान की गई और इसके साथ–साथ पुस्तकालय के 1091 प्रकाशन विद्वानों को या तो बेचे गए या उपहार स्वरूप दिए गए।

इस अवधि के दौरान चार वरिष्ठ और दो कनिष्ठ अध्येतावृत्तियां प्रदान की गईं।

विरासत भवनों का संरक्षण

रामपुर के किले में सौ से भी अधिक वर्ष पुराने विरासत भवनों अर्थात हामिद मंजिल और रंग महल के विरासत भवनों का संरक्षण। हमीद मंजिल उत्तर भारत में भारत–यूरोपीय वास्तुकला का उत्कृष्ट नमूना है। इसमें इटली वास्तुशिल्प की गैलरी है जिसमें ताक और छतरीनुमा छतें तथा बड़े–बड़े कमरे और स्वर्ण की नक्काशी किया गया विशाल दरबार हाल है। ये भवन लगभग एक शताब्दी पहले बनाए गए थे और ये उपेक्षित हालत में थे तथा इनकी नियमित मरम्मत किए जाने की आवश्यकता है। प्लेटियल कोठी के चारों ओर के खुले क्षेत्र को सुसज्जित मुगल चार बाग गार्डन के पैटर्न पर विकसित किया गया था और इसमें वाटर चैनल, फव्वारे, तालाब और चुनिंदा पौधे हैं। बड़े और गहरे वाटर चैनल कोटा पत्थर से बनाए गए हैं और ये आस–पास के वातावरण को सुनहरा बनाते हैं। इन पूरे भवनों की कुछ मरम्मत की गई है और गहरे पेंट से इन्हें कलर वाश किया गया है। संरक्षण प्रयोगशाला और इसकी एनेक्सी की आभूषण युक्त बनावटी छतें हैं। निदेशक कक्ष, उर्दू और फारसी कक्ष की टूटी–फूटी और खराब छतों का पुरातत्व संरक्षण मानदंडों के अनुसार जीर्णोद्धार किया गया है। दरबार हाल के खम्बों और टूटी–फूटी और खराब आभूषण युक्त बनावटी छतों का पुरातात्विक रूप से जीर्णोद्धार किया गया है तथा मंहगे सुनहरे पेंट से इन्हें रंगा गया है। अरबी, उर्दू, इटली वास्तुशिल्प की टूटी–फूटी छतों और दीवारों और पाठक कक्ष की छतों तथा इटली वास्तुशिल्प की गैलरी तथा अन्य कक्षों का पुरातत्व संरक्षण मानदंडों के अनुसार जीर्णोद्धार किया गया है।

संरक्षण प्रयोगशाला

संरक्षण प्रयोगशाला में कागज पर बनाई गई अनेक कलाकृतियों अर्थात पाण्डुलिपियों, पुस्तकों, लघु पेटिंग, फोटोग्राफ, लिथोग्राफ, सुलेश के नमूनों, ऐतिहासिक दस्तावेजों का संरक्षण किया गया है। किसी वस्तु का संरक्षण उपचार करने से पहले उसका फोटोग्राफी दस्तावेज तैयार किया जाता है ताकि प्राप्त की गई कलाकृति की स्थिति के साक्ष्य को रखा जा सके तथा इससे संरक्षक को उपचार करने तथा भावी संदर्भ के लिए भी सहायता मिलती है। इस प्रकार की वस्तु की सावधानीपूर्वक जांच की जाती है तथा आवश्यकता के अनुसार उसे दीर्घकाल तक सुरक्षित रखने के लिए उसका उपचार किया जाता है। उपर्युक्त उल्लिखित अवधि के दौरान किए गए महत्वपूर्ण संरक्षण कार्य का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :–

संरक्षण कार्य

- **पाण्डुलिपि**

  अरबी पाण्डुलिपि # शारूहुल – हाविस –सगीर आकार–23.3 सेमी. X 16.8 सेमी., अवधि–1351 ए. डी., कुल पृष्ठ–622

फारसी पाण्डुलिपि # जखीरा खावारिज्म शाही
आकार – 30.0 सेमी. X 20.9 सेमी., अवधि– 565 ए. एच. (1169 ए.डी.), कुल पृष्ठ–638

फारसी पाण्डुलिपि # गुलशन–ए–हिकमत
आकार – 30.5 सेमी. X 19.0 सेमी., अवधि– 18वीं शताब्दी ए.डी., कुल पृष्ठ–332

फारसी पाण्डुलिपि # गुलशन–ए–हिकमत
आकार – 23.0 सेमी. X 13.0 सेमी., अवधि– 18वीं शताब्दी ए.डी., कुल पृष्ठ–138

फारसी पाण्डुलिपि # रैवैया–अल–एनफास, खण्ड–।।
आकार – 23.0 सेमी. X 13.0 सेमी., अवधि– 18वीं शताब्दी पूर्वाद्ध ए.डी., कुल पृष्ठ–144

- **मुद्रित पुस्तकें**

मुद्रित पुस्तक # दबदबा–ए–सिकन्दरी
आकार – 32.7 सेमी. X 21.2 सेमी., अवधि– 1921 ए. डी., कुल पृष्ठ–804

मुद्रित पुस्तक # उमराई–हुनुद
आकार – 23.5 सेमी. X 15.1 सेमी., अवधि– 1910 ए. डी., कुल पृष्ठ–392

मुद्रित पुस्तक # शार्ह–ए–दीवान–ए–उर्दू–ए–गालिब
आकार – 24.4 सेमी. X 16.3 सेमी., अवधि– 1900 ए. डी., कुल पृष्ठ–392

मुद्रित पुस्तक # रायपुर सरकारी गजट
आकार – 32.3 सेमी. X 24.4 सेमी., अवधि– 1872 ए. डी., कुल पृष्ठ–780

- **लघु पेंटिंग**

अकबर की अल्बम की पांच लघु मुगल पेंटिंग पर्याप्त रूप से संरक्षित रखा गया है–

(1) ओब्वर्स– एक युवक और उसके साथी हाथ में वीणा लिए हुए बगीचे में हरम के सदस्यों के बीच बैठे हैं। इसके पीछे वाटर टैंक और गाय–बैल को जोड़ा है।
रिवर्स – सुलेखन।

(2) ओब्वर्स– पैगम्बर मोहम्मद के चाचा अमीर हमजा का रंगीन रेखाचित्र जिसमें वे घुटनों के बल बैठे हैं और उनके सिर के चारो ओर आभामंडल दिखायी दे रहा है।
रिवर्स – सुलेखन।

(3) ओब्वर्स– एक युवा पशु प्रशिक्षक भालू और बंदर के साथ है जो एक परिधि में साथ–साथ घूमते दिखाए गए हैं।
रिवर्स – सुलेखन।

(4) ओब्वर्स– एक अनुयायी द्वारा विचित्र खान के रेखाचित्र के रूप में अभिनिर्धारित किया गया एक रेखाचित्र जिसमें एक सज्जन पुरूष को बैठे हुए दर्शाया गया है।
रिवर्स – सुलेखन।

(5) ओब्वर्स– एक सज्जन पुरूष पानी के पाइप को हाथ में लिए बैठा है और दाहिनी और बैठे बच्चे के चेहरे को धो रहा है। इसके पीछे बायीं ओर एक वृद्धि दरबारी बैठा है। एक रेखाचित्र में ऊपर की तरफ शाहिब–ए–नवाब उम्दत–अल–मुल्क को पढ़ते हुए दर्शाया गया है।
रिवर्स – सुलेखन।

- **फोटोग्राफ**

ब्लैक / व्हाइट फोटोग्राफ अल्बम
आकार – 35.3 सेमी. X 44.5 सेमी., अवधि– 19वीं शताब्दी ए.डी., कुल फोटोग्राफ–47

ब्लैक / व्हाइट फोटोग्राफ अल्बम
आकार – 37.0 सेमी. X 31.0 सेमी., अवधि– 19वीं शताब्दी ए.डी., कुल फोटोग्राफ–48

ब्लैक / व्हाइट फोटोग्राफ अल्बम
आकार – 37.5 सेमी. X 33.0 सेमी., अवधि– 19वीं शताब्दी ए.डी., कुल फोटोग्राफ–150

- **लिथोग्राफ**

प्राच्य परिदृश्य (लिथोग्राफ अल्बम)
आकार – 26.2.0 सेमी. X 36.3 सेमी., अवधि– 1810 ए.डी., कुल पृष्ठ–344

- **दस्तावेज**

ऐतिहासिक दस्तावेज
आकार – विभिन्न प्रकार के, अवधि– 200 से अधिक वर्ष पुराने, कुल पृष्ठ–80

- **संरक्षा**

दुर्लभ लघु मुगल पेंटिंग (अकबर एल्बम) की संरक्षा की व्यवस्था की गई।
कुल पेंटिंग – 15

- **धूम्रीकरण**

इस अवधि के दौरान उपयुक्त रसायन से रजा

पुस्तकालय के संग्रह की 199 पाण्डुलिपियों का धूम्रीकरण किया गया।

- **माउंटिंग**

  विभिन्न आकार की तीन लघु पेंटिंग (विण्डो कट) पर अम्ल से मुक्त माउण्ट बोर्ड की परत चढ़ाई गई ताकि इन्हें प्रदर्शन के लिए सुरक्षित रखा जा सके। सुरक्षित रूप से रखने तथा परत चढ़ाने के लिए पेंटिंग हेतु इससे संबंधित बोर्ड के 3–4 टुकड़े प्रदान किए गए थे।

पुस्तकालय के प्रकाशन

रामपुर रजा पुस्तकालय के प्रकाशन की यूनिट अलग से है जो अरबी, फारसी और संस्कृत पाण्डुलिपियों के पाठ प्रकाशित करती रही है। पुस्तकालय ने 14 वर्ष के भीतर 120 पुस्तकें प्रकाशित की हैं। इस अवधि के दौरान पुस्तकालय ने निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित की हैं :–

1. इशारिया महनमा ''नया दौर'', (1955 से 2001) खण्ड– I, डा0 मोहम्मद अतहर मसूद खान द्वारा संकलित और डज्ञ0 डब्ल्यू.एच. सिद्दिकी द्वारा प्रस्तावना, पृष्ठ 830(उर्दू), अप्रैल, 2009

2. इशारिया महनमा ''नया दौर'', (1955 से 2001) खण्ड– II, डा0 मोहम्मद अतहर मसूद खान द्वारा संकलित और डा0 डब्ल्यू. एच. सिद्दिकी द्वारा प्रस्तावना, पृष्ठ 834(उर्दू), अप्रैल, 2009

3. रामपुर में उर्दू अफसाना, डा0 शरीफ अहमद कुरैशी द्वारा संकलित और डा0 डब्ल्यू.एच. सिद्दिकी द्वारा प्राक्कथन पृष्ठ 398 (उर्दू), अप्रैल, 2009

4. रामपुर रजा पुस्तकालय जर्नल, 16–17 (उर्दू), डा0 डब्ल्यू.एच. सिद्दिकी द्वारा सम्पादित, पृष्ठ 306, मई, 2009

5. रामपुर रजा पुस्तकालय जर्नल, 18–19 (उर्दू), डा0 डब्ल्यू.एच. सिद्दिकी द्वारा सम्पादित, पृष्ठ 306, मई, 2009

6. रामपुर का इतिहास (1930–1949), शौकत अली खान द्वारा संकलित और डा0 डब्ल्यू.एच. सिद्दिकी द्वारा प्राक्कथन पृष्ठ 596 (हिन्दी), मई, 2009

7. मिर्जा अब्दुल कादिर बेदिल, हयाद और कारनामे, डा0 सईद अहसानुज जफर द्वारा, खण्ड– I, प्रोफेसर शाह अब्दुस सलाम द्वारा प्रकाशित, पृष्ठ 502 (उर्दू), दिसम्बर, 2009

8. मिर्जा अब्दुल कादिर बेदिल, हयाद और कारनामे, डा0 सईद अहसानुज जफर द्वारा, खण्ड– II, प्रोफेसर शाह अब्दुस सलाम द्वारा प्रकाशित, पृष्ठ 716 (उर्दू), दिसम्बर, 2009

9. अल–हिन्द–ओ–फि–अल–शेर, अल अरबी (अरबी कविता में भारत) डा0 सुहेब आलम द्वारा, प्रोफेसर अब्दुस सलाम द्वारा प्रकाशित, पृष्ठ 280 (अरबी), जनवरी, 2010

सांस्कृतिक कार्यक्रम

डाक टिकट जारी करना

उत्तर प्रदेश के तत्कालीन महामहिम राज्यपाल और रामपुर रजा पुस्तकालय बोर्ड के अध्यक्ष श्री टी.वी. राजेश्वर राव ने रामपुर रजा पुस्तकालय के संबंध में दिनांक 19 जून को स्मारक डाक टिकट उद्घाटन समारोह में जारी किया और यह कहा कि यह पुस्तकालय इस्लामिक और प्राच्य अध्ययन का केन्द्र है और इसने अंतर्राष्ट्रीय ख्याति अर्जित की है।

बोर्ड की बैठक

राजभवन, लखनऊ में दिनांक 26 जून, 2009 को रामपुर रजा पुस्तकालय बोर्ड की 38वीं बैठक आयोजित की गई। रामपुर रजा पुस्तकालय बोर्ड के अध्यक्ष तत्कालीन महामहिम राज्यपाल, उत्तर प्रदेश श्री टी.वी. राजेश्वर ने इस बैठक की अध्यक्षता की।

स्वतंत्रता दिवस

रामपुर रजा पुस्तकालय ने 61वें स्वतंत्रता दिवस, 2009 का आयोजन किया। इस अवसर पर विशेष कार्य अधिकारी प्रोफेसर शाह अब्दुस सलाम ने हामिद मंजिल के मुख्य द्वार पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया और केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल के वर्दीधारी जवानों ने हथियारों सहित ध्वज को सलाम किया।

सुलेखन कार्यशाला

इन्टेक ने दिनांक 19 अगस्त को रामपुर रजा पुस्तकालय में सुलेखन कार्यशाला का आयोजन किया जिसमें प्रोफेसर अब्दुस सलाम और सुलेखन के अन्य विशेषज्ञों ने सुलेखन के संबंध में रामपुर के विभिन्न विद्यालयों के विद्यार्थियों को उपयोगी ज्ञान प्रदान किया।

हिन्दी पखवाड़ा

पुस्तकालय ने सरकारी कार्यालयी में हिन्दी में कार्य करने का वातावरण पैदा करने के लिए दिनांक 14 से 30 सितम्बर, 2009 तक हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया। पुस्तकालय के विख्यात व्यक्तियों तथा कर्मचारियों ने इस आयोजन में भाग लिया। इस पखवाड़े के समापन समारोह

में प्रोफेसर शाह अब्दुस सलाम ने भारत की विलक्षण संस्कृति पर प्रकाश डाला और यह कहा कि हिन्दी समृद्ध भाषा है। इस पखवाड़े के दौरान रामपुर रजा पुस्तकालय में हिन्दी पाण्डुलिपियों और दुर्लभ पुस्तकों की प्रदर्शनी आयोजित की गई।

दुर्लभ पाण्डुलिपियों की प्रदर्शनी

पुस्तकालय ने रमजान की महीने में दिनांक 13 सितम्बर से 24 सितम्बर, 2009 तक कुरान मजीद की दुर्लभ पाण्डुलिपियों और मुद्रित प्रतियों की विशेष प्रदर्शनी आयोजित की। हजारों आगंतुकों, विख्यात और विलक्षण विद्वानों, साहित्यकारों आम जनता जिन्होंने इस प्रदर्शनी का दौरा किया, वे 13 से 19वीं शताब्दी में सौन्दर्य से सुसज्जित कुरान से अत्यधिक प्रभावित हुए थे।

गांधी जयंती

हामिद मंजिल के अध्ययन हाल में दिनांक 2 अक्तूबर, 2009 को महात्मा गांधी जयंती मनाई गई। प्रोफेसर शाह अब्दुस सलाम ने इस अवसर पर अपने सम्बोधन में भारतीय स्वतंत्रता तथा राष्ट्रीय एकीकरण के लिए राष्ट्रपिता – महात्मा गांधी के महान त्याग का विशेष उल्लेख किया।

संरक्षण कार्यशाला

रामपुर रजा पुस्तकालय की संरक्षण प्रयोगशाला ने दिनांक 8 नवम्बर से 12 नवम्बर, 2009 तक रंगमहल, रामपुर रजा पुस्तकालय, रामपुर में **''पाण्डुलिपियों और पुस्तकालय सामग्री की देखभाल और संरक्षण''** पर पांच दिवसीय संरक्षण कार्यशाला का आयोजन किया।

इस कार्यशाला का उद्देश्य पाण्डुलिपियों में विकृति और इनके संबंधित प्रभाव, अनुवीक्षण और पर्यावरण दशा, कलाकृतियों को उपयुक्त रूप से रखने, स्टोर करने, आपदा प्रबंधन के घटकों और पाण्डुलिपियों, पेंटिंग तथा अन्य पुस्तकालय सामग्री के संरक्षण के लिए किए जाने वाले अपेक्षित निवारक संरक्षण उपायों के बारे में सहभागियों में समझबूझ पैदा करना तथा इनके संबंध में सहभागियों को जागरूक करना था।

इस कार्यशाला में विभिन्न मदरसों, प्राइवेट और सरकारी संस्थाओं जैसे मदरसा मजाहिर उलूम (वक्फ), सहारनपुर, इब्न सिना अकादमी, अलीगढ़, अल्लामा शिबली नोमानी पुस्तकालय नदवातुल उलामा, लखनऊ, दारूल उलूम अल इस्लामिया, बस्ती, मजहर मैमोरियल पुस्तकालय, गाजीपुर, मदरसा–ए–दीनिया, गाजीपुर, जामिया कुस्मिया मदरसा शाही मुरादाबाद, वृन्दावन अनुसंधान संस्थान, वृन्दावन, जमी–उल–उलूम फुरकानिया, रामपुर, डी.आई. ई.टी., रामपुर इत्यादि के 26 सहभागियों ने भाग लिया।

विभिन्न संरक्षण संस्थानों के संरक्षण विशेषज्ञों ने स्लाइड, ओ.एच.पी. शीट, एल.सी.डी. प्रोजेक्टर्स के माध्यम से पाण्डुलिपियों और पुस्तकालय सामग्री की देखभाल और संरक्षण की विभिन्न तकनीकों पर व्याख्यान दिए तथा प्रयोगात्मक निदर्शन दिखाए।

मुख्य अतिथि प्रोफेसर एच.एस. मिश्रा, विभागाध्यक्ष–हिन्दी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ ने एक समारोह में दीप प्रज्जवलित करके दिनांक 8 नवम्बर, 2009 को इस कार्यशाला का उद्घाटन किया। श्रीमती ममता मिश्रा, निदेशक इन्टेक, भारतीय संरक्षण संस्थान लखनऊ और श्री शरीर्फुर रहमान खान इस कार्यशाला के विशिष्ट अतिथि थे। प्रोफेसर अब्दुस सलाम, विशेष कार्य अधिकारी ने इनका स्वागत किया और पाण्डुलिपियों तथा इनके संरक्षण के महत्व पर प्रकाश डाला।

इस संबंध में समापन समारोह तथा पुरस्कार वितरण समारोह दिनांक 12 नवम्बर, 2009 को आयोजित किया गया। इसके मुख्य अतिथि श्री नीलाभ सिन्हा, निदेशक, इन्टेक, कला संरक्षण केन्द्र, नई दिल्ली ने इस समारोह को सम्बोधित किया और कार्यशाला के सभी सहभागियों को प्रमाण–पत्र वितरित किए।

इस कार्यशाला के लिए समग्र निदेश प्रोफेसर शाह अब्दुस सलाम, विशेष कार्य अधिकारी, रामपुर रजा पुस्तकालय, रामपुर ने दिया और श्री अरूण कुमार सक्सेना, वरिष्ठ तकनीकी रिस्टोर्र ने इस कार्यशाला का समन्वय किया।

राष्ट्रीय संगोष्ठी

ज्ञान और अध्ययन के प्रचार–प्रसार के लिए रामपुर रजा पुस्तकालय ने दिनांक 21 से 23 दिसम्बर, 2009 तक ''सम्पादन और अनुवाद की कला : समस्याएं और पूर्णता'' पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया। देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों के प्रोफेसरों, महत्वपूर्ण संस्थाओं के विद्वानों और भारत के विभिन्न भागों के अनुसंधानकर्ताओं, विद्वान व्यक्तियों, लेखकों ने इस संगोष्ठी में भाग लिया और अपने–अपने पेपर प्रस्तुत किए। इस संगोष्ठी में अरबी, फारसी, हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत और उर्दू जैसी विभिन्न भाषाओं तथा साहित्य के विद्वानों ने अपने–अपने अनुभवों से एक–दूसरे को अवगत कराया और वर्तमान परिदृश्य में अनुवाद और सम्पादन की समस्याओं और पूर्णता पर प्रकाश डाला।

रजा पुस्तकालय परिसर में इस राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन प्रसिद्ध हिन्दी साहित्यकार प्रोफेसर एस.पी. दीक्षित ने किया और इसकी अध्यक्षता न्यायमूर्ति एम. सुहेल एजाज सिद्दिकी, अध्यक्ष, राष्ट्रीय अल्पसंख्यक शिक्षा संस्था आयोग ने की थी तथा इसमें मुख्य अतिथि के रूप में प्रोफेसर सुघरा मेहदी ने भाग लिया तथा प्रोफेसर

अख्तरूल वासे ने इसे मुख्य रूप से सम्बोधित किया।

गणतंत्र दिवस

पुस्तकालय के अधिकारियों और कर्मचारी सदस्यों ने दिनांक 26 जनवरी, 2010 को गणतंत्र दिवस मनाया। विशेष कार्य अधिकारी प्रोफेसर अब्दुस सलाम ने प्रातः 8.30 बजे हामिद मंजिल के मुख्य द्वार पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया और सलामी दी। केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल के वर्दीधारी जवानों ने अपने हथियारों सहित राष्ट्रीय ध्वज को सलामी दी। इसके बाद अध्ययन हाल में एक बैठक आयोजित की गई जिसमें प्रोफेसर शाह अब्दुस सलाम ने गणतंत्र दिवस की पृष्ठभूमि और इसके महत्व को दोहराया। इसके समापन पर सहभागियों को हल्का–फुल्का जलपान कराया गया।

पुस्तकालय ने गणतंत्र दिवस के सम्मान में रंग महल हाल में शेरी निशात का दिनांक 26 जनवरी, 2010 को आयोजन किया।

विश्व पुस्तक मेला

रामपुर रजा पुस्तकालय ने भारतीय राष्ट्रीय पुस्तक न्यास द्वारा दिनांक 30 जनवरी से 7 फरवरी, 2010 तक प्रगति मैदान (नई दिल्ली) में आयोजित किए गए 19वें नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले में भाग लिया। इस मेले में उपस्थित अधिकांश व्यक्तियों को रामपुर रजा पुस्तकालय की दुर्लभ पाण्डुलिपियों और पेंटिंग के प्रकाशनों और ब्लोअप्स ने अपनी ओर आकर्षित किया। इस अवसर पर पुस्तकालय के प्रकाशनों से हजारों आगंतुक, विख्यात और विलक्षण विद्वान, साहित्यकार और आम जनता अत्यधिक प्रभावित हुए।

4.2.5

केन्द्रीय संदर्भ पुस्तकालय

राष्ट्रीय पुस्तकालय परिसर में स्थित राष्ट्रीय संदर्भ पुस्तकालय ने 1955 के बाद से एक अलग कार्यालय के रूप में कार्य करना आरंभ कर दिया है। योजना आयोग द्वारा नई दिल्ली में केन्द्रीय संदर्भ पुस्तकालय की स्थापना को द्वितीय पंचवर्षीय योजना के भाग के रूप में मंजूरी दी गई है। पुस्तक परिदान अधिनियम, 1954 के लागू होने के बाद, भारतीय राष्ट्रीय ग्रंथसूची का संकलन, भारत सरकार का दायित्व बन गया था। कार्य को शीघ्र शुरू करने के लिए, केन्द्रीय संदर्भ पुस्तकालय के एक राष्ट्रीय ग्रंथसूची एकक की स्थापना कर, उसे पुस्तक परिदान अधिनियम के अंतर्गत प्राप्त पुस्तकों के साथ गठित किया गया और राष्ट्रीय पुस्तकालय के रूप में करना शुरू किया।

यह आज देश की राष्ट्रीय ग्रंथसूची एजेंसी के रूप में कार्य कर रहा है। इसे निम्नलिखित स्कीमों के कार्यान्वयन का दायित्व सौंपा गया है :–

- रोमन लिपि में भारतीय राष्ट्रीय ग्रंथसूची का विक्रय और प्रकाशन तथा संकलन जोकि मासिक तथा वार्षिक संचयनों के आधार पर होगा आई.एन.बी. अंग्रेजी सहित 14 भारतीय भाषाओं में मौजूदा भारतीय प्रकाशनों का प्रमाणिक रिकार्ड है जो पुस्तक वितरण अधिनियम, 1954 के उपबंध के अनुसार केन्द्रीय संदर्भ पुस्तकालय, कलकत्ता में प्राप्ति पर आधारित है।
- आई.एन.बी. की भाषा ग्रंथसूचियों का संकलन एवं प्रकाशन।
- इन्डैक्स इंडियाना का संकलन, प्रकाशन और बिक्री जो इस समय छह मुख्य भाषाओं में छपने वाले लेखों का चयन करने की सूची है।

भारतीय राष्ट्रीय ग्रंथसूची :

मासिक प्रकाशन

आई.एन.बी. का तिमाही से मासिक संकलन में परिवर्तन 1964 में किया गया था। तत्पश्चात् कुछ समय के लिए मासिक अंक निकलते रहे। वर्ष 1999 में आई.एन.बी. के संकलन का कम्प्यूटरीकरण होने से इसके मासिक अंकों के नियमित प्रकाशन में परिवर्तन हुआ है। आई.एन.बी. के संकलन का वर्तमान प्रकाशन अब मासिक हो गया है। मई, 2009 तक के सभी मासिक अंक समय पर प्रकाशित किए जाते हैं।

आई.एन.बी. के मासिक अंकों का प्रकाशन पूरा हो जाने के बाद उन्हें एक साथ वार्षिक अंकों में संचित किया जाता है। अब सभी मासिक तथा वार्षिक अंक बिक्री के लिये उपलब्ध हैं। आईएनबी के वर्ष 1994 से वर्ष 2006 तक के वार्षिक अंक इस समय उपलब्ध हैं। 2007, 2008 और 2009 के वार्षिक अंक प्रकाशन के लिये तैयार हैं। आई.एन.बी. का 1958–2009 तक का ग्रंथसूची डाटाबेस इलैक्ट्रॉनिक रूप में उपलब्ध है।

इंडैक्स इंडियाना :

इंडैक्स इंडियाना परियोजना वर्ष 1975 में प्रारंभ की गई थी जोकि बंगाली, गुजराती, हिंदी, मलयालम, मराठी और तमिल 6 क्षेत्रीय भाषाओं में छपने वाली पत्रिकाओं के लिए लेखों का चयन करने की सूची है। वर्ष 1992 से 1998 तथा 1999 से 2000 तक के संकलित अंकों का प्रकाशन हो गया है और बिक्री के लिए उपलब्ध है। वर्ष 2001–2003 के अंक प्रेस में हैं। इंडैक्स इंडियाना का

संकलन और इसकी सूची तैयार करने का कार्य कम्प्यूटर के माध्यम से अब किया जा चुका है। वर्ष 2000–2007 के संचित अंक प्रकाशन के लिये तैयार हैं।

वर्ष 1958 से आईएनबी रिकार्ड का रेट्रो–कंवर्जन : 1958 के आई.एन.बी. की सभी ग्रंथसूचियों के रिकार्ड इलैक्ट्रोनिक फार्मेट पर उपलब्ध हैं और आई.एन.बी. नेटवर्क पर पढ़े जा सकते हैं। वर्तमान में आई.एन.बी. डाटाबेस पर 6.5 लाख से अधिक रिकार्ड उपलब्ध हैं।

केन्द्रीय संदर्भ पुस्तकालय, कोलकाता देश के राष्ट्रीय ग्रंथ सूचीकरण एजेंसी के रूप में कार्य करता है।

संकलित भाषा ग्रंथसूचियां :

असमिया : 2001 से 2007 तक की सात वर्ष की अवधि की असमी ग्रंथसूची सामग्री का संचयन प्रेस में छपने के लिए तैयार है।

बांग्ला : 'जतिया ग्रंथ पांची' 2004–2007 अंक भाषा पुस्तिका बंगाली प्रकाशित कर दी गई है। वर्ष 2008–09 के खण्ड पर कार्यवाही की जा रही है।

हिन्दी : राष्ट्रीय ग्रंथ सूची का 2002–2003 खण्ड प्रकाशित कर दिया गया है। 2004–2005 का खण्ड मुद्रण के लिये तैयार है।

तमिल : 1992 से 2000 तक के वर्षों के लिए आई.एन.बी. का तमिल पुस्तिका 9 वर्षों का संचित खण्ड प्रकाशित हो गई हैं तथा बिक्री के लिए उपलब्ध हैं। 2001–2007 के संचित खण्ड का संकलन किया जा रहा है।

उर्दू : कौमी किताबियत (उर्दू ग्रंथसूची) 2006–2009 का संकलन किया जा रहा है। इससे पहले के वर्ष 2003 से 2005 के संचित खण्ड को उत्तर प्रदेश सरकार की इलाहाबाद प्रेस में प्रकाशित किया गया था।

भारतीय राष्ट्रीय ग्रंथसूची स्वर्ण जयंती समारोह :

भारतीय राष्ट्रीय ग्रंथसूची स्वर्ण जयंती समारोह के भाग के रूप में एक समारोह राष्ट्रीय पुस्तकालय के भाषा भवन सभागार में दिनांक 17 दिसम्बर, 2009 को आयोजित किया गया था। इसी दिन 'रोमन लिपि बनाम इंडिक लिपि में भारतीय राष्ट्रीय ग्रंथसूची' पर एक राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया था। पूरे देश के अकादमिक व्यक्तियों और व्यावसायिकों ने इस सम्मेलन में भाग लिया। पूर्वी क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र के तत्वावधान में एक सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजन किया गया था।

इस अवधि के दौरान दो प्रकाशन जारी किये गये थे :

1. भारतीय प्रकाशकों की निर्देशिका।
2. इंडिक नामों के लेखक प्राधिकार : आईएनबी मानक।

कार्यक्रम :

कर्मचारी विभिन्न व्यावसायिक सम्मेलनों तथा बैठकों में नियमित रूप से भाग लेते हैं। व्यावसायिक कर्मचारियों को विशेष पुस्तकालयों तथा सूचना केन्द्रों के भारतीय संघ आई.ए.एस.एल.आई.सी. तथा भारतीय पुस्तकालय संघ आई.एल.ए. के वार्षिक सेमिनार में भाग लेने के लिए नामित किया जाता है।

स्नातकोत्तर पुस्तकालय विज्ञान विद्यार्थियों को तत्काल प्रशिक्षण प्रदान करने के लिये केन्द्रीय संदर्भ पुस्तकालय एक माह की अवधि के प्रशिक्षुता–प्रशिक्षण कार्यक्रम नियमित रूप से आयोजित करता है। इस वर्ष जुलाई, 2009 से फरवरी, 2010 तक शुरू किये गये प्रशिक्षण कार्यक्रम में विभिन्न भारतीय विश्वविद्यालयों के कुल 38 विद्यार्थियों ने भाग लिया। उड़ीसा के उत्कल विश्वविद्यालय और सम्बलपुर विश्वविद्यालय तथा पश्चिम बंगाल के कलकत्ता विश्वविद्यालय, कल्याणी विश्वविद्यालय, जाधवपुर विश्वविद्यालय, महाराष्ट्र के नागपुर विश्वविद्यालय, मराठवाडा विश्वविद्यालय, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़ के विद्यार्थियों ने भी इस सुविधा का लाभ उठाया।

भारतीय राष्ट्रीय ग्रंथसूची यूनिट एक ऐसा क्षेत्र है जहां पर पुस्तकालय सूचना विज्ञान क्षेत्र के छात्र तथा अध्येता नियमित रूप से दौरा करते हैं। आधा दर्जन विश्वविद्यालयों ने अपने छात्रों को उनके अध्ययन कार्यक्रम के एक भाग के रूप में केंद्रीय संदर्भ पुस्तकालय कोलकाता में भेजा। यह पुस्तकालय ग्रंथसूचीय सेवाओं के माध्यम से देश, विदेश के अध्येताओं की सहायता करता रहा है।

केंद्रीय संदर्भ पुस्तकालय, कोलकाता पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास कार्यक्रम में सक्रिय रूप से शामिल है। इस वर्ष इसने डिब्रूगढ़, असम में डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय के सहयोग से दो कार्यशालाएं आयोजित की। पूर्वोत्तर क्षेत्र के विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान के सहयोग से ईटानगर, अरूणाचल प्रदेश में एक अन्य कार्यशाला आयोजित की जा रही है।

केंद्रीय संदर्भ पुस्तकालय ने कोच्ची, केरल में दिनांक 27 नवम्बर से 2 दिसम्बर, 2009 के दौरान आयोजित किये गये अंतर्राष्ट्रीय पुस्तक मेले में भाग लिया। इसने भारतीय पुस्तक न्यास द्वारा नई दिल्ली में आयोजित किये गये विश्व पुस्तक मेल में भी भाग लिया। इस अवधि के दौरान 2 लाख रू. से अधिक के सीआरएल प्रकाशनों की बिक्री की गई।

केन्द्रीय संदर्भ पुस्तकालय भारतीय पुस्तक परिदान अधिनियम के तहत राष्ट्रीय पुस्तकालय में प्राप्त किये गये भारतीय प्रकाशनों के ग्रंथसूची रिकार्ड को सुलभ कराने की व्यवस्था करता है। सीआरएल के प्रकाशन अनुरोध किये जाने पर पुस्तकाध्यक्ष, केन्द्रीय संदर्भ पुस्तकालय, कोलकाता से प्राप्त किये जा सकते हैं।

4.2.6

ख़ुदाबख़्श ओरिएन्टल पब्लिक लाइब्रेरी

ख़ुदाबख़्श ओरिएन्टल पब्लिक लाइब्रेरी की स्थापना बिहार के छपरा जिला निवासी मौलवी मोहम्मदबख़्श की पुस्तकों के निजी संग्रह से की गई। उनके देहान्त के पश्चात् उनके सुपुत्र ख़ुदाबख़्श ने इस संग्रह को समृद्ध बनाया और इसे सार्वजनिक पुस्तकालय में परिवर्तित किया और बंगाल सरकार को इसका न्यासी नियुक्त किया गया। दिसम्बर, 1969 में इस लाइब्रेरी को राष्ट्रीय महत्व की संस्था घोषित किया गया। जुलाई, 1970 से यह लाइब्रेरी भारत सरकार द्वारा गठित बोर्ड के अधीन स्वायत्त संस्था के रूप में कार्य कर रही है, जिसके पदेन अध्यक्ष बिहार के राज्यपाल होते हैं। वर्तमान में यह भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के अधीन है।

ख़ुदाबख़्श ओरिएन्टल पब्लिक लाइब्रेरी में लगभग 21,000 से अधिक पाण्डुलिपियां, 2,75,000 मुद्रित पुस्तकें और 2000 मूल चित्रों का समृद्ध संग्रह है।

अप्रैल–दिसम्बर, 2009 के दौरान लाइब्रेरी ने 3107 पुस्तकें, 11 पाण्डुलिपियां और 404 पुस्तकें उपहार एवं आदान–प्रदान द्वारा प्राप्त की और दो सिक्के खरीदे। लाइब्रेरी ने इस अवधि के दसैरान 77 पत्रिकाओं और 344 समाचार–पत्रों के लिए अभिदान किया। लाइब्रेरी ने लगभग 41 ऑडियो एवं 18 वीडियो कैसेट्स भी तैयार किए।

अप्रैल–दिसम्बर, 2009 के दौरान पाण्डुलिपियों की विवरणात्मक सूची खण्ड 42 (सूफी मत पर) एवं फारसी पाण्डुलिपियों की हैन्डलिस्ट (खण्ड IV) प्रकाशित की गई और वेबसाइट पर उपलब्ध कराई गई। इसके अतिरिक्त लाइब्रेरी की पाण्डुलिपियों की विवरणात्मक सूचियां, लाइब्रेरी की गतिविधियों का विवरण एवं लाइब्रेरी प्रकाशनों की सूची भी इन्टरनेट पर उपलब्ध कराई गई।

लाइब्रेरी ने अपने मुद्रित पुस्तक संग्रह सूपी का इलैक्ट्रॉनिक रूप में रेट्रो–कन्वर्ज़न करने का भी निर्णय लिया है। अब तक 4,29,307 पुस्तकों एवं पत्रिकाओं का रेट्रोस्पेक्टिव सूचीकरण पूरा हो चुका है। यह कम्प्यूट्रीकृत सूची पुस्तकालय में पाठकों के लिए उपलब्ध है। इसे शीघ्र ही वेबसाइट पर भी उपलब्ध करा दिया जाएगा।

पाण्डुलिपियों के डिजिटाइजेशन का कार्य जो सितम्बर, 2005 में आरंभ किया गया था 10,00,000 पृष्ठों के डिजिटाइजेशन की प्रायोगिक परियोजना के साथ गत वर्ष पूर्ण कर लिया गया है। यथातथ्यता के लिए इसकी जॉच की जा रही है और लगभग 100 पुस्तकें कम्प्यूट्रीकृत रूप में तैयार हैं।

पाण्डुलिपियों और दुर्लभ पुस्तकों का परिरक्षण :

पाण्डुलिपियों एवं दुर्लभ पुस्तकों के संरक्षण के लिए आधुनिक तकनीक का प्रयोग करने हेतु कुछ वर्ष पूर्व एक आधुनिक संरक्षण प्रयोगशाला स्थापित की गई थी जो पाण्डुलिपियों के फ्यूमीगेशन, डी–एसीडिफिकेशन, लेमिनेशन एवं जिल्द–बन्दी का कार्य करती है। पुस्तकालय कर्मचारियों को संरक्षण, परिरक्षण एवं अग्निशमन के क्षेत्रों में आवश्यक प्रशिक्षण दिलाया गया है। रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान 237 मुद्रित पुस्तकों और पाण्डुलिपियों की जिल्दबन्दी का कार्य

किया गया। 2014 पाण्डुलिपियां/पुस्तकें फ्यूमीगेट की गईं एवं पाण्डुलिपियों/पुस्तकों के 55,862 पन्नों की मरम्मत एवं परिरक्षणात्मक उपचार का कार्य किया गया।

अनुक्रमणीकरण एवं प्रलेखन :

लाइब्रेरी में उर्दू, अंग्रेजी एवं हिन्दी पत्रिकाओं का एक बड़ा संग्रह है। विद्याजगत को सूक्ष्म सूचनाएं उपलब्ध कराने हेतु लाइब्रेरी उर्दू पत्रिकाओं के अनुक्रमणीकरण का कार्य करवाती है। श्रृंखला के एक अंक का प्रकाशन इस वर्ष में हुआ है।

पाठकों के लिए उपलब्ध सेवाएं :

प्रतिवेदनाधीन अवधि में 12,365 पुस्तकें तथा 3,518 पाण्डुलिपियाँ शोधकर्ताओं को शोध संबंधी वाचनालय में उपलब्ध कराई गईं जबकि 2,302 पुस्तकें अध्ययन हेतु निर्गत की गईं। उपर्युक्त अवधि में 41,830 सामान्य पाठकों एवं 26,114 छात्रों को कर्ज़न वाचनालय में समाचार पत्र, पत्रिकाएं, संदर्भ ग्रन्थ एवं प्रतियोगिता परीक्षाओं के लिए पाठ पुस्तकें उपलब्ध कराई गईं।

सन्दर्भ सेवाएं :

अप्रैल–दिसम्बर, 2009 के दौरान प्रकाशित पुस्तकों के 5,111 पृष्ठों की छाया प्रतियां शोधकर्ताओं को उनके अनुरोध पर उलब्ध कराई गईं। शोधकर्ताओं को उनके अनुरोध पर पाण्डुलिपियों के 13,586 पृष्ठों की सीडी उपलब्ध कराई गई।

संगोष्ठियाँ/व्याख्यान/सांस्कृतिक कार्यक्रम

भारत के माननीय उप–राष्ट्रपति श्री मो. हामिद अंसारी ने 12 दिसम्बर, 2009 को ''आईडेंटिटीज़, सिटीज़नशिप एण्ड एम्पावरमेंट'' विषय पर खुदाबख़्श स्मृति व्याख्यान प्रस्तुत किया। महामहिम श्री देवानंद कुंवर, राज्यपाल, बिहार ने अध्यक्षता की। श्री नीतिश कुमार, माननीय मुख्यमंत्री बिहार सम्मानित अतिथि थे।

माननीय न्यायमूर्ति, श्री शिवकीर्ति सिंह, कार्यपालक मुख्य न्यायाधीश, पटना उच्च न्यायालय ने ''लीगल हिस्टी ऑफ मॉडर्न इंडिया–लेसन्स एण्ड टेन्ड्स'' विषय पर खुदाबख़्श वार्षिक व्याख्यान से दिया।

वर्ष के दौरान 5 विस्तार व्याख्यान और 3 लोकप्रिय व्याख्यान आयोजित किए गए। प्रमुख वक्ताओं में प्रो. अली अहमद फातमी (इलाहाबाद विश्वविद्यालय) डॉ. वहाब कैसर (मौलाना आज़ाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय) प्रो. अबू जफर हसन नदवी (शाद आदम कॉलेज, भिवंडी) प्रो. आर. के. सिन्हा, (पटना विश्वविद्यालय) और श्री मुजतबा हुसैन (सेवा निवृत्त भा.प्र.से.) के नाम शामिल हैं।

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन, नई दिल्ली के सहयोग से 9–11 अगस्त, 2009 को पाण्डुलिपियों के सुरक्षात्मक परीरक्षण विषय पर तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। समन्वय की विरासत शीर्षक पर 5 अगस्त, 2009 को एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

4 – 5 अगस्त, 2009 को क्रमशः राष्ट्रीय मुशायरा एवं विधि संबंधी दुर्लभ पुस्तकों की प्रदर्शनी आयोजित की गई।

शोधात्मक गतिविधियाँ :

रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान लाइब्रेरी ने लाइब्रेरी में संरक्षित दुर्लभ सामग्रियों पर कार्य करने के लिए एक राष्ट्रीय, दो अतिथीय, तीन वरिष्ठ और सात कनिष्ठ शोधवृत्तियां भी प्रदान कीं। इस अवधि में दो वरिष्ठ और पॉच कनिष्ठ शोधकर्ताओं ने इस योजना का लाभ उठाया।

प्रकाशन/अनुसंधान मोनोग्राफ

इस स्कीम के अंतर्गत लाइब्रेरी की दुर्लभ पाण्डुलिपियों के महत्वपूर्ण संस्करण तैयार कराने एवं प्रकाशित करने का कार्य किया जाता है। लाइब्रेरी विभिन्न विषयों पर अनुसंधान मोनोग्राफ भी निकालती है। रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान उर्दू पाण्डुलिपियों के दो महत्वपूर्ण संस्करण एवं उर्दू तथा अंग्रेजी में दो–दो अनुसंधान मोनोग्राफ प्रकाशित किए गए।

लाइब्रेरी शोधवृत्तियों के क्षेत्र में दुर्लभ सामग्रियॉ प्रारम्भ करने के लिए अनुसंधानपरक तिमाही पत्रिका प्रकाशित करती है। इस पत्रिका में उर्दू, फारसी, अरबी, हिंदी और अंग्रेजी के लेख प्रकाशित किए जाते हैं।

पुरस्कार :

खुदाबख़्श लाइब्रेरी द्वारा निर्धारित विशेष क्षेत्रों एवं भारत की मिली–जुली संस्कृति पर जीवन प्रर्यन्त कार्य करने वाले विद्वानों को पुरस्कृत करने के लिए एक पुरस्कार योजना प्रारम्भ की है। यह पुरस्कार साहित्य अकादमी एवं ज्ञानपीठ पुरस्कार के स्वरूप का है तथा 1,00,000/–रुपए एवं प्रशस्ति पत्र दिया जाता है।

4.2.7

केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार

केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार (सी.एस.एल.) , संस्कृति मंत्रालय भारतीय और विदेशी सरकारी दस्तावेज जो इसके कोर संग्रह का एक भाग है, को सुरक्षित रखने के संदर्भ में विशाल सरकारी पुस्तकालयों में से एक है। सी.एस.एल. के संसाधन स्वतंत्रता पूर्व भारत के अनेक सरकारी पुस्तकालयों तथा अनेक अन्य पुरानी संस्थाओं जिनमें इम्पीरियल सचिवालय पुस्तकालय, कलकत्ता जो 1891 में अस्तित्व में आया शामिल है, का समामेलन है। यह, भारत सरकार के सभी मंत्रालयों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए, एक सचिवालय पुस्तकालय का कार्य करता है। शोधकर्ता, शिक्षाविद् तथा अन्य गैर–सरकारी व्यक्ति भी इस पुस्तकालय के सदस्य बन सकते हैं। आज की तिथि तक, सी. एस. एल. परिसर में संग्रह की मात्रा लगभग 6.64 लाख मुद्रित दस्तावेज हैं।

1. केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार की दो शाखाएं हैं :–

मुख्य पुस्तकालय	:	केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार, 'जी विंग, शास्त्री भवन, नई दिल्ली–110001
शाखा–I	:	हिन्दी और क्षेत्रीय भाषा विंग तुलसी सदन पुस्तकालय बहावलपुर हाऊस, भगवान दास रोड़, नई दिल्ली–110001
शाखा–II	:	अवर–स्नातक पाठ्य–पुस्तक पुस्तकालय, आर. के. पुरम शाखा, पश्चिम खण्ड–7, सैक्टर–1, आर. के. पुरम, नई दिल्ली – 110066

I. केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार, 'जी' विंग, शास्त्री भवन, नई दिल्ली :

केन्द्रीय सचिवालय पुस्तकालय मुख्य यूनिट के ऊपर विभिन्न मंत्रालयों / विभागों के केन्द्रीय सरकार के कर्मचारियों तथा अन्य व्यक्तियों / संगठनों को सूचना उपलब्ध कराने की जिम्मेदारी है। सी. एस.एल. द्वारा विकसित संग्रह, मुख्यतः भारतीय इतिहास, क्षेत्रवार अध्ययन, महिला अध्ययन तथा प्रतिष्ठित व्यक्तियों की ग्रंथसूची के क्षेत्र में है। इसमें भारत के विकास अध्ययनों पर बल दिया गया है। पुस्तकालय भारत के आधिकारिक प्रकाशनों के भण्डार के रूप में भी जाना जाता है। इसके अलावा, पुस्तकालय में विदेशी आधिकारिक दस्तावेज यथा–संयुक्त राष्ट्र, विश्व बैंक, आई.एम.एफ. आदि जैसे अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के प्रकाशन भी हैं।

II. हिन्दी तथा क्षेत्रीय भाषा स्कंध :

तुलसी सदन पुस्तकालय–वर्तमान में बहावलपुर हाऊस, नई दिल्ली में स्थित है। तुलसी सदन पुस्तकालय की स्थापना 1972 में गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित प्रसिद्ध रामचरितमानस के चौथे शताब्दी समारोह के उपलक्ष्य में की गई थी। इस पुस्तकालय में 14 क्षेत्रीय भाषाओं विशेष रूप से साहित्य, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की 1.82 लाख पुस्तकों का संग्रह हैं। इसके कोर संग्रह में भारतीय भाषाओं में लिखे गए अनेक गौरवग्रंथ शामिल हैं। इस अवधि के दौरान इस पुस्तकालय ने हिन्दी और अन्य क्षेत्रीय भाषाओं की 1322 पुस्तकें अधिग्रहित की हैं। पुस्तकालय विभिन्न विषयों की 80 पत्र–पत्रिकाओं, अंग्रेजी, हिन्दी और अन्य भाषाओं के 40

समाचार–पत्रों का ग्राहक बना। इस अवधि के दौरान तुलसी सदन पुस्तकालय ने अपने उपयोगकर्ताओं को 1260 पुस्तकें जारी कीं / वापस कीं और लगभग 18950 उपयोगकर्ता इस पुस्तकालय में आए।

III. अवर–स्नातक पाठ्य पुस्तक पुस्तकालय, आर. के. पुरम शाखा :

आर. के. पुरम स्थित शाखा पुस्तकालय मुख्य रूप से इसके आस–पास के क्षेत्रों में स्थित विभिन्न कार्यालयों में कार्यरत सरकारी कर्मचारियों के लिए है। वर्ष 2003–04 से आर.के. पुरम पुस्तकालय केन्द्र सरकार के कर्मचारियों के दिल्ली में अवर स्नातक पाठ्यक्रमों में अध्ययन कर रहे विद्यार्थियों के लिए पाठ्य–पुस्तक पुस्तकालय के रूप में भी कार्य कर रहा है। पुस्तकालय के वर्तमान पाठ्य पुस्तक संग्रह में 14000 खण्ड हैं। इस पुस्तकालय का वाचनालय पूर्णतया वातानुकूलित है। पाठ्य पुस्तकों के अलावा, मुख्य संग्रह में सदस्यों को उधार स्वरूप दिए जाने के लिए हिन्दी और अंग्रेजी के लगभग 35000 दस्तावेज़ और हैं जो उधार स्वरूप इन्हें प्राप्त करने वाले सदस्यों में परिचालन के लिए उपलब्ध हैं। इस पुस्तकालय ने इस अवधि के दौरान लगभग 12000 पुस्तकें जारी कीं और 23500 उपयोगकर्ताओं ने पुस्तकालय का दौरा किया। पुस्तकालय 38 पत्र–पत्रिकाओं तथा 28 समाचार–पत्रों का ग्राहक बना।

2. केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार की सदस्यता :

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली में रह रहे सरकारी कर्मचारी पुस्तकालय के सदस्य बनने के पात्र हैं। सरकारी कर्मचारियों के अलावा अन्य प्रयोक्ता भी भुगतान के आधार पर पुस्तकालय के सदस्य बन सकते हैं। पुस्तकालय ने अपनी सभी शाखाओं यथा केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार, तुलसी सदन पुस्तकालय और आर.के. पुरम शाखा पुस्तकालय के लिए केन्द्रीयकृत सदस्यता अपनायी है। सरकारी कर्मचारियों को दो वर्ष की अवधि के लिए सदस्यता दी जाती है। आज की तिथि के अनुसार, सदस्यों की पंजीकृत संख्या 3973 है, जिनमें से 728 सदस्यों ने इस अवधि के दौरान अर्थात अप्रैल से दिसम्बर, 2009 तक अपनी सदस्यता का पंजीकरण या नवीकरण कराया है।

पुस्तकालय खुलने का समय : पुस्तकालय खुलने का समय सोमवार से शुक्रवार प्रातः 8.00 बजे से सायं 6.00 बजे तक और शनिवार प्रातः 9.00 बजे से सायं 5.30 बजे तक है। रविवार तथा राजपत्रित अवकाश के दिन पुस्तकालय बंद रहता है।

3. संग्रह विकास :

इस अवधि (अप्रैल से दिसम्बर, 2009 तक) के दौरान, सी. एस. एल. के लिए 3647 पाठ्य पुस्तकें (हिन्दी और अंग्रेजी) खरीदी गईं तथा तुलसी सदन पुस्तकालय में हिन्दी तथा अन्य भारतीय क्षेत्रीय भाषाओं में अभी तक 1322 पुस्तकें खरीदी गईं हैं। भारतीय शासकीय दस्तावेज अनुभाग में 4950 सरकारी प्रकाशन तथा भारत के राजपत्र की अधिसूचना हैं और इसमें राज्य राजपत्र भी शामिल हैं। विदेशी शासकीय दस्तावेज अनुभाग ने अपनी क्षेत्रीय भंडारण व्यवस्था के तहत् 117 विश्व बैंक प्रकाशन प्राप्त किए हैं और अभी तक 316 प्रकाशन प्राप्त किये गये हैं। इसके अलावा, इस प्रभाग ने विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय संगठनों तथा अन्य देशों की सरकारों से 424 मुद्रित दस्तावेज, सी डी तथा लगभग 552 माइक्रोफिश भी प्राप्त किए हैं।

4. पत्रिका अंशदान :

पुस्तकालय विभिन्न विषयों की 274 पत्रिकाएं, भारतीय और विदेशी मूल के 71 समाचार–पत्र मंगाता है तथा 250 पत्रिकाएं निःशुल्क प्राप्त करता है। सी.एस.एल. ने संस्कृति मंत्रालय के विभिन्न अधिकारियों तथा अन्य पुस्तकालयों को 4000 समाचार–पत्र / आवधिक पत्रिकाएं जारी की हैं और लगभग 5120 प्रश्नों के उत्तर दिए गए हैं।

5. माइक्रोफिल्म का प्रापण

सी.एस.एल. भारतीय प्रकाशनों की माइक्रोफिल्मों प्रकल्प की मुख्य एजेंसी है। सी.एस.एल. में माइक्रोफिल्म भण्डार कक्ष को अभिलेखीय प्रयोजनों के लिए मास्टर निगेटिवों को परिरक्षित करने हेतु अंतर्राष्ट्रीय मानकों के अनुसरण में विकसित किया गया है। पुस्तकालय को 3096 दस्तावेजों के संग्रह से समृद्ध किया गया है तथा इनमें 37000 माइक्रोफिल्मों के रोल 15 भारतीय भाषाओं में उपलब्ध है। मूल दस्तावेज देश के विभिन्न भागों में उपलब्ध हैं तथा इनकी पुस्तकालय कांग्रेस के माइक्रोफिल्म एकक के सहयोग से माइक्रोफिल्म बनाई गई। इसके साथ, सर्विस निगेटिव के अलावा, सी.एस.एल. ने इन प्रकाशनों के मास्टर निगेटिव के 3546 रोल भी प्राप्त किए हैं। ब्रिटिश लाइब्रेरी, लंदन के पास उपलब्ध वी श्रृंखला का खण्ड 25 उपलब्ध हैं।

6. पाठक सेवाएं :

- सी.एस.एल. मुख्यतः आम पाठकों सहित पंजीकृत पुस्तकालय सदस्यों, नीति निर्माताओं, शिक्षाविदों और शोध अध्येताओं को संदर्भ एवं संदर्भीय सेवा

प्रदान करने के लिए उत्तरदायी हैं। चालू वित्त वर्ष के दौरान सी.एस.एल. के सभी एककों में लगभग 1.00 लाख पुस्तकें परिचालित/परामर्श कार्यों में प्रयोग की गईं। अन्तर पुस्तकालय ऋण सेवा के अंतर्गत दिल्ली में अन्य पुस्तकालयों द्वारा सी.एस.एल. में 296 पुस्तकों का और टी.एस.एल. में 1260 पुस्तकों का लेन–देन किया गया।

- पुस्तकालय के सभी एककों की संदर्भ एवं संदर्भीय सेवाएं, पुस्तकालय सेवाओं का आधार रहीं हैं। संदर्भ स्टाफ द्वारा व्यक्तिगत, टेलिफोन व अन्य माध्यमों से लगभग 70000 प्रश्नों के उत्तर दिए गए।
- 95640 पाठकों ने सी.एस.एल. परिसर में परामर्श/सहायता प्राप्त की।
- पुस्तकालय के प्रतिकृति एकक द्वारा वर्ष के दौरान 54750 (सी.एस.एल.) और 7500 (टी.एस.एल.) फोटोप्रतियॉं उपलब्ध कराई गईं तथा 5765 पृष्ठों का इलेक्ट्रानिक अनुलिपिकरण किया गया।
- अधिकारियों के लिखित अनुरोध पर 600 पुस्तकें जारी की गईं।

7. सूचना प्रौद्योगिकी आधारित कार्यकलाप :

सी.एस.एल. द्वारा बेहतर सूचना भंडारण तथा सुधार प्रणाली तथा संस्था प्रबंधन के उद्देश्य से सूचना व संचार प्रौद्योगिकी का प्रयोग किया जा रहा है। सूचना प्रौद्योगिकी से संबंधित निम्नलिखित परियोजनाएं पूरी कर ली गई हैं :–

i) लगभग 3280 पुस्तकों को विधिवत रूप से परिग्रहित करके तथा प्रोसेस करके कम्प्यूटर में फीड कर दिया गया है। सी.एस.एल., टी.एस.एल. तथा आर.के.पी. पुस्तकालयों में उपलब्ध संग्रह के ब्यौरे वाले ग्रंथ सूची रिकार्डों को ओपाक अर्थात् ऑनलाइन पर उपलब्ध करा दिया गया है।

ii) ''समिति आयोग की रिपोर्टों'' के आंकड़े लैन सर्वर जिसका पता http://10.21.84.138:8080/dspace है, पर उपलब्ध हैं। इस डिजिटल दस्तावेज का सर्च इंजन, डी–स्पेस तथा आई.एस.वाई.एस. विषय वस्तु प्रबंध प्रणाली पर बनाया गया है।

iii) एन.आई.सी. से पंजीकृत डोमेन नाम अर्थात csl.nic.in प्राप्त कर लिया गया है।

iv) csl.nic.in की विषय–वस्तु की लेखा परीक्षा की गई है।

v) सी.एस.एल. के वेब–पेज को पुनः तैयार किया गया है।

vi) सी.एस.एल. में चार डाटाबेस प्रबंधन पद्धतियां अर्थात लिब्सिस, आईएसवाईएस, ग्रीनस्टोन, डी–स्पेस कार्यरत हैं।

8. केन्द्रीय सचिवालय ग्रन्थागार द्वारा आयोजित किए गए कार्यकलाप :

1. अप्रैल, 2009 में पांच दिवसीय हिन्दी पुस्तक प्रदर्शनी : केन्द्रीय सचिवालय पुस्तकालय ने 20 अप्रैल से 24 अप्रैल, 2009 तक पांच दिवसीय हिन्दी पुस्तकों की विक्रय–व–प्रदर्शनी हिन्दी साहित्य को प्रोत्साहित करने के लिए आयोजित की गई। संयुक्त सचिव (जी.) ने इस प्रदर्शनी का उद्घाटन किया और उन्नीस विक्रेताओं/प्रकाशकों ने इसमें भाग लिया जिनमें एन.बी.टी., साहित्य अकादमी, किताबघर, मोतीलाल बनारसी दास, हिन्दी पुस्तक सेंटर शामिल हैं।
2. प्रख्यात हिन्दी विद्वान डॉ. नामवर सिंह ने दिनांक 07.08.2009 को तुलसी सदन में व्याख्यान दिया। इस व्याख्यान का शीर्षक ''भारतीय साहित्य में देश भक्ति'' था।

9. प्रकाशन :

1. केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार में हाल ही में अधिग्रहित पुस्तकों के ब्यौरे को दर्शाने वाला तिमाही पुस्तक समाचार प्रकाशित किया गया है।
2. संस्कृति मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारियों को पुस्तक समीक्षा से संबंधित समाचार–पत्रों की कतरने परिचालित की गई हैं।

10. अन्य कार्यकलाप :

i) सी.एस.एल. ने डेलनेट की अपनी सदस्यता जारी रखी।

ii) सी.एस.एल., विश्व बैंक, प्रकाशनों का क्षेत्रीय संग्रह केन्द्र है।

iii) आधुनिकीकरण तथा संरचनात्मक सुधार : सी.एस.एल. पुस्तकालय परिसर में सघन आधुनिकीकरण कार्य किए जा रहे हैं। सी.पी.डब्ल्यू.डी. द्वारा सी.एस.एल. भूमि तल में तीन संवेदी दरवाजे स्थापित किए गए।

iv) सी.पी.डब्ल्यू.डी. द्वारा फाल्स सीलिंग तथा अन्य सिविल कार्य पूरे किए गए हैं।

v) सी.पी.डब्ल्यू.डी. ने भूतल प्रसाधन कक्ष का नवीकरण किया है।

5

अन्य

5.1

शताब्दियां और वर्षगांठ

संस्कृति मंत्रालय में एक विशेष प्रकोष्ठ बनाया गया है जिसे निम्नलिखित कार्यकलापों के आयोजन की जिम्मेदारी सौंपी गई है :

(i) प्रथम स्वतंत्रता संग्राम, 1857 की 150वीं वर्षगांठ : भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की 60 वीं वर्षगांठ तथा अन्य संबंधित समारोह

इस वर्ष प्रथम स्वतंत्रता संग्राम, 1857 की 150वीं वर्षगांठ, भारतीय स्वतंत्रता की 60वीं वर्षगांठ और अन्य संबंधित समारोह, दिल्ली में शहीद मैमोरियल से संबंधित शेष परियोजनाओं, लाल किला, दिल्ली में राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्रहालय की स्थापना करने, स्वतंत्रता संग्राम से संबंधित स्मारकों के नवीकरण तथा संरक्षण और शहीदों का राष्ट्रीय रजिस्टर तैयार करने के संबंध में भी प्रगति की गई है।

(ii) श्री गुरू ग्रंथ साहिब की गुरू–ता–गद्‌दी का त्रि–शताब्दी स्मरणोत्सव

भारत सरकार ने स्मरणोत्सव के भाग के रूप में तलवंडी साहिब और आनंदपुर साहिब की विकास परियोजनाओं को 179.58 करोड़ रुपए की लागत से अनुमोदित किया है और पंजाब राज्य सरकार को 80 करोड़ रुपए की राशि जारी की गई है।

(iii) दांडी में दांडी स्मारक

माननीय प्रधानमंत्री ने ऐतिहासिक दांडी यात्रा की 75वीं वर्षगांठ के अवसर पर इसके पुनः प्रदर्शन के समापन दिवस पर अनेक घोषणाएं की हैं। इन्हें कार्यान्वित करने में पर्याप्त प्रगति की गई है। उन स्थानों जहां पर ऐतिहासिक दांडी यात्रा के दौरान गांधीजी ने रात्रि में विश्राम किया था, के विकास के लिए गुजरात राज्य सरकार को 10 करोड़ रुपए जारी किए गए हैं। इसी प्रकार साबरमती आश्रम को 10 करोड़ रुपए संचित निधि के रूप में जारी किए गए थे। इसके साथ–साथ अन्य प्रगति भी हासिल की गई अर्थात दांडी में एक पुस्तकालय स्थापित करने और पुस्तकालय विकास की परियोजना को 6.7 करोड़ रुपए की अनुमानित लागत से अनुमोदित किया गया था तथा प्रारंभिक राशि के रूप में 50 लाख रुपए जारी भी किए गए थे। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण 32.54 लाख रुपए की परियोजना लागत से दांडी में सैफी विला को पुनः स्थापित कर रहा है।

5.2
मंत्रालय से अनुदान

सारणी- I
वार्षिक योजना के लिए आबंटन
वर्ष 2009–10 तथा वर्ष 2010–11

(लाख रूपए)

क. सं.	क्षेत्र	वार्षिक योजना 2009–10	कुल आबंटन का प्रतिशत	आबंटन का पूंजीगत	वार्षिक योजना 2010–11	कुल आबंटन का प्रतिशत	आबंटन का पूंजीगत
1	2	3	4	5	6	7	8
1	निदेशक और प्रशासन	100.00	0.14		100.00	0.14	
2	सवंर्धन और प्रसार	15579.00	22.26		17004.00	23.13	
3	पुरातत्व	13950.00	19.93	2400.00	15000.00	20.41	2400.00
4	अभिलेखागार और अभिलेखीय पुस्तकालय	4980.00	7.11	300.00	3730.00	5.07	645.00
5	संग्रहालय	16983.00	24.26	500.00	12849.00	17.48	850.00
6	मानव विज्ञान एवं नृजाति विज्ञान	2650.00	3.79	400.00	2650.00	3.61	400.00
7	सार्वजनिक पुस्तकालय	6480.00	9.26	10.00	6855.00	9.33	5.00
8	इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र	3000.00	4.29		3000.00	4.08	
9	बौद्ध एवं तिब्बती अध्ययन संस्थान	2618.00	3.74		2606.00	3.55	
10	स्मारक एवं अन्य	3660.00	5.23		9706.00	13.21	
	कुल	70000.00	100.00	3610.00	73500.00	100.00	4300.00

टिप्पणी : पूर्वोत्तर के कार्यकलापों के लिए आबंटन संबंधित क्षेत्रों में शामिल किए गए हैं।

परिशिष्ट

सारणी-II

9वीं और 10वीं योजना का आबंटन एवं व्यय तथा 11वीं योजना का आबटन

(लाख रूपए)

क्र.सं.	क्षेत्र	9वीं योजना आबंटन	9वीं योजना व्यय	10वीं योजना आबंटन	10वीं योजना व्यय	11वीं योजना आबंटन
1	2	3	4	5	6	7
1	निदेशन और प्रशासन	350.00	161.87	439.44	273.03	500.00
2	संवर्धन और प्रसार	22740.00	21355.29	36243.00	45478.11	80294.00
3	पुरातत्व	18249.00	14389.64	28483.00	30410.73	65000.00
4	अभिलेखागार और अभिलेखीय पुस्तकालय	4335.00	2413.07	7411.00	6032.49	10300.00
5	संग्रहालय	23775.00	14849.80	30413.00	31420.70	61000.00
6	मानव विज्ञान एवं नृजाति विज्ञान	4700.00	3167.11	4002.00	4205.58	6800.00
7	सार्वजनिक पुस्तकालय	11296.00	5404.59	13105.00	12176.25	36450.00
8	इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र	401.00	1167.00	9000.00	412.00	14000.00
9	बौद्ध एवं तिब्बती अध्ययन संस्था	1950.00	2057.89	4569.00	4511.06	7696.00
10	स्मारक एवं अन्य व्यय	3845.00	2252.16	4934.56	6173.49	16300.00
11	भारत की स्वतंत्रता की स्वर्ण जयंती के समारोह	400.00	175.68	-	-	-
12	सिक्किम सहित पूर्वोत्तर क्षेत्र के लिए प्रावधान	-	508.00	15400.00	21.00	35240.00
13	भवन परियोजनाएं			18000.00	11515.53	18831.00
	कुल	**92041.00**	**67902.10**	**172000.00**	**152629.97**	**352411.00**
	*व्यय में प्रत्येक क्षेत्र में शामिल है					
	पिछली प ंचवर्षीय योजना की तुलना में प्रतिशत में वृद्धि			186-87		204-89

परिशिष्ट

सारणी-III
कला और संस्कृति संबंधी वर्षवार बजट प्राक्कलन और व्यय (मध्य क्षेत्र)

(करोड़ रूपए)

वर्ष	बजट प्राक्कलन			व्यय		
	योजनागत#	योजनेतर	कुल	योजनागत	योजनेतर	कुल
1	2	3	4	5	6	7
1985–86	19.07	32.43	51.50	19.87	31.34	51.21
1986–87	57.80	32.43	90.23	45.09	39.81	84.90
1987–88	65.00	67.76	132.76	45.64	65.65	111.29
1988–89	62.00	71.26	133.26	51.08	55.58	106.66
1989–90	54.00	70.14	124.14	52.15	47.98	100.13
1990–91	66.20	81.32	147.52	56.98	55.33	112.31
1991–92	74.20	62.80	137.00	58.94	60.99	119.93
1992–93	64.00	62.59	126.59	57.63	66.55	124.18
1993–94	85.70	70.06	155.76	104.19	73.55	177.74
1994–95	102.60	77.09	179.69	98.35	301.95*	98.35
1995–96	113.00	82.73	195.73	121.01	86.84	207.85
1996–97	113.76	89.47	203.23	102.24	98.18	200.42
1997–98	120.90	127.00	247.90	114.72	141.64	256.36
1998–99	127.20	174.00	301.20	125.49	182.87	308.36
1999–2000	147.20	211.21	358.41	117.08	217.39	334.47
2000–01	162.25	260.00	422.25	149.89	203.73	353.62
2001–02	190.45	240.30	430.75	171.82	266.75	438.57
2002–03	205.00	281.45	486.45	254.07	313.09	567.16
2003–04	225.20	317.52	542.72	243.25	310.08	553.33
2004–05	400.00	312.83	712.83	306.10	294.10	600.20
2005–06	551.12	314.15	865.27	368.13	302.77	670.90
2006–07	470.00	350.00	820.00	354.74	360.84	715.58
2007–08	557.00	375.61	932.61	470.46	394.04	864.50
2008–09	600.00	425.00	1025.00	525.37	522.09	1047.46
2009–10	700.00	576.00	1276.00	326.36	438.83@	765.19
2010–11	735.00	503.00	1238.00			

*इसमें निज़ाम के आभूषण के लिए 218.00 करोड़ रू. शामिल हैं

@31/12/2009 तक व्यय

#संस्कृति मंत्रालय का वर्ष 2003–04 तक का पूंजीगत बजट शहरी विकास मंत्रालय के विस्तृत अनुदान मांग में दर्शाया गया है।

अनुलग्नक-।।

वर्ष 2009–10 तथा 2010–11 के दौरान संस्कृति मंत्रालय का स्कीम/संगठन-वार वित्तीय आबंटन-योजनागत, योजनेतर

(लाख रूपए)

क.सं.	योजना/संगठन का नाम	शीर्ष	बजट प्राक्कलन 2009–10	संशोधित प्राक्कलन 2009–10	बजट प्राक्कलन 2010–11
1	भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, नई दिल्ली	योजनागत	111.00	127.00	121.00
		योजनेतर	268.70	299.21	260.00
2	संस्कृति मंत्रालय सचिवालय	योजनागत	1.00	0.90	1.00
		योजनेतर	17.00	16.75	15.00
3	संगीत नाटक अकादेमी, नई दिल्ली	योजनागत	13.10	12.20	11.50
		योजनेतर	8.30	8.91	7.10
4	राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली	योजनागत	13.00	12.55	13.00
		योजनेतर	7.60	7.91	6.80
5	साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली	योजनागत	10.50	6.30	10.50
		योजनेतर	6.00	7.39	6.30
6	ललित कला अकादेमी, नई दिल्ली	योजनागत	6.00	4.85	7.00
		योजनेतर	5.80	6.58	6.15
7	सांस्कृतिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केन्द्र, नई दिल्ली	योजनागत	10.00	13.90	10.00
		योजनेतर	2.95	3.07	3.13
8	मंच, साहित्य एवं प्लास्टिक कलाओं के क्षेत्र में उत्कृष्ट कलाकारों को छात्रवृत्ति एवं अध्येतावृत्ति प्रदान करना	योजनागत	7.00	4.50	7.00
		योजनेतर	1.30	1.21	1.35
9	क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र	योजनागत	14.00	12.75	14.00
		योजनेतर			
10	विशिष्ट मंच कला परियोजनाओं के लिए व्यावसायिक समूहों तथा व्यक्तियों को वित्तीय सहायता	योजनागत	16.00	24.50	25.00
		योजनेतर	1.50	1.42	1.55
11	स्वैच्छिक संगठनों को भवन अनुदान	योजनागत	8.10	2.10	5.00
		योजनेतर			
12	लेखन, कला और इसी प्रकार के जीवन से संबंधित अन्य क्षेत्रों में ऐसे विख्यात व्यक्तियों जो विषम परिस्थितियों में हो सकते हैं, को वित्तीय सहायता प्रदान करने की स्कीम	योजनागत	3.25	3.10	4.50
		योजनेतर	2.00	1.89	2.20
13	राष्ट्रीय कलाकार कल्याण निधि की संरचना	योजनागत	5.00	1.00	5.00

(करोड़ रूपए)

क्र. सं.	योजना/संगठन का नाम	शीर्ष	बजट प्राक्कलन 2009-10	संशोधित प्राक्कलन 2009-10	बजट प्राक्कलन 2010-11
14	सांस्कृतिक आदान–प्रदान कार्यक्रम के अंतर्गत शिष्टमंडल परिसरों की स्थापना	योजनागत	2.00	1.00	3.00
		योजनेतर	-	-	-
15	राष्ट्रीय संस्कृति निधि	योजनागत	0.50	0.01	0.01
		योजनेतर	-	-	-
16	राष्ट्रीय महत्व के सांस्कृतिक संगठनों को सहायता	योजनागत	2.00	5.75	5.00
		योजनेतर	2.80	2.66	3.00
17	हिमालयी कला एवं संस्कृति के संवर्धन के लिए वित्तीय सहायता	योजनागत	1.00	0.55	0.75
		योजनेतर	-	-	-
18	जनजातीय लोक कलाओं के संवर्धन के लिए वित्तीय सहायता	योजनागत	1.00	0.40	0.25
		योजनेतर	-	-	-
19	कलाक्षेत्र, चेन्नई	योजनागत	2.50	4.75	3.00
		योजनेतर	4.35	4.80	4.10
20	सांस्कृतिक संगठनों का विकास	योजनागत	1.60	1.60	3.00
		योजनेतर	-	-	-
21	शंकर अंतर्राष्ट्रीय बाल प्रतियोगिता	योजनागत	-	-	-
		योजनेतर	0.03	0.03	0.03
22	साहित्यिक कार्यकलापों में कार्यरत संस्थान एवं व्यक्ति	योजनागत	-	-	-
		योजनेतर	0.10	0.10	0.10
23	विभिन्न सांस्कृतिक क्षेत्रों के युवा कार्मिकों के लिए छात्रवृत्ति	योजनागत	-	-	-
		योजनेतर	0.73	0.66	0.78
24	पुस्तक एवं कला वस्तुओं की प्रस्तुती	योजनागत	-	-	-
		योजनेतर	0.03	0.03	0.03
25	गांधी शांति पुरस्कार	योजनागत	-	-	-
		योजनेतर	1.50	1.47	1.55
26	अमूर्त विरासत एवं सांस्कृतिक विविधता के क्षेत्र में सुरक्षा एवं अन्य रक्षात्मक उपायों की स्कीम (यूनेस्को सम्मेलन से उत्पन्न)	योजनागत	0.10	0.06	0.50
		योजनेतर	-	-	-
27	भारतीय संस्कृति एवं विरासत के बारे में संवर्धन एवं जागरूकता का प्रसार की स्कीम	योजनागत	1.60	0.01	0.01
		योजनेतर	-	-	-
28	सांस्कृतिक विरासत स्वैच्छिक स्कीम	योजनागत	1.60	0.01	0.01
		योजनेतर	-	-	-
29	सांस्कृतिक उद्योगों के लिए पायलट स्कीम	योजनागत	1.00	0.01	0.50
		योजनेतर			
30	सांस्कृतिक संसाधन प्रबंधन केन्द्र	योजनागत	1.00	0.01	0.01
		योजनेतर	-	-	-

(करोड़ रूपए)

क्र. सं.	योजना/संगठन का नाम	शीर्ष	बजट प्राक्कलन 2009-10	संशोधित प्राक्कलन 2009-10	बजट प्राक्कलन 2010-11
31	विदेश में भारतीय साहित्य*	योजनागत	-	-	1.00
		योजनेतर	-	-	-
32	राष्ट्रीय गांधी विरासत स्थल मिशन*	योजनागत	-	-	5.00
		योजनेतर	-	-	-
33	राष्ट्रीय मंच कला केन्द्र की स्थापना करना*	योजनागत	-	-	1.00
		योजनेतर	-	-	-
34	इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय, भोपाल	योजनागत	9.50	8.45	9.50
		योजनेतर	3.00	2.91	2.90
35	भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण, कोलकाता	योजनागत	10.50	9.75	10.50
		योजनेतर	16.00	18.69	16.25
36	राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली	योजनागत	4.50	3.75	5.00
		योजनेतर	16.00	15.77	14.50
37	एशियाटिक सोसायटी, कोलकाता	योजनागत	21.00	10.50	8.00
		योजनेतर	7.60	8.84	7.70
38	एशियाटिक सोसायटी, मुम्बई	योजनागत	1.00	1.00	1.00
		योजनेतर			
39	खुदा बख्श ओरियंटल पब्लिक लाइब्रेरी, पटना	योजनागत	4.10	3.40	1.50
		योजनेतर	2.08	2.60	2.02
40	टी.एम.एस.एस.एम. लाइब्रेरी, तंजावुर	योजनागत	1.50	1.00	1.10
		योजनेतर	0.00	0.00	0.00
41	रामपुर रजा लाइब्रेरी, रामपुर	योजनागत	3.90	3.50	4.05
		योजनेतर	1.35	1.15	1.18
42	राष्ट्रीय पाण्डुलिपि परिरक्षण मिशन	योजनागत	9.00	6.00	7.50
		योजनेतर	-	-	-
43	श्रृव्य–दृश्य सामग्रियों के लिये राष्ट्रीय अभिलेखागार*	योजनागत	-	-	1.00
		योजनेतर	-	-	-
44	केन्द्रीय बौद्ध अध्ययन संस्थान, लेह	योजनागत	8.51	8.00	8.50
		योजनेतर	4.25	4.13	4.20
45	केन्द्रीय उच्चतर तिब्बतीय अध्ययन संस्थान, वाराणसी	योजनागत	5.50	5.00	5.80
		योजनेतर	7.00	6.92	6.90
46	बौद्ध एवं तिब्बतीय संस्थानों के विकास के लिए वित्तीय सहायता	योजनागत	4.50	1.80	3.50
		योजनेतर	-	-	-
47	तिब्बत मठ, नई दिल्ली	योजनागत	0.30	0.30	0.50
		योजनेतर			
48	त्वांग मठ, अरुणाचल प्रदेश	योजनागत	0.01	0.01	0.01
		योजनेतर	-	-	-

(करोड़ रूपए)

क्र. सं.	योजना/संगठन का नाम	शीर्ष	बजट प्राक्कलन 2009-10	संशोधित प्राक्कलन 2009-10	बजट प्राक्कलन 2010-11
49	नांग्याल तिब्बती विज्ञान अनुसंधान संस्थान, गंगटोक	योजनागत	-	-	-
		योजनेतर	0.42	0.40	0.42
50	केन्द्रीय हिमालययी अध्ययन संस्थान	योजनागत	0.01	0.01	0.01
		योजनेतर	-	-	-
51	इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली	योजनागत	25.00	25.00	25.00
		योजनेतर	-	-	-
52	राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली	योजनागत	10.00	7.50	10.00
		योजनेतर	8.92	8.74	7.75
53	विज्ञान शहर	योजनागत	19.28	9.30	12.00
		योजनेतर	-	-	-
54	विक्टोरिया मैमोरियल हॉल, कोलकाता	योजनागत	21.00	6.50	11.00
		योजनेतर	3.65	3.57	3.30
55	क्षेत्रीय एवं स्थानीय संग्रहालयों का संवर्धन एवं सुदृढ़ीकरण	योजनागत	14.84	12.50	14.50
		योजनेतर	-	-	-
56	राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद, कोलकाता	योजनागत	20.00	18.20	21.00
		योजनेतर	23.50	34.92	24.25
57	राष्ट्रीय सांस्कृतिक सम्पदा संरक्षण अनुसंधान प्रयोगशाला, लखनऊ	योजनागत	3.00	2.77	2.20
		योजनेतर	2.90	3.41	3.14
58	इलाहाबाद संग्रहालय, इलाहाबाद	योजनागत	4.00	2.45	2.50
		योजनेतर	1.85	2.37	1.98
59	राष्ट्रीय संग्रहालय संस्थान : कला इतिहास, संरक्षण एवं संग्रहालय विज्ञान	योजनागत	2.00	2.00	4.00
		योजनेतर	0.26	0.25	0.25
60	सालारजंग संग्रहालय, हैदराबाद	योजनागत	15.00	14.80	10.00
		योजनेतर	8.40	8.84	8.45
61	राष्ट्रीय आधुनिक कला दीर्घा, नई दिल्ली	योजनागत	7.00	5.30	7.00
		योजनेतर	3.80	3.90	3.85
62	भारतीय संग्रहालय, कोलकाता	योजनागत	29.00	9.50	12.00
		योजनेतर	6.25	6.19	5.95
63	महानगरों में संग्रहालयों के आधुनिकीकरण की स्कीम	योजनागत	10.00	5.50	6.00
		योजनेतर	-	-	-
64	वृंदावन अनुसंधान संस्थान	योजनागत	-	-	0.43
		योजनेतर	0.17	0.16	0.17
65	राजा राममोहन राय पुस्तकालय प्रतिष्ठान, कोलकाता	योजनागत	28.50	31.50	30.00
		योजनेतर	3.00	3.15	2.90

(करोड़ रूपए)

क्र. सं.	योजना/संगठन का नाम	शीर्ष	बजट प्राक्कलन 2009-10	संशोधित प्राक्कलन 2009-10	बजट प्राक्कलन 2010-11
66	राष्ट्रीय पुस्तकालय, कोलकाता	योजनागत	18.50	14.65	15.00
		योजनेतर	21.00	20.63	21.50
67	दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी, दिल्ली	योजनागत	4.00	5.80	5.00
		योजनेतर	10.65	11.57	10.70
68	केन्द्रीय संदर्भ पुस्तकालय, कोलकाता	योजनागत	0.50	0.45	0.60
		योजनेतर	2.10	2.09	2.02
69	राज्य केन्द्रीय पुस्तकालय, मुम्बई	योजनागत	0.20	0.20	0.20
		योजनेतर	0.30	0.29	0.30
70	कोन्नेमारा पब्लिक लाइब्रेरी, चेन्नई	योजनागत	2.00	1.30	0.60
		योजनेतर	0.35	0.33	0.35
71	केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार, नई दिल्ली	योजनागत	2.40	1.90	2.40
		योजनेतर	2.00	1.90	1.95
72	तिब्बती कार्य एवं अभिलेखीय पुस्तकालय, धर्मशाला	योजनागत	-	-	-
		योजनेतर	0.70	0.67	1.20
73	भारत महोत्सव	योजनागत			
		योजनेतर	4.10	3.86	4.10
74	सांस्कृतिक आदान–प्रदान कार्यक्रम के अंतर्गत शिष्टमंडल	योजनागत	-	-	-
		योजनेतर	0.80	0.72	0.80
75	गैर–सरकारी सदस्यों को टीए/डीए सुविधाएं	योजनागत	-	-	-
		योजनेतर	0.08	0.07	0.03
76	अंतर्राष्ट्रीय संरक्षण केन्द्र रोम को अंशदान	योजनागत	-	-	-
		योजनेतर	0.12	0.12	0.12
77	अंतर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक कार्यकलाप और भारत मैत्री सोसायटी को अनुदान तथा	योजनागत	-	-	-
		योजनेतर	0.70	0.66	0.70
78	विश्व विरासत निधि को अंशदान	योजनागत	-	-	-
		योजनेतर	0.08	0.08	0.08
79	यूनेस्को विरासत निधि को अंशदान	योजनागत	-	-	-
		योजनेतर	0.16	0.16	0.18
80	अंतर्राष्ट्रीय कला परिषद और संस्कृति अभिकरण परिसंघ (आईएफएसीसीए) को अंशदान*	योजनागत	-	-	-
		योजनेतर	-	-	0.05
81	राष्ट्रीय पुस्तकालय मिशन की स्थापना, आगे चलकर आयोग का गठन	योजनागत	4.00	0.10	10.10
		योजनेतर	-	-	-
82	नव नालंदा महाविहार एवं ह्वेन तसांग स्मारक	योजनागत	3.00	2.80	3.20
		योजनेतर	1.65	2.01	1.58

(करोड़ रूपए)

क्र. सं.	योजना/संगठन का नाम	शीर्ष	बजट प्राक्कलन 2009-10	संशोधित प्राक्कलन 2009-10	बजट प्राक्कलन 2010-11
83	गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति, नई दिल्ली	योजनागत	10.00	5.30	10.00
		योजनेतर	4.55	4.44	4.20
84	नेहरू स्मारक संग्रहालय एवं पुस्तकालय, नई दिल्ली	योजनागत	4.00	9.80	5.26
		योजनेतर	9.20	10.33	9.30
85	मौलाना अबुल कलाम आजाद एशियाई अध्ययन संस्थान	योजनागत	6.00	5.60	6.50
		योजनेतर	1.10	1.06	1.05
86	खालसा विरासत परियोजनाओं के लिए वित्तीय सहायता	योजनागत	11.50	7.00	8.00
		योजनेतर	0.00	0.00	0.00
87	स्वैच्छिक संगठनों को निम्नलिखित शताब्दियां/जयंती समारोह मनाने के लिये वित्तीय सहायता (1) रविन्द्र नाथ टैगोर की 150वीं जयंती (2) स्वामी विवेकानन्द की 150वीं जयंती*	योजनागत	-	1.00	30.00
		योजनेतर	2.00	1.90	1.80
88	राष्ट्रीय स्मारकों (सरकार वल्लभभाई पटेल स्मारक का विकास और राजेन्द्र प्रसाद स्मारक का विकास तथा इसे सुव्यवस्थित रखने) का विकास और अनुरक्षण*	योजनागत	-	10.00	15.00
		योजनेतर	2.00	1.90	1.70
89	भगवान बुद्ध के महापरिनिर्वाण 2550वीं वर्षगांठ	योजनागत	-	-	-
		योजनेतर	0.50	0.47	0.45
90	श्री लाल बहादुर शास्त्री का जन्म शताब्दी समारोह	योजनागत	-	-	2.00
		योजनेतर	0.21	0.20	0.05
91	प्रथम स्वतंत्रता संग्राम, 1857 की 150वीं वर्षगांठ मनाना	योजनागत	-	-	10.00
		योजनेतर	10.00	9.50	1.00
92	गुरू–ता–गद्दी की त्रैशताब्दी समारोह	योजनागत			
		योजनेतर	50.01	47.51	0.01
93	प्रख्यात कलाकारों को यात्रा अनुदान	योजनागत	0.00	0.00	0.00
		योजनेतर	0.05	0.05	0.05
94	जलियांवाला बाग स्मारक का विकास	योजनागत	0.50	0.40	0.50
		योजनेतर	0.50	0.48	0.50
95	ज्ञान आधारित संस्थाओं में विद्वानों की लचीली नियुक्ति के लिये विद्वानो फेलोशिप	योजनागत	1.00	0.50	1.50
		योजनेतर	-	-	-
96	पूर्वोत्तर क्षेत्र में कार्यक्रम कार्यकलाप	योजनागत	70.00	63.00	73.50
		योजनेतर	-	-	-
97	संस्कृति मंत्रालय के सम्बद्ध/अधीनस्थ कार्यालयों के लिए भवन परियोजना	योजनागत	36.10	45.10	43.00
		योजनेतर	-	-	-
	कुल	**योजनागत**	**700.00**	**630.00**	**735.00**
		योजनेतर	**576.00**	**624.00**	**503.00**
	* नई योजनाएं				

5.2.1

मंच कलाएं

इस मंत्रालय का मंच कला प्रभाग, देश में सांस्कृतिक कार्यकलापों को बढ़ावा देने में संलग्न व्यक्तियों/संगठनों को वित्तीय सहायता देने के लिए निम्नलिखित स्कीम चला रहा है :–

1. विशिष्ट मंच कला परियोजनाओं में संलग्न व्यावसायिक वर्गों और अलग–अलग व्यक्तियों को वित्तीय सहायता प्रदान करने की स्कीम।
2. स्वैच्छिक सांस्कृतिक संगठनों को भवन अनुदान की स्कीम।

इस स्कीम का संक्षिप्त विवरण नीचे दिया गया है :–

1. विशिष्ट मंच कला परियोजनाओं में संलग्न व्यावसायिक वर्गों और अलग–अलग व्यक्तियों को वित्तीय सहायता की स्कीम

मंच कला के क्षेत्र में यह मंत्रालय की सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्कीम है। इस स्कीम के अंतर्गत थिएटर समूहों, संगीत समष्टियों, बाल थिएटरों, सोलो कलाकारों तथा मंच कला कार्यकलापों के सभी रूपों के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है।

इस स्कीम में निम्नलिखित दो मुख्य घटक हैं :–

(i) वेतन अनुदान
(ii) निर्माण अनुदान

दिनांक 01.04.2008 से वेतन अनुदान घटक के तहत गुरूओं को देय राशि 10,000 रुपए प्रति माह तथा कलाकारों को देय राशि 6,000 रुपए प्रति माह है। दिनांक 01.04.2009 से इस स्कीम को पुनः संशोधित किया गया है और निम्नलिखित पहलुओं में वेतन/निर्माण अनुदान में इस प्रकार संशोधन किए गए हैं :

(i) समूह के भाग के रूप में सहायता प्राप्त कलाकारों की अधिकतम संख्या की सीमा 20 से बढ़ाकर 25 की गई है।
(ii) निर्माण अनुदान की अधिकतम सीमा को प्रति परियोजना 1,00,000 रुपए से बढ़ाकर 5,00,000 रुपए किया गया है।

किसी वर्ष में वित्तीय सहायता की निर्मुक्ति आवेदन पत्रों के प्राप्त होने तथा उन पर विशेषज्ञ समिति की सिफारिशों पर निर्भर करती है। चल रहे मामलों में आगे वित्तीय सहायता जारी किया जाना स्कीम के प्रावधानों के अनुसार, सभी आवश्यक दस्तावेज प्राप्त होने पर निर्भर करता है। वर्ष 2009–10 के दौरान फरवरी 2010 तक 2173 लाख रुपए (योजनागत) की राशि और 4.45 करोड़ रुपए (योजनेतर) की राशि इस स्कीम के तहत जारी करने के लिए संस्वीकृत की गई।

2. स्वैच्छिक सांस्कृतिक संगठनों को भवन अनुदान की स्कीम

इस स्कीम का उद्देश्य निम्नलिखित उद्देश्य से स्वैच्छिक सांस्कृतिक संगठनों को अनुदान देना है :–

(i) उनके भवनों के निर्माण के लिए; और

(ii) विशिष्ट उपस्करों की खरीद के लिए।

मौजूदा भवनों में विस्तार करने या उनका जीर्णोद्धार करने संबंधी अनुरोध इस स्कीम के तहत तब तक शामिल नहीं किए जाते जब तक इस प्रकार के प्रस्ताव विशिष्ट रूप से आधुनिकीकरण/स्तरोन्नयन/सभागारों, स्टूडियो, संगीत हॉलों, थिएटरों में विशिष्ट रूप से विस्तार करने के लिए न हों। इस स्कीम के तहत भवन निर्माण के लिए उपलब्ध अधिकतम वित्तीय सहायता 15.00 लाख रुपए थी जिसका 30 प्रतिशत, 40 प्रतिशत और 30 प्रतिशत की तीन किश्तों में भुगतान किया जाना था तथा 2.5 लाख रुपए के उपस्कर खरीदने के अनुदान का भुगतान 90 प्रतिशत और 10 प्रतिशत की दो किस्तों में किया जाना था। तथापि, इस स्कीम को संशोधित किया जा रहा है और इस स्कीम को अधिक कारगर बनाने के लिए इस स्कीम के तहत भवन अनुदान की राशि तथा अन्य निबंधन और शर्तों की प्रत्यक्ष जांच की जा रही है।

किसी वर्ष में वित्तीय सहायता की निर्मुक्ति, आवेदन पत्रों के प्राप्त होने तथा उन पर विशेषज्ञ समिति की सिफारिशों पर निर्भर करती है। चल रहे मामलों में आगे वित्तीय सहायता जारी किया जाना, स्कीम के प्रावधानों के अनुसार सभी आवश्यक दस्तावेज़ प्राप्त होने पर निर्भर करता है। वर्ष 2009–10 के दौरान फरवरी, 2010 तक 1.32 करोड़ रूपए की राशि इस स्कीम के तहत जारी करने के लिए संस्वीकृत की गई है।

5.2.2

छात्रवृत्ति और अध्येतावृत्ति

मंत्रालय का छात्रवृत्ति और अध्येतावृत्ति प्रभाग, देश में सांस्कृतिक गतिविधियों को बढ़ावा देने में संलग्न व्यक्तियों/संगठनों को आर्थिक सहायता प्रदान करने के लिए निम्नलिखित स्कीमें चलाता हैः–

1. विभिन्न सांस्कृतिक क्षेत्रों को युवा कलाकारों को छात्रवृत्तियां प्रदान करने की स्कीम।
2. सांस्कृतिक क्षेत्र के उत्कृष्ट व्यक्तियों को अध्येतावृत्तियां प्रदान करने की स्कीम।
3. गैर–लाभकारी संगठनों द्वारा सांस्कृतिक विषयों पर सेमिनार, उत्सव एवं प्रदर्शनियां आयोजित करने हेतु वित्तीय सहायता स्कीम (सांस्कृतिक कार्य अनुदान स्कीम)।
4. राष्ट्रीय महत्व के सांस्कृतिक संगठनों को वित्तीय सहायता की स्कीम।
5. कला, संस्कृति एवं विरासत में विजिटिंग अध्येताओं हेतु स्कीम।

मंत्रालय ने उपरोक्त क्र.सं. 3 में बताई गई स्कीम में व्यापक संशोधन किया है, जिसे लोकप्रिय रूप में 'सेमिनार अनुदान' स्कीम के नाम से जाना जाता था। विस्तृत दायरे के साथ संशोधित स्कीम का नाम गैर–लाभकारी संगठनों द्वारा सांस्कृतिक विषयों पर सेमिनार, उत्सव एवं प्रदर्शनियों हेतु वित्तीय सहायता स्कीम (सांस्कृतिक कार्य अनुदान स्कीम) रखा गया है। पूर्व में इस स्कीम में अनुसंधान, सेमिनारों, सम्मेलनों एवं संगोष्ठियों को शामिल किया जाता था। इन कार्यकलापों के अतिरिक्त, नई सांस्कृतिक कार्य अनुदान स्कीम में उत्सवों एवं प्रदर्शनियों को भी शामिल किया गया है। नई स्कीम में सहायता प्रदान करने की अधिकतम सीमा को तीन लाख रुपए से बढ़ाकर पॉच लाख रुपए प्रति परियोजना कर दिया गया है। नई स्कीम की दूसरी लाभकारी बात यह है कि इसके बाद गैर–सरकारी संगठनों, सोसायटियों इत्यादि के साथ–साथ विश्वविद्यालय के विभाग तथा विश्वविद्यालय के केन्द्र भी सहायता प्राप्त करने के लिए आवेदन करने के लिए पात्र होंगे। इससे पूर्व सेमिनार अनुदान स्कीम प्रत्येक वर्ष के दौरान केवल एक बार ही नए आवेदनों के लिए खोली जाती थी जबकि नई सांस्कृतिक कार्य अनुदान स्कीम पूरे वर्ष खुली रहेगी।

मंत्रालय ने ''कला, संस्कृति एवं विरासत में विजिटिंग अध्येताओं हेतु स्कीम'' नामक एक नई स्कीम भी शुरू की है। इस स्कीम की अभिकल्पना राष्ट्रीय सांस्कृतिक संस्थाओं को छात्रवृत्ति, अनुसंधान एवं ज्ञान सृजन के क्षेत्रों में उत्कृष्टता केन्द्रों के रूप में विकसित होने/बने रहने के उनके प्रयासों को मदद प्रदान करना है। इस स्कीम का उद्देश्य संस्थाओं को अपने कार्यकलापों में अकादमिक प्रबोधन को शामिल करने के लिए प्रेरित करने हेतु बाह्य अकादमिक विशेषज्ञता प्रदान करना है। इस स्कीम में विद्वानों/शिक्षाविदों की इन संस्थाओं के मुख्य उद्देश्यों से संबंधित अनुसंधान कार्यों एवं परियोजनाओं को शुरू करने के लिए लेटरल गतिशीलता तथा नए सृजनात्मक लाभ एवं अकादमिक उत्कृष्टता के साथ उनका संवर्धन करने की अभिकल्पना की गई है। यह स्कीम भारतीय नागरिकों एवं विदेशी नागरिकों दोनों के लिए ही खुली रहेगी।

अच्छी अकादमिक/व्यावसायिक विश्वसनीयता वाले वे विद्वान जिन्होंने अपने संबंधित ज्ञान के क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, विजिटिंग अध्येत्ताओं हेतु इस स्कीम के तहत आवेदन करने के पात्र होंगे। संस्थान तथा विद्वान दोनों ही अन्वेषण किए जाने वाले क्षेत्रों की पहचान करने के लिए स्वतंत्र होंगे। चयनित अध्येत्ता अनुसंधानकर्ताओं एवं संस्थाओं दोनों के लिए आपसी लाभ वाली परियोजना पर कार्य करेंगे।

छात्रवृत्ति एवं अध्येत्ता प्रभाग द्वारा संचालित की जा रही विभिन्न स्कीमों का संक्षिप्त विवरण नीचे दिया गया हैः–

1 विभिन्न सांस्कृतिक क्षेत्रों के युवा कलाकारों को छात्रवृत्तियां प्रदान करने की स्कीम

उत्कृष्ट उदीयमान युवा कलाकारों को भारतीय शास्त्रीय नृत्य, भारतीय शास्त्रीय संगीत, थिएटर, दृश्य कला, स्वांग, लोक कला, परंपरागत और देशी कला आदि के क्षेत्र में उन्नत प्रशिक्षण देने के लिए उन्हें छात्रवृत्तियां प्रदान की जाती हैं। इस स्कीम के तहत प्रत्येक वर्ष 400 छात्रवृत्तियां प्रदान की जाती हैं जो दो वर्ष की अवधि के लिए होती हैं। छात्रवृत्ति की राशि 5000/–रुपए प्रतिमाह है।

18–25 आयु वर्ग के कलाकार आवेदन करने के पात्र होते हैं। चूंकि छात्रवृत्तियां उन्नत प्रशिक्षण के लिए प्रदान की जाती हैं इसलिए आवेदनकर्ताओं को अपने गुरू/संस्थान से 5 वर्ष का प्रशिक्षण प्राप्त किया हुआ होना चाहिए।

2 सांस्कृतिक क्षेत्र के उत्कृष्ट व्यक्तियों को अध्येतावृत्ति प्रदान करने की स्कीम

साहित्यिक कला, प्लास्टिक कला, मंच कला, भारत विद्या, पुरालिपि, संस्कृति के समाज शास्त्र, सांस्कृतिक अर्थशास्त्र, स्मारकों के संरचनात्मक और इंजीनियरी पक्षों, मुद्रा शास्त्र, संरक्षण के वैज्ञानिक और तकनीकी पक्षों, कला और विरासत के प्रबंधन पक्षों और संस्कृति तथा सृजनात्मकता से जुड़े क्षेत्रों में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग से जुड़े अध्ययन में संलग्न उत्कृष्ट कलाकारों को अध्येतावृत्तियां प्रदान की जाती है। दो वर्ष की अवधि के लिए कुल 250 अध्येतावृत्तियां प्रदान की जाती हैं, इनमें से 15000/–रुपए प्रतिमाह दी जाने वाली 125 वरिष्ठ अध्येतावृत्तियां हैं और 7500/–रुपए प्रतिमाह दी जाने वाली 125 कनिष्ठ अध्येतावृत्तियां हैं। 40 वर्ष या इससे ऊपर की आयु के कलाकार वरिष्ठ छात्रवृत्तियों के लिए आवेदन करने के पात्र हैं तथा 25 से 40 वर्ष तक की आयु के कलाकार कनिष्ठ अध्येतावृत्तियों के लिए आवेदन कर सकते हैं।

अध्येतावृत्तियां अनुसंधोन्मुख परियोजनाएं चलाने के लिए प्रदान की जाती हैं। जबकि शैक्षिक अनुसंधान और निष्पादन से जुड़े अनुसंधान दोनों को प्रोत्साहित किया जाता है, आवेदनकर्ता को परियोजना शुरू करने में अपनी क्षमता का प्रमाण देना पड़ता है। अध्येतावृत्ति का उद्देश्य प्रशिक्षण देना, कार्यशाला, सेमिनार आयोजित करना या आत्मकथा/काल्पनिक उपन्यास आदि लिखना नहीं है।

3. गैर–लाभकारी संगठनों द्वारा सांस्कृतिक विषयों पर सेमिनारों, उत्सवों एवं प्रदर्शनियों हेतु वित्तीय सहायता की स्कीम (सांस्कृतिक कार्य अनुदान स्कीम)

संस्कृति मंत्रालय ने 'सेमिनार अनुदान स्कीम' का विस्तृत एवं संशोधित रूप प्रस्तुत किया है जिसे अब **''सांस्कृतिक कार्य अनुदान स्कीम''** के नाम से जाना जाता है। औपचारिक रूप से हालांकि इसे ''गैर–लाभकारी संगठनों द्वारा सांस्कृतिक विषयों पर सेमिनारों, उत्सवों एवं प्रदर्शनियों हेतु वित्तीय सहायता की स्कीम'' शीर्षक से जाना जाता है। इस स्कीम की मुख्य विशेषताएं इस प्रकार हैं :–

(i) नई ''सांस्कृतिक कार्य अुनदान स्कीम'' में अनुसंधान परियोजनाओं, सेमिनारों, सम्मेलनों, संगोष्ठियों इत्यादि के साथ उत्सवों एवं प्रदर्शनियों को भी शामिल किया गया है।

(ii) नई स्कीम में सहायता प्रदान करने की ऊपरी सीमा को भी बढ़ाया गया है। किसी विशेष परियोजना के मामले में सहायता कुल परियोजना लागत के 75 प्रतिशत तक सीमित होती है, परंतु सरकार का योगदान अब पॉच लाख रुपए तक हो सकता है।

(iii) इस नई स्कीम की दूसरी लाभकारी विशेषता यह है कि अब के बाद गैर–सरकारी संगठनों, सोसायटियों, न्यासों इत्यादि के साथ ही विश्वविद्यालय के विभाग तथा विश्वविद्यालय केन्द्र भी सहायता के लिए आवेदन करने हेतु पात्र होंगे।

(iv) पूर्व में सेमिनार अनुदान स्कीम प्रत्येक वर्ष के दौरान केवल एक बार ही नए आवेदनों के लिए खोली जाती थी जबकि नई ''सांस्कृतिक कार्य अनुदान स्कीम'' पूरे वर्ष भर आवेदन करने हेतु खूली रहेगी।

(v) गैर–सरकारी संगठनों/स्वैच्छिक संगठनों (परंतु विश्वविद्यालय एवं उनके केन्द्र नहीं) को डाटाबेस प्रयोजनार्थ एक सामान्य सी प्रक्रिया के जरिए गैर–सरकारी संगठन भागीदारी के राष्ट्रीय पोर्टल **www.ngo.india.gov.in** पर साइन अप/पंजीकरण करवाना होगा।

4. रामकृष्ण मिशन सांस्कृतिक संस्थान, कोलकाता (राष्ट्रीय महत्व का एक सांस्कृतिक संगठन) को वित्तीय सहायता

रामकृष्ण मिशन सांस्कृतिक संस्थान, जो रामकृष्ण मिशन का शाखा केन्द्र है एक प्रबंधन समिति द्वारा चलाया जाता है जिसमें जीवन के भिन्न–भिन्न क्षेत्रों से लिए गए प्रख्यात विद्वान तथा उत्कृष्ट व्यक्ति शामिल होते हैं। पश्चिम बंगाल का राज्यपाल इस प्रबंधन समिति का अध्यक्ष हैं।

मानव जाति की एकता के आदर्श को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध इस संस्थान ने विश्व संस्कृतियों तथा अंतर–सांस्कृतिक मूल्यांकन, एक दूसरे के दृष्टिकोण को समझने और स्वीकार करने के संबंध में लोगों को जागरूक करने के लिए वर्षों प्रयास किए हैं–यह ऐसा दृष्टिकोण है जो अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विश्व को समझने तथा राष्ट्रीय स्तर पर राष्ट्रीय एकता के लिए अनुकूल है। संस्थान द्वारा चलाई गई गतिविधियों का सार यह है कि यह दूसरे के दृष्टिकोण को समझने तथा अपनी समृद्धि के लिए उसे समाहित और स्वीकृत करने पर बल देता है।

इस संस्थान की गतिविधियों को समर्थन देने के लिए भारत सरकार और पश्चिम बंगाल की सरकार संस्थान के रखरखाव के लिए 1962 से अनुदान मंजूर कर रही है।

5. कला, संस्कृति और विरासत में विजिटिंग अध्येत्ताओं हेतु स्कीम

इस स्कीम को अभी हाल ही में संस्कृति मंत्रालय के तहत आने वाली विभिन्न संस्थाओं को शक्ति प्रदान करने तथा उनमें नई ऊर्जा का संचार करने हेतु शुरू किया गया है, जिनके पास पाण्डुलिपियों, दस्तावेजों, कलाकृतियों, पुरावस्तुओं एवं पेंटिंग्स के रूप में विशाला 'खजाना' है। इसका अभिप्राय हमारे सांस्कृतिक संसाधनों में गंभीर अनुसंधानकर्ताओं को प्रेरित करना है ताकि इनके परिणामों से राष्ट्र को लाभ हो सके। संग्रहालय, उदाहरण के तौर पर, उनकी सम्पूर्ण धारिता के एक बहुत छोटे प्रतिशत को ही प्रदर्शित कर सकता है तथा इस तरह की लागू की जा रही स्कीमों से अनुसंधान, छात्रवृत्ति तथा वस्तुओं के विश्लेषण को प्रेरित किया जा सकेगा जो सामान्यतः आम जनता के देखने के लिए उपलब्ध नहीं होती है।

1. इस स्कीम में वर्तमान में मंत्रालय के या उसके द्वारा सहायता प्रदान किए जा रही 17 संस्थाओं या संगठनों को शामिल किया गया है, जिनकी सूची नीचे दी गई है, जबकि बाद के वर्षों में और अधिक संस्थाओं या संगठनों को शामिल किया जा सकता है।
2. यह स्कीम भारतीय तथा विदेशी शिक्षाविदों एवं अनुसंधानकर्ताओं दोनों के लिए ही खुली होगी।
3. अच्छी अकादमिक या व्यावसायिक विश्वसनीयता वाले वे विद्वान और अनुसंधानकर्ता जिन्होंने अपने संबंधित ज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, या वे जिन्होंने कला या संस्कृति के किसी क्षेत्र में विशेष सृजन कार्य किया हो, इस स्कीम के लिए पात्र होंगे।
4. वे विद्वान जिनके पास अच्छी परियोजनाएं हैं वे संबंधित संस्थाओं के मुखियाओं से सम्पर्क कर सकते हैं तथा अपना परियोजना प्रस्ताव उनको प्रस्तुत कर सकते हैं। इसके साथ ही, वे संस्थाएं जो अच्छी अनुसंधान परियोजना शुरू करने के लिए प्रतीक्षारत हैं, वे इन परियोजनाओं को शुरू करने के लिए उपयुक्त विद्वान से सम्पर्क कर सकती हैं।
5. अध्येतावृत्ति सामान्यतः दो वर्षों की अवधि के लिए प्रदान की जाएगी। इस स्कीम के तहत चयनित अध्येत्ता से संबंधित संस्थान में उपस्थित होने की आशा की जाएगी क्योंकि इस स्कीम का उद्देश्य सांस्कृतिक संस्थाओं को अकादमिक विशेषज्ञता प्रदान करना, उनके कार्यकलापों में अकादमिक प्रबोधन को शामिल करना तथा अन्य संस्थाओं से दौरा करने वाले शिक्षाविदों को पारस्परिक विचार–विमर्श के अवसर प्रदान करना हैं।
6. अध्येत्ताओं को उनके सम्बद्धन संस्थान द्वारा सभी संभव अवसंरचनात्मक सहायता प्रदान की जाएगी तथा उनके पास अध्ययन एवं अनुसंधान सामग्री हेतु राष्ट्रीय सांस्कृतिक संस्थाओं की सुलभता का भी अवसर होगा।
7. यह स्कीम अकादमिक एवं अनुसंधान संस्थाओं में उपलब्ध श्रेष्ठ प्रतिभाओं को आकर्षित करने तथा ज्ञान के क्षेत्र से अनुसंधानकर्ताओं को आकर्षित करने के लिए उत्कृष्ट सेवा–शर्तें, पारिश्रमिक एवं सुविधाएं प्रदान करती है।
8. वे प्रोफेसर जो 2 वर्ष की अवधि के लिए लिएन पर आते है, उन्हें वेतन, भत्तों, एचआरए इत्यादि के लिए पूर्ण रूप से क्षतिपूर्ति प्रदान की जाएगी तथा सांस्कृतिक संस्थाओं द्वारा उनको दी जाने वाली सभी प्रकार की सहायता के अतिरिक्त परियोजना सहायता के माध्यम से प्रत्येक वर्ष 3.5 लाख रू. की कुल राशि (दो वर्षों हेतु) भी प्राप्त करने के लिए पात्र होंगे।
9. अच्छी विश्वसनीयता वाले सेवानिवृत्त शिक्षाविदों एवं अनुसंधानकर्ताओं को अन्य वित्तीय एवं संभार सहायताओं के अतिरिक्त 80,000 प्रति माह की दर से मानदेय भी दिया जाएगा।

10. बाहर से आने वाले अध्येत्ताओं को 'सेटलिंग–इन–भत्ता' भी दिया जाएगा।
11. संस्कृति मंत्रालय के पास एक बार पर्याप्त प्रस्ताव एवं आवेदन प्राप्त हो जाने के बाद, जाने–माने विशेषज्ञों वाली राष्ट्रीय चयन समिति (एनएससी) उनका मूल्यांकन करेगी तथा समूहों में अध्येतावृत्तियों का अनुमोदन करेगी।
12. वर्तमान में, अध्येतावृत्तियों की कुल संख्या प्रति वर्ष 15 तक सीमित है तथा प्राथमिक प्रतिक्रिया प्राप्त होने के बाद इस संख्या को और बढ़ाया जा सकता है।

विजिटिंग अध्येत्ता स्कीम में भाग लेने वाली 17 सांस्कृतिक संस्थाएं

i. भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार
ii. भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण
iii. भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण
iv. राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय
v. गांधी स्मृति एवं दर्शन स्मृति
vi. इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र
vii. भारतीय संग्रहालय
viii. राष्ट्रीय संग्रहालय
ix. सालरजंग संग्रहालय
x. इलाहाबाद संग्रहालय
xi. छत्रपति शिवाजी महाराज वास्तु संग्रहालय
xii. राष्ट्रीय पुस्तकालय
xiii. विक्टोरिया मैमोरियल हाल
xiv. रामपुर रजा पुस्तकालय
xv. खुदा बख्श ओरिएंटल पब्लिक लाइब्रेरी
xvi. राजा राममोहन राय पुस्तकालय प्रतिष्ठान
xvii. इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय

5.3
विविध

5.3.1

पूर्वोत्तर क्षेत्रों में पहल

मंत्रालय पूर्वोत्तर राज्यों पर विशेष ध्यान दे रहा है और सहायता कर रहा है। वर्ष 2009–10 के दौरान इन राज्यों में निम्नलिखित पहलें की गईं:–

दक्षिण क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र

i) प्राचीन प्रणाली को पुनर्जीवित करने की पहल

तंजावुर केंद्र में विख्यात गुरू अपने शिष्यों को पारम्परिक संगीत, शास्त्रीय नृत्य, ललित कला, दृश्य कला सिखाने के लिए कक्षाएं चला रहे हैं और शिक्षा की गुरू शिष्य परम्परा प्रणाली का निर्वाह कर रहे हैं। केंद्र ने 2009 से परम्परागत रंगमंच कला और तंजावुर चित्रकला का प्रशिक्षण भी आरम्भ किया है।

ii) गणतंत्र दिवस परेड–2010 में भागीदारी

गंगटोक के विभिन्न स्कूलों के 150 छात्रों, 10 संगीतकारों और 10 शिक्षकों ने नई दिल्ली के राजपथ पर 26 जनवरी, 2010 को हुई गणतंत्र दिवस की परेड में सिक्किम का तमांग सेलो नृत्य प्रस्तुत किया। इसका प्रस्तुतीकरण उत्तर पूर्व क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र, दीमापुर द्वारा किया गया था।

विक्टोरिया मेमोरियल हाल

राष्ट्रीय संग्रहालय संस्थान, नई दिल्ली और विक्टोरिया मेमोरियल हाल, कोलकाता द्वारा पूर्वोत्तर पहाड़ी राज्यों के संग्रहालय कार्मिकों के लिए एक कार्यशालाा और पूर्वोत्तर राज्यों के अधिकारियों के लिए एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय

इस अवधि के दौरान राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय ने दो कार्यशालाओं अर्थात रंगमंच कार्यशाला और उत्पादोन्मुख बाल कार्यशाला तथा त्रिपुरा में पूर्वोत्तर समारोह का आयोजन किया।

मौलाना अबुल कलाम आज़ाद एशियाई अध्ययन संस्थान

पूर्वोत्तर क्षेत्र में अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए संस्थान ने वर्ष 2009 के दौरान विभिन्न मुद्दों पर अंतरर्राष्ट्रीय/राष्ट्रीय सेमीनारों, सम्मेलनों/संगोष्ठियों के लिए सहायता प्रदान की और अनेक अनुसंधान परियोजनाओं का निधियन किया। संस्थान के अध्येयता बाहय अनुसंधान परियोजनाओं के अलावा अनेक अनुसंधान परियोजनाओं पर कार्य कर रहे हैं।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय

संग्रहालय ने भारत के पूर्वोत्तर राज्यों, अपने भोपाल स्थित मुख्यालय तथा मैसूर स्थित दक्षिणी क्षेत्रीय केंद्र और भारत के विभिन्न स्थानों पर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित करके अपने कार्यकलापों को सुदृढ़ किया है।

सांस्कृतिक स्रोत और प्रशिक्षण केन्द्र

सीसीआरटी ने सिक्किम सहित पूर्व क्षेत्र के शिक्षकों और छात्रों का उपयोग करके संस्कृति संबंधी अनेक शैक्षिक कार्यकलाप और कार्यक्रम प्रारम्भ किए हैं। इसने पूर्वोत्तर के विभिन्न राज्यों में 6 कार्यशालाएं और पुनश्चर्या प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जिनमें 721 शिक्षकों ने भाग लिया।

कलाक्षेत्र फाउंडेशन

फाउंडेशन ने पूर्वोत्तर राज्यों के विकास के लिए अनेक पहलें की हैं। वर्तमान वर्ष के दौरान फाउंडेशन ने पूर्वोत्तर के छात्रों को 3,16,000 रुपए की छात्रवृत्ति वितरित की। इसने कलाई (पांडिचेरी), दक्षिणचित्र (चेन्नई), और कलाक्षेत्र में 15 दिनों के मणिपुरी और शास्त्रीय नृत्य कार्यक्रम का आयोजन किया।

5.3.2

सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005

सरकार के कार्यकरण में पारदर्शिता रखने के लिए सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005 अधिनियमित किया गया था। तदनुसार संस्कृति मंत्रालय द्वारा सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005 की धारा 5 (2) के तहत सभी प्रभागाध्यक्षों को अपीलीय प्राधिकारी तथा सभी अवर सचिवों को केन्द्रीय लोक सूचना अधिकारी के रूप में पदनामित किया गया है। केन्द्रीय लोक सूचना अधिकारियों और अपीलीय प्राधिकारियों की सूची अनुबंध में दी गई है।

सचिवालय प्रशिक्षण और प्रबंध संस्थान ने सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005 पर संगोष्ठियों/कार्यशालाओं का आयोजन किया था ताकि प्रतिभागियों को केन्द्रीय लोक सूचना अधिकारी के रूप में कार्य करने की जानकारी दी जा सके और उन्हें कार्यकुशल बनाया जा सके तथा सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005 के प्रावधानों को प्रभावी ढंग से कार्यान्वित करने में मंत्रालयों की मदद की जा सके।

01 अप्रैल, 2009 से 31 दिसम्बर, 2010 के दौरान संस्कृति मंत्रालय को सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005 के अंतर्गत 124 आवेदन प्राप्त हुए थे जिनमें से 7 आवेदनों को अंतरित किया गया और शेष 117 का उत्तर दिया गया। 9 अपील भी प्राप्त हुई थीं जिनका निपटान कर दिया गया।

5.3.3

सतर्कता कार्यकलाप

मंत्रालय का सतर्कता ढांचा इसके सचिव के समग्र पर्यवेक्षण के अधीन है और संयुक्त सचिव स्तर के मुख्य सतर्कता अधिकारी, एक उप–सचिव और अवर सचिव तथा अन्य अधीनस्थ कर्मचारी उनकी सहायता करते हैं।

रपोर्टाधीन अवधि के दौरान प्रशासन को चुस्त बनाने तथा मंत्रालय के कर्मचारियों में अनुशासन की भावना बनाए रखने के लिए मुख्यालय और सम्बद्ध तथा अधीनस्थ कार्यालयों में सतत् प्रयास जारी रखे गए।

संस्कृति मंत्रालय तथा इसके सभी सम्बद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों ने 3–7 नवंबर, 2009 के दौरान सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया। सचिव ने मंत्रालय के सभी अधिकारियों तथा कर्मचारियों को कार्यकलापों के सभी संबंधित क्षेत्रों में पारदर्शिता लाने तथा भ्रष्टाचार को समाप्त करने की शपथ दिलाई। सतर्कता जागरूकता के संबंध में कार्यालय परिसर में तथा इसके आस–पास बैनर लगाए गए।

वर्ष के दौरान निम्नलिखित संस्थाओं/संगठनों का आवधिक निरीक्षण किया गया :

1.	संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली	25.5.2009
2.	साहित्य अकादमी, नई दिल्ली	27.5.2009
3.	ललित कला अकादमी, नई दिल्ली	29.5.2009
4.	राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली	01.6.2009
5.	राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली	03.6.2009
6.	सांस्कृतिक संसाधन और प्रशिक्षण केन्द्र, नई दिल्ली	09.6.2009
7.	भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण, कोलकाता	20.8.2009
8.	विक्टोरिया मैमोरियल हाल, कोलकाता	20.8.2009
9.	भारतीय संग्रहालय, कोलकाता	21.8.2009
10.	राष्ट्रीय पुस्तकालय, कोलकाता	21.8.2009
11.	केन्द्रीय संदर्भ पुस्तकालय, कोलकाता	21.8.2009
12.	केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, वाराणसी	10.11.2009
13.	इलाहाबाद संग्रहालय, इलाहाबाद	11.11.2009
14.	उत्तर–मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, इलाहाबाद	12.11.2009

केन्द्रीय सतर्कता आयोग से प्राप्त शिकायतों पर त्वरित कार्रवाई की गई और मंत्रालय के तहत संबंधित संगठनों से रिपोर्टें मंगाई गई। रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान केन्द्रीय सतर्कता आयोग और कार्मिक तथा प्रशिक्षण विभाग की सहमति से चार सतर्कता मामलों और दो शिकायतों को बंद किया गया था।

5.3.4

हिन्दी का प्रगामी प्रयोग

संस्कृति मंत्रालय ने राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा संघ की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के लिए जारी किए गए वार्षिक कार्यक्रम को ध्यान में रखते हुए वर्ष 2009–10 के दौरान सरकारी कार्य में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करने के लिए अपने प्रयासों को जारी रखा। मंत्रालय में हिंदी के प्रगामी प्रयोग से संबंधित कार्य संयुक्त सचिव के प्रशासनिक नियंत्रण में है। संस्कृति मंत्रालय में राजभाषा अधिनियम, 1963 और इसके अंतर्गत बनाए गए राजभाषा नियम, 1976 आदि के कार्यान्वयन के लिए राजभाषा प्रभाग है, जिसमें एक निदेशक, एक उप–निदेशक, एक सहायक निदेशक, एक वरिष्ठ हिंदी अनुवादक एवं तीन कनिष्ठ हिंदी अनुवादकों तथा अनुसचिवीय कर्मचारियों के पद स्वीकृत हैं। यह प्रभाग संस्कृति मंत्रालय के अधीनस्थ/संबद्ध कार्यालयों एवं स्वायत्तशासी संगठनों में संघ की राजभाषा नीति का कार्यान्वयन सुनिश्चित करने के लिए भी उत्तरदायी है।

मंत्रालय के सभी कम्प्यूटरों पर द्विभाषी रूप में कार्य करने की सुविधा उपलब्ध है। मंत्रालय के अधिकारियों/कर्मचारियों को हिंदी का पर्याप्त साहित्य और शब्दकोश/शब्दावलियॉ उपलब्ध कराई गई हैं। पत्राचार में हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहित करने के प्रयास किए जा रहे हैं। इस अवधि के दौरान हिंदी के प्रगामी प्रयोग से संबंधित तिमाही प्रगति रिपोर्टे नियमित रूप से राजभाषा विभाग को भेजी गईं। संस्कृति मंत्रालय के सम्बद्ध/अधीनस्थ कार्यालयों/स्वायत्त संगठनों से प्राप्त हुई तिमाही प्रगति रिपोर्टों की नियमित समीक्षा की गई। मंत्रालय के हिंदी अनुवाद एकक ने मंत्रिमंडल नोट, विभिन्न देशों के साथ हुए सांस्कृतिक आदान–प्रदान कार्यक्रम/करार, परिणाम बजट, वार्षिक योजना, संसदीय स्थायी समितियों से संबंधित सामग्री, संसद प्रश्न, मानक फार्म/मसौदे, पत्र आदि जैसे दस्तावेजों के अनुवाद के साथ–साथ विभिन्न प्रकार के विविध अनुवाद कार्य भी हिन्दी अनुवाद एकक द्वारा पूरी क्षमता और निष्ठा से समय पर सम्पन्न किए।

मंत्रालय में हिंदी के प्रगामी प्रयोग को प्रोत्साहित करने के लिए अनेक उपाय किए गए हैं। इन उपायों का संक्षिप्त ब्यौरा इस प्रकार है :–

1. राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) का कार्यान्वयन

भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुसरण में राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत आने वाले सभी दस्तावेज हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में जारी किए जा रहे हैं। 'क','ख' और 'ग' क्षेत्रों में स्थित केंद्र सरकार के कार्यालयों के साथ हिंदी में पत्राचार करना सुनिश्चित करने के लिए मंत्रालय में अभिनिर्धारित किए गए जांच–बिंदुओं के आधार पर राजभाषा नीति का अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए कार्य–योजना बनाई गई है। राजभाषा विभाग द्वारा जारी किए गए वार्षिक कार्यक्रम और अन्य आदेशों/निदेशों को इस मंत्रालय के सभी अनुभागों तथा इसके अधीनस्थ/सम्बद्ध कार्यालयों/स्वायत्त संगठनों को सूचनार्थ अग्रेषित किया गया और इनका अनुपालन करने के लिए निदेश जारी किए गए।

2. राजभाषा कार्यान्वयन समिति (ओएलआईसी)

मंत्रालय में संयुक्त सचिव की अध्यक्षता में राजभाषा कार्यान्वयन समिति गठित की गई है जिसकी बैठकें प्रत्येक तिमाही में नियमित रूप से आयोजित

की जाती हैं। इन बैठकों में संस्कृति मंत्रालय तथा इसके अधीनस्थ/संबद्ध कार्यालय और स्वायत्त संगठनों में संघ की राजभाषा नीति संबंधी सांविधिक प्रावधानों का कार्यान्वयन सुनिश्चित करने और राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा जारी किए गए वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने के संबंध में विस्तार से विचार–विमर्श करने के बाद निर्णय लिए जाते हैं। यह समिति राजभाषा हिंदी के प्रयोग में हुई प्रगति की आवधिक समीक्षा करती है और राजभाषा नीति के कारगर कार्यान्वयन के लिए उपयुक्त सुझाव देती है तथा उपायों की सिफारिश करती है। मंत्रालय के अधीनस्थ/सम्बद्ध कार्यालयों/स्वायत्त संगठनों को भी राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक नियमित रूप से आयोजित करने के निदेश दिए गए।

3. हिन्दी सलाहकार समिति

सरकार की राजभाषा नीति के कारगर कार्यान्वयन के बारे में सलाह देने के लिए माननीय मंत्री जी की अध्यक्षता में गठित की जाने वाली मंत्रालय की हिंदी सलाहकार समिति का पुनर्गठन किया जा रहा है।

4. हिन्दी में मूल टिप्पण/प्रारूपण प्रोत्साहन योजना

राजभाषा विभाग द्वारा हिंदी में मूल टिप्पण/प्रारूपण के लिए शुरू की गई प्रोत्साहन योजना को जारी रखा गया है। इस योजना के अंतर्गत एक–एक हजार रूपए के दो प्रथम पुरस्कार, 600–600 रूपए के तीन द्वितीय पुरस्कार और 300–300 रूपए के पांच तृतीय पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं।

5. हिन्दी में डिक्टेशन के लिए नकद पुरस्कार योजना

मंत्रालय में हिंदी में डिक्टेशन देने वाले अधिकारियों के लिए प्रोत्साहन एक योजना चलाई जाती है। इस योजना के तहत एक–एक हजार रूपए के दो नकद पुरस्कारों (एक हिंदी भाषी के लिए और एक हिंदीतर भाषी के लिए) का प्रावधान है।

6. हिंदी दिवस/हिंदी पखवाड़ा

मंत्रालय के सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहित करने के लिए सचिव (संस्कृति) ने दिनांक 15 सितम्बर, 2009 को अधिकारियों/कर्मचारियों के बीच परिचालित करने के लिए एक अपील जारी की। मंत्रालय में 15 सितम्बर, 2009 से 29 सितम्बर, 2009 हिंदी पखवाड़ा आयोजित किया गया। पखआड़े के दौरान हिंदी निंबध लेखन, हिंदी टंकण, हिंदी–अंग्रेजी अनुवाद, हिंदी टिप्पण/प्रारूपण, हिंदी सामान्य ज्ञान और हिंदी श्रुतलेखन (चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों के लिए) प्रतियोगिताएं आयोजित की गई और इनमें 135 अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया। विजेताओं को नकद पुरस्कार तथा प्रमाण–पत्र दिए किए।

7. हिंदी कार्यशाला

वर्ष के दौरान मंत्रालय के अधिकारियों को अपना अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करने के प्रति प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से मंत्रालय में तीन हिंदी कार्यशालाएं आयोजित की गईं जिनमें 49 अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया। इस दौरान 'कम्प्यूटर पर हिंदी में कार्य कैसे करें' विषय पर भी एक कार्यशाला आयोजित की गई थी।

8. प्रकाशन

वर्ष के दौरान मंत्रालय के राजभाषा प्रभाग ने हिंदी पत्रिका ''संस्कृति'' का 16वां अंक प्रकाशित किया। इस पत्रिका में कला और संस्कृति से संबंधित विभिन्न विषयों पर लेख प्रकाशित किए जाते जाते हैं। पत्रिका के प्रत्येक अंक की 3,000 प्रतियां प्रकाशित की जाती हैं जिन्हें लब्धप्रतिष्ठित विद्वानों, जानेमाने लेखकों, सभी विश्वविद्यालयों और पुस्तकालयों को निःशुल्क प्रेषित किया जाता है। 'संस्कृति दर्पण' नामक आठ पृष्ठों की एक बहुरंगी मासिक विवरणिका भी नियमित रूप से प्रकाशित की जाती है, जिसमें मंत्रालय के दिल्ली स्थित कार्यालयों/संस्थाओं द्वारा प्रतिमाह आयोजित किए जाने वाले कार्यकलापों/कार्यक्रमों के बारे में सूचना दी जाती है। इसके प्रत्येक अंक की 800 प्रतियां प्रकाशित की जाती हैं जिन्हें प्रधानमंत्री कार्यालय, केंद्रीय मंत्रियों, भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारियों/वरिष्ठ अधिकारियों और मंत्रालय के दिल्ली स्थित सभी कार्यालयों/संस्थाओं, विश्वविद्यालयों, कॉलेजों, पुस्तकालयों इत्यादि को भेजा जाता है। पत्रिका और विवरणिका को मंत्रालय की वेबसाइट पर भी उपलब्ध कराया गया है।

9. हिंदी के प्रगामी प्रयोग से संबंधित निरीक्षण

राजभाषा नीति के कार्यान्वयन का जायज़ा लेने के लिए वर्ष के दौरान मंत्रालय के अधिकारियों ने नौ कार्यालयों का निरीक्षण किया। इसके अतिरिक्त संसदीय राजभाषा समिति की प्रथम उप–समिति ने मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रणाधीन आठ कार्यालयों का राजभाषा संबंधी निरीक्षण किया।

5.3.5

खेलकूद और मनोरंजन क्लब के कार्यलाप

वर्ष के दौरान निम्नलिखित कार्यकलाप किए गएः–

- संस्कृति मंत्रालय में प्रथम बार फुटबाल टीम का चयन किया गया था। इस क्लब ने चुनी गई टीम को पूरी किट उपलब्ध करायी। इस टीम ने अंतर–मंत्रालय फुटबाल टूर्नामेंट में भाग लिया जिसे सेंट्रल सिविल सर्विसेज कल्चरल एंड स्पोर्ट्स बोर्ड, कार्मिक और प्रशिक्षण विभाग ने आयोजित किया था तथा दो मैच जीते।

- इस क्लब ने सेंट्रल सिविल सर्विसेज कल्चरल एंड स्पोर्ट्स बोर्ड, कार्मिक तथा प्रशिक्षण विभाग द्वारा आयोजित किए गए अंतर–मंत्रालय क्रिकेट टूर्नामेंट में भी भाग लिया।

- इस क्लब ने सचिव, संस्कृति मंत्रालय के अनुमोदन से इस मंत्रालय के कर्मचारियों के लिए नैनीताल में 1 से 4 अक्तूबर, 2009 तक चार दिवसीय अध्ययन दौरे का आयोजन किया।

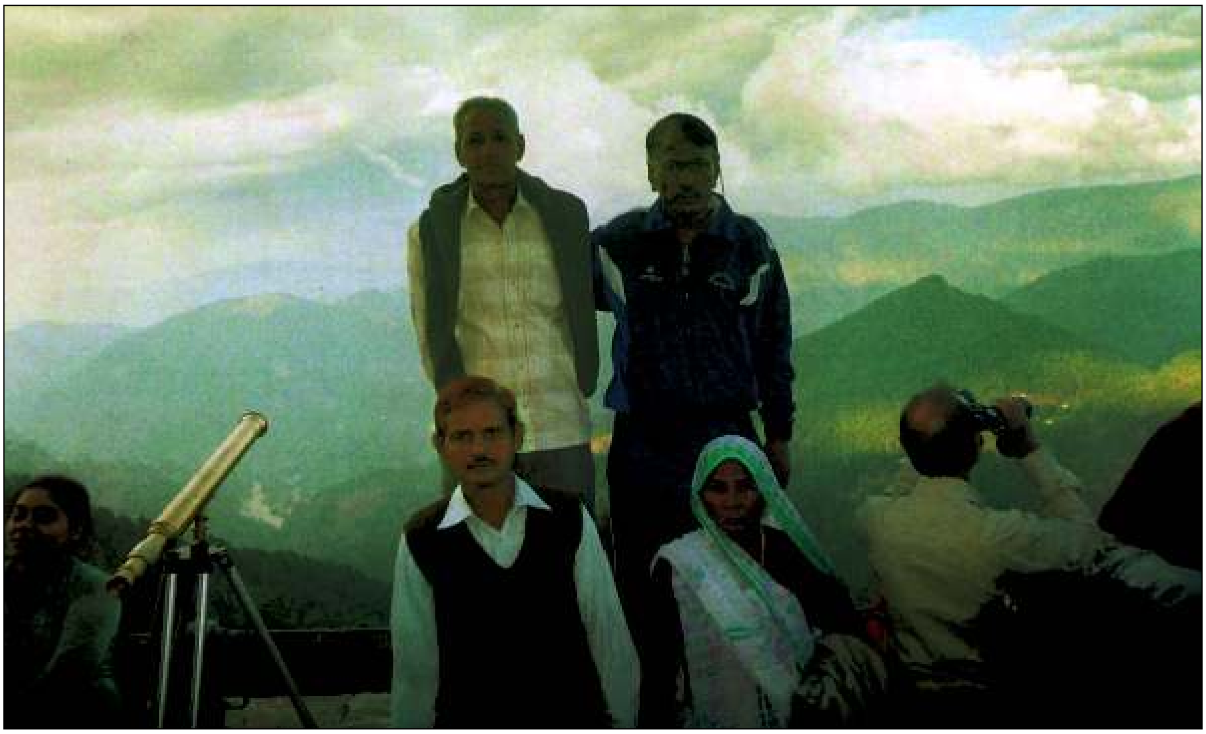

5.3.6

विकलांग व्यक्तियों के लिए वर्ष 2009—10 के दौरान कार्यक्रमों के कार्यान्वयन में हासिल की गई प्रगति

संस्कृति मंत्रालय विकलांग व्यक्तियों को अवसर प्रदान करने के लिए राष्ट्रीय नीति कार्यान्वित करता है ताकि वे एक स्वस्थ और अनुकूल वातावरण में जी सकें और साहस तथा विश्वास के साथ जीवन का मुकाबला कर सकें। इस संबंध में संबद्ध, अधीनस्थ और स्वायत्त संगठनों के माध्यम से कार्यकलाप शुरू किए गए हैं।

i) इस मंत्रालय के स्वायत्त संगठन सांस्कृतिक स्रोत और प्रशिक्षण केंद्र ने विशेष रूप से बाधित बच्चों के लिए विभिन्न कार्यशालाएं तथा शैक्षिक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए। यह केंद्र ऐसे छात्रों को शिक्षण के अवसर प्रदान करता है जिन्हें मुख्यधारा का हिस्सा बनने के अवसर आसानी से नहीं मिलते हैं। सांस्कृतिक स्रोत और प्रशिक्षण केंद्र (सीसीआरटी) ने रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान विशेष रूप से बाधित 492 बच्चों के लिए 15 कार्यक्रम आयोजित किए।

ii) विकलांग बच्चों को प्रोत्साहित करने के लिए पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र ने हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड, उदयपुर के सहयोग से 5 अक्तूबर से 8 अक्तूबर, 2009 तक शिल्पग्राम, उदयपुर में उमंग 2009—विकलांग बच्चों को समर्पित उत्सव का आयोजन किया। इस उत्सव में सदस्य राज्यों की विभिन्न संस्थाओं के लगभग 144 विकलांग बच्चों और उनके साथ आए 38 व्यक्तियों ने भाग लिया।

iii) भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ने शारीरिक रूप से विकलांग व्यक्तियों के कल्याण के लिए कार्य कर रहे गैर सरकारी संगठनों के परामर्श से विश्व विरासत स्थलों और अन्य टिकट वाले स्मारकों को शारीरिक रूप से विकलांग व्यक्तियों के लिए टिकटमुक्त करने की पहल की है। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा दिल्ली, आगरा और गोवा के स्मारकों के लिए **''स्वयं''** के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं।

5.3.7

नागरिक घोषणा-पत्र

1. हमारा उद्देश्य

देश की समृद्ध विविधता के भीतर आपस में जोड़ने वाले एक कारक के रूप में सतत् सांस्कृतिक कार्यकलाप तथा अभिव्यक्ति को बढ़ावा देकर और उसका संपोषण करके भारत की मूर्त एवं अमूर्त सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण और प्रचार–प्रसार करना।

2. हमारा मिशन

- स्मारकों को संरक्षित करके अपनी सांस्कृतिक विरासत को परिरक्षित करना, अभिलेखागार सामग्रियों का परिरक्षण तथा शास्त्रीय, लोक और जनजातीय परंपराओं का संरक्षण।
- सहयोग प्रदान करके सांस्कृतिक अभिव्यक्ति की विविधता का संवर्धन करना तथा एक अनुकूल वातावरण तैयार करना।
- प्रदर्शनी, प्रदर्शन, प्रकाशनों के माध्यम से तथा इन कार्यकलापों के प्रोत्साहन में कार्यरत संस्थानों और व्यक्तियों को सहयोग देकर अपने कलाकारों की रचनात्मक अभिव्यक्ति का प्रसार करना।

3. हमारे कार्यकलाप

- पुरातात्विक और ऐतिहासिक महत्व के स्मारकों तथा स्थलों का अनुरक्षण तथा संरक्षण।
- साहित्यिक, दृश्य तथा प्रदर्शनकारी कलाओं का संवर्धन।
- पुस्तकालयों का संवर्धन तथा सार्वजनिक पुस्तकालयों को सहायता।
- संग्रहालयों तथा कला प्रदर्शनियों का संवर्धन।
- अभिलेखागार अभिलेखों तथा पुस्तकालयों का अनुरक्षण, परिरक्षण तथा संरक्षण।
- सांस्कृतिक सम्पदा के संरक्षण में अनुसंधान एवं विकास।
- महत्वपूर्ण राष्ट्रीय विभूतियों तथा समारोहों की शताब्दियाँ तथा जयन्तियां मनाना।
- बौद्ध तथा तिब्बती अध्ययन संस्थाओं तथा संगठनों का संवर्धन।
- कला और संस्कृति के क्षेत्र में संस्थागत और व्यक्तिगत पहलों को प्रोत्साहन।
- देश की मूर्त और अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की सुरक्षा करना।
- विदेशों के साथ सांस्कृतिक संबंध विकसित करना।
- मानव विज्ञान अध्ययन संस्थानों का संवर्धन।

- प्राचीन पांडुलिपियों की विषय सूची बनाना तथा संरक्षण करना।
- संकटग्रस्त कला रूपों का प्रलेखन और पुनरुद्धार।

4. हमारे ग्राहक

- आम नागरिक विशेष रूप से रचनात्मक समुदाय तथा गैर–सरकारी संगठन।
- केन्द्र सरकार के मंत्रालय/विभाग और संगठन।
- राज्य सरकार/संघ शासित क्षेत्र के प्रशासन।

5. हमारी सेवाएं

निम्नलिखित स्कीमों के माध्यम से सहायता अनुदान के द्वारा कला और संस्कृति का परिरक्षण, संवर्धन, प्रसार –

- स्मारकों का संरक्षण तथा पुरातत्व और विरासत महत्व के स्थलों और ढाँचों का परिरक्षण।
- हिमालय की सांस्कृतिक विरासत का परिरक्षण एवं विकास।
- जनजातीय/लोक कला और संस्कृति का संवर्धन एवं प्रसार।
- बौद्ध/तिब्बती संस्कृति और कला का संवर्धन एवं विकास।
- सांस्कृतिक संगठनों को भवन अनुदान।
- विशिष्ट प्रदर्शनकारी कला परियोजनाओं के संबंध में व्यवसायियों तथा निजी व्यक्तियों को वित्तीय सहायता।
- शताब्दियाँ/वर्षगाँठ मनाने के लिए स्वैच्छिक संगठनों को वित्तीय सहायता।
- राष्ट्रीय स्मारकों का विकास और अनुरक्षण।
- उत्कृष्ट कलाकारों को अकादमी फेलोशिप और कलाकारों और लेखकों को पुरस्कार।
- विभिन्न सांस्कृतिक क्षेत्रों में युवा कार्यकर्ताओं को शिक्षावृत्ति।
- प्रदर्शनकारी, साहित्यिक और प्लास्टिक कलाओं के क्षेत्र में उत्कृष्ट कलाकारों को सीनियर/जूनियर फेलोशिप।
- नए क्षेत्रों में उत्कृष्ट कलाकारों को सीनियर/जूनियर फेलोशिप।
- अभावग्रस्त परिस्थितियों में रह रहे, साहित्य, कला और जीवन के अन्य क्षेत्रों में लब्धप्रतिषठित व्यक्तियों तथा उनके आश्रितों को वित्तीय सहायता।
- सांस्कृतिक कार्यकलापों में संलग्न स्वैच्छिक संगठनों को अनुसंधान सहायता।
- क्षेत्रीय तथा स्थानीय संग्रहालयों का संवर्धन और सुदृढ़ीकरण।
- बच्चों के लिए परिसर सहित बहुउद्देशीय सांस्कृतिक परिसरों की स्थापना।
- पांडुलिपियों का संरक्षण और पांडुलिपि संग्रह और संरक्षण के क्षेत्र में कार्यरत एजेंसियों को सहायता।
- अन्तर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक संबंधों से संबंधित सभी मामलों का समन्वय।
- केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार, राष्ट्रीय पुस्तकालय और राजा राममोहन राय पुस्तकालय प्रतिष्ठान के माध्यम से पुस्तकालय सेवाएं प्रदान करता है।

6. मंत्रालय द्वारा संचालित सहायता स्कीम

संस्कृति मंत्रालय किसी विशिष्ट कला रूप और/अथवा देश में सांस्कृतिक कार्यकलापों को जारी रखने के कार्यों में लगे हुए व्यक्तियों, समूहों और स्वैच्छिक संगठनों को वित्तीय सहायता प्रदान करने के लिए निम्नलिखित स्कीम संचालित करता है :–

1. क्षेत्रीय और स्थानीय संग्रहालयों के संवर्धन और सुदृढ़ीकरण के लिए वित्तीय सहायता।
2. राष्ट्रीय स्मारकों के विकास और अनुरक्षण की स्कीम।
3. स्वैच्छिक संगठनों द्वारा शताब्दी/वर्षगाँठ मनाने के लिए वित्तीय सहायता की स्कीम।
4. विभिन्न सांस्कृतिक क्षेत्रों में युवा कलाकारों को छात्रवृत्तियाँ।
5. प्रदर्शनकारी, साहित्यिक और प्लास्टिक कलाओं के क्षेत्र में उत्कृष्ट कलाकारों को सीनियर/जूनियर फेलोशिप।
6. नए क्षेत्रों में उत्कृष्ट कलाकारों को सीनियर/जूनियर फेलोशिप प्रदान करने की स्कीम।
7. स्वैच्छिक संगठनों के लिए भवन और उपस्कर अनुदान के लिए वित्तीय सहायता की स्कीम।
8. अभावग्रस्त परिस्थितियों में रह रहे, साहित्य और कला तथा जीवन के अन्य क्षेत्रों में लब्धप्रतिष्ठ व्यक्तियों और उनके आश्रितों को वित्तीय सहायता।
9. बौद्ध/तिब्बती संस्कृति और कला के संरक्षण और विकास के लिए अनुसंधान हेतु वित्तीय सहायता की स्कीम।
10. हिमालय की सांस्कृतिक विरासत के विकास की स्कीम।
11. जनजातीय/लोक कला और संस्कृति के संवर्धन और प्रसार के लिए वित्तीय सहायता की स्कीम।
12. विशिष्ट प्रदर्शनकारी कला परियोजनाओं के लिए व्यावसायिक समूहों और व्यक्तियों के लिए वित्तीय

सहायता की स्कीम।

13. सांस्कृतिक कार्यकलाप में संलग्न स्वैच्छिक संगठनों को अनुसंधान सहायता के लिए वित्तीय सहायता की स्कीम।

14. बच्चों के लिए परिसरों सहित बहुउद्देशीय सांस्कृतिक परिसरों की स्थापना के लिए वित्तीय सहायता की स्कीम।

विभिन्न स्कीमों के तहत वित्तीय सहायता के लिए विज्ञापनों के माध्यम से आवेदन–पत्र आमंत्रित किए जाते हैं। अपने प्रस्ताव प्रस्तुत करने के लिए 60 दिन की समय अवधि की अनुमति दी जाती है। विशेषज्ञ समिति आवेदन पत्रों की जांच करती है और पात्र मामलों को संस्तुत करती है। इस संबंध में आवेदन पत्र की अंतिम तारीख से 90 दिन के भीतर निर्णय के बारे में सूचित किया जाता है।

स्कीमों और आवेदन फार्म का ब्यौरा ''समर्थन'' पुस्तिका में भी उपलब्ध है जो निःशुल्क उपलब्ध है।

7. संगठनात्मक संरचना

मंत्रालय द्वारा उपर्युक्त पैरा 5 में यथा–उल्लिखित प्रदान की गई सेवाओं के अतिरिक्त पूरे देश में फैले दो सम्बद्ध, छः अधीनस्थ कार्यालयों और पच्चीस स्वायत्त निकायों के माध्यम से विभिन्न प्रकार की अन्य सेवाएं प्रदान की जाती हैं।

सम्बद्ध कार्यालय

1. भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, नई दिल्ली

इसका उद्देश्य केन्द्रीय रूप से संबंधित स्मारकों/ स्थलों और अवशेषों का अनुरक्षण करना, सुरक्षण करना तथा संरक्षण करना है। यह पुरातत्व अन्वेषण तथा उत्खनन, स्मारकों के पुरातत्व सर्वेक्षण और पुरातत्व शास्त्र में प्रशिक्षण का कार्य भी करता है।

2. राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली

इसमें केन्द्र सरकार के रिकार्ड को स्थायी संरक्षण के लिए सहेजकर रखा गया है और प्रशासनिक विद्वान इनका उपयोग करते हैं। यह सरकारी विभागों को उनके रिकार्ड प्रबंधन कार्यक्रमों में भी सहायता प्रदान करता है।

अधीनस्थ कार्यालय

1. राष्ट्रीय आधुनिक कला दीर्घा, नई दिल्ली

दृश्य और प्लास्टिक कला के प्रति भारतीय व्यक्तियों के मध्य समझबूझ और संवेदनशीलता पैदा करता है और समकालीन भारतीय कला को प्रोत्साहित करता है।

2. राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली

इसके मुख्य कार्यकलाप प्रदर्शनी, शिक्षा, जन–सम्पर्क, प्रकाशन तथा संरक्षण के क्षेत्रों से संबंधित है। यह प्रदर्शन में सुधार करने तथा संरक्षण कार्यकलापों को सुदृढ़ करने के लिए अनेक कार्यक्रम संचालित करता है।

3. राष्ट्रीय सांस्कृतिक सम्पदा संरक्षण अनुसंधान प्रयोगशाला, लखनऊ

इसका उद्देश्य देश की विभिन्न सांस्कृतिक संस्थाओं की संरक्षण क्षमताओं का विकास करना है और यह सांस्कृतिक सम्पदा के संरक्षण से संबंधित संग्रहालयों, अभिलेखागारों तथा पुरातत्व विभागों को सेवाएं प्रदान करता है।

4. केन्द्रीय संदर्भ पुस्तकालय, कोलकाता

यह भारतीय राष्ट्रीय ग्रंथ–सूची और इण्डेक्स इंडियाना के समेकन और प्रकाशन के लिए उत्तरदायी है।

5. केन्द्रीय पुस्तकालय, कोलकाता

यह राष्ट्रीय महत्व का संस्थान है जो अनुसंधानकर्त्ताओं के लिए संदर्भ केन्द्र के रूप में कार्य करता है। यह देश में पुस्तकालय सेवाओं के क्षेत्र में मानकों को समेकित और निर्धारित करता है।

6. भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण, कोलकाता

यह मानव विज्ञान के क्षेत्र में अनुसंधान के लिए एक वैज्ञानिक संगठन है और मानव जाति विज्ञान सामग्री और प्राचीन नर–कंकाल के संग्रह, संरक्षण, अनुरक्षण, प्रलेखन और अध्ययन संबंधी कार्य करता है।

स्वायत्त निकाय

1. इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय, भोपाल

इसमें कलाकृतियों का संग्रह किया जाता है और उन्हें प्रदर्शित किया जाता है तथा परम्परागत और समकालीन समुदाय ज्ञान दोनों का रिकार्ड

रखने और इसे सुरक्षित रखने का प्रयास करता है।

2. राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद, कोलकाता

विद्यार्थियों के बीच विज्ञान और प्रौद्योगिकी को विस्तृत कार्यकलापों और अन्तः क्रिया कार्यक्रमों के माध्यम से लोकप्रिय बनाने के कार्य संलग्न हैं।

3. नेहरू स्मारक संग्रहालय पुस्तकालय, नई दिल्ली

यह एक वैयक्तिक संग्रहालय का अनुरक्षण करता है जिसमें जवाहर लाल नेहरू के जीवन और समय के रेखाचित्र, मुद्रित सामग्री, पुस्तकों, आवधिक पत्रिकाओं तथा फोटोग्राफ जिनमें आधुनिक भारत के इतिहास पर विशेष ध्यान दिया गया है, का पुस्तकालय है।

4. संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली

यह अकादमी भारत में मंचन कला को प्रोत्साहित करने के लिए समर्पित है, अपने प्रशिक्षण कार्यक्रमों, छात्रवृत्तियां, दस्तावेज इत्यादि प्रदान करके मंचन कला के क्षेत्र के उत्कृष्ट कलाकारों को प्रति वर्ष सम्मानित करती है और विख्यात अनुभवी तथा युवा पीढ़ी के प्रतिभावान कलाकारों के मंचन कार्यक्रम आयोजित करती है।

5. साहित्य अकादमी, नई दिल्ली

यह अकादमी पूरे देश में साहित्यिक बैठकों का आयोजन करके, प्रकाशन, अनुवाद, संगोष्ठी, कार्यशाला, सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के माध्यम से भारतीय साहित्य और राष्ट्रीय एकीकरण के कार्य को प्रोत्साहित करती है।

6. ललित कला अकादमी, नई दिल्ली

इस अकादमी का उद्देश्य देश और विदेश में भारतीय कला के संबंध में समझबूझ को प्रोत्साहित करना तथा इसका प्रचार–प्रसार करना है।

7. राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली

इसका उद्देश्य थियेटर, इतिहास, निर्माण, दृश्य–निर्धारण, वेशभूषा–निर्धारण इत्यादि सहित थियेटर के सभी पहलुओं में विद्यार्थियों को प्रशिक्षित करना है।

8. सांस्कृतिक संसाधन और प्रशिक्षण केन्द्र, नई दिल्ली

इसका उद्देश्य भारत की सांस्कृतिक बहुलता के बारे में विद्यार्थियों में समझबूझ/जागरूकता पैदा करके शिक्षा पद्धति को सुदृढ़ करना है।

9. गांधी स्मृति और दर्शन समिति, नई दिल्ली

इसका उद्देश्य गांधी स्मृति और दर्शन समिति के परिसर का संरक्षण करना, अनुरक्षण करना और देखभाल करना है तथा इस प्रकार यह महात्मा गांधी जीवन, मिशन और विचारों का प्रचार–प्रसार करती है।

10. इलाहाबाद संग्रहालय, इलाहाबाद

यह संग्रहालय कला और संस्कृति के विभिन्न मुद्दों पर व्याख्यानों, संगोष्ठियों, कार्यशालाओं का आयोजन करता है।

11. दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी, नई दिल्ली

यह नई दिल्ली में आधुनिक भारतीय जन–पुस्तकालय पद्धति का अग्रणी जन–पुस्तकालय है और दक्षिण–पूर्व एशिया में सबसे व्यस्त जन–पुस्तकालय बन गया है। यह ग्रामीण, शहरी, लोक, प्रौढ़, बच्चों, विद्यार्थियों, दृष्टि–विकलांग इत्यादि के लिए सेवाएं प्रदान करता है।

12. राजा राम मोहन राय पुस्तकालय प्रतिष्ठान, कोलकाता

यह प्रतिष्ठान पर्याप्त पुस्तकालय सेवाएं प्रदान करके और पठन आदतों को लोकप्रिय बनाकर देश में जन–पुस्तकालय आन्दोलन को प्रोत्साहित करता है तथा इसके बारे में सहायता प्रदान करता है।

13. केन्द्रीय बौद्ध अध्ययन संस्थान, लेह

इसका मुख्य उद्देश्य बौद्ध विचारों, साहित्य को विद्यार्थियों के मन में बैठाकर उनके बहु–आयामी व्यक्तित्व का विकास करना तथा उन्हें बौद्ध अध्ययन से संबंधित अनुसंधान कार्य से अवगत कराना है।

14. केन्द्रीय उच्चतर तिब्बती अध्ययन संस्थान, वाराणसी

इसका मुख्य उद्देश्य प्राचीन अध्ययन पद्धति को पुनः बहाल करना तथा बहु–आयामी बौद्ध अध्ययन को कार्यान्वित करना है।

15. विक्टोरिया मैमोरियल हाल, कोलकाता

इसका उद्देश्य स्मारक भवनों और सभी कलाकृतियों का संरक्षण करना, कला दीर्घा का आधुनिकीकरण करना, कलाकृतियों का डिजिटीकरण करना, प्रदर्शनी, संगोष्ठी तथा व्याख्यान आयोजित करना है।

16. भारतीय संग्रहालय, कोलकाता

यह संग्रहालय प्रदर्शनियां, संगोष्ठियां, व्याख्यान और जन–संचार कार्यक्रम आयोजित करता है। इसके साथ–साथ प्राचीन/कलाकृतियों/मानव जाति वर्णन से संबंधित कलाकृतियों का अधिग्रहण करता है। कला दीर्घा का पुनर्गठन करता है।

17. एशियाटिक सोसायटी, कोलकाता

यह एशियाटिक कला और विज्ञान के संबंध में दुर्लभ पुस्तकों/पाण्डुलिपियों, जर्नलों और अन्य मुद्रित सामग्री का विपुला भण्डार है। इसका संग्रहालय ऐतिहासिक महत्व की पाण्डुलियिों, अभिलेखागार सामग्री, सिक्कों, शिला लेखों तथा अकादमिक महत्व की अन्य विविध कलाकृतियों का संरक्षण करता है।

18. सालारजंग संग्रहालय, हैदराबाद

यह वैश्विक कला संग्रह का समृद्ध संग्रहालय है। इस संग्रहालय के संग्रह में भारतीय कला, मध्य–पूर्व कला, सुदूर–पूर्व कला और यूरोपीय कला का संग्रह है।

19. खुदा बख्श ओरिएंटल पब्लिक लाइब्रेरी, पटना

इसमें मुगल, राजपूत, अवध, ईरान और तुर्की स्कूलों की 20,000 पाण्डुलिपियों, 200,000 मुद्रित पुस्तकों और लगभग 230 मौलिक चित्रकला का समृद्ध संग्रह है।

20. रामपुर रजा पुस्तकालय, रामपुर

इसे इस्लामिक जगत की हजारों, दुर्लभ पाण्डुलिपियों, लघु चित्रकला, उद्धरण पाण्डुलिपियों, महान सुलेख नमूनों का बहुमूल्य संग्रह माना जाता है।

21. कला क्षेत्र प्रतिष्ठान, चेन्नई

यह कला के सभी रूपों और इनकी क्षेत्रीय विविधता का एकीकरण करता है और भारतीय संस्कृति के प्राचीन गौरव को पुनः बहाल करने तथा वास्तविक कला के मानक निर्धारित करता है।

22. राष्ट्रीय कला इतिहास, संरक्षण और संग्रहालय विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली

यह कला के इतिहास में एम.ए. और पी.एच.डी. पाठ्यक्रम संचालित करता है, कला और संग्रहालय विज्ञान से संबंधित कार्यों का संरक्षण करता है, इन्हें पुनः बहाल करता है। यह भारतीय कला और संस्कृति, कला मूल्यांकन तथा भारतीय कला निधि में प्रमाण–पत्र पाठ्यक्रम भी संचालित करता है।

23. नव नालंदा महाविहार, बिहार

यह भारत में एकमात्र ऐसी संस्था है जो पाली और बौद्ध अध्ययन में शिक्षण, अनुसंधान और प्रकाशन के लिए समर्पित है।

24. मौलाना अबुल कलाम आजाद एशियाई अध्ययन संस्थान, कोलकाता

यह अध्ययन और अनुसंधान केन्द्र है जो एशिया में 19वीं शताब्दी के मध्य से बाद के सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक/प्रशासनिक कार्यकलापों तथा मौलाना अबुल कलाम आजाद के व्यक्तित्व और कार्यों पर विशेष ध्यान देता है।

25. इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली

इसमें कला और मानविकी के क्षेत्र में संसाधन सामग्री और आधारभूत अनुसंधान सामग्री का संग्रह है। यह भौतिक विज्ञान और द्रव्य भौतिकी तथा मानव जाति विज्ञान और समाज विज्ञान विषयों के अंतर–संबंधों पर ध्यान देता है।

उपर्युक्त के अतिरिक्त एक केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार भी है जो पंजीकृत सदस्यों, नीति–निर्धारकों, शिक्षाविदों, अनुसंधानकर्त्ताओं तथा

आम पाठकों इत्यादि को संदर्भ और अभिनिर्देशन सेवा प्रदान कर रहा है।

8. नागरिकों से हमारा अनुरोध

हमारी वेबसाइट www.india.culture.gov.in जिस पर हमारी स्कीमों का ब्यौरा उपलब्ध है, का अवलोकन करें। इसका हाइपरलिंक हमारी सम्बद्ध, अधीनस्थ और स्वायत्त संस्थाओं की वेबसाइटों के साथ स्थापित किया गया है।

9. कलाकारों और सांस्कृतिक संगठनों के प्रति हमारी प्रतिबद्धता

हम ऐसे कलाकारों तथा सांस्कृतिक संगठनों जो हमारी संस्कृति को समृद्ध बनाने और हमें अपनी विरासत पर गर्व करने से संबंधित प्रयास करते हैं, को उनके इस प्रकार के प्रयासों के लिए सहायता प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

10. नागरिकों की शिकायतों का निपटारा करने की हमारी प्रतिबद्धता

- मंत्रालय में प्राप्त शिकायतों पर तत्काल कार्रवाई की जाएगी। संयुक्त सचिव (प्रशासन) को जन–शिकायतों का निपटारा करने के लिए नियुक्त किया गया है। इस प्रकार की शिकायतें निम्नलिखित को भेजी जा सकती हैं :–

  संयुक्त सचिव (प्रशासन) और निदेशक (शिकायत)

  संस्कृति मंत्रालय

  कमरा नं. 219–सी विंग

  शास्त्री भवन, नई दिल्ली–110 001

  दूरभाष संख्या : 23381396 फैक्स संख्या : 23381235

- इस मंत्रालय और इसके सम्बद्ध/अधीनस्थ और स्वायत्त संगठनों ने अपने–अपने संबंधित शिकायत निवारण अधिकारियों को अधिसूचित कर दिया है।
- शिकायतों को स्वीकार किया जाएगा और 15 दिनों के भीतर इन्हें संबंधित अधिकारी को अग्रेषित किया जाएगा।
- जन–शिकायतों से संबंधित मामलों का अंतिम निपटारा सामान्यतः तीन माह के भीतर कर दिया जाएगा।

5.3.8

श्रेणी-I अधिकारियों की सूची (संस्कृति मंत्रालय)

क्र. सं.	नाम	पदनाम	अवधि	
			कब से	कब तक
1	श्री जवाहर सरकार	सचिव	01.04.09	31.03.10
2	श्री विजय एस. मदान	संयुक्त सचिव	01.04.09	31.03.10
3	श्री लव वर्मा	संयुक्त सचिव	01.04.09	31.10.09
4	सुश्री टुक टुक कुमार	संयुक्त सचिव	31.10.09	31.03.10
5	श्री एन.सी. गोयल	संयुक्त सचिव	01.04.09	31.03.10
6	श्री पी आर गोस्वामी	निदेशक, सी एस एल	01.04.09	31.03.10
7	श्री आर पी ठाकुर	मंत्री के निजी सचिव (टी एंड सी)	01.04.09	31.05.09
8	सुश्री अलका झा	राज्यमंत्री के निजी सचिव (टी एंड सी)	01.04.09	11.06.09
9	श्री ए के सिंह	निदेशक	01.04.09	29.04.09
10	सुश्री रूपा श्रीनिवासन	निदेशक	01.04.09	31.03.10
11	श्री उमेश कुमार	निदेशक	01.04.09	31.03.10
12	सुश्री अनीता सिन्हा	निदेशक	01.04.09	31.03.10
13	श्री प्रवीण एल. अग्रवाल	निदेशक	01.04.09	31.03.10
14	श्री अमरेश सिंह	निदेशक	26.08.09	31.03.10
15	डॉ (श्रीमती) मीनाक्षी जौली	उप सचिव	01.04.09	31.03.10
16	सुश्री रूबीना अली	उप सचिव	01.04.09	31.03.10
17	श्रीमती मीना बी. शर्मा	उप सचिव	01.04.09	31.03.10
18	श्री एल.के. चावला	उप सचिव	18.12.09	31.03.10
19	श्री भारतेश कुमार मिश्र	संयुक्त निदेशक (राजभाषा)	01.04.09	31.03.10
20	श्री ओ. पी. धवन	वरिष्ठ प्रधान निजी सचिव	01.04.09	31.03.10
21	श्री बी. एम. मालप्पा	एल आई ओ (सी एस एल)	01.04.09	31.03.10
22	श्री के. महालिंगम	एल आई ओ (सी एस एल)	01.04.09	31.03.10
23	श्री फकीर चंद	उप निदेशक (राजभाषा)	01.04.09	20.05.09
24	श्री मीमांसक	उप निदेशक (राजभाषा)	19.05.09	31.03.10
25	श्रीमती प्रियंका कुलश्रेष्ठ	उप निदेशक (पी एंड बी)	01.04.09	31.03.10
26	श्री संतराम	मंत्री के अपर सचिव (टी एंड सी)	01.04.09	21.06.09
27	श्री आर.एन. झा	मंत्री के अपर सचिव (टी एंड सी)	01.04.09	06.06.09
28	श्री आर. वैद्यनाथन	अवर सचिव	01.04.09	09.04.09
29	श्री अशोक आचार्य	अवर सचिव	01.04.09	31.03.10
30	श्री के. पी. के. नंबीसन	अवर सचिव	01.04.09	31.03.10

क्र. सं.	नाम	पदनाम	अवधि	
			कब से	कब तक
31	श्रीमती वर्षा सिन्हा	अवर सचिव	01.04.09	31.03.10
32	श्री गुलाम मुस्तफा	अवर सचिव	01.04.09	31.03.10
33	श्री ए. मुरूगैयन	अवर सचिव	01.04.09	31.03.10
34	श्री बी. पी. भुकर	अवर सचिव	01.04.09	31.03.10
35	श्री एस के शर्मा	अवर सचिव	01.04.09	31.03.10
36	श्रीमती मैत्रेयी राय	अवर सचिव	01.04.09	31.03.10
37	श्री टी. डी. सेहरा	अवर सचिव	01.04.09	31.03.10
38	श्रीमती वनिता सूद	अवर सचिव	01.04.09	31.03.10
39	श्री दीपांकर दत्ता	अवर सचिव	01.04.09	31.03.10
40	श्री वी. टी. जोसेफ	अवर सचिव	01.04.09	31.03.10
41	श्री एन. पी. जोशी	अवर सचिव	01.04.09	31.03.10
42	श्री बी. एल. मीना	अवर सचिव	01.04.09	31.03.10
43	श्रीमती आभा मिश्रा	अवर सचिव	01.04.09	31.03.10
44	श्रीमती शारदा शर्मा	अवर सचिव	01.04.09	17.09.09
45	श्री वसंत कुमार	स. नि. (पी एंड बी)	01.04.09	31.03.10
46	श्री बी. एस. लाकरा	स. नि. (पी एंड बी)	01.04.09	31.03.10
47	श्री एम. एस. ढांढा	स. नि. (पी एंड बी)	01.04.09	19.10.09
48	श्री ए.बी.एल. निगम	स.नि. (राजभाषा)	01.04.09	31.032010

अनुबंध

केंद्रीय सार्वजनिक सूचना अधिकारियों तथा अपीलीय प्राधिकारियों की सूची

क्र. सं.	केन्द्रीय सार्वजनिक सूचना अधिकारी का नाम	पदनाम	दूरभाष सं.	विषय/अनुभाग	प्रथम अपीलीय प्राधिकारी का नाम और पदनाम तथा दूरभाष सं.
1	श्री ए मुरुगैयन	अवर सचिव	23022445	शताब्दी एवं स्मारक (अवशिष्ट कार्य)	श्री उमेश कुमार, निदेशक, फोन: **23022041**
2	सुश्री मैत्रेयी राय	अवर सचिव	23388569	आईसीआर प्रभाग	सुश्री मीना बी शर्मा, उप सचिव फोन: **23383212**
3	श्री टी. डी. सेहरा	अवर सचिव	2338 4154	आंतरिक वित्त प्रभाग	सुश्री रूबीना अली उप सचिव, फोन: **2338 9845**
4	सुश्री वनिता सूद	अवर सचिव	2338 6454	स्थापना, संसद, सतर्कता अनुभाग संस्कृति मंत्रालय के अधीन संगठनों के प्रमुखों के भर्ती नियम सी.ए.बी.सी., वार्षिक रिपोर्ट	श्री एल.के.चावला उप सचिव, फोन: **2338 3185** डॉ. टी.कुमार, संयुक्त सचिव, फोन: **23381198** सुश्री रूपा श्रीनिवासन, निदेशक फोन: **2338 1822**
5	श्री गुलाम मुस्तफा	अवर सचिव	23022337	शताब्दी एवं स्मारक (विशेष प्रकोष्ठ)	श्री उमेश कुमार निदेशक, फोन: **23022041**
6	श्री एस. के. शर्मा	अवर सचिव	2338 7875	रोकड़ अनुभाग, संग्रहालय II, यूनिस्को	सुश्री रूबीना अली उप सचिव फोन: **2338 9845** श्री अमरेश सिंह, निदेशक, फोन: **2338 2402** सुश्री रूपा श्रीनिवासन, निदेशक, फोन: **2338 1822**
7	श्री अशोक आचार्य	अवर सचिव	23070790	बौद्ध एवं तिब्बती संस्थान, जी पी पी	श्री उमेश कुमार, निदेशक, फोन: **23022041**
8	श्री बी. पी. भूकर	अवर सचिव	23074359	छात्रवृत्ति एवं अध्येतावृत्ति,	सुश्री रूपा श्रीनिवासन निदेशक फोन: **23381822**
9	सुश्री वर्षा सिन्हा	अवर सचिव	2338 2539	अभिलेखागार एवं मानव विज्ञान, एशियाटिक सोसाइटी	श्री उमेश कुमार निदेशक, फोन: **23022041** सुश्री अनीता सिन्हा, निदेशक फोन: **23381431**

क्र. सं.	केन्द्रीय सार्वजनिक सूचना अधिकारी का नाम	पदनाम	दूरभाष सं.	विषय/अनुभाग	प्रथम अपीलीय प्राधिकारी का नाम और पदनाम तथा दूरभाष सं.
10	श्री दीपांकर दत्ता	अवर सचिव	23382351	मंच कला, जेड सी सी	सुश्री अनीता सिन्हा निदेशक, फोन **23381431** सुश्री रूपा श्रीनिवासन निदेशक, फोनः **23381822**
11	श्री के. पी. के. नंबीसन	अवर सचिव	23388897	आंतरिक वित्त प्रभाग	सुश्री रूबीना अली उप सचिव, फोनः **2338 9845**
12	श्री वी टी जोसफ	अवर सचिव	23389379	अकादेमी सामान्य प्रशासन आईजीएनसीए	सुश्री रूपा श्रीनिवासन, निदेशक, फोनः **2338 1822** श्री एल.के.चावला उप सचिव, फोनः **2338 3185** सुश्री मीना बी शर्मा उप सचिव, फोन **2338 2797**
13	श्री एन. पी. जोशी	अवर सचिव	23382312	संग्रहालय–I राष्ट्रीय संस्कृति निधि (एनसीएफ)	श्री अमरेश सिंह, निदेशक, फोनः **2338 4202**
14	श्री बी. एल. मीना	अवर सचिव	2338 4261	सीडीएन एएसआई मामले एन सी पी	श्री एल.के.चावला उप सचिव, फोनः **2338 3185** सुश्री रूपा श्रीनिवासन, निदेशक फोन **2338 1822**
15	श्री बी. एम. मलप्पा	एल आई ओ	23384846 2338 9684	सी एस एल	श्री पी. आर. गोस्वामी निदेशक, फोनः **2338 4846, 9383**
16	श्रीमती आभा मिश्रा	अवर सचिव	23382158	पुस्तकाल अनुभाग आई सी आर	सुश्री मीना बी शर्मा उप सचिव फोन : **2338 2797**
17	सुश्री प्रियंका कुलश्रेष्ठ	उप निदेशक	23074276	योजना एवं बजट	सुश्री रूबीना अली उप सचिव फोन **2338 9845**
18	श्री एस.एस.मलकानी	प्रबंधक	23358835	राष्ट्रीय संस्कृति निधि	श्री अमरेश सिंह, निदेशक, फोनः **2338 2402**

प्रकाशनः
संस्कृति मंत्रालय
शास्त्री भवन, नई दिल्ली

अभिकल्पना एवं मुद्रण
स्पैन कम्यूनिकेशन्स
फोन : 011-26332700, www.spancom.in